

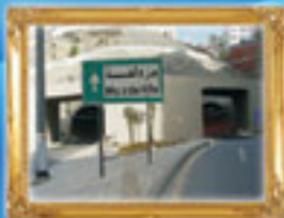
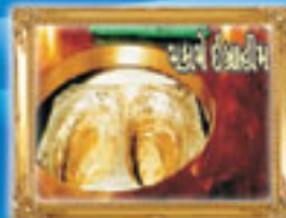
لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ

હજ વ ઉમ્મે કા તરીકા ઓર દુઆએ

Rafiqul Haramain (Gujarati)

રફીકુલ હ-રમૈન

મહા તપસવીજ વ જરીક તરવીખ



الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
کیتاوب پڌنے کی دُعا

अः शैभे तरीकत, अमीरे अडले सुन्नत, भानिये दा'वते ईस्लामी, उःरत अल्लामा
 मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईल्यास अतार कादिरि र-उवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه
 दीनी किताब या ईस्लामी सबक पढने से पडले जैल में दी हुई दुआ
 पढ लीजिये اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा. दुआ येह है :

اللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاَنْشُرْ
 عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह खुल जाऊँ और उम्ह पर ईल्म व हिकमत के दरवाजे खोल दे और उम्ह पर अपनी
 रहमत नाज़िल करमा ! ऐ अ-उमत और बुजुर्गों वाले ! (المستطرف ج ۱ ص ۱۰۱ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आभिर अेक अेक बार दुःइद शरीफ़ पढ लीजिये.

तालिबे गमे मदीना
 व बकीअ
 व मस्किरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

“रफ़ीक़ुल ज़-रमैन”

येह किताब (रफ़ीक़ुल ज़-रमैन)

शैभे तरीकत, अमीरे अडले सुन्नत, भानिये दा'वते ईस्लामी उःरत
 अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईल्यास अतार कादिरि र-उवी ज़ियाई
دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उई ज़बान में तडरीर इरमाई है.

मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी) ने ईस किताब को गुजराती रस्मुल
 पत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाअेअ करवाया है.
 ईस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाओं तो मजलिसे तराजिम को (ब उरीअअे
 मकतूब, ई-मेईल या SMS) मुत्तलअ इरमा कर सवाब कमाईये.

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

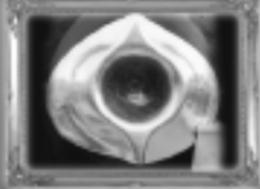
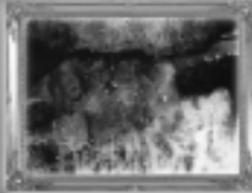
सिलेक्रेड हाईस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाजा, अहमदआबाद-1, गुजरात, ईन्डिया
 MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ

3

હજ વ ઉમ્રે કા મુફ્સલ તરીકા

રફીકુલ હ-રમૈન



મુઅલ્લિમ

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ

મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અતાર કાદિરી ર-ઝવી دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

નાશિર : મક-ત-બતુલ મદીના, અહમદઆબાદ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

નામ કિતાબ : રફીકુલ હ-રમૈન

મુઅલ્લિફ : શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે
 ઈસ્લામી હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ
 મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અતાર કાદિરી ર-ઝવી دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

સાલે ઈશાઅત : ઝી કા'દતિલ હરામ 1433 સિ.હિ.

નાશિર : મક-ત-બતુલ મદીના, અહમદઆબાદ

મક-ત-બતુલ મદીના કી શાખે

- સુરત : વલિયાબાઈ મસ્જિદ, ખ્વાજા દાના દરગાહ કે
 પાસ. ફોન : 9898615071
 જામનગર : પાંચ હાટડી, ફોન : 9327977293
 મોડાસા : સુકા બાઝાર, ફોન : 9725824820
 ગાંધીધામ : સપના નગર, મદીના મસ્જિદ કે પાસ,
 ફોન : 8141474279
 ધોલકા : તાજદારે મદીના મસ્જિદ કે સામને,
 ટાવર બાઝાર. ફોન : 9374915797
 બરોડા : કાસિમ હાલા મસ્જિદ, નાગરવાડા, બરોડા
 ફોન :

મ-દની ઈલ્તિજા : કિસી ઔર કો યેહ કિતાબ ધાને કી ઈજાઝત નહીં હે.

इंडरिस

उन्पान	सङ्ख्या	उन्पान	सङ्ख्या	उन्पान	सङ्ख्या
इज व उमरे वाले के लिये 56 नियतों	11	सकर में नमाज के 6 म-दनी कूल	43	याद रभने की 55 ईस्तिवाहात	58
आप को अज़मे मदीना मुबारक छो	24	उ इरामीने मुस्तफ़ा	46	का'बने मुशरफ़ा के यार कौनों के नाम	60
मदीने के मुसाफ़िर और ईमदादे मुस्तफ़ा	27	हर कदम पर सात करोड नैकियां	46	मीक़ात पांय हूँ	63
हाजियों के लिये कारआमद 16 म-दनी कूल	28	पैदल हाज से फिरिश्ते गले मिलते हूँ	47	हुआ कबूल होने के 29 मक़ामात	66
ईन में से इरबे ज़रूरत थीज़ें अपने साथ ले जाँयें	31	दौराने इज के लिये कुरआनी हुक़म	47	इज की क़िस्में	69
सामान के बेगेज के लिये 5 म-दनी कूल	32	हाज के लिये सरमायमे ईशक ज़रूरी है	48	«1» क़िरान	69
डेव्हा सर्टीफ़िकेट के म-दनी कूल	33	किसी आशिके रसूल से निस्फ़त काईम कर लीजिये	49	«2» तभत्तोअ	70
इवाँ ज़हाज़ वाले कब ओइराम बांधें ?	34	पुर असरार हाज	50	«3» ईफ़राद	70
ज़हाज़ का पुश्बूदार टिशू पेपर	35	जब्द होने वाला हाज	50	ओइराम बांधने का तरीका	70
जहा शरीफ़ ता मक़कओ मुअज़्ज़मा	36	अपने नाम के साथ "हाज" लगाना कैसा ?	51	ईस्लामी बहनों का ओइराम	71
मदीने की परवाज़ वालों का ओइराम	37	युटकुला	52	ओइराम के नक़ल	72
मुअत्विम की तरफ़ से सुवारी	37	इज मुबारक का बोर्ड लगाना कैसा.....?	53	उमरे की नियत	72
सकर के 26 म-दनी कूल	37	बसरा से पैदल इज !	53	इज की नियत	73
इवाँ ज़हाज़ के गिरने और ज़लने से अम्न में रहने की हुआ	40	मैं तवाफ़ के काबिल नहीं	54	इज्जे क़िरान की नियत	73
		हाज पर लुब्बे ज़ाड व रिया के सफ़्त हम्बे	55	लुब्बेक	74
		हाजियों की रियाकारी की दो भिसाले	57	मा'ना पर नज़र रभते हुओ लुब्बेक पढिये	75
				लुब्बेक कइनेके बा'द की ओक सुन्नत	76

گنپان	سکھ	گنپان	سکھ	گنپان	سکھ
لڊڻيڪ ڪ 9 م-دني ڪول	76	پلله يڪڪر کي دُعا	98	جياڏا ٺنڏا ن پيڙي	122
نيڃت ڪ مٺنڊيڪ اڙري ليدڏاڃت	78	دوسري يڪڪر کي دُعا	101	نڙر تڙ لوتی هئ	123
اھڙام ڪ ما'نا	79	تيسري يڪڪر کي دُعا	103	سکڙا و مڙول کي سڙي	123
اھڙام مڙي ڪ ٻاڙي لڙام لئ	79	چوٿي يڪڪر کي دُعا	105	سکڙا ڀر اڙام ڪ مٺڙيڪ اڙڏاڙ	125
اھڙام مڙي ڪ ٻاڙي مڪڙول لئ	80	ڀانڙي يڪڪر کي دُعا	107	ڪول سکڙا کي دُعا	126
ڪ ٻاڙي اھڙام مڙي لڙڙ لئ	82	ڇٽي يڪڪر کي دُعا	110	سڙي کي نيڃت	132
مڙي و اڙر ڪ اھڙام مڙي ڪ	84	ساڙي يڪڪر کي دُعا	112	سکڙا/مڙول سي اڙر ڪي دُعا	133
اھڙام کي 9 مڙي اھڙيڙي	85	مڪام ڪ ٻڙاڙي	114	سڙ مڙي ڪ ڙر مڙام ڀڙي کي دُعا	134
اھڙام ڪ ٻاري مڙي اڙري تڙي	88	نماڙي تڙي	114	ڙر مڙي اڪ اڙري اھڙيڙي	136
لڙم کي وڙاڙت	89	مڪام ڪ ٻڙاڙي کي دُعا	115	نماڙي سڙي مٺلڙي لئ	136
مڪام مڙي ڪ کي لڙري	90	مڪام ڪ ٻڙاڙي ڀر نماڙي ڪ ڙر م-دني ڪول	116	تڙي ڪڙي	137
اڙيڪا ڪ نيڃت ڪ لڙي	91	اڙي مٺلڙي ڀر اڙي.....!	117	لڙي يا تڪڙي	137
ڪا'ن اڙي ڀر ڀڙي نڙر	91	مڪام مٺلڙي ڀر ڀڙي کي دُعا	118	تڪڙي کي تڙي	137
سڙي سي اڪڙي دُعا	92	اڪ اڪ مڙي	120	ٻڙي ڪلڙي تڪڙي	138
تڙي مڙي ڪ لڙي ڪا مڙي لئ	93	اڙي مڙي ڀر اڙي!	120	تڙي ڪڙي وڙي ڪ لڙي	138
اڙي ڪ تڙي	93	اڙي مڙي ڀر ڪ ڪول دُعا ڀڙي	121	م-تڙي ڪ لڙي لڙي	138
تڙي ڪ تڙي	93	اڙي مڙي ڀر وڪڙ دُعا مڙي ڪ تڙي	122	تڙي لڙي ڪ لڙي م-دني ڪول	139

ઉપવાન	સફલ	ઉપવાન	સફલ	ઉપવાન	સફલ
જબ તક મક્કએ મુકર્રમા મેં રહેં ક્યા કરેં ?	141	મિના શરીફ મેં પહલે દિન જગહ કે લિયે લડાઈયાં	151	ખરે માંગના સુન્નત હૈ	169
ચપ્પલોં કે બારે મેં ઝરૂરી મસ્અલા	142	દુઆએ શબે અ-રફા	152	દુઆએ અ-રફાત (ઉઠ્ઠ)	171
જિસ ને દુસરોં કે જૂતે ના જાઈઝ ઈસ્તિમાલ કર લિયે અબ ક્યા કરેં ?	143	નર્વી રાત મિના મેં ગુઝારના સુન્નતે મુઅક્કદા હૈ	153	ગુરૂબે આફતાબ કે બા'દ તક દુઆ જારી રખિયે !	180
ઈસ્લામી બહનોં કે લિયે મ-દની ફૂલ	143	અ-રફાત શરીફ કો રવાનગી	154	ગુનાહોં સે પાક હો ગએ	181
તવાફ મેં સાત બાતોં હરામ હેં	144	રાહે અ-રફાત કી દુઆ	155	મુઝ્દલિફા કો રવાનગી	182
તવાફ કે ગ્યારહ મકરૂહાત	145	અ-રફાત શરીફ મેં દાખિલા	156	મગરિબ વ ઈશા મિલા કર પઢને કા તરીકા	182
તવાફ વ સઅય મેં યેહ સાત કામ જાઈઝ હેં	146	યોમે અ-રફા કે દો અઝીમુશ્શાન ફઝાઈલ	157	કંકરિયાં યુન લીજિયે	183
સઅય કે 10 મકરૂહાત	146	કિસી ને જબ ઔરતોં કો દેખા	157	એક ઝરૂરી એહતિયાત	183
સઅય કે ચાર મુન્તફરિફ મ-દની ફૂલ	147	અ-રફાત મેં કંકરોં કો ગવાહ કરને કી ઈમાન અફરોઝ હિકાયત	158	વુફૂકે મુઝ્દલિફા	184
ઈસ્લામી બહનોં કે લિયે ખાસ તાકીદ	147	પુશ નસીબ હાજિયો ઔર હજજનોં !	159	મુઝ્દલિફા સે મિના જાતે હુએ રાસ્તે મેં પઢને કી દુઆ	185
બારિશ ઔર મીઝાબે રહમત	148	વુફૂકે અ-રફાત શરીફ કે 9 મ-દની ફૂલ	159	મિના નઝર આએ તો યેહ દુઆ પઢિયે	186
હજ કા એહરામ બાંધ લીજિયે	148	ઈમામે અહલે સુન્નત કી ખાસ નસીહત	161	દસવીં રૂલ હિજજહ કા પહલા કામ રમ્ય	186
એક મુફીદ મશવરા	149	અ-રફાત શરીફ કી દુઆએ (અ-રબી)	162	રમ્ય કે વક્ત એહતિયાત કે 5 મ-દની ફૂલ	187
મિના કો રવાનગી	149	મૈદાને અ-રફાત મેં દુઆ ખરે		રમ્ય કે 8 મ-દની ફૂલ	189
				ઈસ્લામી બહનોં કી રમ્ય	190

گنپان	سڌہ	گنپان	سڌہ	گنپان	سڌہ
مہریڙوں کي رنم	191	نڱو پاڻڙ رلڱو کي کورآنآني دڙي	217	پياسا لڙار اوڱاڪاڪا ساواڀ	231
مہريڙ کي ترڪ سؤ رنم كا تريكا	191	لاڙيري کي تڙياري	218	روڙانا پاڱ ۷ڙ كا ساواڀ	232
۷ڙ کي کورآنآني كؤ 7 م-دني ڪول	192	اوڙيڙيؤ! سڙڙ گومبڙ آيا گيا	218	سلاام ڙڙاني لڙي اڙڙ کيڙيؤ	232
لاڙو اوڙ ڀ-ڪرل ڀڙ کي کورآنآني	194	لو سڪو توو ڀاڀول ڀکيآ سؤ لاڙير لڙو	220	ڀوڙيا كؤ دڙدار لو گيا	233
کورآنآني كؤ ڙوڪن	195	نماڙو شوڪانآ	221	اڙل ڙنڱار.....! اڙل ڙنڱار.....!	234
لڙل اوڙ ترڪسؤر كؤ 17 م-دني ڪول	196	سؤنڙري ڙالڙيؤ كؤ ڙو ڀڙو	221	اوڙ م م ن لاڙو كؤ دڙدار لو گيا	234
تواڪؤ ڙياسر ت كؤ 10 م-دني ڪول	199	موا-ڙلا شريڪ پور لاڙيري	222	گڙيؤن م ن ڙوڙيؤ!	235
ڙيارل اوڙ ڀارل کي رنم كؤ 18 م-دني ڪول	201	ڀارگاڙو ريسالو ت م سلاام اڙڙ کيڙيؤ	223	ڙننننننن ڀکيآ	235
رنم كؤ 12 مڪڙلاو	204	سڙيڙي اڪڙار کي ڀيڙم ت م سلاام	225	اڙلو ڀکيآ كؤ سلاام اڙڙ کيڙيؤ	236
تواڪؤ رڙس ت كؤ 19 م-دني ڪول	205	ڪاڙوڪو آ'ڙم کي ڀيڙم ت م سلاام	226	ڙيلو پور ڀنڙر ڪير ڙا	237
۷ڙڙو ڀدڙ	208	دوڙارا اوڙ ساڙو شوڙن کي ڀيڙم ت م سلاام	226	اڙل وڙاڙ لاڙيري	237
۷ڙڙو ڀدڙ كؤ 17 شراڙ ت	209	ڀوڙ دؤآ اوڙ ماڱيؤ	227	اڙل وڙاڙ تاڙدرو مڙي نا	239
۷ڙڙو ڀدڙ كؤ 9 م-ترڪريڪ م-دني ڪول	212	ڀارگاڙو ريسالو ت م لاڙيري كؤ 12 م-دني ڪول	228	مڪڪو موڪرما کي ڙياسر ت	242
مڙي نؤ کي لاڙيري	215	ڙالي موبارڪ كؤ ڙو ڀڙو وڙو نؤ كا وڙيڙ	230	ويلاو ت گاڙو سارو ر آوالم	242
ڙوڪ ڀڙانو كا تريكا	215	دؤآ كؤ وڙيؤ ڙالي موبارڪ كؤ ڀيڙم ت کيڙيؤ	230	ڙ-ڀلو اڙو ڪوڙيس	242
مڙي نا ڪي تني دؤر م ن آوؤ گا !	215			ڀڙي-ڙوڙ ڪوڙا كا مڪان	244
				گارو ڙ-ڀلو سؤر	245
				گارو لڙرا	245

उप्याय	सङ्ख्या	उप्याय	सङ्ख्या	उप्याय	सङ्ख्या
दारे अरकम	246	सय्यिदुना हज्जा की भिदमत में सलाम	256	तवाफे जियारत का क्या करे ?	270
महल्लओ मस्कला	247	शु-हदाओ उहुद को मजमूई सलाम	258	तवाफ की नियत का अहम तरीन म-दनी हूँ	271
जन्नतुल मअूला	247	जियारतों पर हाजिरी के दो तरीके	259	तवाफे रुफ्सत के बारे में सुवाल व जवाब	273
मस्जिदे जिन्न	248	सुवाल व जवाब			
मस्जिदुरयल	248	जरार्थम और र्थन के कफ़ारे	260	तवाफे रुफ्सत का अहम मस्अला	273
मस्जिदे भैफ	249	हम वगैरा की ता'रीफ	260	तवाफ के बारे में मु-तफ़र्रिक सुवाल व जवाब	275
मस्जिदे जिर्राना	249	हम वगैरा में रिआयत	260	ईस्तिलामे हजर में हाथ कहां तक उठाओ ?	275
मजारे मैमूना	251	हम, स-दके और रोजे के ज़रूरी मसाएल	261	तवाफ में केरों की गिनती याद न रखी तो ?	276
मस्जिदुल हराम में "नमाजे मुस्तफ़ा" के 11 मकामात	252	हज की कुरबानी और हम के गोशत के अलकाम	262	दौराने तवाफ बुजू दूट जाओ तो क्या करे ?	276
मदीनओ मुनव्वरुल की जियारतें	253	अल्लाल ۞ से उरिये	262	कतरे के मरीज के तवाफ का अहम मस्अला	277
रौ-अतुल जन्नल	253	कारिन के लिये उभल कफ़ारा होता है	263	औरत ने भारी के दिनों में नफ़ली तवाफ कर लिया तो ?	278
मस्जिदे कुबा	254	कारिन के लिये कहां दुगना कफ़ारा है और कहां नहीं	263	मस्जिदुल हराम की पहली या दूसरी मजिल से तवाफ का मस्अला	279
उम्रे का सवाब	255	तवाफे जियारत के बारे में सुवाल व जवाब	266	दौराने तवाफ बुलन्द आवाज से मुनाज्जत पढना कैसा ?	280
शु-हदाओ उहुद को सलाम करने की कज़ीवत	256	हाओजा की सीट बुक छो तो			

عنوان	صفحہ	عنوان	صفحہ	عنوان	صفحہ
ۛزتیااا اور رمل کے بارے میں سواال و جوااب	281	اءلرام میں ۛشوو پءر كا ۛسٲا'مال	306	لرام میں كبوٲروں، ۛكٲوؤو كو ۛزانا، ساٲانا	330
ساؤو کے بارے میں سواال و جوااب	281	ووؤؤے ا-ركاٲ کے بارے میں سواال و جوااب	311	لرام کے پء وگءرا كاٲنا	334
اوسا و كناار کے بارے میں سواال و جوااب	283	موؤءللكا کے بارے میں اءلم سواال	311	موكاٲ سے باوگءر اءلرام گوؤرنے کے بارے میں سواال جوااب	336
اءلرام میں اءءء سے موسا-ءءا كٲا اور...؟	285	رءو کے مو-ٲاءلللك سواال و جوااب	312	بءوو كا ۛز (سواال و جوااب)	337
مٲاؤو باوو كا ۛاٲ میں ۛاٲ ۛال كر ٲلنا	285	كورانا سے مو-ٲاءلللك سواال و جوااب	312	ءؤء شارلك كى كؤوولٲ	337
ءم باسٲرئ کے بارے میں سواال و جوااب	286	ءءك و ٲكسئر کے مو- ٲاءلللك سواال و جوااب	313	نا سااؤ بءوو کے ۛز كا ٲرئكا	340
ناٲون ٲراشنے کے بارے میں سواال و جوااب	288	13 كو گوؤوے آءٲاا کے با'ء اءلرام باؤء ساكٲے ۛؤ	319	نا سااؤ بءوو كئ ٲرءك سے نٲءٲ اور لباؤك كا ٲرئكا	342
باال ءؤر كرنے کے بارے میں سواال و جوااب	289	ۛزؤء اكبءر (اكبءرئ ۛز)	323	نا سااؤ كئ ٲرءك سے ٲواك كئ نٲءٲ اور ۛسٲااا كا ٲرئكا	343
ٲوشوو کے بارے میں سواال و جوااب	292	ارء شارلك میں كاا كرنے والوؤ کے لٲٲے	324	بءوو کے ۛمرے كا ٲرئكا	345
اءلرام میں ٲوشووءار سااؤن كا ۛسٲا'مال	299	اءلرام ن باؤءنا ۛو ٲو ءٲاا	325	بءوو اور نكلى ٲواك	346
موءرئم اور گووااب کے كؤوؤو کے جؤرے	300	ۛمرء یا ۛز کے لٲٲے سواال كرنا كءسا ؟	326	بءوو اور رؤؤءو انءور كئ ءاؤئرئ	349
سٲلے ۛؤو كٲوے وگءرا کے مو-ٲاءلللك سواال و جوااب	305	ۛمرے کے وئؤے ٲر ۛز کے لٲٲے روكنا كءسا ؟	327	مااابٲو و مرؤؤءا	351
		وئر كااؤوئ روكنے والے كئ نساؤ كا اءلم مرءااا	329		

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَبَانِدًا فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

हज व उम्मे वाले के लिये 56 नियतें

(मअ रिवायात, छिकायात व म-दनी इल)

(हुज्जज व मु'तमिरीन एन में से मौकअ की मुना-सबत से वोह नियतें कर लें जिन पर अमल करने का वाकेई जेहन हो)

﴿1﴾ सिर्फ रिआअे एलाही عَزَّوَجَلَّ पाने के लिये उज कइंगा.

(कबूलियत के लिये एप्लास शर्त है और एप्लास छसिल करने में येह बात बहुत मुआविन है के रियाकारी और शोहरत के तमाम अस्बाब तर्क कर दिये जाअें. इरमाने मुस्तइ

है : **لَوِغُوْا** पर ऐसा जमाना आअेगा के

मेरी उम्मत के अग्निया (या'नी मालदार) सैरो तइरीह के लिये

और दरमियाने द-रजे के लोग तिजरत के लिये और कुरा

(या'नी कारी) दियाने और सुनाने के लिये और कु-करा मांगने के

लिये उज करेंगे. (तारिख بغداد १: १०५, ११०.)

﴿2﴾ एस आयते मुबा-रका

पर अमल कइंगा : (البقرة: ११६) **وَأْتُوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ**

तर-ज-मअे क-जुल एमान : उज और उमरह अद्लाह के लिये

पूरा करो. ﴿3﴾ (येह नियत सिर्फ इर्ज उज करने वाला करे) अद्लाह

की एताअत की नियत से एस हुकमे कुरआनी

तर-ज-मअे **وَاللّٰهُ عَلَى النَّاسِ حَكِيمٌ** **مِّنْ أَسْطَافِ الْيَهُودِ سَيِّئًا**

क-जुल एमान : और अद्लाह के लिये लोगों पर एस घर का उज

करना है जो एस तक चल सके. (ال عمران: ११७) पर अमल करने की

सआदत छसिल कइंगा ﴿4﴾ हुजुरे अकरम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

की पैरवी में उज कइंगा ﴿5﴾ मां बाप की रिआ मन्दी ले लूंगा.

(बीवी शोहर को रिजा मन्द करे, मकड़ुज जो अभी कर्ज अदा नहीं कर सकता तो उस (कर्ज प्वाह) से भी ँजाजत ले, अगर उज इर्ज डो युका है तो ँजाजत न भी डो तब भी जाना डोगा, (मुलप्पस अज बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1051) डं उमरुड या नइली उज के लिये वालिदैन से ँजाजत लिये बिगैर सइर न करे. येड भात गलत मशहूर है के जब तक वालिदैन ने उज नहीं किया औलाद भी उज नहीं कर सकती) ﴿6﴾ माले डलाल से उज कइंगा. (वरना उज कबूल डोने की उम्मीद नहीं अगरे इर्ज उतर जाअेगा. अगर अपने माल में कुछ शुभा डो तो कर्ज ले कर उज को जाअे और वोड कर्ज अपने (उसी मशकूक) माल से अदा कर डे. (अैन) डहीस शरीफ में है : जो माले डराम ले कर उज को जाता है जब लब्बैक कडता है, डतिफ गैब से जावाब डेता है : न तेरी लब्बैक कबूल, न बिदमत पजीर (या'नी मन्जूर) और तेरा उज तेरे मुंड पर मरदूद है, यडं तक के तू येड माले डराम, के तेरे कब्जे में है उस के मुस्तडिकों को वापस डे. (इतावा र-अविय्या, जि. 23, स. 541)) ﴿7﴾ सइरे उज की ખरीदारियों में लाव कम करवाने से बयूंगा. (मेरे आका आ'ला डररत, ँमाम अडमद रजा ખान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इरमाते हैं : लाव (में कमी) के लिये डुजजत (या'नी बडसो तकरार) करना बेडतर है बडे सुन्नत, सिवा उस यीज के जो सइरे उज के लिये ખरीदी जाअे, ँस (या'नी सइरे उज की ખरीदारियों) में बेडतर येड है के जो मांगे डे डे. (इतावा र-अविय्या, जि. 17, स. 128)) ﴿8﴾ यलते वक्त डर वालों, रिशतेदारों और डोस्तों से कुसूर मुआफ करवाडिंगा, ँन से डुआ करवाडिंगा. (डूसरों से डुआ करवाने से ब-र-कत डसिल डोती है, अपने डक में डूसरे की डुआ कबूल डोने की जियादा

उम्मीद होती है. दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मन्बूआ 326 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "इजाईले दूआ" सफ़हा 111 पर मन्कूल है, उजरते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को ખिताब हुवा : ओ मूसा ! मुज से उस मुंह के साथ दूआ मांग जिस से तू ने गुनाह न किया. अर्ज़ की : ईलाही ! वोह मुंह कहां से लाउं ? (यहां अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तवाजोअ है वरना वोह यकीनन हर गुनाह से मा'सूम हैं) इरमाया : औरो से दूआ करा के उन के मुंह से तू ने गुनाह न किया. (نَلَخَّصَ آز مَثْنَوِيْ مَوْلَانَارُوْم دَقْتَرِ سُوْم ص 31) ﴿9﴾ उजत से अईद तोशा (अभराजत) रभ कर रु-इका पर भर्य और कु-करा पर तसद्दुक (या'नी भैरात) कर के सवाब कमाउंगा. (औसा करना उज्जे मभरुर की निशानी है,) मभरुर उस उज और उमरे को कडते हैं के जिस में भैर और त्वाई छो, कोई गुनाह न छो, दिभावा, सुनाना न छो, लोगो के साथ अेहसान करना, पाना खिलाना, नर्म कलाम करना, सलाम डैलाना, पुश खुडकी से पेश आना, येह सब चीजें हैं जो उज को मभरुर बनाती हैं. जब के पाना खिलाना भी उज्जे मभरुर में दाखिल है तो उजत से जियादा तोशा साथ लो ताके रईको की मदद और इकीरो पर तसद्दुक भी करते यलो. अस्ल में मभरुर "भिर" से बना है. जिस के मा'ना उस ईताअत और अेहसान के हैं जिस से खुदा का तकरुब हासिल किया जाता है. (کتاب اٰل 98) ﴿10﴾ उबान और आंभ वगैरा की डिफ़ाजत करुंगा. ("नसीहतों के म-दनी कूल" सफ़हा 29 और 30 पर है : (1) (उदीसे पाक है : अस्लाह ईरमाता है) ओ ईब्ने आदम ! तेरा दीन उस वक्त तक

दुरुस्त नहीं हो सकता जब तक तेरी ज़बान सीधी न हो और तेरी ज़बान तब तक सीधी नहीं हो सकती जब तक तू अपने रब **عَزَّ وَجَلَّ** से उया न करे. (2) जिस ने मेरी उराम कर्दा चीज़ों से अपनी आंभों को झुका लिया (या'नी उन्हें देबने से बया) मैं उसे जहन्नम से अमान (या'नी पनाह) अता कर दूंगा) **﴿11﴾** दौराने सफ़र जिंको दुरुद से दिल् बहलाउंगा. (ईस से फिरिश्ता साथ रहेगा ! गाने बाजे और लगवियात का सिक्सिवा रभा तो शैतान साथ रहेगा) **﴿12﴾** अपने लिये और तमाम मुसल्मानों के लिये दुआ करता रहूंगा. (मुसाफ़िर की दुआ कबूल होती है. नीज़ "इजाईले दुआ" सफ़हा 220 पर है : मुसल्मान, के मुसल्मान के लिये उस की गैबत (या'नी गैर मौजू-दगी) में (जे) दुआ मांगे (वोह कबूल होती है) उदीस शरीफ़ में है : येह (या'नी गैर मौजू-दगी वाली) दुआ निहायत जल्द कबूल होती है. फिरिश्ते कहते हैं : उस के उक में तेरी दुआ कबूल और तुजे भी ईसी तरह की ने'मत हुसूल) **﴿13﴾** सब के साथ अख़ी गुफ़्त-गू कइंगा और हस्बे हैसियत मुसल्मानों को खाना खिलाउंगा. (इरमाने मुस्तफ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** : मजरूर उज का बदला जन्नत है. अर्ज़ की गई : या रसूलव्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ! उज की मजरूरियत किस चीज़ के साथ है ? इरमाया : अख़ी गुफ़्त-गू और खाना खिलाना. (شُعَبُ الْإِيمَانِ ج 3 ص 479 حديث 4119) **﴿14﴾** परेशानियां आउंगी तो सभ्र कइंगा. (हुज्जतुल ईस्लाम उजरते सख़िदुना ईमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي** इरमाते हैं : माल या बदन में कोई नुकसान या मुसीबत पड़ोये तो उसे खुशदिली से कबूल करे क्यूंके येह ईस के

उज्जे मभरु की अलामत है. (احیة العلوم ۱ ج ص ۳۰۴) ﴿15﴾ अपने रु-इका के साथ हुस्ने अप्लाक का मुजा-हरा करते हुअे उन के आराम वगैरा का ખयाल रभूंगा, गुस्से से बयूंगा, बेकार बातों में नही पडूंगा, लोगों की (ना पुश गवार) बातें बरदाश्त कडूंगा ﴿16﴾ तमाम पुश अकीदा मुसल्मान अ-रबों से (वोड याडे कितनी ही सप्ती करें, मैं) नरमी के साथ पेश आउंगा. (बहारे शरीअत जिल्द 1 खिस्सा 6 सईहा 1060 पर है : बहूओं और सब अ-रबियों से बहुत नरमी के साथ पेश आअे, अगर वोड सप्ती करें (बी तो) अदब से तहम्मूल (या'नी बरदाश्त) करे ईस पर शफ़ाअत नसीब होने का वा'दा इरमाया है. पुसूसन अहले उ-रमैन, पुसूसन अहले मदीना. अहले अरब के अइआल पर अे'तिराज न करे, न हिल में कदूरत (या'नी मैल) लाअे, ईस में दोनों² जहां की सआदत है) ﴿17﴾ बीड के मौकअ पर बी लोगों को अजियत न पडोये ईस का खयाल रभूंगा और अगर भुद को किसी से तकलीफ़ पडोयी तो सभ्र करते हुअे मुआइ कडूंगा. (हदीसे पाक में है : जो शप्स अपने गुस्से को रोकैगा अदलाह كَفْرًا कियामत के रोज उस से अपना अजाब रोक देगा. (شُعَبُ الْإِيمَانِ ۱ ج ص ۳۱۰ حديث ۸۳۱۱) ﴿18﴾ मुसल्मानों पर इन्फ़रादी कोशिश करते हुअे “नेकी की दा'वत” दे कर सवाब कमाउंगा ﴿19﴾ सइर की सुन्नतों और आदाब का हत्तल ईम्कान खयाल रभूंगा ﴿20﴾ अहराम में लब्बैक की भूब कसरत कडूंगा. (ईस्लामी भाई बुलन्ट आवाज से कहे

और ईस्लामी बहन पस्त आवाज से) ﴿21﴾ मस्जिदेंने करीमैन (बड़े दर जगह दर मस्जिद) में दाखिल होते वक्त पहले सीधा पाँउ अन्दर रभूंगा और मस्जिद में दाखिले की दुआ पढ़ूंगा. ईसी तरह निकलते वक्त उलटा पाँउ पहले निकालूंगा और बाहर निकलने की दुआ पढ़ूंगा ﴿22﴾ जब जब किसी मस्जिद भुसूसन मस्जिदेंने करीमैन में दाखिला नसीब हुवा, नईली अे'तिकाइ की नियत कर के सवाब कमाउंगा. (याद रहे! मस्जिद में जाना पीना, आबे जमजम पीना, स-हरी व ईस्तार करना और सोना जईज नहीं, अे'तिकाइ की नियत की होगी तो जिन्नन येह सब काम जईज हो जाअेंगे) ﴿23﴾ का'बअे मुशररई पर **पहली नजर** पडते ही दुइदे पाक पढ कर दुआ मांगूंगा ﴿24﴾ दौराने तवाइ "मुस्तजब" पर (जहां सत्तर हजार इरिशते दुआ पर आमीन कलने के लिये मुकरर हैं वहां) अपनी और सारी उम्मत की मग़िरत के लिये दुआ कइंगा ﴿25﴾ जब जब आबे जमजम पियूंगा, अदाअे सुन्नत की नियत से डिब्ला इ, अडे हो कर, बिस्मिल्लाह पढ कर, यूस यूस कर तीन³ सांस में, पेट भर कर पियूंगा, इर दुआ मांगूंगा के वक्ते कबूल है. (इरमाने मुस्तइ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : हम में और मुनाइकियों में येह इक है के वोह जमजम कूब (या'नी पेट) भर नहीं पीते. (ابن ماجه ج 3 ص 489 حديث 4061)) ﴿26﴾ **मुस्तजम** से लिपटते वक्त येह नियत कीजिये के महब्बत व शौक के साथ का'बा और रबबे का'बा عَرْ وَجَلَّ का कुर्ब हासिल कर रहा हूं और ईस के तअल्लुक से ब-र-कत पा रहा हूं. (उस वक्त येह उम्मीद रबिये के बहन का दर वोह डिस्सा जो का'बअे मुशररई से मस (TOUCH)

हुवा है (إِنْ شَاءَ اللّٰهُ) जहन्नम से आजाद होगा) ﴿27﴾ गिलाई का'बा से गिमतते वक्त येह निखत कीजिये के मगिरेत व आखियत के सुवाल में ईसरार कर रडा हूं, जैसे कोई ખताकार उस शप्स के कपडों से लिपट कर गिउ-गिउता है जिस का वोह मुजरिम है और ખूબ आजिजी करता है के जब तक अपने जुर्म की मुआई और आयन्दा के अम्न व सलामती की जमानत नहीं मिलेगी दामन नहीं छोडूंगा. (गिलाई का'बा वगैरा पर लोग काई ખुशबू लगाते हैं लिहाजा अहराम की हालत में अहतियात कीजिये) ﴿28﴾ रम्ये जमरात में उजरते सय्यिदुना ईब्राहीम ખલીलुल्लाह मुशा-अहत (या'नी मुवा-इकत) और सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ की सुन्नत पर अमल, शैतान को रुस्वा कर के मार भगाने और ખ्वालिशाते नईसानी को रजम (या'नी संगसार) करने की निखत कीजिये. (इकयात : उजरते सय्यिदुना जुनैदे अगदादी رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي ने अक हाज्ज से पूछा के तूने रम्य के वक्त नईसानी ખ्वालिशात को कंकरियां मारीं या नहीं ? उस ने जवाब दिया : नहीं. इरमाया : तो इर तूने रम्य ही नहीं की. (या'नी रम्य का पूरा अक अदा नहीं किया) (مُلَخَّصٌ اِزْ كُشْفِ الْمَحْجُوبِ ص ۳۱۳) ﴿29﴾ सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ बिल ખुसूस ९⁰ मकामात या'नी सई, मर्वह, अ-रईत, मुअदलिई, जमरे ओला, जमरे वुस्ता पर हुआ के लिये ठहरे, मैं भी अदाअे मुस्तई की अदा की निखत से ईन जगहों में जहां जहां मुम्किन हुआ वहां रुक कर हुआ मांगूंगा ﴿30﴾ तवाइ व सअ्य में लोगों को धक्के देने से अयता रहूंगा. (जान बूझ कर किसी को ईस तरह धक्के

उमूर (म-सलन कजा नमाज व रोजा, बाकी मांदा जकात वगैरा और तलफ़ कर्दा बकिय्या हुकूकुल एबाद की अदाअेगी) में कासिर रहा तो येह सभ गुनाह अज सरे नौ उस के सर होंगे के हुकूक तो भुद बाकी ही थे उन की अदा में फिर ताभीर व तकसीर से गुनाह ताजा हुअे और वोह उज उन के एजाले को काफ़ी न होग़ा के उज गुज़रे (या'नी पिछले) गुनाहों को धोता है आयन्दा के लिये परवानअे भे कैदी (या'नी गुनाह करने का एज्जत नामा) नहीं होता बल्के उज्जे मभउर की निशानी ही येह है के पहले से अग्घा हो कर पलटे. (इतावा र-जविय्या, जि. 24, स. 466) ﴿35﴾ **मक्कअे मुकर्रमा और मदीनअे मुनव्वरह** **زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** के यादगार मुबारक मकामात की जियारत कइंग़ा ﴿36﴾ सआदत समजते हुअे भ निय्यते सवाभ **मदीनअे मुनव्वरह** **زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** की जियारत कइंग़ा ﴿37﴾ सरकारे मदीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के दरबारे गुहर बार की पहली हाजिरी से कब्ल गुस्ल कइंग़ा, नया सफ़ेद लिबास, सर पर नया सरबन्द नई टोपी और उस पर नया एमामा शरीफ़ बांधूंग़ा, सुरमा और उम्दा भुशबू लगाउंग़ा ﴿38﴾ **اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ** के एस इरमाने आलीशान :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَلَمُوا اَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ

وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿٣٩﴾

(त-ज-मअे क-जुल एमान : और अगर जभ वोह अपनी जानों पर जुल्म करें तो अै मलबूभ ! तुम्हारे हुज़ूर हाजिर हों और फिर अल्लाह से मुआफ़ी याहें और रसूल उन की शफ़ाअत

इरमाअे तो उरुर अद्लाड को बहुत तौआ कबूल करने वलल
 मेहरबान पारुं) पर अमल करते हुअे मदीने के शहन्शाड
 صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगलडे बेकस पनलड में डलजिरी दूंगल
 ﴿39﴾ अगर अस में हुवल तो अपने मोडसिन व गम गुसर
 आकल की बारगलडे बेकस पनलड में ँस
 तरड डलजिर डोउंगल जिस तरड अेक डलगल हुवल गुललम अपने
 आकल की बारगलड में लरउतल कलंपतल, आंसू डडलतल डलजिर
 डोतल डै. (डिकलयत : सय्यिदुनल ँमलमे मललिक اللّٰهُ الْخَالِقِ عَلَيْهِ رَحْمَةٌ اللّٰهُ الْخَالِقِ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 जब सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कल जिक करते रंग उन
 कल डदल जलतल और उक जलते. डिकलयत : डरते सय्यिदुनल ँमलमे
 मललिक اللّٰهُ الْخَالِقِ عَلَيْهِ رَحْمَةٌ اللّٰهُ الْخَالِقِ عَلَيْهِ से किली ने डरते सय्यिदुनल अय्यूड
 सपितयलनी قُدْسٍ سِرُّهُ الرِّبَانِي के डारे में पूडल तो इरमलय : मैं जिन
 डरत से रिवलत करतल हुं वोल उन सड में अडलल डैं, मैं ने
 उनुं डो² मरतल सडरे डज में देडल के जब उन के सलमने नडिय्ये
 करीम, रडिडुर्रडीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالسَّلَامِ कल जिके अन्वर डोतल तो
 वोल ँतनल रोते के मुजे उन पर रडम आने लगतल. मैं ने उन में
 जब तल'जीमे मुसतडल व ँशके डडीडे डुडल कल डेड आलम देडल तो
 मु-तअरिसर डो कर उन से अडलदीसे मुडल-रकल रिवलत करनी
 शुडअ की. (الشفاء ج ٢ ص ٤١, ٤٢) ﴿40﴾ सरकलरे नलमडलर
 صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के शलडी दरडलर में अ-दडो अेडतिलरलम
 और डौको शौक के सलथ दद डररी मो'तदिल (यल'नी दरडियलनी)
 आवलज में सललम अरु कडूंगल ﴿41﴾ हुकमे कुरलनली :
 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ
 بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَنْ تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ٥

(र: १२१/الحجرات: ५) (तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : अै ईमान वालो ! अपनी आवाजें उींयी न करो उस गैब बताने वाले (नबी) की आवाज से और उन के हुजूर बात यिल्ला कर न कडो जैसे आपस में अेक दूसरे के सामने यिल्लाते डो के कडीं तुम्हारे अमल अकारत न डो जाअें और तुम्हें भबर न डो) पर अमल करते हुअे अपनी आवाज को पस्त और कडरे धीमी रभूंगा

﴿42﴾ **اَسْأَلُكَ الشَّفَاعَةَ يَا رَسُولَ اللَّهِ** (या'नी या रसूलल्लाड मैं आप की शफ़ाअत का सुवाली हूं) की तकरार कर के शफ़ाअत की ल्मीक मांगूंगा ﴿43﴾ शैभैने करीमैन की अ-जमत वाली बारगाडों में ल्मी सलाम अर्ज कर्गंगा ﴿44﴾ डालिरी के वक्त ईधर उधर डेभने और सुनडूरी जालियों के अन्दर जांकने से भयूंगा ﴿45﴾ जिन लोगों ने सलाम पेश करने का कडा था उन का सलाम बारगाडे शाडे अनाम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** में अर्ज कर्गंगा ﴿46﴾ सुनडूरी जालियों की तरफ़ पीठ नहीं कर्गंगा ﴿47﴾ जन्नतुल बकीअ के भडकूनीन की भिडमतों में सलाम अर्ज कर्गंगा ﴿48﴾ डरते सय्यिदुना **لَمْ يَأْتِ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** और शु-डडाअे उडुड के मजारात की जियारत कर्गंगा, दुआ व ईसाले सवाभ कर्गंगा, ज-बले उडुड का दीडार कर्गंगा ﴿49﴾ मस्जिडे कुभा शरीफ़ में डालिरी हूंगा ﴿50﴾ मदीनअे मुनव्वरड **لَا يَدْخُلُهَا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ** के डरो दीवार, बर्गों बार, गुलो बार और पथ्थर व गुबार और वडों की डर शै का भूभ अ-डभो अेडतिराम कर्गंगा.

(डिकायत : डरते सय्यिदुना ईमामे मालिक **اللَّهُ الْخَالِقُ** ने

﴿53﴾ जब तक मदीनअे मुनव्वरह शَرَفًا وَتَعْظِيمًا में रहूंगा दुरुदो सलाम की कसरत करूंगा **﴿54﴾** मदीनअे मुनव्वरह शَرَفًا وَتَعْظِيمًا में कियाम के दौरान जब जब सब्ज गुम्बद की तरफ गुजर होगा, फौरन उस तरफ रुक कर के खड़े खड़े हाथ बांध कर सलाम अर्ज करूंगा. (ख़ि़क़ायत : मदीनअे मुनव्वरह शَرَفًا وَتَعْظِيمًا में सय्यिदुना अबू हाज़िम عَلَيْهِ السَّلَام की ख़ि़दमत में हाज़िर हो कर अेक साहिब ने बताया : मुझे प्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़ियारत हुई, फ़रमाया : अबू हाज़िम से कह दो, “तुम मेरे पास से यूँ ही गुजर जाते हो, रुक कर सलाम भी नहीं करते !” इस के बा’द सय्यिदुना अबू हाज़िम عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना मा’भूल बना लिया के जब भी रौजअे अन्वर की तरफ गुजर होता, अ-दबो अेहतिराम के साथ खड़े हो कर सलाम अर्ज करते, फिर आगे बढ़ते. **﴿55﴾** अगर *(المنامات مع موسوعة ابن أبي الدنيا ج 3 ص 103 حديث 323)* जन्नतुल अकीअ में मदफ़न नसीब न हुवा, और मदीनअे मुनव्वरह शَرَفًا وَتَعْظِيمًا से रुक्सत की ज़ं सोज़ घडी आ गइ तो बारगाहे रिसालत में अल वदाई हाज़िरी दूंगा और गिउगिउा कर बढके मुम्किन हुवा तो रो रो कर बार बार हाज़िरी की इत्तिज़ा करूंगा **﴿56﴾** अगर बस में हुवा तो मां की मामता भरी गोद से जुदा होने वाले बच्चे की तरह बिलक बिलक कर रोते हुअे दरबारे रसूल को बार बार हसरत भरी निगाहों से देखते हुअे रुक्सत होउंगा.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

आप को अग्ने मदीना मुबारक हो

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : “**‘**एल्म का हासिल करना हर मुसल्मान पर फ़र्ज है.” (इब्न माजह १८७६, १६६६, १६६६)

एल्म की शर्ह में येह भी है के उज अदा करने वाले पर फ़र्ज है के उज के ज़री मसाएल जानता हो. उमूमन हुज्जते किराम तवाफ़ व सअ्य वगैरा में पढी जाने वाली अ-रबी दुआओं में ज़ियादा दिल यस्पी लेते हैं अगर्चे येह भी बहुत अख़्त है जभ के दुरुस्त पढ सकते हों, अगर कोई येह दुआओं न भी पढे तो गुनहगार नही मगर उज के ज़री मसाएल न जानना गुनाह है.

रहीकुल उ-रमैन اِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ आप को बहुत सारे गुनाहों से बचा लेगी. आ'ज मुफ़्त दी जाने वाली उज की उर्दू किताबों में शर-ए मसाएल में सप्त बे अहतियाती से काम लिया गया है, एल्म से तश्वीश होती है के एन कुतुब से रहनुमाई लेने वाले हाजियों का क्या बनेगा, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ

रहीकुल उ-रमैन बरसों से लाभों की ता'दाद में छप रही है. एल्म में ज़ियादा तर मसाएल इतावा र-जविय्या शरीफ़ और अहारे शरीअत जैसी मुस्तनद किताबों में मुन्दरज

मसाँल आसान कर के लिखने की कोशिश की गई है, अब
 इस में मज़ीद तरमीम व ँजाफ़ा किया गया है और इस पर
 दा'वते इस्लामी की मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिया" ने
 नज़रे सानी की है और दारुल इफ़ता अहले सुन्नत ने अव्वल
 ता आभिर अेक अेक मस्अला देष कर रहनुमाँ इरमाँ है.
 اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ખૂબ અચ્છી અચ્છી નિચ્ચતેં કર કે રફીકુલ
 ઉ-રમૈન કી તરકીબ કી ગઈ છે. વલ્લાહ રફીકુલ ઉ-રમૈન સે
 મદીને કે મુસાફિરો કી રહનુમાઈ કર કે સિર્ફ વ સિર્ફ હુસૂલે
 રિઝાએ ઇલાહી મક્સૂદ છે, ઝાતી આમદની કા તસવ્વુર નહીં.
 શૈતાન લાખ સુસ્તી દિલાએ રફીકુલ ઉ-રમૈન મેહરબાની ફરમા
 કર અવ્વલ તા આખિર પૂરી પઠ લીજિયે.

બયાન કર્દા મસાઇલ પર ગૌર કીજિયે, કોઈ બાત સમઝ મેં
 ન આએ તો ઉ-લમાએ અહલે સુન્નત સે પૂછિયે. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ
 "રફીકુલ ઉ-રમૈન" કે અન્દર હજ વ ઉમ્રે કે મસાઇલ કે
 સાથ સાથ કસીર તા'દાદ મેં અ-રબી દુઆએ ભી મઅ
 તરજમા શામિલ હેં. અગર સફરે મદીના મેં રફીકુલ
 ઉ-રમૈન આપ કે સાથ હુઈ તો اِنَّكَ اِنَّكَ اِنَّكَ اِنَّكَ اِنَّكَ
 હજ કી કિસી
 ઔર કિતાબ કી કમ હી હાજત હોગી. હાં, જો ઇસ સે ભી
 ઝિયાદા મસાઇલ સીખના યાહે ઔર સીખના ભી યાહિયે તો
 બહારે શરીઅત હિસ્સા 6 કા મુતા-લઆ કરે.

મ-દની ઇલ્તિજા : હો સકે તો 12 અદદ રફીકુલ ۛ-રમૈન, 12 અદદ જેબી સાઈઝ કે કોઈ સે ભી રસાઈલ ઓર 12 અદદ સુન્નતોં ભરે બયાનાત કી V.C.Ds મક-ત-બતુલ મદીના સે હદિય્યતન લે કર સાથ લે લીજિયે ઓર હુસૂલે સવાબ કે લિયે વહાં તકસીમ ફરમા દીજિયે નીઝ ફરાગત કે બા'દ અપની રફીકુલ ۛ-રમૈન ભી ۛ-રમૈને તય્યિબૈન હી મેં કિસી ઇસ્લામી ભાઈ કો પેશ કર દીજિયે.

બારગાહે રિસાલત صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ, શૈખૈને કરીમૈન رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ઓર સય્યિદુના હમ્મા, શુ-હદાએ ઉહુદ, અહલે બકીઅ વ મઅૂલા કે મદફૂનીન કી બારગાહોં મેં મેરા સલામ અર્ઝ કીજિયેગા. દૌરાને સફર બિલ ખુસૂસ ۛ-રમૈને તય્યિબૈન મેં મુઝ ગુનહગાર કી બે હિસાબ બખ્શિશ ઓર તમામ ઉમ્મત કી મગ્ફિરત કી દુઆ કે લિયે મ-દની ઇલ્તિજા હૈ. અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ આપ કે હજ વ ઝિયારત કો આસાન કરે ઓર કબૂલ ફરમાએ.

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

તાલિબે ગમે મદીના વ
 બકીઅ વ મગ્ફિરત વ
 બે હિસાબ જન્નતુલ
 ફિરદૌસ મેં આકા
 કા પડોસ



એક યુપ સો¹⁰⁰ સુખ

6 શા'બાનુલ મુઅઝ્ઝમ 1433 સિ.હિ.

27-06-2012

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

मदीने के मुसाफ़िर और धमदाहे मुस्तफ़ा : صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 अेक नौ जवान तवाफ़े का'बा करते हुअे इकत दुरुद शरीफ़ डी
 पढ रहा था किसी ने उस से कहा : क्या तुअे कोर्र और
 दुआअे तवाफ़ नडीं आती या कोर्र और आत है ? उस ने
 कहा : दुआअें तो आती हैं मगर आत येड है डे में और मेरे
 वालिद ढोनौं उज के लिये निकले थे, वालिद साडिअ रास्ते
 में बीमार डो कर डौत डो गअे, उन का येडरा सियाड पड
 गया, आंअें उलट गर्र और पेट डूल गया ! में अहुत रोया
 और कहा : **إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ لَرَّجُوعُونَ** जब रात की तारीकी ढा
 गर्र तो मेरी आंअ लग गर्र, में सो गया तो में ने अ्वाअ में
 अेक सडैद लिआस में मलबूस मुअत्तर मुअत्तर डसीनो
 जभील डस्ती की ज़ियारत की. उनडों ने मेरे वालिडे मडूम की
 मय्यित डे करीअ तशरीफ़ ला कर अपना नूरानी डाथ उन डे
 येडरे और पेट पर डेरा, डेअते डी डेअते मेरे मडूम आप का
 येडरा दूध से ज़ियादा सडैद और रोशन डो गया और
 पेट अी अस्ली डालत पर आ गया. जब वोड अुरुग़
 वापस जाने लगे तो में ने उन का ढामने अकडस थाम
 लिया और अर्र की : या सय्यिडी ! (या'नी अै मेरे सरदार !)

आप को उस की कसम जिस ने आप को इस जंगल में मेरे वालिदे मर्दूम के लिये रहमत बना कर भेजा है आप कौन हैं? इरमाया : तू हमें नहीं पहचानता ? हम तो मुहम्मदुरसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) हैं, तेरा येह बाप बहुत गुनहगार था मगर हम पर ब कसरत दुरुद शरीफ़ पढता था, जब इस पर येह मुसीबत नाजिल हुई तो इस ने हम से इरियाद की लिहाजा हम ने इस की इरियाद रसी की है और हम हर उस शप्स की इरियाद रसी करते हैं जो इस दुन्या में हम पर जियादा दुरुद भेजता है.

(رَوْضُ الرِّيَّاحِينَ ص ۱۲۰)

इरियाद उम्मीती जो करे डाले जार में
 मुस्किन नहीं के भैरे बशर को बबर न डो

(उदाईके बफ़िशश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“पुटा आप का हज कबूल करे” के सोलह दुर्रु की निरुमत से हाजियों के लिये कारनामद 16 म-दनी इल


 अल्लाह व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रिजा के तलब गार प्यारे प्यारे हाजियो ! आप को सफ़रे उज व जियारते मदीना बहुत बहुत मुबारक डो. उर्रिय्याते सफ़र का रवानगी से तीन³ चार⁴ दिन पहले ही इन्तिजाम कर लीजिये, नीज किसी तजरिबा कार हाज से भशवरा भी इरमा लीजिये


 अपने वतन से इल या पके हुअे खाने के उब्बे, मिठाई

वगैरा गिजाई अश्या साथ ले जाने की हाजियों को गवर्नमेन्ट की तरफ़ से मुमा-न-अत है ❀ **मक़्कअे मुक़्क़रमा** رَبِّكَ لَقَدْ كَانَ لَدَيْكَ اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا की रिहाईश गाह से मस्जिदुल उराम पैदल जाना होगा इस में और तवाफ़ व सअ्यू में सब मिला कर तकरीबन 7 किलो मीटर बनते हैं, नीज़ मिना, अ-रफ़ात और मुज़्दलिफ़ा में भी काफ़ी यलना होगा, लिहाज़ा उज के बहुत दिन पहले से रोज़ाना पौन घन्टा पैदल यलने की तरकीब रभिये (इस की मुस्तकिल आदत बना ली जाये तो सिद्धत के लिये اِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ) बेहद मुफ़ीद है) वरना अेक दम से बहुत ज़ियादा पैदल यलने के सबब उज में आप आजमाईश में पड सकते हैं ! ❀ कम जाने की आदत डालिये, फ़ायेदा न हो तो कलना ! ખુસૂસન 5 अय्यामे उज में हलकी कुलकी गिजा पर कनाअत कीजिये ताके बार बार इस्तिन्ज़ा की “हाजत” न हो, ખુસૂસन मिना, मुज़्दलिफ़ा और अ-रफ़ात के इस्तिन्ज़ा जानों पर लम्बी लम्बी कितारें लगती हैं ! ❀ इस्लामी बहनें कांय की यूडियां पहन कर तवाफ़ न करें, लीड में टूटने से ખુद अपने और दूसरे के ज़म्मी होने का अन्देशा है ❀ इस्लामी बहनें उंगी अेडी की यप्पलें न पहनें के रास्ते में पैदल यलने में परेशानी होगी ❀ उ-रमैने तय्यिबैन की रिहाईश गाहों के वोशरूम में “इंग्लिश कभोड” छोते हैं, वतन से इन का इस्ति’माल सीप लीजिये वरना कपडे पाक रभना निहायत दुश्वार होगा ❀ किसी का दिया हुवा “पेकिट” ખोल कर येक क्रिये बिगैर हरगिज़ साथ मत लीजिये अगर कोई मन्मूआ यीज़ निकल आई तो मतार (AIRPORT) पर मुसीबत में पड सकते हैं

✨ હવાઈ જહાઝ મેં અપની ઝરૂરત કી અદવિયાત મઅ ડોક્ટરી સનદ અપને ગલે કે બેગ મેં રખિયે તાકે એમરજન્સી મેં આસાની રહે ✨ **ઝબાન ઓર આંખોં કા કુફલે મદીના** લગાઈયે, અગર બિલા ઝરૂરત બોલતે રહને કી આદત હુઈ તો ગીબતોં, તોહ્મતોં ઓર દિલ આઝારિયોં વગૈરા ગુનાહોં સે બચના દુશ્વાર રહેગા, ઈસી તરહ આંખોં કી હિફાઝત ઓર અક્સર નિગાહેં નીચી રખને કી તરકીબ ન હુઈ તો બદ નિગાહી સે મહફૂઝ રહના નિહાયત મુશ્કિલ હોગા. હરમ મેં એક નેકી લાખ નેકી ઓર એક ગુનાહ લાખ ગુના હૈ. હરમ સે મુરાદ સિર્ફ મસ્જિદુલ હરામ નહીં તમામ હુદૂદે હરમ હૈ ✨ નમાઝ મેં અક્સર મોહરિમ કે સીને યા પેટ કા કુછ હિસ્સા ખુલ જાતા હૈ ઈસ મેં કિસી કિસ્મ કી કરાહત નહીં ક્યૂં કે એહરામ મેં યેહ ખિલાફે મો'તાદ (યા'ની ખિલાફે આદત) નહીં ઓર ઈસ કા ખયાલ રખના ભી બહુત દુશ્વાર હૈ ✨ **કફન** કો આબે ઝમઝમ મેં ભિગો કર લાના અચ્છા હૈ કે ઈસ તરહ મક્કે મદીને કી હવાએં ભી ઈસે ચૂમ લેંગી. નિયોડને મેં યેહ એહતિયાત કરની મુનાસિબ હૈ કે ઈસ મુકદ્દસ પાની કા એક કતરા ભી ગિર કર નાલી વગૈરા મેં ન જાએ, કિસી પૌદે વગૈરા મેં ડાલ દેના ચાહિયે. (આબે ઝમઝમ શરીફ અપને વતન મેં ભી છિઝક સકતે હેં) ✨ તવાફ વ સઅ્ય કરતે હુએ બા'ઝ અવકાત હજ કી કિતાબોં કે અવરાક ગિરે પડે નઝર આતે હેં, મુશ્કિના સૂરત મેં ઉન કો ઉઠા લીજિયે મગર તવાફ મેં કા'બા શરીફ કો પીઠ યા સીના ન હો ઈસ કા ખયાલ રખિયે. અલબત્તા કિસી કી ગિરી પડી રકમ યા બટવા વગૈરા ન ઉઠાઈયે (ચન્દ બરસ પહલે એક પાકિસ્તાની હાજી ને દૌરાને

तवाङ्क उमददी में किसी की गिरी हुई रकम उठाई, रकम वाले को गलत फ़हमी हुई और उस ने पोलीस के हवाले किया और बेयारा अर्से के दिये जेल में डाल दिया गया !) ❁ छिजाजे मुकदस में नंगे पाउं रहना अख़्त है मगर घर और मस्जिद के हम्माम और रास्ते की कीयउ वगैरा में यप्पल पहन लीजिये. नीज़ गर्द आलूद और मैले कुयैले पाउं ले कर मस्जिदने करीमैन बल्के किसी मस्जिद में भी दाखिल न हों, अगर सज़ाई नही रप्प पाये तो बिगैर यप्पल मत रहिये ❁ मुस्ता'मल (या'नी इस्ति'माली) यप्पल पहन कर बेसन पर वुज़ू करने से अहत्तियात कीजिये के अक्सर नीये पानी बिभरा होता है अगर यप्पल नापाक हुअे तो अन्देशा है के छीटे उउ कर आप के लिबास वगैरा पर पउं. (येह जेह्न में रहे के जब तक यप्पल या पानी या किसी भी चीज़ के बारे में यकीनी तौर पर नजिस या'नी नापाक होने का इल्म न हो वोह पाक है) ❁ मिना शरीफ़ के इस्तिन्ना जानों के नल में आम तौर पर पानी का बहाव काफ़ी तेज़ होता है, लिहाज़ा बहुत थोडा थोडा जोलिये ताके आप छींटों से महफूज़ रह सकें.

घन में से हरजे ऋरत चीज़ें अपने साथ ले जायें :

❁ म-दनी पन्जसूरह ❁ अपने पीरो मुर्शिद का श-जरह
 ❁ बहारे शरीअत का छटा हिस्सा और 12 अदद रहीकुल
 उ-रमैन फुद भी पढिये और छाजियों को बांट कर भूब सवाब
 कमाईये ❁ कलम और पेउ ❁ डायरी ❁ डिब्ला नुमा (येह
 छिजाजे मुकदस ही में जरीदिये, मिना, अ-रज़ात वगैरा में डिब्ले

की सभ्त मा'लूम करने में मदद देगा) ❀ कुतुब, पासपोर्ट, टिकट, ट्रेवल चेक, हेल्थ सर्टीफिकेट वगैरा रखने के लिये गले में लटकाने वाला छोटा सा बेग ❀ ओहराम ❀ ओहराम के तहबन्द पर बांधने के लिये जेब वाला नाखेलोन या यमडे का बेल्ट ❀ धत्र ❀ ज़ा नमाज़ ❀ तस्बीह ❀ यार जोडे कपडे, बनियान, स्वेटर, वगैरा मल्बूसात (मौसिम के मुताबिक) ❀ ओढने के लिये कम्बल या यादर ❀ उवा भरने वाला तक्या ❀ धमामा शरीफ़ मअ सरबन्द व टोपी ❀ बिछाने के लिये यटाई या यादर ❀ आईना, तेल, कंधा, मिस्वाक, सुरमा, सूई धागा, कैंची सङ्गर में साथ लेना सुन्नत है ❀ नाभुन तराश ❀ सामान पर नाम, पता लिखने के लिये मोटा मार्कर पेन ❀ तोलिया ❀ रुमाल ❀ धस्ति'माल करते हों तो नज़र के यश्मे दो अदद ❀ साभुन ❀ मन्ज़न ❀ सेङ्टी रेज़र ❀ लोटा ❀ गिलास ❀ प्लेट ❀ पियाला ❀ दस्तर प्वान ❀ गले में लटकाने वाली पानी की बोतल ❀ यम्मय ❀ धुरी ❀ दई सर और नज़ला वगैरा के लिये टिक्यां नीज़ अपनी ज़रत की दवाओं ❀ गरमी में अपने ठीपर पानी छिड़कने के लिये स्प्रेयर (मिना व अ-रफ़ात शरीफ़ में धस की कद्र होगी) ❀ हस्बे ज़रत पाने पकाने के बरतन.

“मदीना” के पांय हुड़ङ की निरुमत से सामान के बेगेज के लिये 5 म-दनी इल

﴿1﴾ दस्ती सामान के लिये मज़बूत हँड बेग ﴿2﴾ लगेज करवाने के लिये बडा बेग लीजिये (धस पर बडे मार्कर पेन से नाम व

पता और झोन नम्बर वगैरा लिख लीजिये नीज कोई निशान लगा लीजिये म-सलन ★ मजीद अपने बेगेज के लोहे के हल्के वगैरा में रंगीन कपड़े की धज्ज या लेस (lace) की छोटी सी पट्टी नुमायां कर के बांध दीजिये) ﴿3﴾ बेग पर ताला लगा लीजिये मगर अेक याभी अेहराम के बेल्ट की जेब में और अेक दस्ती बेग में रफ लीजिये वरना याभी गुम हो जाने की सूरत में जद्दा कस्टम में “बडे बडे कैयों” के जरीअे काट कर बेग फोलते हैं, आप टेन्शन में आ जाअेंगे ﴿4﴾ अटायी केस (दस्ती बेग) के अन्दर भी नाम पते और झोन नम्बर की चिट डाल दीजिये ﴿5﴾ दोनों “ट्रौली बेग” (या’नी पहिये वाले) हों तो सहूलत रहेगी. اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

हेल्थ सर्टीफिकेट के म-दनी झूल : कानून के मुताबिक तमाम सईरी कागजात बहुत पहले से तय्यार करवा लीजिये, म-सलन “हेल्थ सर्टीफिकेट” येह आप को हाज्ज केम्प में गरदन तोड फुभार का टीका लगवाने और “पोलियो वेक्सिन” के कतरे पिलाअे जाने के बा’द मिलेगा अगर इस में किसी किस्म की कमी हुई तो आप को जहाज पर सुवार होने से रोका जा सकता है या जद्दा शरीफ के मतार पर भी रुकावट पेश आ सकती है ❁

डिफाजती टीका रवानगी से सिई दो यार रोज कब्ब लगवाना फास फाअेदा मन्द नहीं, 15 दिन कब्ब लगवा लेना बेहद मुईद रहेगा वरना मुभारक सईर की गहमा गहमी में फतरनाक बल्के

ज्ञान लेवा भीमारी का पतरा रहेगा, नीऊ ❁ कानूनन लाजिमी न सही मगर इलू और हेपाटाईटिस के टीके भी लगवा लेना आप के लिये बहुत बेहतरे है एन तिब्बी कारवाँयों को बोऊ मत समजिये एस में आप का अपना भला है ❁ अक्सर ट्रेवल अेजन्ट या कारवान वाले बिगैर किसी तिब्बी कारवाँ के घर बैठे ही हेल्थ सर्टीफिकेट इराहम कर देते हैं, जो के आप की सिद्धत के लिये नुकसान देह होने के साथ साथ धोका इराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है. ट्रेवल अेजन्ट, कस्दन दस्त-पत करने वाला डॉक्टर और ज्ञान भूऊ कर गलत सर्टीफिकेट ले कर 'इस्ति'माल करने वाला छाण (या मो'तमिर) सभी गुनहगार और अजाबे नार के हकदार हैं, जिन्हों ने एस तरह के काम किये हों वोह सब सख्खी तौबा करें.

हवाँ जहाज वाले कज अहराम जाँधें ? : हवाँ जहाज से बाबुल मदीना करायी ता जद्दा शरीफ तकरीबन यार⁴ घन्टे का सफर है (दुन्या में से कहीं से भी सफर करें) दौराने परवाज भीकत का पता नहीं चलता, लिहाजा अपने घर से तय्यारी कर के चलिये, अगर वक्ते मक़रुह न हो तो अहराम के नफ़ल भी घर पर ही पढ लीजिये और अहराम की यादरें भी घर ही से पहन लीजिये, अलबत्ता घर से अहराम की निखत न कीजिये, तय्यारे में निखत कर लीजियेगा क्यूंके निखत करने के बा'द लब्बैक पढने से आप "मोहरिम" हो जाअेंगे और पाबन्धियां शुइअ हो जाअेंगी और हो सकता

है के किसी वजह से परवाज में तापीर हो जाओ. “मोहरिम”
 अरपोर्ट पर भुशबूदार कूलों के गजरे भी नहीं पहन सकता.¹
 इस लिये पाकिस्तान से सफर करने वाले यूं भी कर सकते हैं के
 अहराम की यादरों में मलबूस या रोज मर्रा के लिबास ही में
 तशरीफ लाओं. उवाध अडे पर भी हम्माम, वुजूषाना और
 जाओ नमाज का अहतिमाम होता है, यहीं अहराम की तरकीब
 इरमा लीजिये मगर आसानी इस में है के जब तय्यारा इजा
 में हमवार हो जाओ उस वक्त नियत व लब्बैक की तरकीब
 कीजिये. हां जो एल्म रफते और अहराम की पाबन्धियां निभा
 सकते हों वोह जितनी जल्दी “मोहरिम” हो जाओगे उन्हें
 अहराम का सवाब मिलना शुदुअ हो जाओगा (नियत और
 भीकात वगैरा की तफसील आगे आ रही है)

जहाज का भुशबूदार टिशू पेपर : भबरदार ! तय्यारों
 में अकसर सेंट से तर भतर टिशू पेपर का छोटा सा पेकिट
 दिया जाता है, अहराम वाला उसे हरगिज न फोले, अगर
 हाथ पर भुशबू की जियादा तरी लग गध तो दम वाजिब हो
 जाओगा, कम लगी तो स-दका, अगर तरी न लगी हाथ सिर्फ
 भुशबूदार हो गओ तो कुछ नहीं.

¹ : अहराम की हालत में भुशबू के इस्ति'माल के अहकाम की तफसील सुवालन
 जवाबन आगे आ रही है. हां अहराम की यादरें अगर पहन ली हैं मगर
 अभी तक नियत कर के लब्बैक नहीं कही तो भुशबू लगाना, भुशबूदार कूलों
 के गजरे पहनना सब जाधज है.

जदा शरीफ़ ता मक्कअे मुअज़्ज़मा زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا :

जदा शरीफ़ के हवाएँ अडे पर पडॉय कर अपना दस्ती सामान
 लिये लब्बैक पढते हुअे धउक्ते दिल् से जहाज से उतरिये और
 कस्टम शेड से मुत्तसिल काउन्टर पर अपना पासपोर्ट और
 हेल्थ सर्टीफ़िकेट येक करवा कर शेड में जम्अ शुदा सामान में से
 अपना सामान शनाप्त कर के अला-हदा कर लीजिये, कस्टम
 वगैरा से इरागत और बस की रवानगी की कारवाएँ में
 तकरीबन 6 ता 8 घन्टे सई हो सकते हैं. भूब सभ्र व छिम्मत
 से काम लीजिये. जदा शरीफ़ के हज टर्मीनल से मक्कअे मुकर्रमा
 زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا का इंसिला तकरीबन अेक या डेढ घन्ट में तै
 हो सकता है मगर गाडियों के रश और कानूनी कारवाएँयों के
 सबब कछ किस्म की परेशानियां दरपेश आ सकती हैं, बस
 वगैरा का भी इन्तिज़ार करना पउता है, हर मौकअ पर सभ्रो
 रिजा के पैकर बन कर लब्बैक पढते रहिये. गुस्से में आ कर
 मुत्तजिमीन के मु-तअद्लिक बउबउ और शोरो गुल करने से
 मसाईल हल होने के बज्जअे मजीद उलजने, सभ्र का सवाब
 बरबाद होने और مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ इज्जअे मुस्लिम, गीबतों,
 इल्जाम तराशियों और बद् गुमानियों वगैरा गुनाहों में इंसने
 की सूरतें पैदा हो सकती हैं. अेक युप सो¹⁰⁰ सुभ. रवानगी की
 तरकीब बन जाने पर मअ सामान अपने मुअद्लिम की बस
 में लब्बैक पढते हुअे मक्कअे मुअज़्ज़मा زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا की
 तरइ रवाना हो जाईये.

मदीने की परवाज वालों का अहराम : जिन की वतन से बराहे रास्त मदीनअे मुनव्वरह **لَا إِكْرَاهَ فِي دِينِكُمْ** की परवाज हो उन को येह सफ़र बिगैर अहराम करना है, मदीना शरीफ़ से जब मक्कअे मुकर्रमा **لَا إِكْرَاهَ فِي دِينِكُمْ** की तरफ़ आने लगेँ उस वक्त मस्जिदुन्न-अविय्यिशशरीफ़ **عَلَىٰ صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** से अहराम की नियत कीजिये. या जुल हुलैफ़ा (अब्यारे अली) से अहराम की नियत कीजिये.

मुअल्लिम की तरफ़ से सुवारी : जद्दा शरीफ़ से मक्कअे मुकर्रमा, मदीनअे मुनव्वरह, मिना, अ-रफ़ात, मुज्दलिफ़ा और वापसी में फ़िर मक्का शरीफ़ से जद्दा शरीफ़ तक पड़ोयाना नीज अपने वतन से बराहे रास्त मदीनअे मुनव्वरह **لَا إِكْرَاهَ فِي دِينِكُمْ** की परवाज वालों को भी येही सहूलतें देना मुअल्लिम के जिम्मे है और इस की फ़ीस आप से पहले ही वसूल की जा चुकी है. जब आप पहली बार मक्का शरीफ़ मुअल्लिम के दफ़तर पर उतरेंगे उस वक्त का खाना और अ-रफ़ात शरीफ़ में दो पहर का खाना भी मुअल्लिम के जिम्मे है.

सफ़र के 26 म-दनी इल

❁ यलते वक्त अजीजों, दोस्तों से कुसूर मुआफ़ करवाँये और जिन से मुआफ़ी तलब की जाअे उन पर लाजिम है के दिल से मुआफ़ कर दें. हदीसे मुबारक में है के जिस के पास उस का (ईस्लामी) भाई मा'जिरत लाअे, वाजिब है के कबूल कर ले (या'नी मुआफ़ कर दे) वरना हौजे कौसर पर आना

ن मिलेगा. (इतावा २-अविद्या मुभर्रज, जि. 10, स. 627) ❀ किसी की अमानत पास हो या कर्जा हो तो लौटा दीजिये, जिन के माल नाहक लिये हों वापस कर दीजिये या मुआफ़ करवा लीजिये, पता न थले तो उतना माल हुं-करा को दे दीजिये ❀ नमाज, रोज़ा, ज़कात, जितनी इबादात जिम्मे हों अदा कर लीजिये और तापीर के गुनाह की तौबा भी कीजिये. इस सफ़रे मुबारक का मकसद सिर्फ़ अब्दुल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की प्युशनूदी हो. रियाकारी और तकब्बुर से जुदा रहिये ❀ औरत के साथ जब तक शोहर या महरम बालिग़ काबिले इत्मीनान न हो जिस से निकाल हमेशा को हराम है सफ़र हराम है, अगर करेगी हज हो जायेगा मगर हर कदम पर गुनाह लिप्पा जायेगा. (बहार शरीअत, जि. 1, स. 1051) (येह हुकम सिर्फ़ सफ़रे हज के लिये ही नहीं, हर सफ़र के लिये है) ❀ किराअे की गाडी पर जो कुछ सामान भार (LOAD) करना हो, पहले से दिप्पा दीजिये और इस से जाईद बिगैर इजाजते मालिक गाडी में न रहिये. **डिकायत** : सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को सफ़र पर रवाना होते वक्त किसी ने दूसरे को पछोथाने के लिये ખत पेश किया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरमाया : अंठ किराअे पर लिया है, सुवारी वाले से इजाजत लेनी होगी क्यूं के मैं ने उस को सारा सामान दिप्पा दिया है और येह खत जाईद शै है. (ماخوذةً من أحیاء العلویم ۱ ج ص ۲۰۳) ❀ हदीसे पाक में है के : “जब तीन³ आदमी सफ़र को जायें तो अपने में से अेक को अमीर बना लें.”

(अबू दाउद ज ३ व ०१ हदीथ २१०८) ईस से कामों में ईन्तजाम रहता है ✨
 अभीर उसे बनामें जो भुश अफ्लाक, समजदार, दीनदार और
 सुन्नतों का पाबन्द हो ✨ अभीर को याहिये के हम सफ़र
 ईस्लामी भाईयों की बिदमत करे और उन के आराम का पूरा
 भयाल रभे ✨ जब सफ़र पर जाने लगें तो ईस तरह रुफ़सत
 हों जैसे दुन्या से रुफ़सत होते हों. यलते वक्त येह दुआ पढिये :

**اللَّهُمَّ إِنَّا نَعُوذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ
 الْمُنْقَلَبِ وَسُوءِ الْمُنْظَرِ فِي الْمَالِ وَالْأَهْلِ وَالْوَالِدِ**

वापसी तक माल व अहलो ईयाल मडकूज रहेंगे ✨ लिबासे
 सफ़र पहन कर अगर वक्ते मक़रुह न हो तो घर में यार
 रक़अत नफ़ल अल हम्द व कुल से पढ कर बाहर निकलें. वोह
 रक़अतें वापसी तक अह्ल व माल की निगहबानी करेंगी ✨
 घर से निकलते वक्त आ-यतुल कुर्सी और قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ से
 तक तब्बत के सिवा पांच सूरतें, सब
 बिस्मिल्लाह के साथ पढिये, आबिर में भी बिस्मिल्लाह शरीफ़
 पढिये. إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ रास्ते भर आराम रहेगा. नीज उस वक्त

﴿إِنَّ الزَّيْ فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَأْدِكَ إِلَىٰ مَعَادٍ﴾ (प २०, القصص ८०)

(तर-ज-मअे क-जुल ईमान : भेशक जिस ने तुम पर कुरआन
 इर्ज़ किया वोह तुम्हें डेर ले जायेगा जहां डिरना याहते हो) अेक

बार पढ ले, बिलभैर वापस आयेगा ❁ मक़रुह वक्त न हो
 तो अपनी मस्जिद में दो रक़अत नफ़ल अदा कीजिये.

हवाय़ ज़हाज़ के गिरने और जलने से अमन में रहने की

दुआ : ❁ हवाय़ ज़हाज़ में सुवार हो कर अक्वव आभिर दुरुद
 शरीफ़ के साथ येह दुआये मुस्तफ़। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الصَّدْمِ وَأَعُوذُ بِكَ

तरजमा : या अल्लाह ! मैं तेरी पनाह याहता हूँ, धमस्त गिरने से और तेरी पनाह याहता हूँ

مِنَ التَّرْدِيّ ط وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْغَرَقِ وَالْحَرَقِ

बुलन्दी से गिरने और तेरी पनाह याहता हूँ डूबने, जलने

وَالْهَرَمِ وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ يَتَخَبَّطَنِي الشَّيْطَانُ

और बुढापे¹ से और तेरी पनाह तलब करता हूँ इस से के शैतान

عِنْدَ الْمَوْتِ ط وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ أَمُوتَ فِي سَبِيلِكَ

मुझे मौत के वक्त वस्वसे दे और तेरी पनाह याहता हूँ इस से के तेरी राह में मैं पीठ

مَدْبِرًا وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ أَمُوتَ لِدِينَا ط

केरता मर जाऊँ और तेरी पनाह याहता हूँ इस से के सांप के उसने से धन्तिकाल करुं.

دينه

1 : या'नी ऐसे बुढापे से जिस से जिन्दगी का अस्ल मक़सूद फ़ौत हो जाये
 या'नी धल्म व अमल जाते रहें. (भिरआत, जि. 4, स. 3)

बुलन्द मकाम से गिरने को तरदी और जलने को उरक कहते हैं। हुजूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अइलाक येह दुआ मांगा करते थे। येह दुआ तय्यारे के लिये मप्सूस नहीं, यूंके ईस दुआ में “बुलन्दी से गिरने” और “जलने” से भी पनाह मांगी गई है और उवाँ सइर में येह दोनों अतरात मौजूद होते हैं लिहाजा उम्मीद है के ईसे पढने की अ-र-कत से उवाँ जहाज हादिसे से मडकूज रहे रेल या बस या कार वगैरा में **بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُ أَكْبَرُ، الْحَمْدُ لِلَّهِ** और **سُبْحَانَ اللَّهِ** सब तीन तीन बार, **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** अेक बार, फिर येह कुरआनी दुआ पढिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** सुवारी उर किस्म के हादिसे से मडकूज रहेगी। दुआ येह है :

سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرْنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ﴿١٤﴾ وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ﴿١٥﴾
 (अ-र-कत २० प १४-१५) तर-ज-मअे क-जुल ईमान : पाकी है उसे जिस ने ईस सुवारी को उमारे अस में कर दिया और येह उमारे भूते (या'नी ताकत) की न थी और बेशक उमें अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) की तरफ पलटना है जब किसी मन्जिल पर उतरें तो दो रकअत नइल पढ़ें के (अगर वक्ते मकइल न हो तो) सुन्नत है जब किसी मन्जिल पर उतरें येह दुआ पढिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उस मन्जिल में क्यू करते वक्त कोई यीज नुकसान न देगी। दुआ येह है :

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

में अइलाह उ-र-क के कामिल कलिमात के वासिते से सारी मज्लूक के शर से पनाह मांगता हूँ.

❁ “یا صمد” 134 بار روزانہ پڑھیے بھوک اور پیاس سے امان رہے گا ❁ جب دشمن یا راجن (یا’نی ڈاک) کا پوک ڈو سूरमे वि ईलाइ पठ लीजिये ان شاء الله عزوجل हर भला से अमान (या’नी पनाड) मिलेगी ❁ दुश्मन के पोक के वक्त येड दुआ पठना बहुत मुकीद है :

اللَّهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِي خُورِهِمْ وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شُرُورِهِمْ

तरजमा : ऐ अल्लाह عزوجل ! मैं तुज को उन के सीनों के मुकाबिल करता हूँ और उन की बुराईयों से तेरी पनाड मांगता हूँ.

❁ अगर कोई चीज गुम हो जाये तो येड कहे :

يَا جَامِعَ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝ اجْمَعْ بَيْنِي وَبَيْنَ ضَالَّتِي

(तरजमा : ऐ लोगों को उस दिन जम्न करने वाले जिस में शक नहीं, बेशक अल्लाह عزوجل वादे का भिलाइ नहीं करता, (मुझे) मेरे और मेरी गुमी चीज के दरमियान जम्न कर दे) ان شاء الله عزوجل मिल जायेगी.

❁ हर बुलन्दी पर चढते اللهُ اكبر कलिये और ढाल (या’नी ढलवान) में उतरते اللهُ سبحانه ❁ सोते वक्त अेक बार आ-यतुल कुर्सी हमेशा पढिये के योर और शैतान से अमान (या’नी पनाड) है ❁ जब किसी मुश्किल में मदद की जरूरत पडे तो हदीसे पाक में है के ईस तरह तीन^३ बार पुकारिये : “يَا عِبَادَ اللَّهِ اعِينُونِي”

या'नी औ अल्लाह उँक उँक के बन्दो ! मेरी मदद करो. (حُضْنِ حَاصِينِ ص ۸۲)

सहर से वापसी में भी बयान कर्दा गुजश्ता आदाबे सहर को मल्लूज रभिये लोगों को याहिये के हाज्ज का इस्तिफाल करें और उस के घर पछोयने से कबल हुआ कराओं के हाज्ज जब तक अपने घर में कदम नहीं रभता उस की हुआ कबूल है वतन पछोय कर सब से पहले अपनी मस्जिद में मक़रुह वक्त न हो तो दो रक़त नइल अदा कीजिये दो रक़त घर आ कर भी (मक़रुह वक्त न हो तो) अदा कीजिये फिर सब से पुर तपाक तरीके से मुलाकात कीजिये. (तइसीली मा'लूमात के लिये बहारे शरीअत जिल्द 1 डिस्सा 6 सइहा 1051 ता 1066, इतावा र-अविध्या मुभर्रज्ज जिल्द 10 सइहा 726 ता 731 से मुता-लआ इरमा लीजिये)

“या अल्लाह” के छ हुइइ की निरुमत से सहर में नमाज के 6 म-दनी इल

१ शरअन मुसाफिर वोह शप्स है जे तीन³ दिन के इंसिले तक जाने के इरादे से अपने मकामे इकामत म-सलन शहर या गाँ से बाहर हो गया. जुशकी में सहर पर तीन³ दिन की मसाइत से मुराद साढे सत्तावन मील (तकरीबन 92 किलो मीटर) का इंसिला है. (इतावा र-अविध्या मुभर्रज्ज, जि. 8, स. 243, 270, बहारे शरीअत, जि. 1, स. 740, 741)

२ जहां सहर कर के पछोयें और पन्दरह या जियादा दिन कियाम की निरुमत है तो अब मुसाफिर न रहे बल्के मुकीम हो गये, औसी सूरत में नमाज में कसर नहीं करेंगे. जब पन्दरह दिन से कम रहने की निरुमत हो तो अब नमाजों में कसर करेंगे या'नी जोहर, असर और इशा की इर्ज रक़तों में यार यार

इर्जों की जगह दो दो रक़्अत इर्ज अदा करेंगे. इज और मगरिब में कसर नहीं, बाकी तमाम सुन्नतों, वित्र वगैरा सब पूरी अदा करें ﴿3﴾ बे शुमार हुज्जाजे किराम शव्वालुल मुकर्रम या जी का'दतुल हराम में **मक्कअे मुकर्रमा** **رَادَا اللّٰهَ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** पड़ोय जाते हैं. यूंके अय्यामे हज आने में काफ़ी वक्त बाकी होता है लिहाज़ा यन्द् ही दिनो के बा'द उन्हें तकरीबन 9 दिन के लिये **मदीनअे मुनव्वरह** **رَادَا اللّٰهَ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** भेज दिया जाता है, इस सूरत में वोह मदीना शरीफ़ में मुसाफ़िर ही रहते हैं बल्के इस से कब्ल मक्के शरीफ़ में 15 दिन से कम वक्फ़ा मिलने की सूरत में वहां भी मुसाफ़िर ही छोते हैं. हां मक्के या मदीने में या'नी अेक ही शहर के अन्दर 15 या ज़ियादा दिन रहने का यकीनी मौकअ मिलने की सूरत में एकामत की निय्यत दुरुस्त होगी ﴿4﴾ जिस ने एकामत की निय्यत की मगर उस की हालत बताती है के पन्दरह दिन न ठहरेगा तो निय्यत सहीह नहीं म-सलन हज करने गया और जुल हिज्जतिल हराम का मदीना शुइअ छो जाने के बा पुजूद् पन्दरह दिन **मक्कअे मुअज़्जमा** **رَادَا اللّٰهَ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** में ठहरने की निय्यत की तो येह निय्यत बेकार है के जब हज का एरादा किया है तो (15 दिन इस को मिलेंगे ही नहीं के 8 जुल हिज्जतिल हराम) **मिना शरीफ़** (और 9 को) **अ-रफ़ात शरीफ़** को उर्र जाओगा फिर एतने दिनो तक (या'नी 15 दिन मुसल्लल) **मक्कअे मुअज़्जमा** **رَادَا اللّٰهَ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** में क्युंकर ठहर सकता है ? **मिना शरीफ़** से वापस हो कर निय्यत करे तो सहीह है. जब के वाकेई 15 या ज़ियादा दिन **मक्कअे मुअज़्जमा** **رَادَا اللّٰهَ शَرَفًا وَتَعْظِيمًا** में ठहर सकता हो, अगर उन्ने गालिब हो के 15

दिन के अन्दर अन्दर मदीनअे मुनव्वरउ शَرَفًا وَتَعْظِيمًا या वतन के लिये रवाना हो जायेगा तो अब भी मुसाफिर है ﴿5﴾ ता हमे तहरीर जद्दा शरीफ़ आबादी के खातिमे से मक्कअे मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا की आबादी के आगाज तक का फ़ासिला ७ जरीअअे सडक 53 किलो मीटर और ७ जरीअअे उवाँ जडाज 47 किलो मीटर है. और जद्दा शरीफ़ की आबादी के खातिमे से ले कर अ-रफ़ात शरीफ़ तक अेक सडक से सफ़र 78 किलो मीटर और दीगर दो² सडकों से 80 किलो मीटर का सफ़र है. जब के मतार (AIRPORT) से उवाँ फ़ासिला 67 किलो मीटर है. लिहाजा जद्दा शरीफ़ से मक्कअे मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا जाँ तब भी और बराहे रास्त अ-रफ़ात शरीफ़ पहाँयें तब भी वोड पूरी नमाँ पढ़ेंगे ﴿6﴾ उवाँ जडाज में फ़र्ज, वित्र, सुन्नतें और नवाफ़िल वगैरा तमाम नमाँ दौराने परवाज पढ सकते हैं, एआदा (या'नी दोबारा पढने) की हाजत नहीं. फ़र्ज, वित्र और सुन्नते इज्ज किब्ला इ षडे हो कर काँटे के मुताबिक अद्दा कीजिये. तय्यारे की दूम, हम्माम व क्रियन वगैरा के पास षडे षडे नमाज पढना मुम्किन होता है. बाकी सुन्नतें और नवाफ़िल दौराने परवाज अपनी निशस्त पर बैठे बैठे भी पढ सकते हैं. एस हालत में किब्ला इ होना शर्त नहीं. (मजीद मा'लूमात के लिये मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ किताब "नमाज के अहकाम" में शामिल रिसाला "मुसाफ़िर की नमाज" का मुता-लआ कीजिये)

रुके हैबत से जब मुजरिम तो रहमत ने कडा षढ कर
 यले आओ यले आओ येड घर रहमान का घर है

(जौके ना'त)

“کریم” کے تین ہرزہ کی نسبت سے 3

ہرامی نے مستہ : ﴿1﴾ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ :

اپنے घर والوں में से यार सो की शफ़ात करेगा और गुनाहों से अइसा निकल जायेगा जैसे उस दिन के मां के पेट से पैदा हुवा. (مُسْنَدُ الْبُرَّارِ ج 8 ص 169 حديث 3196)

﴿2﴾ हज़ी की मग़ि़रत हो जाती है और हज़ी जिस के लिये इस्तिग़ार करे उस के लिये भी मग़ि़रत है. (مَجْمَعُ الرّوَاِئِدِ ج 3 ص 483 حديث 5287)

﴿3﴾ जो हज़ या उम्रह के लिये निकला और रास्ते में मर गया उस की पेशी नहीं होगी, न छिसाब होगा और उस से कडा़ जायेगा : يا'नी तू जन्नत में दाख़िल हो जा. (الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ ج 4 ص 111 حديث 883)

हर कदम पर सात करोड नेकियां : मेरे आका आ'ला

हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ الرَّحْمٰن رِيسَالِیْهِ

मुबा-रका “अन्वारुल बिशारह” में पैदल चलने की रग़्बत दिलाते हुअे इरमाते हैं : “हो सके तो पियादा

(पैदल मक्कअे मुकर्रमा شَرَفًا وَتَعْظِيمًا से मिनना, अ-रफ़ात वगैरा) जाओ के जब तक मक्कअे मुअज़्ज़मा पलट कर

आओगे हर कदम पर सात करोड नेकियां लिखी जायेंगी. येह नेकियां तफ़्मीनन (या'नी अन्दाज़न) अठतर परब

यालीस अरब आती हैं और अद्लाह عَزَّوَجَلَّ का इज़्ल उस के नबी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सदके में इस उम्मत पर ओ शुमार है.” (इतावा र-अविख्या, जि. 10, स. 746)

सगे मदीना غُفَى عَنْهُ अर्ज करता है के आ'ला हजरत
 رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने पुराने तवील रास्ते का हिसाब लगाया है.
 अब यूँके मक्का मुअज़्जमा رَزَاذَهَا اللَّهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا से मिना
 शरीफ़ के लिये पहाड़ों में सुरंगें (TUNNELS) निकाली गई
 हैं और पैदल चलने वालों के लिये रास्ता मुफ्तसर और
 आसान हो गया है इस हिसाब से नेकियों की ता'दाद में
 भी इर्क वाकेअ होगी. وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ أَحَقُّمْ عَزَّ وَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

पैदल हाजि से इरिशते गले मिलते हैं : इरमाने
 मुस्तफ़ि صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : जब हाजि सुवार हो कर आते
 हैं तो इरिशते उन से मुसा-इहा करते (या'नी हाथ मिलाते) हैं
 और जो पैदल चल कर आते हैं इरिशते उन से मुआ-नका करते
 (या'नी गले मिलते) हैं. (اتحاف السادة للزبيدي ج ٤ ص ٤٦٥)

दौराने हज के लिये हुकमे कुरआनी : पारह 2
 सू-रतुल ब-करह आयत नम्बर 197 में एशदि रब्बानी है :
 فَلَا رَفْتَ وَلَا فُسُوقًا وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ
 एमान : तो न औरतों के सामने सोहबत का तजकिरा हो, न
 कोई गुनाह, न किसी से जगडा हज के वक्त तक.

इस आयते मुआ-रका के तहत सदरुशशरीअह,
 बहरतारीकह हजरते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद
 अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इरमाते हैं : (हज
 में) तो इन बातों से निहायत ही दूर रहना चाहिये, जब
 गुस्सा आये या जगडा हो या किसी मा'सियत (या'नी ना

इरमानी) का भयाल हो झौरन सर जुका कर कल्म की तरफ़ मु-तवज्जेह हो कर ईस आयत की तिलावत करे और दो अेक बार लाहौल शरीफ़ पढे, येह बात जाती रहेगी. येही नहीं के (पुद्द) ईसी (या'नी हाज) की तरफ़ से ईब्तिदा हो या ईस के रु-इका (साथियों) ही के साथ जिदाल (या'नी जगडा) हो जाअे बल्के आ'ज अवकात ईम्तिहानन राह यलतों को पेश कर दिया जाता है के बे सबभ उलजते बल्के सब्बो शत्म (या'नी गाली गलोय) व ला'न ता'न को तय्यार होते हैं, ईसे (या'नी हाज को) हर वक्त होशियार रहना याहिये, मबादा (या'नी अैसा न हो. पुद्द न करे) अेक दो कलिमे (या'नी जुम्लों) में सारी मेहनत और रुपिया भरबाद हो जाअे.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1061)

संभल कर पाँ रभना हाजियो ! राहे मदीना में
 कहीं अैसा न हो सारा सफ़र बेकार हो जाअे
 صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلٰی مُحَمَّدٍ

हाजु के लिये सरमायअे धश्क झर्री है : भुश नसीब हाजियो ! हाज के लिये जिस तरह सरमायअे जाहिरि की झरत है उसी तरह सरमायअे बातिनी या'नी सरमायअे ईश्को महब्बत की ली सप्त हाजत है और येह सरमाया आशिकाने रसूल के यहां मिलता है. डिकायत : सरकारे बगदाद, हुजूरे गौसे आ'जम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बारगाडे

मुअज़्ज़म में अेक साखिब हाज़िर हुअे, गौसे पाक ढरहे लल्ले ले ढरहे लल्ले ले ढरहे लल्ले ले
 ने हाज़िरीन से इरमाया : येड अलमी अलमी बैतुल मुकदस से
 अेक कदम में आअे हें ताके मुज़ से आदाबे ईशक सीषें.
 (اٰخِرُ الْاٰخِرَاتِ، اٰبْتَصْرُفْ) अद्लाड एज़ुवजल की उन पर रडमत डो और
 उन के सदके डमारी बे हिसाब मग़िरत डो.

اٰمِیْنِ بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاٰمِیْنِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

किसी आशिके रसूल से निस्मत काधम कर लीजिये.....! :

अेक भा करामत वली
 भी सरमायअे ईशक के हुसूल की भातिर अपने से डे वली की
 बारगाड में हाज़िरी देता है इर डम तो किस शुमारो कितार
 में हें ! लिहाजा डमें भी याहिये के किसी आशिके रसूल से
 निस्मत काधम कर के उस से आदाबे ईशक सीषें और इर
 सइरे मदीना ईप्तिवार करें.

पहले डम सीषें करीना इर मिले मुशिट से सीना

यल पडे अपना सईना और पहोंय जअें मदीना

صَلَّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

प्यारे हाजियो ! अब आशिकाने रसूल हाजियों की
 जजबो मस्ती लरी दो अज्जबो गरीब हिकायात पढिये और
 जूमिये :

1 **पुर असरार हाजु :** उजरते सय्यिदुना हुजैल बिन
 र्थयाज رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं : मैदाने अ-रईत में हुजुजु
 मशगूले हुआ थे, मेरी नजर अेक नौ जवान पर पडी जो सर
 रुकाअे शर्म-सार षडा था, मैं ने कडा : औ नौ जवान ! तू भी
 हुआ कर. वोड बोला : मुजे तो र्थस बात का डर लग रडा है के
 जो वक्त मुजे मिला था शायद वोड जाता रडा, अब किस मुंड
 से हुआ कइं ! मैं ने कडा : तू भी हुआ कर ताके عَزَّ وَجَلَّ
 तुजे भी र्थन हुआ मांगने वालों की ब-र-कत से काम्याब
 इरमाअे. उजरते सय्यिदुना हुजैल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं :
 उस ने हुआ के लिये हाथ उठाने की कोशिश की, के अेक दम उस
 पर रिक्त तारी डो गई और अेक यीष उस के मुंड से निकली,
 तडप कर गिरा और उस की रुड क-इसे उन्सुरी से परवाज कर
 गई. (كَشَفَ الْمَحْجُوبَ مِنْ ۳۱۳) अड्लाड عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रडमत डो
 और उन के सदके डमारी बे डिसाब मगिरत डो.

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

2 **गूढ होने वाला हाजु :** उजरते सय्यिदुना रुन्नून
 मिसरी رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي عَلَيْهِ इरमाते हैं : मैं ने मिना शरीफ में अेक
 नौ जवान को आराम से बैठा देषा जब के लोग कुरबानियों में
 मशगूल थे. र्थतने में वोड पुकारा : औ मेरे ध्यारे अड्लाड عَزَّ وَجَلَّ !

तेरे सारे बन्दे कुरबानियों में मशगूल हैं, मैं भी तेरी बारगाह में अपनी जान कुरबान करना चाहता हूँ, मेरे मालिकُ عَزَّوَجَلَّ ! मुझे कबूल इरमा. यह कह कर अपनी उंगली गले पर डेरी और तडप कर गिर पडा, मैं ने करीब जा कर देखा तो वोह जान दे चुका था. (كَشَفَ الْمَجُوبُ ص ३१६) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सटके हमारी बे हिसाब मगि़रत हो.

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ

येह एक जान क्या है अगर हो करोड़ों

तेरे नाम पर सब को वारा करूं मैं

(सामाने बफ़िशिश)

صَلَّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

अपने नाम के साथ हाजु लगाना कैसा ? : मोहतरम हाजियो ! देखा आप ने ! उज हो तो औसा ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन दोनों बा ब-र-कत हाजियों के तुकैल हमें भी रिक्तते कल्मी नसीब इरमाओ. याद रभिये ! हर एबादत की कबूलिय्यत के लिये एप्लास शर्त है. आह ! अब एल्मे दीन और अख्शी सोहबत से दूरी की बिना पर अक्सर एबादात रियाकारी की नज़र हो जाती हैं. जिस तरह अब उमूमन हर काम में नुमूदो नुमाईश का अमल दप्ल उरुरी समजा जाने लगा है एसी तरह उज जैसी अजीम सआदत भी दिभावे की भेंट यढती जा रही है, म-सलन बे शुमार अइराद उज अदा करने के बा'द अपने आप को अपने

મુંહ સે બિલા કિસી મસ્લહત વ ઝરૂરત કે હાજી કહતે ઓર
 અપને કલમ સે લિખતે હૈં. આપ શાયદ ચૌક પડે હોંગે કે ઈસ મેં
 આખિર ક્યા હરજ હૈ? હાં! વાકેઈ ઈસ સૂરત મેં કોઈ હરજ ભી
 નહીં કે લોગ આપ કો અપની મરઝી સે હાજી સાહિબ કહ કર
 પુકારેં મગર પ્યારે હાજિયો! અપની ઝબાન સે અપને આપ કો
 હાજી કહના અપની ઈબાદત કા ખુદ એ'લાન કરના નહીં તો
 ઓર ક્યા હૈ? ઈસ કો ઈસ ચુટકુલે સે સમઝને કી કોશિશ કીજિયે :
ચુટકુલા : ટ્રેન છુક છુક કરતી અપની મન્ઝિલ કી તરફ રવાં
 દવાં થી, દો² શખ્સ કરીબ કરીબ બૈઠે થે એક ને સિલ્સિલએ
 ગુફ્ત-ગૂ કા આગાઝ કરતે હુએ પૂછા : જનાબ કા ઈસ્મે શરીફ ?
 જવાબ મિલા : “હાજી શફીક” ઓર આપ કા મુબારક નામ ?
 અબ દૂસરે ને સુવાલ કિયા, પહલે ને જવાબ દિયા : “નમાઝી
 રફીક” હાજી સાહિબ કો બડી હૈરત હુઈ, પૂછ ડાલા : અજી
 નમાઝી રફીક ! યેહ તો બડા અજીબ સા નામ લગતા હૈ.
 નમાઝી સાહિબ ને પૂછા : બતાઈયે આપ ને કિતની બાર હજ
 કા શરફ હાસિલ કિયા હૈ? હાજી સાહિબ ને કહા : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ !
 પિછલે સાલ હી તો હજ પર ગયા થા. નમાઝી સાહિબ કહને
 લગે : આપ ને ઝિન્દગી મેં સિર્ફ એક બાર હજજે બૈતુલ્લાહ કી
 સઆદત હાસિલ કી તો, બબાંગે દુહુલ અપને નામ કે સાથ
 “હાજી” કહને કહલવાને લગે, જબ કે બન્દા તો બરસહા
 બરસ સે રોઝાના પાંચ⁵ વક્ત નમાઝ અદા કરતા હૈ, તો ફિર
 અપને નામ કે સાથ અગર લફઝ “નમાઝી” કહ દે તો ઈસ મેં
 આખિર તઅજ્જુબ કી કૌન સી ખાત હૈ !

हज मुबारक का बोर्ड लगाना कैसा.....? : समज
 गअे ना ! आज कल अज्जब तमाशा है ! नुमूदो नुमाईश की
 ईन्तहा डो गई, हाज साहिब हज को जाते और जब लौट
 कर आते हैं तो बिगैर किसी अख्ठी निय्यत के पूरी ईमारत
 बर्की कुमकुमों से सजाते और घर पर “हज मुबारक” का बोर्ड
 लगाते हैं, बल्के तौबा ! तौबा ! कई हाज तो अहराम के
 साथ ખૂब तसावीर बनाते हैं. आबिर येह क्या है ? क्या
 भागे हुअे मुजरिम का अपने रहमत वाले आका
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में ईस तरह धूमधाम से जाना
 मुनासिब है ? नहीं हरगिज नहीं बल्के रोते हुअे और आहें
 भरते हुअे, लरजते, कांपते हुअे जाना याडिये.

आंसूओं की लडी बन रही डो और आहों से इटता डो सीना
 विई लब डो “मदीना मदीना” जब यले सूअे तयबा सईना
 जब मदीने में डो अपनी आमद डो जब में देभूं तेरा सब्ज गुम्बद
 डियकियां बांध कर रोडिं भेडद काश ! आ जाअे अैसा करीना
 صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बसरा से पैदल हज ! : बिगैर अख्ठी निय्यत मडूज
 लज्जते नईस व हुब्बे जाह के सभब अपने मकान पर हज
 मुबारक का बोर्ड लगाने वालों और अपने हज का ખूब
 यरया करने वालों के लिये अेक कमाल द-रजे की आजिजी

पर मुश्तमिल डिक्वायत पेशे बिदमत है, युनान्चे उजरते सय्यिदुना सुइयान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ७४ के लिये असरा से पैदल निकले. किसी ने अर्ज की : आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ सुवार क्यूं नहीं डोते ? इरमाया : क्या त्मागे हुअे गुलाम को अपने मौला عَزَّوَجَلَّ के दरबार में सुल्ह के लिये सुवारी पर जाना याडिये ? मैं ँस मुकदस सर जमीन में जाते हुअे बहुत जियादा शर्म मडसूस करता हूं. (تَنْبِيْهُ الْمُفْتَرِيْنَ ص २११) अल्लाड एज्जुल की उन पर रडमत डो और उन के सदके डमारी बे हिसाब मगिरत डो.

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

अरे अररे मदीना ! तू भुशी से डंस रडा है

दिवे गमजदा जो पाता तो कुछ और बात डोती !

मैं तवाइ के काबिल नहीं : हुजजतुल इस्लाम उजरते सय्यिदुना इमाम अबू डामिद मुडम्मद बिन मुडम्मद बिन मुडम्मद गजाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي नकल करते हैं : अक भुजुर्ग से सुवाल हुवा : क्या आप कत्मी का'बअे मुशररफ़ा عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى से अन्डर दाबिल हुअे हैं ? (उन्डों ने बतौरे इन्किसारी) इरमाया : कडं बैतुल्वाड शरीइ और कडं मेरे गन्डे कदम ! मैं तो अपने कदमों को बैतुल्वाड शरीइ के तवाइ के त्मी काबिल नहीं समजता, क्यूंके येड तो मैं डी जानता हूं के येड कदम

कहां कहां और कैसी कैसी जगहों पर यले फिरे हैं !
 (احياء العلوم ج ١ ص ٢٤٥) अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और
 उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़ि़रत हो।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

उन के दियार में तू कैसे यले फिरेगा ?

अतार तेरी जुरअत ! तू जायेगा मदीना !!

(वसाएले बफ़िश, स. 320)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

हाज्र पर हुब्बे जाह व रिया के सप्त हम्बे : प्यारे
 डाजियो ! भीठे मदीने के मुसाफ़िरो ! गादिबन नमाज़ रोज़ा
 वगैरा के मुकाबले में उज में बहुत ज़ियादा बल्के कदम कदम पर
 “रियाकारी” के षतरात पेश आते हैं, उज अक ऐसी एबादत
 है जो अक तो अलल अ’लान की जाती है और दूसरे हर अक को
 नसीब नहीं होती, एस लिये लोग हाज्र से आजिजी से मिलते,
 भूब अहतिराम बजा लाते, हाथ यूमते, गजरे पहनाते और
 दुआओं की दर-प्वास्तें करते हैं. जैसे मौकअ पर हाज्र सप्त
 एम्तिदान में पउ जाता है क्यूंके लोगों के अकीदत मन्दाना सुलूक
 में कुए ऐसी “लज़्ज़त” होती है के एस की वजह से एबादत की
 बडी से बडी मशक़्त ली इल मा’लूम होती और बसा अवकात
 बन्दा हुब्बे जाह और रियाकारी की तबाह कारी की गहराई

में गिर चुका होता है मगर उसे कानों कान धंस की जबर तक नहीं
 होती ! उस का जो याहता है के सब लोगों को मेरे उज पर जाने की
 धत्तिलाअ हो जाओ, ताके मुज से आ आ कर मिलें, मुबारक
 बाटियां पेश करें, तोड़के टें, मेरे गले में झूलों के डार डालें, मुज से
 दूआओं के लिये अर्ज करें, मदीने में सलाम अर्ज करने की गिडगिडा
 कर दर-ज्वास्त करें और मुझे रुज्सात करने अरपोर्ट तक आओं
 वगैरा वगैरा ज्वाहिशत के हुजूम और धल्मे दीन की कमी के
 सबब डाज्जु बा'ज अवकात “शैतान का जिलोना” बन कर रह
 जाता है लिहाजा शैतान के वार से जबरदार रहते हुओ, अपने
 दिल के अन्दर पूब आजिजी पैदा कीजिये, नुमाईशी अन्दाज से
 जुद को बयाईये. जुदा की कसम ! रियाकारी का अजाब किसी से
 भी जरदाशत नहीं हो सकेगा. दा'वते धस्लामी के धशाअती
 धदारे मक-त-जतुल मदीना की मत्बूआ 616 सइहात पर
 मुशतमिल किताब, “नेकी की दा'वत (हिस्सओ अव्वल)” सइहा
 79 पर इरमाने मुस्तइ है : “بَشَكَ
 جَلَنَمَ مِمَّنْ وَادِي هَيْ جِسَّ سَ جَلَنَمَ رِجَانَا يَار سِ
 مَرْتَبَا پَنَا ه مَانْغَتَا ه. اَدَلَا ه عَزَّ وَجَلَّ نَ يَهَلْ وَادِي اُمْمَتَ
 مَوْلَمَّ دِيَّيْ ه صَاحِبَهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ كَ اُنْ رِيَاكَارِوْ كَ لِيَّيْ تَيَّار
 كِي هَ جِوْ كُورَانِ پَاكْ كَ اَدَاكْ, غَيْرُ دَلَا ه كَ لِيَّيْ س-دَكَا
 كَرْنِ وَالِ, اَدَلَا ه عَزَّ وَجَلَّ كَ دَر كَ اَجْجِ اَوْر رَا هِ جُودَا
 اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ ج ١٢ ص ١٣٦ حديث ١٢٨٠٣) ” (

હાજિયોં કી રિયાકારી કી દો મિસાલેં : નેકી કી દા'વત હિસ્સએ અવ્વલ સફહા 76 પર હૈ : ﴿1﴾ અપને હજ વ ઉમ્મે કી તા'દાદ, તિલાવતે કુરઆન કી યૌમિય્યા મિકદાર, ૨-જબુલ મુરજજબ વ શા'બાનુલ મુઅઝ્ઝમ કે મુકમ્મલ ઓર દીગર નફ્લી રોઝોં, નવાફિલ, દુરુદ શરીફ કી કસરત વગૈરા કા ઇસ લિયે ઇઝહાર કરના કે વાહ વાહ હો ઓર લોગોં કે દિલોં મેં એહતિરામ પૈદા હો ﴿2﴾ ઇસ લિયે હજ કરના યા અપને હજ કા ઇઝહાર કરના કે લોગ હાજી કહેં, મુલાકાત કે લિયે હાઝિર હોં, ગિડગિડા કર દુઆઓં કી ઇલ્તિજાએ કરેં, ગજરે પહનાએં, તહાઈફ વગૈરા પેશ કરેં. (અગર અપની ઇઝ્ઝત કરવાના યા તોહફે વગૈરા હાસિલ કરના મક્સૂદ ન હો બલકે તહ્દીસે ને'મત વગૈરા અચ્છી અચ્છી નિચ્ચતેં હો તો હજ વ ઉમ્મે કા ઇઝહાર કરને, અઝીઝોં ઓર રિશ્તેદારોં કો જમ્મ કરને ઓર “મહફિલે મદીના” સજાને કી મુમા-ન-અત નહીં બલકે કારે સવાબે આખિરત હૈ) (રિયાકારી કે બારે મેં તફ્સીલી મા'લૂમાત કે લિયે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ “નેકી કી દા'વત” હિસ્સએ અવ્વલ સફહા 63 તા 106 કા મુતા-લઆ કીજિયે)

મેરા હર અમલ બસ તેરે વાસિતે હો

કર ઇખ્લાસ એસા અતા યા ઇલાહી

(વસાઈલે બખ્શિશ, સ. 78)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

યાદ રખને કી 55 ઇસ્તિલાહાત : હાજી સાહિબાન મુન્દ-ર-જએ ઝૈલ ઇસ્તિલાહાત ઓર અસ્માએ મકામાત વગૈરા ઝેહન નશીન ફરમા લેંગે તો ઇસ તરહ આગે મુતા-લઆ કરતે હુએ **﴿1﴾** અશ્હુરે હજ : હજ કે મહીને યા'ની શવ્વાલુલ મુકર્રમ વ જુલ કા'દહ દોનોં મુકમ્મલ ઓર જુલ હિજજહ કે ઇબ્તિદાઈ દસ દિન.

﴿2﴾ એહરામ : જબ હજ યા ઉમ્રહ યા દોનોં કી નિયત કર કે તલ્ખિયા પઢતે હૈં તો બા'ઝ હલાલ ચીઝેં ભી હરામ હો જાતી હૈં, ઇસ કો “એહરામ” કહતે હૈં ઓર મજાઝન ઉન બિગૈર સિલી યાદરોં કો ભી એહરામ કહા જાતા હૈ જિન્હેં મોહરિમ ઇસ્તિ'માલ કરતા હૈ.

﴿3﴾ તલ્ખિયા : યા'ની **طَلِّبِكِ اللَّهُمَّ تَلِّبِكِ...إِنِّع** પઢના.

﴿4﴾ ઇઝતિબાઅ : એહરામ કી ઊપર વાલી યાદર કો સીધી બગલ સે નિકાલ કર ઇસ તરહ ઉલટે કન્ધે પર ડાલના કે સીધા કન્ધા ખુલા રહે.

﴿5﴾ રમલ : અકડ કર શાને (કન્ધે) હિલાતે હુએ છોટે છોટે કદમ ઉઠાતે હુએ કદરે (યા'ની થોડા) તેઝી સે ચલના.

﴿6﴾ તવાફ : ખાનએ કા'બા કે ગિર્દ સાત ચક્કર લગાના, એક ચક્કર કો “શૌત” કહતે હૈં, જમ્અ “અશ્વાત”.

﴿7﴾ **भताई** : जिस जगह में तवाई किया जाता है.

﴿8﴾ **तवाई कुदूम** : **मक्कअ मुअज़्ज़मा** رَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में दाखिल होने पर किया जाने वाला वोह पहला तवाई जो के “ईफ़राद” या “किरान” की नियत से उज करने वालों के लिये सुन्नते मुअक्कदा है.

﴿9﴾ **तवाई ज़ियारत** : इसे तवाई ईफ़ाज़ा भी कहते हैं, येह उज का रुकन है, इस का वक्त 10 जुल डिज्जतिल हराम की सुब्हे सादिक से 12 जुल डिज्जतिल हराम के गुर्बे आफ़ताब तक है मगर 10 जुल डिज्जतिल हराम को करना अज़्ज़ल है.

﴿10﴾ **तवाई वदाअ** : इसे “तवाई रुप्सत” और “तवाई सदर” भी कहते हैं. येह उज के बा’द मक्कअ मुकर्रमा رَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا से रुप्सत होते वक्त हर आफ़ाकी हाज पर वाजिब है.

﴿11﴾ **तवाई उम्रह** : येह उम्रह करने वालों पर ईर्ज़ है.

﴿12﴾ **ईस्तिलाम** : ह-जरे अस्वद को भोसा देना या हाथ या लकड़ी से छू कर हाथ या लकड़ी को यूम लेना या हाथों से उस की तरफ़ ईशारा कर के उन्हें यूम लेना.

﴿13﴾ **सअ्यू** : “सफ़ा” और “मर्वह” के माबैन (या’नी दरमियान) सात फ़ेरे लगाना (सफ़ा से मर्वह तक अेक फ़ेरा होता है यूं मर्वह पर सात यक्कर पूरे होंगे)

- ﴿14﴾ रम्य :** जमरात (या'नी शैतानों) पर कंकरियां मारना.
- ﴿15﴾ उल्क :** अहराम से बाहर होने के लिये लुट्टे हरम ही में पूरा सर मुंडवाना.
- ﴿16﴾ कसर :** यौथाई (1/4) सर का हर बाल कम अऊ कम उंगली के अेक पोरे के बराबर कतरवाना.
- ﴿17﴾ मस्जिदुल हराम :** मक्कअे मुकर्रमा رَدَاهَا اللَّهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا की वोह मस्जिद जिस में का'बअे मुशर्रफा वाकेअ है.
- ﴿18﴾ बाबुस्सलाम :** मस्जिदुल हराम का वोह दरवाजअे मुबा-रका जिस से पहली बार दाखिल होना अफ़जल है और येह जानिबे मशरिक वाकेअ है. (अब येह उमूमन बन्द रहता है)
- ﴿19﴾ का'बा :** एसे "बैतुल्लाह" भी कहते हैं या'नी अल्लाह جَعْر का घर. येह पूरी दुन्या के वस्त (या'नी बीय) में वाकेअ है और सारी दुन्या के लोग एसी की तरफ़ रुख कर के नमाज अदा करते हैं और मुसल्मान परवाना वार एस का तवाफ़ करते हैं.
- का'बअे मुशर्रफा के चार कोनों के नाम :**
- ﴿20﴾ रुकने अस्वद :** जुनूब व मशरिक (SOUTH-EAST) के कोने में वाकेअ है, एसी में जन्नती पथर "उ-जरे अस्वद" नख है.
- ﴿21﴾ रुकने एराकी :** येह एराक की सप्त शिमाल मशरिकी (NORTH-EASTERN) कोना है.
- ﴿22﴾ रुकने शामी :** येह मुल्के शाम की सप्त शिमाल मगरिबी (NORTH-WESTERN) कोना है.

﴿23﴾ रुकने यमानी : येह यमन की जनिब मगरिबी (WESTERN) कोना है.

﴿24﴾ बाबुल का'बा : रुकने अस्वद और रुकने एराकी के बीय की मशरिकी दीवार में अभीन से काही बुलन्द सोने का दरवाजा है.

﴿25﴾ मुस्तजम : रुकने अस्वद और बाबुल का'बा की दरमियानी दीवार.

﴿26﴾ मुस्तजार : रुकने यमानी और शामी के बीय में मगरिबी दीवार का वोह हिस्सा जो "मुस्तजम" के मुकाबिल या'नी अैन पीछे की सीध में वाकेअ है.

﴿27﴾ मुस्तजाब : रुकने यमानी और रुकने अस्वद के बीय की जुनूबी दीवार यहां सत्तर उजार इरिशते हुआ पर अभीन कडने के लिये मुर्कर हैं. इसी लिये सय्यदी आ'ला उजरत मौलाना शाह एमाम अहमद रजा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने इस मकाम का नाम "मुस्तजाब" (या'नी हुआ की मकबूलियत की जगह) रखा है.

﴿28﴾ उतीम : का'बाओ मुअज्जमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا की शिमाली दीवार के पास निस्फ़ (या'नी आधे) दाअरे (HALF CIRCLE) की शकल में इसील (या'नी बाउन्ड्री) के अन्दर का हिस्सा. "उतीम" का'बा शरीफ़ ही का हिस्सा है और उस में दाखिल होना अैन का'बतुल्वाह शरीफ़ में दाखिल होना है.

﴿29﴾ मीजाबे रहमत : सोने का परनाला येह रुकने एराकी व शामी की शिमाली दीवार की छत पर नरब है इस से बारिश का

પાની “હતીમ” મેં નિઠાવર હોતા હે.

﴿30﴾ મકામે ઇબ્રાહીમ : દરવાઝાએ કા’બા કે સામને એક કુબ્બે (યા’ની ગુમ્બદ) મેં વોહ જન્નતી પથ્થર જિસ પર ખડે હો કર હઝરતે સય્યિદુના ઇબ્રાહીમ ખલીલુલ્લાહ عَلَى نَبِينَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ને કા’બા શરીફ કી ઇમારત તા’મીર કી ઔર યેહ હઝરતે સય્યિદુના ઇબ્રાહીમ ખલીલુલ્લાહ عَلَى نَبِينَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام કા ઝિન્દા મો’જિઝા હે કે આજ ત્ની ઇસ મુબારક પથ્થર પર આપ عَلَى نَبِينَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام કે ક-દમૈને શરીફૈન કે નકશ મૌજૂદ હેં.

﴿31﴾ બીરે ઝમઝમ : મક્કાએ મુઅઝ્ઝમા كَأَزَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا કા વોહ મુકદ્દસા કૂંઆં જો હઝરતે સય્યિદુના ઇસ્માઈલ عَلَى نَبِينَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام કે આલમે તુફૂલિય્ત (યા’ની બચપન શરીફ) મેં આપ કે નન્હે નન્હે મુબારક કદમોં કી રગડ સે જારી હુવા થા. (તફ્સીરે નઈમી, જિ. 1, સ. 694) ઇસ કા પાની દેખના, પીના ઔર બદન પર ડાલના સવાબ ઔર બીમારિયોં કે લિયે શિફા હે. યેહ મુબારક કૂંઆં મકામે ઇબ્રાહીમ સે જુનૂબ મેં વાકેઅ હે. (અબ કૂંઓં કી ઝિયારત નહીં હો સકતી)

﴿32﴾ બાબુસ્સફા : મસ્જિદુલ હરામ કે જુનૂબી દરવાઝોં મેં સે એક દરવાઝા હે જિસ કે નઝદીક “કોહે સફા” હે.

﴿33﴾ કોહે સફા : કા’બાએ મુઅઝ્ઝમા كَأَزَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا કે જુનૂબ મેં વાકેઅ હે.

﴿34﴾ કોહે મર્વહ : કોહે સફા કે સામને વાકેઅ હે.

﴿35﴾ **मीલैने अज़रैन** : या'नी “दो सज़ नशान”. सज़ से ज़ानिबे मर्वह कुछ दूर चलने के बाद थोड़े थोड़े फ़ासिले पर दोनों तरफ़ की दीवारों और छत में सज़ लाईटें लगी हुई हैं. इन दोनों सज़ नशानों के दरमियान दौराने सअ्य मर्दों को दौड़ना होता है.

﴿36﴾ **मरआ** : मीलैने अज़रैन का दरमियानी फ़ासिला जहां दौराने सअ्य मर्द को दौड़ना सुन्नत है.

﴿37﴾ **मीकात** : उस जगह को कहते हैं के मक्कअे मुअज़्ज़मा जाने वाले आफ़ाकी को बिगैर अेहराम वहां से आगे जाना ज़ाईज़ नहीं, याहे तिज़रत या किसी भी गरज़ से जाता हो, यहां तक के मक्कअे मुकर्रमा जाने वाले भी अगर मीकात की हुदूद से बाहर (म-सलन ताईफ़ या मदीनअे मुनव्वरह) ज़ां तो उन्हें भी अब बिगैर अेहराम मक्कअे पाक जाने आना ना ज़ाईज़ है.

मीकात पांच हैं

﴿38﴾ **जुल हुलैफ़ा** : मदीना शरीफ़ से मक्कअे पाक की तरफ़ तकरीबन 10 किलो मीटर पर है ज़ो मदीनअे मुनव्वरह की तरफ़ से आने वालों के लिये “मीकात” है. अब इस जगह का नाम “अब्यारे अली” है.

﴿39﴾ **ज़ाते ईर्क** : ईराक की ज़ानिब से आने वालों के लिये मीकात है.

﴿40﴾ **यलम-लम** : येह अहले यमन की भीकात है और पाक व हिन्द वालों के लिये भीकात यलम-लम की महाजात है.

﴿41﴾ **जुड्झा** : मुल्के शाम की तरफ से आने वालों के लिये भीकात है.

﴿42﴾ **कर्नुल मनाजिल** : नजद (मौजूदा रियाज) की तरफ से आने वालों के लिये भीकात है. येह जगह ताईफ के करीब है.

﴿43﴾ **हरम** : **مَكَّةَ الْمُؤْمِنِينَ** के यारों⁴ तरफ भीलों तक इस की हुदूद हैं और येह जमीन हरमत व तकदुस की वजह से “हरम” कहलाती है. हर जानिब इस की हुदूद पर निशान लगे हैं. हरम के जंगल का शिकार करना नीज फुदरौ दरफ्त और तर घास काटना, छाज, गैरे छाज सब के लिये हराम है. जो शप्स हुदूदे हरम में रहता हो उसे “ह-रमी” या “अहले हरम” कहते हैं.

﴿44﴾ **हिल** : हुदूदे हरम के बाहर से भीकात तक की जमीन को “हिल” कहते हैं. इस जगह वोह यीजे हलाल हैं जो हरम की वजह से हुदूदे हरम में हराम हैं. जमीने हिल का रहने वाला “हिल्ली” कहलाता है.

﴿45﴾ **आझाकी** : वोह शप्स जो “भीकात” की हुदूद से बाहर रहता हो.

﴿46﴾ **तर्धम** : हुदूदे हरम से पारिज वोह जगह जहां से **مَكَّةَ الْمُؤْمِنِينَ** में कियाम के दौरान उम्रे के

લિયે એહરામ બાંધતે હેં ઓર યેહ મકામ મસ્જિદુલ હરામ સે તકરીબન 7 કિલો મીટર જાનિબે મદીનએ મુનવ્વરહ હૈ, અબ યહાં મસ્જિદે આઈશા બની હુઈ હૈ. ઈસ જગહ કો અવામ “છોટા ઉમ્રહ” કહતે હેં.

﴿47﴾ જિઈરના : હુદૂદે હરમ સે ખારિજ મક્કએ મુકર્રમા સે તકરીબન 26 કિલો મીટર દૂર તાઈફ કે રાસ્તે પર વાકેઅ હૈ. યહાં સે ભી દૌરાને કિયામે મક્કા શરીફ ઉમ્રે કા એહરામ બાંધા જાતા હૈ. ઈસ મકામ કો અવામ “બડા ઉમ્રહ” કહતે હેં.

﴿48﴾ મિના : મસ્જિદુલ હરામ સે પાંચ⁵ કિલો મીટર પર વોહ વાદી જહાં હાજી સાહિબાન અય્યામે હજ મેં કિયામ કરતે હેં. “મિના” હરમ મેં શામિલ હૈ.

﴿49﴾ જમરાત : મિના મેં વાકેઅ તીન³ મકામાત જહાં કંકરિયાં મારી જાતી હેં. પહલે કા નામ જમ્રતુલ ઉખરા યા જમ્રતુલ અ-કબહ હૈ. ઈસે બડા શૈતાન ભી બોલતે હેં. દૂસરે કો જમ્રતુલ વુસ્તા (મંઝલા શૈતાન) ઓર તીસરે કો જમ્રતુલ ઊલા (છોટા શૈતાન) કહતે હેં.

﴿50﴾ અ-રફાત : મિના સે તકરીબન ગ્યારહ કિલો મીટર દૂર મૈદાન જહાં 9 ઝુલ હિજજહ કો તમામ હાજી સાહિબાન જમ્અ હોતે હેં. અ-રફાત શરીફ હુદૂદે હરમ સે ખારિજ હૈ.

﴿51﴾ જ-બલે રહમત : અ-રફાત શરીફ કા વોહ મુકદ્દસ પહાડ

जिस के करीब पुकूँ करना अऊँल है.

﴿52﴾ मुज्दलिफ़ा : “मिना” से अ-रफ़ात की तरफ़ तकरीबन 5 किलो मीटर पर वाकेअ मैदान जहां अ-रफ़ात से वापसी पर रात बसर करना सुन्नते मुअक्कदा और सुब्हे सादिक और तुलूअे आइताब के दरमियान कम अऊँ कम अेक लम्हा पुकूँ वाजिब है.

﴿53﴾ मुहस्सिर : मुज्दलिफ़ा से मिला हुवा मैदान, यहीं अस्लाबे ईल पर अजाब नाजिल हुवा था. विहाजा यहां से गुजरते वक्त तेजी से गुजरना और अजाब से पनाह मांगनी याहिये.

﴿54﴾ अतूने उ-रनड : अ-रफ़ात के करीब अेक जंगल जहां हाजि का पुकूँ दुरुस्त नहीं.

﴿55﴾ मद्आ : मस्जिद हाराम और मक्कअे मुकर्रमा *رَأَدَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا* के कब्रिस्तान “जन्नतुल मअूला” के माबैन (की दरमियानी) जगह जहां हुआ मांगना मुस्तहब है.

अउे दरबार में पछोयाया मुज को मेरी किस्मत ने
 में सडके जतिं क्या कडना मेरे अखे मुकदर का

(सामाने अफ़िशिश)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

हुआ कबूल होने के 29 मकामात : मोडतरम हाजियो !

यूं तो उ-रमैने शरीफ़ैन में हर जगह अन्वारो तजद्वियात की छमाछम बरसात बरस रही है ताहम “अइसनुल विआअ

लि आदाबिदुआअ” से बा’ज दुआ कबूल होने के मफ्सूस मकामात का जिक्र किया जाता है. ताके आप उन मकामात पर मज्जीद दिल जमई और तवज्जोह के साथ दुआ कर सकें.

मक्कअे मुकर्रमा के मकामात येह हैं : ﴿1﴾

मताफ़ ﴿2﴾ मुत्तजम ﴿3﴾ मुस्तजार ﴿4﴾ बैतुल्लाह के अन्दर
 ﴿5﴾ भीजाबे रहमत के नीचे ﴿6﴾ हतीम ﴿7﴾ उ-जरे अस्वद
 ﴿8﴾ रुकने यमानी पुसूसन जब दौराने तवाफ़ वहां से गुजर
 हो ﴿9﴾ मकामे एब्राहीम के पीछे ﴿10﴾ जमजम के कुंभे के
 करीब ﴿11﴾ सफ़ा ﴿12﴾ मर्वह ﴿13﴾ मस्आ पुसूसन सज्ज
 भीलों के दरमियान ﴿14﴾ अ-रफ़ात पुसूसन मौकिके नबिय्ये
 पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नजदीक ﴿15﴾ मुह्रदलिक़ा पुसूसन
 मशअरुल हराम ﴿16﴾ मिना ﴿17﴾ तीनों³ जमरात के करीब
 ﴿18﴾ जब जब का’बअे मुशर्रफ़ा पर नजर पड़े. मदीनअे
मुनव्वरह के मकामात येह हैं : ﴿19﴾ मस्जिदे
 न-भवी शरीफ़ عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ﴿20﴾ मुवा-जहा शरीफ़,
 एमाम एब्नुल जज़री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : दुआ यहां
 कबूल न होगी तो कहां कबूल होगी (صحيح مسلم 31) ﴿21﴾
 मिम्बरे अत्हर के पास ﴿22﴾ मस्जिदे न-भवी शरीफ़
 عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के सुतूनों के नजदीक ﴿23﴾ मस्जिदे कुबा
 शरीफ़ ﴿24﴾ मस्जिदुल इत्ह में पुसूसन बुध को जोहर व अस्र के
 दरमियान ﴿25﴾ बाकी मसाजिदे तय्यिबा जिन को सरकारे मदीना,

सुकूने कल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से निस्फत है (म-सलन मस्जिद गमामा, मस्जिद डिब्लतैन वगैरा वगैरा) ﴿26﴾ वोह मुबारक कूंअें जिन्हें सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से निस्फत है ﴿27﴾ ज-बले उहुद शरीफ़ ﴿28﴾ मशा-उदे मुबा-रका¹ ﴿29﴾ मजाराते बकीअ. तारीफी रिवायात के मुताबिक जन्नतुल बकीअ में तकरीबन दस हजार सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ आराम इरमा हैं.

अइसोस ! 1926 सि.ई. में जन्नतुल बकीअ के मजारात को शहीद कर दिया गया अब जगह जगह मुबारक कब्रें भिस्मार कर के वहां रास्ते निकाल दिये गये हैं लिहाजा आज तक सगे मदीना غ्फ़ी को जन्नतुल बकीअ के अन्दर दाखिले की जुरअत नहीं हुई मबादा (या'नी कहीं ऐसा न हो) किसी मजारे फ़ाईजुल अन्वार पर पाँउ पउ जाये और मस्जिदा भी येही है के कब्र मुस्लिम पर पाँउ रचना, बैठना वगैरा सब हराम है. दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ 48 सईहात पर मुश्तमिल रिसाला, "कब्र वालों की 25 डिक्वायत" सईहा 34 पर है : (कब्रिस्तान में कब्रें भिटा कर) जो नया रास्ता निकाला गया हो उस पर चलना हराम है. (رَدُّ الْمُحْتَارِ ج ١ ص ٦١٢)

1: मशाउद जम्अ है मशहद की और मशहद का मा'ना है : "हाजिर होने की जगह" यहां मुराद येह है के जिस जिस मकाम पर सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ ले गये वहां हुआ कबूल होती है और फुसूसन मकअे मुकर्रमा और मदीनअे मुनव्वरह में वे शुमार मकामात पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ इरमा हुअे म-सलन उजरते सथिदुना सलमान फ़ारसी का मुकदस भाग वगैरा.

બલકે નએ રાસ્તે કા સિર્ફ ગુમાન હો તબ ભી ઉસ પર ચલના
 ના જાઈઝ વ ગુનાહ હૈ. (مَرْمُوقَاتُ ۳ ص ۱۸۳) લિહાઝા આશિકાને
 રસૂલ સે દર-ખ્વાસ્ત હૈ કે વોહ બાહર હી સે સલામ અર્ઝ કરે.
 બકીઅ શરીફ કે સદ્ર દરવાઝે સે સલામ અર્ઝ કરના ઝરૂરી
 નહીં, સહીહ તરીકા યેહ હૈ કે કબ્રિસ્તાન કે બાહર એસી જગહ
 ખડે હો જહાં આપ કી કિબ્લે કો પીઠ હો કે ઈસ તરહ મદફૂનીને
 બકીઅ કે યેહરોં કી તરફ આપ કા રુખ હો જાએગા.

હૈં મઆસી હદ સે બાહર ફિર ભી ઝાહિદ ગમ નહીં
 રહમતે આલમ કી ઉમ્મત, બન્દા હૂં ગફફાર કા

(સામાને બખ્શિશ)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

હજ કી કિસ્મોં

હજ કી ત્રીન કિસ્મોં હૈં : ﴿1﴾ કિરાન ﴿2﴾ તમતોઅ ﴿3﴾ ઈફરાદ
1 કિરાન : યેહ સબ સે અફઝલ હૈ, કિરાન કરને વાલા
 “કારિન” કહલાતા હૈ, ઈસ મેં ઉમ્રહ ઔર હજ કા એહરામ
 એક સાથ બાંધા જાતા હૈ મગર ઉમ્રહ કરને કે બા’દ “કારિન”
 હલક યા “કસ્ર” નહીં કરવા સકતા ઈસે બ દસ્તૂર એહરામ મેં
 રહના હોગા, દસવી¹⁰, ગ્યારહવી¹¹ યા બારહવી¹² ઝુલ
 હિજ્જહ કો કુરબાની કરને કે બા’દ હલક યા કસ્ર કરવા કે
 એહરામ ખોલ દે.

21 तमतोअ : येह उज अदा करने वाला “मु-तमतोअ” कडलाता है. येह अशहुरे उज में “मीकात” के बाहर से आने वाले अदा कर सकते हैं. म-सलन पाक व हिन्द से आने वाले उमूमन तमतोअ ही किया करते हैं के आसानी येह है के एस में उम्रह तो छोटा ही है लेकिन उम्रह अदा करने के बा’द “उल्क या कस्र” करवा के अहराम जोल दिया जाता है और फिर 8 जुल हिज्जल या एस से कबल उज का अहराम बांधा जाता है.

22 धर्राद : धर्राद करने वाले हाज को “मुहरिद” कहते हैं. एस उज में “उम्रह” शामिल नहीं है एस में सिर्फ उज का “अहराम” बांधा जाता है. अहले मक्का और “दिल्ली” या’नी मीकात और हुदूदे हरम के दरमियान में रहने वाले बाशिन्दे (म-सलन अह्लियाने जद्दा शरीफ़) “उज्जे धर्राद” करते हैं. किरान या तमतोअ करेंगे तो दम वाजिब होगा, आझाकी याहे तो “धर्राद” कर सकता है.

صَلَّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अहराम बांधने का तरीका : उज हो या उम्रह अहराम बांधने का तरीका दोनों का अेक ही है. हां नियत और उस के अल्हाज में थोडा सा फ़र्क है. नियत का बयान *إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ* आगे आ रहा है. पहले अहराम बांधने का

तरीڪا مولا-ٺڙا ڦرمارڻيه : ﴿1﴾ ناڻون ترارشيه ﴿2﴾ بڱل
 اور ناڦ ڪه نييه ڪه بال ڏور ڪيڙيه بڙڪه ڀيڻه ڪه بال ٽي
 ساڦ ڪر لڙيڙيه ﴿3﴾ ميسواڪ ڪيڙيه ﴿4﴾ وڙو ڪيڙيه ﴿5﴾
 ڀوڀ اڪڙي ترٺ مل ڪه ڱوڪل ڪيڙيه ﴿6﴾ ڙيسم اور
 اهلرام ڪي ياءرو ڀر ڀوشو لڱاڻيه ڪه يهل سوننٺ هئ،
 ڪڀو ڀر ائسي ڀوشو (م-سالن ڀوشڪ امبر وڱورا) ن لڱاڻيه
 ڙيس ڪا ڙيم (يا'ني تهل) ڙم ڙاهه ﴿7﴾ ڻسلامي ٽاه سيله
 هوه ڪڀه ٺتار ڪر اه ڦي يا ڀولي هڻ سڦڏ ياءر اوڏه
 اور ائسي هڻ ياءر ڪا تهلنڏ ٻانڀن. (تهلنڏ ڪه ليهه لڏ
 اور اوڏه ڪه ليهه توليا هه ته سڏلٺ رهلتي هئ، تهلنڏ ڪا
 ڪڀا موٽا لڙيڙيه تاڪه بدن ڪي رنگت ن يمڪه اور توليا ٽي
 ڪڏره بڙي ساڻڙ ڪا هه ته اڪڙا) ﴿8﴾ پاسڀورٽ يا رڪم
 وڱورا رڀنه ڪه ليهه ڙهه والاهه بهٺ ياهن ته ٻانڀ سڪته هئن.
 رڱڙين ڪا بهٺ اڪسر ڦٽ ڙاتا هئ، آڱه ڪي ترڦ ڙيڀ (zip)
 والاهه بٽوا لڱا هڻا ناڻلون (nylon) يا يمڙه ڪا بهٺ
 ڪاڙي مڙوٺ هه اور برسون ڪام هه سڪتا هئ.

ڻسلامي بھنن ڪا اهلرام : ڻسلامي بھنن ڏسبه
 ما'مूल سيله هوه ڪڀه ڀهنن، ڏستانه اور موڙه ٽي ڀهن
 سڪتي هئن، وهه سر ٽي ڏانڀن مڱر يهه ڀر ياءر نهڻي اوڏ
 سڪتي، ڱر مڏن سه يههرا هڻپانه ڪه ليهه ڏاه ڪا ڀنڀا يا

कोई किताब वगैरा से ज़रूरत न आउ कर लें. अहराम में औरतों को किसी ऐसी चीज से मुंह छुपाना जो येहरे से चिपटी हो हराम है.

अहराम के नफ़ल : अगर मक़दुस वक्त न हो तो द्यो² रक़अत नमाज़ नफ़ल ब निय्यते अहराम (मर्द भी सर बांप कर) पढ़ें, बेहतर येह है के पड़ली रक़अत में अल हम्द शरीफ़ के बा'द **قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ** और दूसरी रक़अत में **قُلْ هُوَ اللَّهُ** शरीफ़ पढ़ें.

उम्रे की निय्यत : अब इस्लामी भाई सर नंगा कर दें और इस्लामी बहनों सर पर ब दस्तूर यादर ओढ़े रहें अगर (आम दिनों का) उम्रेह है तब भी और अगर हज्जे तमत्तोअ कर रहे हैं जब भी उम्रे की इस तरह निय्यत करें :

اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْعُمْرَةَ فَيَسِّرْهَا لِي وَتَقَبَّلْهَا

औ अल्लाह! **عَزَّوَجَلَّ** उम्रे का इरादा करता हूँ मेरे लिये इसे आसान और इसे मेरी तरफ़

مِنِّي وَاعْبُدْنِي عَلَيْهَا وَبَارِكْ لِي فِيهَا ط نَوَيْتُ

से कबूल इरमा और इसे (अदा करने में) मेरी मदद इरमा और इसे मेरे लिये बा-र-कत इरमा. मैं

الْعُمْرَةَ وَأَحْرَمْتُ بِهَا لِلَّهِ تَعَالَى ط

ने उम्रे की निय्यत की और अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के लिये इस का अहराम बांधा.

हज की नियत : मुझरिद भी इस तरह नियत करे और मु-तमत्तेअ भी जब 8 जुल हिजज या इस से कबल उज का अहराम बांधे मुन्दरिजअ जैल अल्काज में नियत करे :

اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْحَجَّ فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقَبَّلْهُ

अै अल्लाह जैल अल्काज करता हूँ इस को तू मेरे लिये आसान कर दे और इसे

مِنِّي وَاعِنِّي عَلَيْهِ وَبَارِكْ لِي فِيهِ ط نَوَيْتُ

मुझ से कबूल करमा और इस में मेरी मदद करमा और इसे मेरे लिये आसान कर दे। मैं

الْحَجَّ وَأَحْرَمْتُ بِهِ لِلَّهِ تَعَالَى ط

ने उज की नियत की और अल्लाह जैल अल्काज के लिये इस का अहराम बांधा।

हज्जे किरान की नियत

कारिन “उम्रुह और उज” दोनों की अक साथ नियत करेगा, युनान्थे वोह इस तरह नियत करे :

اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْعُمْرَةَ وَالْحَجَّ فَيَسِّرْهُمَا

अै अल्लाह जैल अल्काज करेगा! मैं उम्रुह और उज दोनों का अहराम करता हूँ, तू उन्हें मेरे लिये आसान कर दे

لِيُوتَقَبَّلَ هُمَا مِنِّيْ ط نَوِيْتُ الْعُمْرَةَ وَالْحَجَّ

और एन्हें मेरी तरफ़ से कबूल करमा. मैं ने उम्मेद और उज दोनों की निखत की

وَاحْرَمْتُ بِهِمَا مُخْلِصًا لِلّٰهِ تَعَالَى

और पावि-सतन अल्लाह उज्रु के लिये एन दोनों का अहराम बांधा.

लब्बैक : ज्वाह उम्मे की निखत करें या उज की या उज्जे किरान की तीनों सूरतों में निखत के बा'द कम अज कम अक बार लब्बैक कहना लाजिमी है और तीन³ बार कहना अइजल. लब्बैक येह है :

لَبِيكَ ط اللّٰهُمَّ لَبِيكَ ط لَبِيكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبِيكَ ط

मैं उज्रि हूँ, अै अल्लाह उज्रु ! मैं उज्रि हूँ, (हो) मैं उज्रि हूँ तेरा कोई शरीक नही मैं उज्रि हूँ,

إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ ط

बेशक तमाम जूबियां और ने'मते तेरे लिये हैं और तेरा ही मुल्क भी, तेरा कोई शरीक नही.

अै मदीने के मुसाफ़िरो ! आप का अहराम शुद्दुअ हो गया, अब येह लब्बैक ही आप का वजीज़ा और विर्द है, उठते बैठते, चलते फिरते एस का जूब विर्द कीजिये.

हो इरामीने मुस्तज़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ﴿1﴾ जूब लब्बैक कहने

वाला लब्बैक कहता है तो उसे पुश भबरी दी जाती है. अर्ज की गर्थ : **يَا رَسُولَ اللّٰهِ صَلِّ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ !** क्या जन्नत की पुश भबरी दी जाती है ? ईशाद फरमाया : “हां ” (7779 حديث 410 ص 5) **(2)** जब मुसल्मान “लब्बैक” कहता है तो उस के दाअें और बाअें जमीन के आभिरी सिरे तक जो भी पथर, दरभ्त और ढेला है वोड सब लब्बैक कहते हैं.

(تَرْوِذِي 2 ج ص 226 حديث 129)

मा'ना पर नजर रभते हुअे लब्बैक पटिये : ईधर उधर देभते हुअे बे दिल्ी से पढने के बज्जअे निहायत पुशूओ पुजूअ के साथ मा'ना पर नजर रभते हुअे लब्बैक पढना मुनासिब है. अेहराम बांधने वाला लब्बैक कहते वक्त अपने प्यारे प्यारे अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** से मुजातिब होता है और अर्ज करता है : “लब्बैक” या'नी “में हाजिर हूं,” अपने मां बाप को अगर कोई येही अल्फाज कहे तो यकीनन तवज्जोह से कहेगा, फिर अपने परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** से अर्जो मा'रुज में कितनी तवज्जोह होनी चाडिये येह हर जी शुउिर समज सकता है. ईसी बिना पर हजरते सय्यिदुना अल्लामा अली कारी और दूसरे उस के पीछे पीछे पढ़ें येह मुस्तहब नहीं बल्के हर ईद पुद तल्लिबा पढे.

(الْمَسْأَلَةُ الْمُتَقَسِّطُ لِلْقَارِي ص 103)

लठ्ठैक कहने के आ'द की ओक सुन्नत : लठ्ठैक से फ़ारिग होने के आ'द दुआ मांगना सुन्नत है, जैसा के उदीसे मुबारक में है के ताजदारे मदीना, राहते कल्बो सीना जब लठ्ठैक से फ़ारिग होते तो अल्लाह عزّ و جلّ से उस की पुरशनूदी और जन्नत का सुवाल करते और जहन्नम से पनाह मांगते. (مُسْنَدُ إِمَامِ شَافِعِي ص 123) यकीनन हमारे प्यारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से अल्लाह عزّ و جلّ पुरश है, बिना शुभा आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कर्तई जन्नती बल्के अताओं एलाही عزّ و جلّ मालिके जन्नत हैं मगर येह सब दुआओं दीगर बहुत सारी हिकमतों के साथ साथ उम्मत की ता'लीम के लिये भी हैं के हम भी सुन्नत समज कर दुआ मांग लिया करें.

“اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ” के नव हुइइ की निरुधत से लठ्ठैक के 9 म-दनी इल

﴿1﴾ उठते बैठते, चलते फिरते, वुजू बे वुजू हर हाल में लठ्ठैक कडिये ﴿2﴾ पुसूसन यढाई पर यढते, ढलवान उतरते (सीढियों पर यढते उतरते), दो² काइलों के मिलते, सुज्द व शाम, पिछली रात, और पांयों⁵ वक्त की नमाओं के आ'द, गरज के हर हालत के बदलने पर लठ्ठैक कडिये ﴿3﴾ जब भी लठ्ठैक शुरुअ करें कम अज कम तीन³ बार कहे ﴿4﴾ “मो'तमिर” या'नी उम्रह करने वाला और “मु-तमतेअ” भी उम्रह करते वक्त जब का'अओ

मुशर्रफ़ा का तवाफ़ शुद्ध करे उस वक्त उ-जरे अस्वद का पहला इस्तिलाम करते ही “लब्बैक” कहना छोड दे **﴿5﴾** “मुफ़रिद” और “कारिन” लब्बैक कहते हुअे मक्कअे मुअज़्ज़मा **رَادَاكَ اللّٰهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** में ठहरें के इन की लब्बैक और मु-तमत्तेअ जब उज का अेहराम बांधे उस की लब्बैक 10 गुल डिज्जतिल हराम शरीफ़ को जम्रतुल अ-कबा (या’नी बडे शैतान) को पहली कंकरी मारते वक्त पत्न होगी **﴿6﴾** इस्लामी भाई ब आवाजे बुलन्द लब्बैक कहा करें मगर आवाज इतनी भी बुलन्द न करें के इस से फुद को या किसी दूसरे को तकलीफ़ हो **﴿7﴾** इस्लामी बहनें जब भी लब्बैक कहें धीमी आवाज से कहें और येह सभी याद रखें के इलावा उज के भी जब कभी जो कुछ पढ़ें उस तलफ़्फ़ुज की अदाअेगी में इतनी आवाज लाजिमी है के अगर बहरा पन या शोरो गुल न हो तो फुद सुन सकें **﴿8﴾** अेहराम के लिये निय्यत शर्त है अगर बिगैर निय्यत लब्बैक कही अेहराम न हुवा, इसी तरह तन्हा निय्यत भी काई नहीं जब तक लब्बैक या इस के काईम मकाम कोई और चीज न हो **﴿9﴾** (عالمگیری ج ۱ ص ۲۲۲) अेहराम के लिये अेक बार जभान से लब्बैक कहना जरूरी है और अगर इस की जगह **اللّٰهُ سُبْحٰنَ اللّٰهِ** या **لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ** या **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ** या कोई और जिकुल्लाह किया और

એહરામ કી નિયત કી તો એહરામ હો ગયા મગર સુન્નત લબ્બૈક કહના હૈ. (ایضاً)

કરું ખૂબ એહરામ મેં લબ્બૈક કી તકરાર

દે હજ કા શરફ હર બરસ રબ્બે ગફફાર

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

નિયત કે મુ-તઅલ્લિક ઝરૂરી હિદાયત : યાદ રખિયે ! નિયત દિલ કે ઈરાદે કો કહતે હૈં. ખ્વાહ નમાઝ, રોઝા, એહરામ કુછ ભી હો, અગર દિલ મેં નિયત મૌજૂદ ન હો તો સિફ ઝબાન સે નિયત કે અલ્ફાઝ અદા કર લેને સે નિયત નહીં હો સકતી ઓર નિયત કે અલ્ફાઝ અ-રબી ઝબાન મેં કહના ઝરૂરી નહીં, અપની મા-દરી ઝબાન મેં ભી કહ સકતે હૈં બલકે ઝબાન સે કહના લાઝિમી નહીં, સિફ દિલ મેં ઈરાદા ભી કાફી હૈ. હાં ઝબાન સે કહ લેના અફઝલ હૈ ઓર અ-રબી ઝબાન મેં ઝિયાદા બેહતર ક્યૂંકે યેહ હમારે મક્કી મ-દની સુલ્તાન, રહમતે આ-લમિયાન صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કી મીઠી મીઠી ઝબાન હૈ. અ-રબી ઝબાન મેં જબ નિયત કે અલ્ફાઝ કહે તો ઉસ કે મા'ના ભી ઝરૂર ઝેહન મેં હોને ચાહિએ.

अहराम के मा'ना : अहराम के लङ्गी मा'ना हैं : हराम करना क्यूंके अहराम बांधने वाले पर बा'ज हलाल बातें भी हराम हो जाती हैं, अहराम वाले इस्लामी भाई को मोहरिम और इस्लामी बहन को मोहरिमा कहते हैं.

अहराम में येह बातें हराम हैं : ﴿1﴾ इस्लामी भाई को सिलाई किया हुआ कपडा पहनना ﴿2﴾ सर पर टोपी ओढना, धामा या रुमाल वगैरा बांधना ﴿3﴾ मर्द का सर पर कपडे की गठडी उठाना (इस्लामी बहनें सर पर यादर ओढें और इन्हें सर पर कपडे की गठरी उठाना मन्अ नहीं) ﴿4﴾ मर्द का दस्ताने पहनना. (इस्लामी बहनों को मन्अ नहीं) ﴿5﴾ इस्लामी भाई जैसे भोजे या जूते नहीं पहन सकते जे वस्ते कदम (या'नी कदम के बीच का उभार) छुपायें, (हवाई यप्पल मुनासिब हैं) ﴿6﴾ जिस्म, लिबास या बालों में पुशबू लगाना ﴿7﴾ पालिस पुशबू म-सलन इलायची, लोंग, दारचीनी, अ'इरान, जवत्तरी पाना या आंयल में बांधना, येह चीजें अगर किसी पाने या सालन वगैरा में डाल कर पकाई गई हों अब याहे पुशबू भी दे रही हों तो भी पाने में हरज नहीं ﴿8﴾ जिमाअ करना या बोसा, मसास (या'नी धूना), गले लगाना, अन्दामे निहानी (औरत की शर्मगाह) पर निगाह डालना जब के येह आपिरी चारों⁴ या'नी जिमाअ के इलावा काम ब शह्वत हों ﴿9﴾ झोड़श और हर किस्म का गुनाह हमेशा हराम था अब और भी सप्त हराम हो गया

﴿10﴾ किसी से दून्यवी लडाईं जगडा ﴿11﴾ जंगल का शिकार करना या किसी तरह भी ँस पर मुआविन होना, ँस का गोश्त या अन्डा वगैरा ખरीदना, बेचना या ખाना ﴿12﴾ अपना या दूसरे का नाખुन कतरना या दूसरे से अपने नाખुन कतरवाना ﴿13﴾ सर या दाढी के बाल काटना, बगलें बनाना, मूअे जेरे नाइ लेना, बलके सर से पाउ तक कहीं से कोई बाल जुदा करना ﴿14﴾ वस्मा या महंटी का ખिजाब लगाना ﴿15﴾ जैतून का या तिल का तेल याडे बे ખुशबू हो, बालों या जिस्म पर लगाना ﴿16﴾ किसी का सर मूंडना ખ्वाल वोह अेहराम में हो या न हो. (हां अेहराम से बाहर होने का वक्त आ गया तो अब अपना या दूसरे का सर मूंड सकता है) ﴿17﴾ जूं मारना, ईंकना, किसी को मारने के लिये ँशारा करना, कपडा उस के मारने के लिये धोना या धूप में डालना, बालों में जूं मारने के लिये किसी किस्म की दवा वगैरा डालना, ग-रजे के किसी तरह उस के हलाक पर बाईस होना. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1078, 1079)

अेहराम में येह बातें मकइह हैं : ﴿1﴾ जिस्म का मैल छुडाना ﴿2﴾ बाल या जिस्म साखुन वगैरा से धोना ﴿3﴾ कंधी करना ﴿4﴾ ँस तरह ખुजाना के बाल टूटने या जूं गिरने का अन्देशा हो ﴿5﴾ कुरता या शेरवानी वगैरा पहनने की तरह कन्धों पर डालना ﴿6﴾ जान बूझ कर ખुशबू सूंघना ﴿7﴾ ખुशबूदार इल या पत्ता म-सलन लीमूं, पोदीना, नारंगी वगैरा सूंघना (खाने में मुजा-यका नहीं)

﴿8﴾ ઈત્ર ફરોશ કી દુકાન પર ઈસ નિચ્ચત સે બેઠના કે ખુશબૂ આમે **﴿9﴾** મહકતી ખુશબૂ હાથ સે ઘૂના જબ કે હાથ પર ન લગ જાએ વરના હરામ હૈ **﴿10﴾** કોઈ એસી ચીઝ ખાના યા પીના જિસ મેં ખુશબૂ પડી હો ઔર ન વોહ પકાઈ ગઈ હો ન બૂઝાઈલ (યા'ની ખત્મ) હો ગઈ હો **﴿11﴾** ગિલાફે કા'બા કે અન્દર ઈસ તરહ દાખિલ હોના કે ગિલાફ શરીફ સર યા મુંહ સે લગે **﴿12﴾** નાક વગૈરા મુંહ કા કોઈ ભી હિસ્સા કપડે સે ઘુપાના **﴿13﴾** બે સિલા કપડા રફૂ ક્રિયા હુવા યા પૈવન્દ લગા હુવા પહનના **﴿14﴾** તક્યે પર મુંહ રખ કર ઔધા લૈટના (એહરામ કે ઈલાવા ભી ઔધા સોના મન્અ હૈ કે હદીસે પાક મેં ઈસ તરહ સોને કો જહન્નમિયોં કા તરીકા કહા ગયા હૈ) **﴿15﴾** તા'વીઝ અગર્યે બે સિલે કપડે મેં લપેટા હુવા હો, ઉસે બાંધના મક્રૂહ હૈ. હાં અગર બે સિલે કપડે મેં લપેટા હુવા તા'વીઝ બાઝૂ વગૈરા પર બાંધા નહીં બલ્કે ગલે મેં ડાલ લિયા તો હરજ નહીં **﴿16﴾** સર યા મુંહ પર પટ્ટી બાંધના **﴿17﴾** બિલા ઉઝૂર બદન પર પટ્ટી બાંધના **﴿18﴾** બનાવ સિંધાર કરના **﴿19﴾** ચાદર ઓઢ કર ઈસ કે સિરોં મેં ગિરહ દે લેના જબ કે સર ખુલા હો વરના હરામ હૈ **﴿20﴾** તહબન્દ કે દોનોં² કનારોં મેં ગિરહ દેના **﴿21﴾** રકમ વગૈરા રખને કી નિચ્ચત સે જેબ વાલા બેલ્ટ બાંધને કી ઈજાઝત હૈ. અલબત્તા સિફ તહબન્દ કો કસને કી નિચ્ચત સે બેલ્ટ યા રસ્સી વગૈરા બાંધના મક્રૂહ હૈ. (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 1079, 1080)

येह बातें अहराम में जाघज हैं : ﴿1﴾ मिसवाक करना ﴿2﴾ अंगूठी पहनना¹ ﴿3﴾ बे पुशबू सुरमा लगाना. लेकिन मोहरिम के लिये बिला जरूरत इस का 'इस्ति'माल मकरूहे तन्जीही है. (पुशबूदर सुरमा अक या दो बार लगाया तो "स-दका" है और तीन या इस से जाघद में "दम") ﴿4﴾ बे मैल छुडाअे गुस्व करना ﴿5﴾ कपडे धोना. (मगर जूं मारने की गरज से हराम है) ﴿6﴾ सर या बदन इस तरह आहिस्ता से पुजाना के बाल न टूटें ﴿7﴾ छत्री लगाना

1 : अंगूठी के बारे में अर्ज है के ताजदारे मदीना, राहते कल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बिदमते बा अ-जमत में अक सहाबी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ पीतल की अंगूठी पहने हुअे थे. भीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इशार्द इरमाया : क्या बात है के तुम से बुत की बू आती है ? उन्हों ने वोह (पीतल की) अंगूठी उतार कर केंक दी फिर लोहे की अंगूठी पहन कर छाजिर हुअे. इरमाया : क्या बात है के तुम जलन्नभियों का जेवर पहने हुअे हो ? उन्हों ने उसे ल्मी केंक दिया फिर अर्ज की : या रसूलव्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! कैसी अंगूठी बनवाओ ? इरमाया : यांटी की बनाओ और अक मिसकाल पूरा न करो. (अबुदाउद ६८० १२२ १२२ १२२ १२२) या'नी साढे यार माशा से कम वज़न की हो. इस्लामी भाई जअ कल्मी अंगूठी पहनें तो सिर्फ़ यांटी की साढे यार माशा (या'नी 374 मिली ग्राम) से कम वज़न यांटी की अक ही अंगूठी पहनें अक से जियादा न पहनें और उस अक अंगूठी में नगीना ल्मी अक ही हो अक से जियादा नगीने न हों और बिगैर नगीने के ल्मी न पहनें. नगीने के वज़न की कोई कैद नहीं. यांटी या किसी और धात का छल्ला (याहे मदीनअे मुनव्वरह ही का क्यूं न हो) या यांटी के बयान कर्दा वज़न वगैरा के इलावा किसी ल्मी धात (म-सलन सोना, तांबा, लोहा, पीतल, स्टील वगैरा) की अंगूठी नहीं पहन सकते. सोने, यांटी या किसी ल्मी धात की जन्जर गले में पहनना गुनाह है. इस्लामी बहनें सोने यांटी की अंगूठियां और जन्जरें वगैरा पहन सकती हैं, वज़न और नगीनों की कोई कैद नहीं. (अंगूठी के बारे में तफ़सीली मा'लूमात के लिये, क़ैजाने सुन्नत जिहद 2 के बाब "नेकी की दा'वत" (हिस्सअे अक्वल) सफ़हा 408 ता 412 का मुता-लआ इरमाइये)

या किसी चीज के साझे में बैठना ﴿8﴾ यादर के आंगलों को तलबन्द में घुरसना ﴿9﴾ दाढ उभाउना ﴿10﴾ टूटे हुअे नापुन जुदा करना ﴿11﴾ हुन्सी तोड देना ﴿12﴾ आंभ में जो बाल निकले, उसे जुदा करना ﴿13﴾ षतना करना ﴿14﴾ इस्द (बिगैर बाल मूंडे) पछने (हजमत) करवाना ﴿15﴾ यील, कव्वा, यूहा, छुपकली, गिरगट, सांप, बिच्छू, षटमल, मच्छर, पिस्सू, मष्पी वगैरा जनीस और मूजी जानवरों को मारना. (हरम में भी इन को मार सकते हैं) ﴿16﴾ सर या मुंह के धलावा किसी और जगह जम्भ पर पट्टी बांधना¹ ﴿17﴾ सर या गाल के नीचे तक्या रभना ﴿18﴾ कान कपडे से छुपाना ﴿19﴾ सर या नाक पर अपना या दूसरे का हाथ रभना (कपडा या रुमाल नहीं रभ सकते) ﴿20﴾ ठोडी से नीचे दाढी पर कपडा आना ﴿21﴾ सर पर सीनी (या'नी धात का बना हुवा प्वान) या गदले की बोरी उठाना ज़र्रज है मगर सर पर कपडे की गठडी उठाना हराम है. हां "भोडरिमा" दोनों उठा सकती है ﴿22﴾ जिस जाने में धलाययी, दारयीनी, लोंग वगैरा पकाई गई हां अगरेँ उन की षुशबू भी आ रही हो (म-सलन कोरमा, बिरयानी, जर्दा वगैरा) उस का जाना या बे पकाओ जिस जाने पीने में कोई षुशबू डाली हुई हो वोह बू नहीं देती, उस का जाना पीना ﴿23﴾ धी या यरबी या

1 : मजबूरी की सूरत में सर या मुंह पर पट्टी बांध सकते हैं मगर इस पर कफ़ारा देना होगा. (इस का मस्अला सफ़हा 315 पर मुला-हजा इरमाअें)

कडवा तेल या भादाम या नारियल या कद्दू, काहू का तेल जिस में
 भुशभू न डाली हुई हो उस का बालों या जिस्म पर लगाना
 ﴿24﴾ औसा जूता पहनना जाईज है जो कदम के वस्त के जोड
 या'नी कदम के बीच की उभरी हुई हडी को न छुपाये. (लिहाजा
 मोहरिम के लिये इसी में आसानी है के वोह हवाई यप्पल पहने)

﴿25﴾ बे सिले हुअे कपडे में लपेट कर ता'वीज गले में डालना

﴿26﴾ पालतू जानवर म-सलन उिंट, अकरी, मुर्गी, गाय वगैरा
 को जभू करना उस का गोशत पकाना, पाना. उस के अन्दे
 तोडना, भूनना, पाना. (अहारे शरीअत, जि. 1, स. 1081, 1082)

मर्द व औरत के अहराम में इर्क: अहराम के मजकूरअे
 आला मसाईल में मर्द व औरत दोनों² बराबर हैं ताहम यन्द
 आते ईस्लामी अहनों के लिये जाईज हैं. आज कल अहराम के
 नाम पर सिले सिलाअे “स्कार्फ” आजार में बिकते हैं,
 मा'लूमत की कमी की बिना पर ईस्लामी अहने उसी को अहराम
 समजती हैं, डालां के औसा नहीं, हस्बे मा'मूल सिले हुअे
 कपडे पहनें. डां अगर मजकूरा स्कार्फ को शरअन जरूरी न
 समजें और वैसे ही पहनना याहें तो मन्अ नहीं.

﴿1﴾ सर छुपाना, अटके अहराम के ईलावा भी नमाज में
 और ना महरम (जिन में पालू, कूड़ा, अहनोई, मामूजाद,
 ययाजाद, कूड़ीजाद, आलाजाद और भुसूसियत के साथ देवर
 व जेठ भी शामिल हैं) के सामने इर्क है. ना महरमों के सामने

औरत का इस तरह आ जाना के सर जुला हुवा हो या धतना बारीक दुपट्टा ओढा हुवा हो के बालों की सियाही यमक्ती हो धलावा अहराम के भी हराम है और अहराम में सप्त हराम ﴿2﴾ मोहरिमा जब सर छुपा सकती है तो कपडे की गठडी सर पर उठाना ब द-र-जअे औला ज़ाईज हुवा ﴿3﴾ सिला हुवा ता'वीज़ गले या बाजू में बांधना ﴿4﴾ गिलाई का'बअे मुशर्रफ़ा में यूँ दाबिल होना के सर पर रहे मुंह पर न आअे के धसे भी मुंह पर कपडा डालना हराम है. (आज कल गिलाई का'बा पर लोग भूब भुशबू छिडक्ते हैं दिहाजा अहराम में अहतियात करें) ﴿5﴾ दस्ताने, मोजे और सिले कपडे पहनना ﴿6﴾ अहराम में मुंह छुपाना औरत को भी हराम है, ना महरम के आगे कोई पंजा (या गत्ता) वगैरा मुंह से बया हुवा सामने रहे. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1083) ﴿7﴾ धस्लामी बहन पी केप वाला निकाब भी पहन सकती है मगर येह अहतियात ज़रूरी है के येहरे से मस (TOUCH) न हो. धस में येह अन्देशा रहेगा के तेज हवा यले और निकाब येहरे से ब्रिपक ज़अे या बे तवज्जोही में पसीना वगैरा उसी निकाब से पोंछने लगे, दिहाजा सप्त अहतियात रफनी होगी.

“हज का अहराम” के नव हुइइ की

निस्बत से अहराम की 9 मुइइ अहतियातें

﴿1﴾ अहराम फरीदते वक्त फोल कर देफ लीजिये वरना रवानगी के भौकअ पर पहनते वक्त छोटा बडा निकला तो

सप्त आजमाईश हो सकती है ﴿2﴾ रवानगी से यन्द रोज कबल
 घर ही में अहराम बांधने की मश्क कर लीजिये ﴿3﴾ ठीपर की
 यादर तोलिये की और तहबन्द मोटे लकड़े का रबिये, **اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ**
 नमाजों में भी सहूलत रहेगी और मिना शरीफ वगैरा में हवा
 से उठने का ईम्कान भी कम हो जायेगा ﴿4﴾ अहराम और बेल्ट
 वगैरा बांध कर घर में कुछ यल फिर लीजिये ताके मश्क हो जाये,
 वरना बांध कर अक दम से यलने फिरने में तहबन्द भूब टाईट
 होने या फुल जाने वगैरा की सूरत में परेशानी हो सकती है ﴿5﴾
 पुसूसन लकड़े का अहराम उम्दा और मोटे कपडे का लीजिये
 वरना पतला कपडा हुवा और पसीना आया तो तहबन्द
 थिपक जाने की सूरत में रानों वगैरा की रंगत जाहिर हो सकती
 है. बा'ज अवकात तहबन्द का कपडा ईतना बारीक होता है के
 पसीना न हो तब भी रानों वगैरा की रंगत यमकती है.
 दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे **मक-त-बतुल मदीना** की
 मत्बूआ 496 सईहात पर मुश्तमिल किताब, "नमाज के
अहकाम" सईहा 194 पर है : अगर अैसा बारीक कपडा
 पहना जिस से बदन का वोह हिस्सा जिस का नमाज में छुपाना
 ईर्ज है नजर आये या जिल्द का रंग जाहिर हो नमाज न होगी.
 (فتاوى عالمگیری ج 1 ص 08) आज कल बारीक कपडों का रवाज बढ़ता
 जा रहा है. अैसे बारीक कपडे का पाजामा पहनना जिस से रान
 या सत्र का कोई हिस्सा यमकता हो ईलावा नमाज के भी पहनना
हराम है. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 480) ﴿6﴾ निय्यत से कबल

એહરામ પર ખુશ્બૂ લગાના સુન્નત છે, બેશક લગાઈયે મગર લગાને કે બા'દ ઈત્ર કી શીશી બેલ્ટ કી જેબ મેં મત ડાલિયે. વરના નિચ્ચત કે બા'દ જેબ મેં હાથ ડાલને કી સૂરત મેં ખુશ્બૂ લગ સકતી છે. અગર હાથ મેં ઈતના ઈત્ર લગ ગયા કે દેખને વાલે કહેં કે “ઝિયાદા હૈ” તો દમ વાજિબ હોગા ઓર કમ કહેં તો સ-દકા. અગર ઈત્ર કી તરી વગૈરા નહીં લગી હાથ મેં સિર્ફ મહક આ ગઈ તો કોઈ કફ્ફારા નહીં. બેગ મેં ભી રખના હો તો કિસી શોપર વગૈરા મેં લપેટ કર ખૂબ એહતિયાત કી જગહ રખિયે ﴿7﴾ ઊપર કી ચાદર દુરુસ્ત કરને મેં યેહ એહતિયાત રખિયે કે અપને યા કિસી દૂસરે મોહરિમ કે સર યા ચેહરે પર ન પડે. સગે મદીના ﷺ ને ભીડભાડ મેં એહરામ દુરુસ્ત કરને વાલોં કી ચાદરોં મેં દીગર મોહરિમોં કે મુંડે હુએ સર ફંસતે દેખે હૈં ﴿8﴾ કઈ મોહરિમ હઝરાત કે એહરામ કા તહબન્દ નાફ કે નીચે હોતા હૈ ઓર ઊપર કી ચાદર પેટ પર સે અક્સર સરકતી રહતી ઓર નાફ કે નીચે કા કુછ હિસ્સા સબ કે સામને ઝાહિર હોતા રહતા હૈ ઓર વોહ ઈસ કી પરવાહ નહીં કરતે, ઈસી તરહ ચલતે ફિરતે ઓર ઉઠતે બૈઠતે વક્ત બે એહતિયાતી કે બાઈસ બા'ઝ એહરામ વાલોં કી રાન વગૈરા ભી દૂસરોં પર ઝાહિર હો જાતી હૈ. બરાએ મેહરબાની ! ઈસ મસ્અલે કો યાદ રખિયે કે નાફ કે નીચે સે લે કર ઘુટનોં સમેત જિસ્મ કા સારા હિસ્સા સત્ર હૈ ઓર ઈસ મેં સે થોડા સા હિસ્સા ભી બિલા ઈજાઝતે શર-ઈ દૂસરોં કે આગે ખોલના હરામ હૈ. સત્ર કે યેહ મસાઈલ સિર્ફ એહરામ કે સાથ

मफ्सूस नहीं. अहराम के ँलावा भी दूसरों के आगे अपना सत्र फोलना या दूसरों के फुले सत्र की तरफ नजर करना हराम है ﴿9﴾ बा'जों के अहराम का तहबन्द नाफ़ के नीचे होता है और बे अहतियाती की वजह से مَعَادُ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दूसरों की मौजू-दगी में पेडू¹ का कुछ डिस्सा फुला रहता है. बहारे शरीअत में है : नमाज में थौथाई (1/4) की मिकदार (पेडू) फुला रहा तो नमाज न होगी और बा'ज बेबाक जैसे हैं के लोगों के सामने घुटने बल्के रानें फोले रहते हैं येह (नमाज व अहराम के ँलावा) भी हराम है और ँस की आदत है तो फ़ासिक हैं. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 481)

अहराम के बारे में जरूरी तम्बीह : जो बातें अहराम में ना जाँझ हैं अगर वोह किसी मजबूरी के सभब या भूल कर हों तो गुनाह नहीं मगर उन पर जो जुर्माना मुकरर है वोह बहर डाल अदा करना होगा अब येह बातें याहे बिगैर ँरादा हों, भूल कर हों, सोते में हों या जफ़न कोर्ष करवाअे. (अैजन, स. 1083)

में अहराम बांधूं करूं हज्जो उम्रह

मिले लुत्फे सअूये सफ़ा और मर्वह

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

دينه

1 : नाफ़ के नीचे से ले कर उजूवे मफ्सूस की जउ तक बदन की गोलाई में जितना डिस्सा आता है उसे "पेडू" कहते हैं.

हरम की पग़ाहत : आम बोलचाल में लोग “भस्जिडे उराम” को उरम शरीफ़ कहते हैं, इस में कोई शक नहीं के भस्जिडे उराम शरीफ़ उ-रमे मोउतरम डी में दाबिल है मगर उरम शरीफ़ मक्कअे मुकर्रमा رَأَى اللّٰهَ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا समेत¹ उस के ईद गिद भीलों तक झैला हुवा है और उर तरफ़ इस की हट्टे बनी हुई हैं. म-सलन जद्दा शरीफ़ से आते हुअे मक्कअे मुअज़्जमा رَأَى اللّٰهَ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا से कबल 23 किलो मीटर पडले पोलीस चौकी आती है, यहां सडक के ठीपर बोर्ड पर जली हुइफ़ में لِلْمُسْلِمِينَ فَقَط (या’नी सिर्फ़ मुसल्मानों के लिये) लिखा हुवा है. इसी सडक पर जब मज़ीद आगे बढते हैं तो भीरे शमीस या’नी हुदैबिया का मकाम है, इस सभ्त पर “उरम शरीफ़” की हद यहां से शुइअ हो जाती है. “अेक मुअर्रिफ़ की जदीद पैमाईश के हिसाब से उरम के रकबे का द्वाअेरा 127 किलो मीटर है जब के कुल रकबा 550 मुरब्बअ किलो मीटर है.” (तारीफे मक्कअे मुकर्रमा, स. 15) (जंगलों की कांटछांट, पहाडों की तराश भराश और सुरंगों (TUNNELS) की तरकीबों वगैरा के ज़रीअे बनाअे जाने वाले नअे रास्तों और सडकों के सभब वहां फ़ासिले में कमी बेशी होती रहती है उरम की अस्ल हुदूद वोही हैं जिन का अछादीसे मुबा-रका में बयान हुवा है)

¹ : मक्कअे मुकर्रमा رَأَى اللّٰهَ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا में आबादी बढती जा रही है और कहीं कहीं उरम के बाहर तक झैल चुकी है म-सलन तन्’म के येह उरम से बाहर है मगर शायद शहरे मक्का में दाबिल. والله ورسوله اعلم.

६-डी ६-डी उवा उरम की है

बारिश अद्लाह के करम की है

(वसाएले बजिशिश, स. 124)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

मक्कअ मुकर्रमा की हाजिरी : उरम

जब करीब आये तो सर झुकाये, आंखें शर्म गुनाह से नीची किये पुशूओ पुजूअ के साथ इस की उद में दाखिल हों, ठिको दुइद और लब्बैक की पूब कसरत कीजिये और जूं ही रब्बुल आ-लमीन **جَلَّ جَلَالُهُ** के मुकदसा शहर मक्कअ मुकर्रमा **زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** पर नजर पडे तो येह दुआ पढिये :

اللَّهُمَّ اجْعَلْ لِي قَرَارًا وَارْزُقْنِي فِيهَا رِزْقًا حَلَالًا

तरजमा : **ऐ अद्लाह ! मुझे इस में करार और रिज़्क उलाल अता करमा.**

मक्कअ मुअज़्जमा **زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** पड़ोय कर उरतन मकान और डिफाजते सामान वगैरा का इन्तिजाम कर के “लब्बैक” कहते हुअे “बाबुरसलाम” पर हाजिर हों और उस दरवाजअे पाक को यूम कर पहले सीधा पाउ मस्जिदुल उराम में रफ कर उमेशा की तरह मस्जिद में दाखिले की दुआ पढिये :

بِسْمِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلَی رَسُوْلِ اللّٰهِ ط

اَفْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ ط

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर सलाम हो, औ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे लिये अपनी रहमत के दरवाजे खोल दे.

अ'तिकाफ़ की नियत कर लीजिये : जब भी किसी मस्जिद में दाखिल हों और अ'तिकाफ़ की नियत करें तो सवाब मिलता है, मस्जिदुल हुराम में भी नियत कर लीजिये, يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَارْتَأِدُوا رِجْلَيْكُمْ وَكُلُوا وَشَرَبُوا وَلَا تَمَسُوا السُّجُودَ حَتَّىٰ تَبْغِضُوا السُّجُودَ كَمَا بَغِضْتُمْ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ यहाँ अक नेकी लाभ नेकी के बराबर है, लिहाजा अक लाभ अ'तिकाफ़ का सवाब पायेंगे जब तक मस्जिद के अन्दर रहेंगे अ'तिकाफ़ का सवाब मिलेगा और जिम्नन खाना, जमजम शरीफ़ पीना और सोना वगैरा भी जायज़ हो जायेगा वरना मस्जिद में ये सब चीज़ें शरअन ना जायज़ हैं.

تَرَجَمًا : مَنِ اعْتَكَفَ ط तरजमा : मैं ने सुन्नते अ'तिकाफ़ की नियत की.

का'बअे मुशरफ़ा पर पहली नजर : जूँ ही का'बअे मुअज़्जमा पर पहली नजर पड़े तीन बार لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ ط कलिये और दुइद शरीफ़ पढ कर दुआ मांगिये के का'बतुल्लाह शरीफ़ पर पहली नजर जब पडती है उस वक्त मांगी हुई दुआ जरूर कबूल होती है. आप याहें तो ये दुआ मांग लीजिये के “या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं जब भी कोई जायज़ दुआ मांगा करूं और उस में बेहतरी हो तो वोड

कभूल हुवा करे.” उजरते अल्लामा शामी قَدَسَ سِرُّهُ السَّامِي ने हु-कहाअे किराम رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام के उवाले से लिआ है : का'भतुल्लाह पर पडली नजर पडते वक्त जन्नत में बे हिसाब दाबिले की दुआ मांगी जाअे और दुइद शरीफ़ पढा जाअे.

(رَدُّ الْمُنْحَرَجِ ٣ ص ٥٧٠)

नूरी यादर तनी है का'बे पर
बारिश अल्लाह के करम की है

(वसाईले बफ़िशिश, स. 124)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

सब से अइजल दुआ : अल्लाह व रसूल ﷺ की रिआ के तलब गार मोउतरम आशिकाने रसूल ! अगर तवाफ़ व सअ्य वगैरा में हर जगह किसी और दुआ के बजाअे दुइद शरीफ़ ही पढते रहें तो येह सब से अइजल है और إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ दुइदो सलाम की ब-र-कत से बिगडे काम संवर जाअेंगे, वोह इफ्तियार करो जो मुहम्मदुर्सूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सअ्ये वा'दे से तमाम दुआओं से बेहतर व अइजल है या'नी यहां और तमाम मवाकेअ में अपने लिये दुआ के बढले अपने उबीअ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुइद भेजो, रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे सभ काम बना देगा और तेरे गुनाह मुआफ़ इरमा देगा.

(ترمذی ج ٤ ص ٢٠٧ حدیث ٢٤٦٥, इतावा र-उविथ्या मुभर्रजा, जि. 10, स. 740)

तवाइ में दुआ के लिये रुकना मन्थ है : भोडतरम डाजियो ! याहें तो सिई दुइदो सलाम पर ही ईक्तिई कीजिये के येह आसान भी है और अइजल भी. ताहम शाईकीने दुआ के लिये दुआओं भी दाभिले तरकीब कर दी हें लेकिन याद रहे के दुइदो सलाम पढ़ें या दुआओं सभ आहिस्ता आवाज में पढ़ना है, यिल्ला कर नहीं जैसा के भा'ज मुतव्विइ (या'नी तवाइ करने वाले) पढाते हें नीज यलते यलते पढ़ना है, पढ़ने के लिये दौराने तवाइ कहीं भी रुकना नहीं है.

उम्मे का तरीका

तवाइ का तरीका : तवाइ शुइअ करने से कबल मई ईजतिबाअ कर लें या'नी यादर सीधे हाथ की बगल के नीचे से निकाल कर उस के दोनों पल्ले उलटे कन्धे पर ईस तरह डाल लें के सीधा कन्धा जुला रहे. अब परवाना वार शम्मे का'बा के गिई तवाइ के लिये तय्यार हो जाईये.

ईजतिबाई हालत में का'बा शरीइ की तरइ मुंड किये उ-जरे अस्वद की बाई (left) तरइ रुकने यमानी की जानिब उ-जरे अस्वद के करीब ईस तरह ँडे हो जाईये के पूरा "उ-जरे अस्वद" आप के सीधे हाथ की तरइ रहे. अब बिगैर हाथ उठाये

ઈસ ખાત કા ખયાલ રખિયે કે લોગોં કો આપ કે ધક્કે ન લગેં કે યેહ કુવ્વત કે મુઝા-હરે કી નહીં, આજિઝી ઓર મિસ્કીની કે ઈઝહાર કી જગહ હૈ. હુજૂમ કે સબબ અગર બોસા મુયસ્સર ન આ સકે તો ન ઓરોં કો ઈઝા દેં ન ખુદ દબેં કુચલેં બલકે હાથ યા લકડી સે હ-જરે અસ્વદ કો છૂ કર ઉસે ચૂમ લીજિયે, યેહ ભી ન બન પડે તો હાથોં કા ઈશારા કર કે અપને હાથોં કો ચૂમ લીજિયે, યેહી કયા કમ હૈ કે મક્કી મ-દની સરકાર صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કે મુબારક મુંહ રખને કી જગહ પર આપ કી નિગાહેં પડ રહી હેં.

હ-જરે અસ્વદ કો બોસા દેને યા લકડી યા હાથ સે છૂ કર ચૂમને યા હાથોં કા ઈશારા કર કે ઉન્હેં ચૂમ લેને કો “ઈસ્તિલામ” કહતે હેં.

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ હૈ : રોઝે કિયામત યેહ પથ્થર ઉઠાયા જાએગા, ઈસ કી આંખેં હોંગી જિન સે દેખેગા, ઝબાન હોગી જિસ સે કલામ કરેગા, જિસ ને હક કે સાથ ઈસ કા ઈસ્તિલામ કિયા ઉસ કે લિયે ગવાહી દેગા. (તરમ્ઝી જ ૨૮૧૬૨૮૧૬)

اللَّهُمَّ اِيْمَانًا بِكَ وَاتِّبَاعًا لِسُنَّةِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
 ઈલાહી તુઝ પર ઈમાન લા કર
 ઓર તેરે નબી મુહમ્મદ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કી સુન્નત કી પૈરવી
 કરને કો યેહ તવાફ કરતા હૂં. કહતે હુએ કા'બા શરીફ કી તરફ હી

येहरा किये सीधे हाथ की तरफ़ थोडा सा सरकिये जब उ-जरे अस्वद आप के येहरे के सामने न रहे (और येह अदना सी उ-र-कत में हो जायेगा) तो फौरन इस तरह सीधे हो जाईये के **पानअे का'बा** आप के उलटे हाथ की तरफ़ रहे, इस तरह यलिये के किसी को आप का धक्का न लगे. मर्द एब्तिदाई तीन³ ફેरों में रमल करते यलें या'नी जल्द जल्द छोटे कदम रभते, शाने (या'नी कन्धे) हिलाले यलें जैसे कवी व बहादुर लोग यलते हैं. बा'ज लोग कूदते और दौडते हुअे जाते हैं, येह **सुन्नत** नहीं है. जहां जहां भीड जियादा हो और रमल में जुद को या दूसरों को तकलीफ़ होती हो उतनी देर रमल तर्क कर दीजिये मगर रमल की पातिर रुकिये नहीं, तवाफ़ में मशगूल रहिये. फिर जूं ही मौकअ मिले, उतनी देर तक के लिये रमल के साथ तवाफ़ कीजिये.

तवाफ़ में जिस कदर **पानअे का'बा** से करीब रहें येह बेहतर है मगर एतने जियादा करीब भी न हो जाअें के कपडा या जिस्म पुशतअे दीवार¹ से लगे और अगर नजदीकी में हुजूम के सबब रमल न हो सके तो अब दूरी बेहतर है. एस्लामी बहनों के लिये तवाफ़ में **पानअे का'बा** से दूरी अफ़जल है. पहले यक्कर में यलते यलते दुइद शरीफ़ पढ कर येह दुआ पढिये :

1 : मिट्टी (या सिमेन्ट) का ढेर जो मकान की बाहरी दीवार की मजबूती के लिये उस की जड में लगाते हैं उसे "पुशतअे दीवार" कहते हैं.



पहले यक्कर की दुआ

سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ

अल्लाह तआला पाक है और सब भूबियां अल्लाह एज़्जल ही के लिये हैं और अल्लाह एज़्जल के सिवा कोई ईबादत के लाईक नहीं और अल्लाह एज़्जल

أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ

सब से बड़ा है और गुनाहों से बचने की ताकत और नेकी करने की तौफ़ीक अल्लाह अकबर से है और सब से बुलन्द

الْعَظِيمِ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ

और अ-जमत वाला है और रहमते कामिला और सलाम नाजिल हो अल्लाह एज़्जल के रसूल

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ اللَّهُمَّ

! एज़्जल के रसूल पर. ओ अल्लाह

إِيْمَانًا بِكَ وَتَصَدِيقًا بِكِتَابِكَ وَوَفَاءً

तुझ पर ईमान लाते हुए और तेरी किताब की तस्दीक करते हुए और तुझ से किये हुए अड्डे

بِعَهْدِكَ وَاتِّبَاعًا لِسُنَّةِ نَبِيِّكَ وَحَبِيبِكَ

की वल्लेहियत के साथ और तेरे नबी और तेरे उबीय मुहम्मद एज़्जल के साथ

مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ اللَّهُمَّ

سُنَّاتِ كِي पैंरवी करते हुअे (में तवाफ़ शुअर कर युका हूँ) औ अदवाह उअरुअु!

إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ وَالْمُعَافَاةَ الدَّائِمَةَ

में तुअ से (गुनाहों से) मुआफ़ी का और (बलाओं से) आफ़ियत का और दाईभी हिकअत का,

فِي الدِّينِ وَالدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَالْفَوْزِ

दीनो दुन्या और आभिरत में और हुसूले जन्नत में काम्याबी

بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةِ مِنَ النَّارِ

(दुअद शरीफ़ पढ लीजिये)

और जहन्नम से नजत पाने का सुवाल करता हूँ.

रुकने यमानी पड़ोयने तक येह दुआ पूरी कर लीजिये, अब अगर भीउ की वजह से अपनी या दूसरों की धजा का अन्देशा न हो तो रुकने यमानी को दोनों हाथों से या सीधे हाथ से तबर्दुकन धूअें, सिर्फ़ भाअें (उलटे) हाथ से न धूअें. भौकअ मिले तो रुकने यमानी को बोसा भी दीजिये, अगर यूमने या धूने का भौकअ न मिले तो यहां हाथों से धशारा कर के यूमना नही. (रुकने यमानी पर आज कल लोग काई फुशबू लगा देते हैं लिहाजा अहराम वाले धूने और यूमने में अहतियात इरमाअें) अब आप का'बअे मुशरफ़ा के तीन³ कोनों का तवाफ़ पूरा कर के यौथे⁴ कोने रुकने अस्वद की तरफ़ बढ रहे हैं, रुकने यमानी और रुकने अस्वद की दरमियानी दीवार को "मुस्तजाब" कहते हैं, यहां

दुआ पर आमीन कहने के लिये सत्तर हजार इरिशते मुकरर हैं. आप जो चाहें अपनी ज़बान में अपने लिये और तमाम मुसलमानों के लिये दुआ मांगिये या सब की निश्चय से और मुज गुनहगार सगे मदीना عَنْ की भी निश्चय शामिल कर के एक मर्तबा दुरुद शरीफ़ पढ़ लीजिये, नीज़ येह कुरआनी दुआ भी पढ़ लीजिये :

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً

तर-ज-मअे कजुल धमान : औ रब हमारे ! हमें दुनिया में भलाई दे और हमें आभिरत में भलाई दे

وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (२०)

और हमें अज़ाबे दोज़ाब से बचा.

औ लीजिये ! आप उ-जरे अस्वद के करीब आ पड़ोये, यहाँ आप का एक यक्कर पूरा हुवा. लोग यहाँ एक दूसरे की देखा देपी दूर ही दूर से हाथ लहराते हुअे गुज़र रहे होते हैं ऐसा करना हरगिज़ सुन्नत नहीं, आप हरबे साबिक या'नी पहले की तरह ३ ब डिब्बा उ-जरे अस्वद की तरफ़ मुंह कर लीजिये. अब निश्चय करने की ज़रूरत नहीं के वोह तो इब्तिदाअन हो चुकी, अब दूसरा^२ यक्कर शुअअ करने के लिये पहले ही की तरह दोनों^२ हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ :

بِسْمِ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ

पढ़ कर इस्तिलाम कीजिये. या'नी मौकअ हो तो उ-जरे अस्वद को बोसा दीजिये वरना उसी तरह हाथ से इशारा कर के उसे

यूँ म लीजिये. पड़ले ही की तरह का'बा शरीफ़ की तरफ़ मुँह
 कर के थोड़ा सा सीधे हाथ की जानिब सरकिये. जब ह-जरे
 अस्वद सामने न रहे तो फ़ौरन उसी तरह का'बाअे मुशरफ़ा
 को बाअें (left) हाथ की तरफ़ लिये तवाफ़ में मशगूल हो जाँये
 और दुरुद शरीफ़ पढ कर येह दुआ पढिये :



दूसरे यक्कर की दुआ

اللَّهُمَّ إِنَّ هَذَا الْبَيْتَ بَيْتُكَ وَالْحَرَمَ حَرَمُكَ

औ अल्लाह एउँज़ल ! भेशक येह घर तेरा घर है और येह हरम तेरा हरम है

وَالْأَمْنِ أَمْنُكَ وَالْعَبْدَ عَبْدُكَ وَأَنَا عَبْدُكَ

और (यहाँ का) अमनो अमान तेरा ही दिया हुआ है और हर बन्दा तेरा ही बन्दा है और मैं भी तेरा ही बन्दा हूँ

وَابْنُ عَبْدِكَ وَهَذَا مَقَامُ الْعَائِدِ بِكَ مِنْ

और तेरे ही बन्दे का बेटा हूँ और येह मकाम जहन्नम से तेरी पनाह माँगने वाले का है,

النَّارِ فَحَرِّمِ لِحُومَنَا وَبَشَرَتَنَا عَلَى النَّارِ

तो हमारे गोशत और जिस्म को दोज़ाब पर हराम इरमा दे,

اللَّهُمَّ حَبِّبِ إِلَيْنَا الْإِيمَانَ وَزَيِّنْهُ فِي

औ अल्लाह एउँज़ल हमारे लिये ईमान को मलबूब बना दे

قُلُوبِنَا وَكَرِهَ إِلَيْنَا الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ

और हमारे दिलों में ईस की याद पैदा कर दे और हमारे लिये कुफ़्र और बहक़ारी

وَالْعِصْيَانَ وَاجْعَلْنَا مِنَ الرَّاشِدِينَ اللَّهُمَّ

और ना फ़रमानी को ना पसन्द बना दे और हमें सिद्दायत पाने वालों में शामिल कर ले, ओ अल्लाह !

قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ اللَّهُمَّ

जिस दिन तू अपने बन्दों को दोबारा जिन्दा कर के उठाओ मुझे अपने अजाब से बचा, ओ अल्लाह !

ارْزُقْنِي الْجَنَّةَ بِغَيْرِ حِسَابٍ

(दुइद शरीफ़ पढ लीजिये)

मुझे बे हिसाब जन्नत अता फ़रमा .

रुकने यमानी पर पड़ोयने से पडले पडले येह दुआ
 भत्म कर दीजिये. अब भौकअ मिले तो पडले की तरह भोसा
 ले कर या फिर उसी तरह छू कर “उ-जरे अस्वद” की तरफ़
 बढिये, दुइद शरीफ़ पढ कर येह दुआअे कुरआनी पढिये :

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : ओ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आभिरत में भलाई दे

وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

और हमें अजाबे दोजब से बचा.

औ लीजिये ! आप फिर ६-जरे अस्वद के करीब आ पड़ोये. अब आप का “दूसरा^२ यक्कर” भी पूरा हो गया, फिर इसबे साबिक दोनों^२ हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ :
 بِسْمِ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ
 पढ कर ६-जरे अस्वद का इस्तिलाम कीजिये और पडले ही की तरह तीसरा^३ यक्कर शुरुअ कीजिये और दुइद शरीफ़ पढ कर येह दुआ पढिये :



तीसरे यक्कर की दुआ

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الشَّكِّ وَالشَّرِكِ

औ अल्लाह غَوْجَلْ में शक और शिक

وَالنِّفَاقِ وَالشَّقَاقِ وَسُوءِ الْأَخْلَاقِ وَسُوءِ

और निफ़ाक और उक की मुभा-लफ़त से और बुरे अफ़्लाक और बुरे

الْمُنْظَرِ وَالْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالْأَهْلِ وَالْوَالِدِ

हाल से और अडलो इयाल और माल में बुरे अन्जाम से तेरी पनाह याहता हूं.

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ رِضَاكَ وَالْجَنَّةَ وَ

औ अल्लाह غَوْجَلْ ! मैं तुम से तेरी रिज़ा और जन्नत मांगता हूं और

اعُوذُ بِكَ مِنْ سَخَطِكَ وَالنَّارِ ط اللَّهُمَّ إِنِّي

तेरे ग़ज़ब और ज़हन्नम से पनाह याहता हूँ, औ अल्लाह !

اعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ وَاعُوذُ بِكَ مِنْ

मैं कब्र की आजमाईश और जिन्दगी और

فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ ط (दुइद शरीफ़ पढ लीजिये)

मौत के इतने से तेरी पनाह मांगता हूँ.

रुकने यमानी पर पड़ोयने से पडले येह दुआ जल्म कर
दीजिये और पडले की तरह अमल करते हुअे उ-जरे अस्वद की
तरह बढते हुअे दुइद शरीफ़ पढ कर येह दुआअे कुरआनी पढिये :

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً

तर-ज-मअे क-जुल ईमान: औ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आभिरत में भलाई दे

وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ②

और हमें अजाबे दोज़भ से बचा.

औ लीजिये ! आप इर उ-जरे अस्वद के करीब आ
पड़ोये, आप का “तीसरा यक्कर” भी मुकम्मल हो गया,
इर पडले की तरह दोनों² हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ :

بِسْمِ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ط

पठ कर ६-७रे अस्वद का इस्तिलाम कीजिये और पढले
 ही की तरह यौथा⁴ यक्कर शुरुअ कीजिये, अब रमल न
 कीजिये के रमल सिर्फ़ तीन³ इब्तिदाई इरों में करना था.
 अब आप को हस्बे मा'मूल दरमियाना याल के साथ
 बकिय्या इरे मुकम्मल करने हें. दुरइद शरीफ़ पढ कर येह
 दुआ पढिये :



यौथे यक्कर की दुआ

اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ جَمًّا مَبْرُورًا وَسَعِيًّا مَشْكُورًا

अइ अद्लाह! मेरे इस ६७ को ६७जे मबरूर और मेरी कोशिश को काम्याब

وَذَنْبًا مَغْفُورًا وَعَمَلًا صَالِحًا مَقْبُولًا

और गुनाहों की मग्फिरत का जरीआ और मकबूल नेक अमल और

تِجَارَةً لَّنْ تَبُورَ ط يَا عَالَمُ مَا فِي الصُّدُورِ

बे नुकसान तिजारत बना दे. अ सीनों के डाल जानने वाले !

أَخْرِجْنِي يَا اللَّهُ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ

अइ अद्लाह! मुजे (गुनाह की) तारीकियों से (अ-मले सादेह की) रोशनी की तरफ़ निकाल दे.

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مُوجِبَاتِ رَحْمَتِكَ

औ अल्लाह उग्रुजल मुं तुल से तेरी रहमत (के हासिल होने) के जरीओं

وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ

और तेरी मग़्फ़िरत के अस्बाब का और तमाम

إِثْمٍ وَالْفَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بَرٍّ وَالفَوْئِرِ

गुनाहों से बचते रहने और हर नेकी की तौफ़ीक का और

بِالجَنَّةِ وَالنجَاةِ مِنَ النَّارِ اللَّهُمَّ قِنِّعْنِي

जन्नत में जाने और जहन्नम से नज़ात पाने का सुवाल करता हूँ, और औ अल्लाह उग्रुजल मुंजे अपने दिये

بِمَارَ زَقَاتِنِي وَبَارِكْ لِي فِيهِ وَاخْلُفْ عَلَيَّ

हुअे रिज़क में कनाअत अता इरमा और इस में मेरे दिये ब-र-कत भी दे और

كُلِّ غَائِبَةٍ لِي بِخَيْرٍ ط (दुइद शरीफ़ पढ लीजिये)

हर नुकसान का अपने करम से मुंजे ने'मल बढल अता इरमा.

रुकने यमानी तक येह दुआ ખत्म कर के इर पडले की तरह अमल करते हुअे उ-जरे अस्वद की तरइ बढिये और दुइद शरीफ़ पढ कर येह कुरआनी दुआ पढिये :

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : औ रब हमारे ! हमें दुन्या में भ्लाई दे और हमें आभिरत में भ्लाई दे

وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠١﴾

और हमें अजाबे दोऊप से बचा।

औ लीजिये ! आप फिर ७-४रे अस्वद पर आ पड़ोये.

हस्बे साबिक दोनों हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ :

بِسْمِ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ

पढ कर धस्तिवाम कीजिये और पांयवां⁵ यक्कर शुद्ध कीजिये

और दुद्ध शरीफ पढ कर येह दुआ पढिये :



पांयवें यक्कर की दुआ

اللَّهُمَّ أَظْلِنِي تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ يَوْمَ لَا

अइवलाह अउर ! मुअे उस दिन अपने अरश के साअे में जगह दे जिस दिन

ظِلِّ إِلَّا ظِلُّ عَرْشِكَ وَلَا بَاقِيَ إِلَّا وَجْهُكَ

तेरे अरश के साअे के सिवा कोरि साया न होगे और तेरी आते पाक के सिवा कोरि बाकी न रहेगे

وَاسْقِنِي مِنْ حَوْضِ نَبِيِّكَ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ

और मुअे अपने नबी मुहम्मद मुस्तफा

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ شَرْبَةً

से (कौंसर) लौं के صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

هَنِيئَةً مَرِيئَةً لَّا نَظْمًا بَعْدَهَا أَبَدًا اللَّهُمَّ

ऐसा पुश गवार और पुश जाओका घूंट पिला के इस के बा'द कभी मुझे प्यास न लगे, ओ अल्लाह عزوجل !

إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَأَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ

मैं तुज से उन चीजों की भलाई मांगता हूँ जिन्हें तेरे नबी

سَيِّدِنَا مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

सखिदुना मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने तुज से तलब किया

وَسَلَّمَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَكَ

और उन चीजों की बुराई से तेरी पनाह याहता हूँ जिन से

مِنْهُ نَبِيُّكَ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तेरे नबी सखिदुना मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पनाह मांगी.

وَسَلَّمَ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ وَنَعِيمَهَا

ओ अल्लाह عزوجل ! मैं तुज से जन्नत और इस की ने'मतों का

وَمَا يُقَرِّبُنِي إِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ أَوْ فِعْلٍ أَوْ عَمَلٍ ط

और हर उस कौल या फ़ैल या अमल (की तौफ़ीक) का सुवाल करता हूँ जो मुझे जन्नत से करीब कर दे

وَاعْوِذْ بِكَ مِنَ النَّارِ وَمَا يُقَرِّبُنِي إِلَيْهَا مِنْ

और मैं दोज़ाब और हर उस कौल या फ़ैल या अमल से तेरी पनाह याहता हूँ जो मुझे जहन्नम से करीब

قَوْلٍ أَوْ فِعْلٍ أَوْ عَمَلٍ ط

(दुइद शरीफ़ पढ लीजिये)

कर दे

रुकने यमानी तक येह दुआ भत्म कर के पहले की तरह ६-७रे अस्वद की तरफ़ बढिये और दुइद शरीफ़ पढ कर येह कुरआनी दुआ पढिये :

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً

तर-७-मअे क-जुल ईमान : ओ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आभिरत में भलाई दे

وَوَقْنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠﴾

और हमें अजाबे दोज़ाब से बचा.

इर ६-७रे अस्वद पर आ कर दोनों हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ :

بِسْمِ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ط

पढ कर ईस्तिलाम कीजिये और अब छटा^६ यक्कर शुइअ

कीजिये और दुइद शरीफ़ पढ कर येह दुआ पढिये :

छठे यक्कर की दुआ

اللَّهُمَّ إِنَّ لَكَ عَلَيَّ حُقُوقًا كَثِيرَةً فِيمَا

मैं अल्लाह! عُزْرًا! मुझे पर तेरे बहुत से छुक्क हैं उन मुआ-मलात में

بَيْنِي وَبَيْنَكَ وَحُقُوقًا كَثِيرَةً فِيمَا بَيْنِي

और मेरे और तेरे दरमियान हैं और बहुत से छुक्क हैं उन मुआ-मलात में और तेरी

وَبَيْنَ خَلْقِكَ اللَّهُمَّ مَا كَانَ لَكَ مِنْهَا

मज्लूक के दरमियान हैं. मैं अल्लाह! उन में से जिन का तअल्लुक तुझ से हो उन की (कोताही की)

فَاغْفِرْ لِي وَمَا كَانَ لِخَلْقِكَ فَتَحَمَّلَهُ عَنِّي

मुझे मुआफी दे और जिन का तअल्लुक तेरी मज्लूक से (भी) हो उन की मुआफी अपने जिम्मे करम पर ले ले.

وَأَعِزَّنِي بِجَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَبَطَاعَتِكَ

मैं अल्लाह! मुझे (रिजके) उलाल अता इरमा कर हुराम से बे परवाह कर दे और अपनी इताअत की तौफीक अता इरमा कर

عَنْ مَعْصِيَتِكَ وَبِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ يَا

ना इरमानी से और अपने इजल से नवाज कर अपने उलावा दूसरों से मुस्तग्नी (या'नी बे परवा) कर दे,

وَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ ط اللَّهُمَّ إِنَّ بَيْتَكَ عَظِيمٌ وَوَجْهَكَ

औ वसीअ मङ्गिरत वाले ! औ अल्लाह एगुजल ! बेशक तेरा घर बडी अ-उमत वाला है और तेरी जात

كَرِيمٌ وَأَنْتَ يَا اللَّهُ حَلِيمٌ كَرِيمٌ عَظِيمٌ

करीम है और औ अल्लाह एगुजल ! तू हिलम वाला, करम वाला, अ-उमत वाला है

تَحِبُّ الْعَفْوَاعُ عَنِّي ط

(दुइद शरीफ पढ लीजिये)

और तू मुआफी को पसन्द करता है सो मेरी जताओं को बपश दे.

रुकने यमानी तक येह दुआ पत्म कर के फिर पडले की तरह अमल करते हुअे ह-जरे अस्वद की तरह बढिये और दुइद शरीफ पढ कर येह कुरआनी दुआ पढिये :

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً

तर-ज-मुअे क-जुल ईमान : औ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आभिरत में भलाई दे

وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ٢٠١

और हमें अजाबे दोजभ से बचा.

फिर पडले की तरह दोनों हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ :

بِسْمِ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ط

पढ कर ह-जरे अस्वद का इस्तिलाम कीजिये और सातवां और आभिरी

यक्कर शुरुअ कीजिये और दुरुद शरीफ़ पढ कर येह दुआ पढिये :



सातवें यक्कर की दुआ

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ إِيمَانًا كَامِلًا وَبِقِيْنًا

औ अल्हाउ एज़ज़ल मैं तुज से तेरी रहमत के वसीले से कामिल ईमान और सख्खा यकीन

صَادِقًا وَرِزْقًا وَاسِعًا وَقَلْبًا خَاشِعًا

और कुशादा रिज़्क और आज़िज़ी करने वाला दिल और

لِسَانًا ذَاكِرًا وَرِزْقًا حَلَالًا طَيِّبًا وَتَوْبَةً

ज़िक करने वाली ज़बान और हलाल और पाक रोज़ी और सख्खी तौबा

نُصُوحًا وَتَوْبَةً قَبْلَ الْمَوْتِ وَرَاحَةً عِنْدَ الْمَوْتِ

और भौत से पहले की तौबा और भौत के वक्त राहत

وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً بَعْدَ الْمَوْتِ وَالْعَفْوَ عِنْدَ

और मरने के बाद मग्फ़िरत और रहमत और हिसाब के वक्त मुआफ़ी

الْحِسَابِ وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ

और जन्नत का हुसूल और जहन्नम से नजात मांगता हूँ,

بِرَحْمَتِكَ يَا عَزِيزُ يَا غَفَّارُ رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا

औं ईज्जत वाले! औं बहुत बप्शने वाले! औं मेरे रब उग्र और मेरे ईल्म में ईजाड़ा इरमा

وَالْحَقِّقْنِي بِالصَّالِحِينَ ط

(दुइद शरीफ पढ लीजिये)

और मुझे नेकों में शामिल इरमा.

रुकने यमानी पर आ कर येह दुआ खत्म कर के पडले की तरह
अमल करते हुअे दुइद शरीफ पढ कर येह कुरआनी दुआ पढिये :

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : औं रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे
और हमें आखिरत में भलाई दे

وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ٢٠١

और हमें अजाबे दोजख से बचा.

उ-जरे अस्वद पर पछोंय कर आप के सात इरे मुकम्मल
डो गअे मगर इर आठवीं बार पडले की तरह दोनों हाथ
कानों तक उठा कर येह दुआ :

بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ط

پڑھ کر اِستِلاَم کیجیے اور یہ ۱۴ ہمیشہ یاد رکھیے کہ جب بھی تواضع کریں اس میں کبھی ساتھ ہوتے ہیں اور اِستِلاَم آٹھ.



مکامہ اِبراہیمی

اب سیدھا کنبھا ڈانپ لیکھیے اور “مکامہ اِبراہیمی” پر آ کر پارہ 1 سورہ بقرہ کی یہ آیت پڑھیں:

وَاتَّخِذُوا مِنْ مَّقَامِ إِبْرٰہِمْ مُصَلًّیً ۝

ترجمہ: اور اِبراہیمی کے جگہ سے جگہ کو نماز کا مقام بناؤ۔

نماز تواضع : اب مکامہ اِبراہیمی کے کریب جگہ میں تو بہتر ورنہ مسجد کعبہ میں جگہ میں جگہ میں اگر وقت مقرر نہ ہو تو دو رکعت نماز تواضع ادا کیجیے، پہلی رکعت میں سورہ فاتحہ کے بعد قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ اور دوسری میں قُلْ هُوَ اللَّهُ ہے اور کوئی مہجوری نہ ہو تو تواضع کے بعد کھڑے پڑھنا سُنّت ہے۔ اکثر لوگ کنبھا چلا کر نماز پڑھتے ہیں یہ مقرر ہے۔ اِنتِباہ یا’نی کنبھا چلا رکھنا سیکھیں اس

तवाफ़ के सातों ફेरों में है जिस के बा'द सभ्य होती है. अगर वक्ते मक़रुह दाखिल हो गया हो तो बा'द में पढ लीजिये और याद रखिये इस नमाज़ का पढना लाज़िमी है.

मकामे धब्राहीम पर दो रक़अत अदा कर के दुआ मांगिये, उदीसे पाक में है : **अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ફरमाता है :** “जो येह दुआ करेगा मैं उस की ખता बपश दूंगा, गम दूर करूंगा, मोहताज उस से निकाल लूंगा, हर ताजिर से बढ कर उस की तिज़रत रખूंगा, दुन्या नायार व मजबूर उस के पास आओगी अगर्ये वोह उसे न याहे.” (ابن عساکر ج ۷ ص ۴۳۱) वोह दुआ येह है :



मकामे धब्राहीम की दुआ

اللَّهُمَّ إِنَّكَ تَعْلَمُ سِرِّي وَعَلَانِيَتِي

औ अद्लाह ! तू मेरी सब छुपी और खुली बातें जानता है

فَاقْبَلْ مَعْدِرَتِي وَتَعْلَمْ حَاجَتِي فَأَعْطِنِي

लिहाजा मेरी मा'ज़िरत कबूल फ़रमा और तू मेरी लाज़त को जानता है लिहाजा मेरी ख्वाहिश को

سُؤْلِي وَتَعْلَمْ مَا فِي نَفْسِي فَأَغْفِرْ لِي ذُنُوبِي

पूरा कर और तू मेरे दिल का हाल जानता है लिहाजा मेरे गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा.

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ إِيمَانًا يُبَاشِرُ قَلْبِي وَيَقِينًا

औ अस्लाह एउउउ ! मैं तुज से मांगता हूँ ऐसा ईमान जो मेरे दिल में समा जाओ और ऐसा सख्खा यकीन

صَادِقًا حَتَّىٰ أَعْلَمَ أَنَّهُ لَا يُصِيبُنِي إِلَّا مَا كَتَبَتْ

के मैं जान लूँ के जो कुछ तूने मेरी तकदीर में लिख दिया है वोही मुझे पड़ोयेगा

لِي وَرِضًا بِمَا قَسَمْتَ لِي يَا أَرْحَمَ الرَّحِمِينَ ط

और तेरी तरफ से अपनी किस्मत पर रिजा मन्दी, औ सब से बढ कर रहम इरमाने वाले.

“जलील” के चार हुर्रु की निरुधत से मकामे इब्राहीम पर नमाज के चार म-दनी इल

﴿1﴾ इरमाने मुस्तइ : : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ “जो मकामे इब्राहीम के पीछे दो रकअतें पढे, उस के अगले पिछले गुनाह बपश दिये जाअेंगे और कियामत के दिन अमन वालों में मइशूर होगा.” (या’नी उठाया जाओगा) (الشفاء، الجزء الثاني من ٩٣) ﴿2﴾ अकसर लोग भीउत्माउ में गिरते पडते भी जबर दस्ती “मकामे इब्राहीम” के पीछे ही नमाज पढते हैं, आ’ज उजरात मस्तूरात को नमाज पढाने के लिये हाथों का उल्का बना कर रास्ता घेर लेते हैं उन्हें इस तरह करने के बजाओ भीउ के मौकअ पर “नमाजे तवाइ” मकामे इब्राहीम से दूर पढनी याहिये के तवाइ करने वालों को भी तकलीइ न हो और खुद को भी धक्के न लगें ﴿3﴾ मकामे इब्राहीम के आ’द इस नमाज के

लिये सभ से अइजल का'बअे मुअज़्जमा के अन्दर पढना है फिर हतीम में भीजाये रहमत के नीचे इस के बा'द हतीम में किसी और जगह फिर का'बअे मुअज़्जमा से करीब तर जगह में फिर मस्जिदुल हुराम में किसी जगह फिर उ-रमे मक्का के अन्दर जहां भी हो. (أَبْدَانُ التَّنَائِيكِ ص 106) ﴿4﴾ सुन्नत येह है के वक्ते कराहत न हो तो तवाइ के बा'द झौरन नमाज पढे, बीय में झसिला न हो और अगर न पढी तो उम्र भर में जब पढेगा, अदा ही है कजा नहीं मगर बुरा किया के सुन्नत झौत हुई. (الْمَسْأَلَةُ الْمُتَقَرَّرَةُ ص 100)

अज मुल्तजम पर आधये.....! : नमाजे तवाइ व हुआ से झारिग हो कर (मुल्तजम की हाजिरी मुस्तहब है) मुल्तजम से लिपट जाईये. दरवाजअे का'बा और उ-जरे अस्वद के दरमियानी हिस्से को मुल्तजम कहते हैं, इस में दरवाजअे का'बा शामिल नहीं. मुल्तजम से कभी सीना लगाईये तो कभी पेट, इस पर कभी दयां रुप्सार तो कभी बायां रुप्सार और दोनों हाथ सर से ऊंये कर के दीवारे मुकदस पर झैलाईये या सीधा हाथ दरवाजअे का'बा की तरई और उलटा हाथ उ-जरे अस्वद की तरई झैलाईये. भूब आंसू बहाईये और निहायत ही आजिजी के साथ गिडगिडा कर अपने पाक परवर दगार عَزَّ وَجَلَّ से अपने लिये और तमाम उम्मत के लिये अपनी जभान में हुआ मांगिये के मकामे कबूल है. यहां की अेक हुआ येह है :

يَا وَجِدِيَا مَا جِدُّ لَا تَرُلْ عَنِّي نِعْمَةً أَنْعَمْتَهَا عَلَيَّ ط

औ कुदरत वाले ! औ बुरुर्ग ! तूने मुजे जो ने'मत दी, उस को मुज से आईल न कर.

હડીસ મેં ફરમાયા : “જબ મેં ચાહતા હું જિબ્રીલ કો દેખતા હું કે મુલ્તઝમ સે લિપટે હુએ યેહ દુઆ કર રહે હૈં.” (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 1104) ઓર હો સકે તો દુરૂદ શરીફ પઠ કર યેહ દુઆ ભી પઢિયે :

મકામે મુલ્તઝમ પર પઢને કી દુઆ

اللَّهُمَّ يَا رَبَّ الْبَيْتِ الْعَتِيقِ اعْتِقْ رِقَابَنَا

ઐ અલ્લાહ! ઐ ઈસ કદીમ ઘર કે માલિક! હમારી ગરદનોં કો ઓર હમારે

وَرِقَابَ آبَائِنَا وَأُمَّهَاتِنَا وَأُخْوَانِنَا وَأَوْلَادِنَا مِنْ

(મુસલ્માન) બાપ દાદોં ઓર માઓં (બહનોં) ઓર ભાઈઓં ઓર ઓલાદ કી ગરદનોં કો

النَّارِ يَا ذَا الْجُودِ وَالْكَرَمِ وَالْفُضْلِ وَالْمِنَّ وَالْعَطَاءِ

દોઝખ સે આઝાદ કર દે, ઐ બખ્શિશ ઓર કરમ ઓર ફૂલ ઓર એહસાન

وَالْإِحْسَانِ اللَّهُمَّ أَحْسِنْ عَاقِبَتَنَا فِي الْأُمُورِ

ઓર અતા વાલે! ઐ અલ્લાહ! તમામ મુઆ-મલાત મેં હમારા અન્જામ

كُلِّهَا وَاجِرْنَا مِنْ خِزْيِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ

બખૈર ફરમા ઓર હમેં દુન્યા કી રુસ્વાઈ ઓર આખિરત કે અઝાબ સે મહફૂઝ રખ.

الْآخِرَةَ ط اللَّهُمَّ إِنِّي عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ وَاقِفُ

औ अल्लाह उजल उं! मैं तेरा बन्दा हूँ और बन्दा आदा हूँ, तेरे (मुकदस घर के) दरवाजे के

تَحْتِ بَابِكَ مُلْتَزِمٌ بِأَعْتَابِكَ مُتَذَلِّلٌ

नीचे भडा हूँ, तेरे दरवाजे की चौपटों से लिपटा हूँ, तेरे सामने आजिजी का धजहार कर रडा हूँ

بَيْنَ يَدَيْكَ أَرْجُو رَحْمَتَكَ وَأَخْشَى عَذَابَكَ

और तेरी रहमत का तलभ गार हूँ और तेरे दोजभ के अजाभ से डर रडा हूँ

مِنَ النَّارِ يَا قَدِيمَ الْإِحْسَانِ ط اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ

मैं उमेशा के मोहसिन! (अभ भी ओहसान इरमा) औ अल्लाह उजल उं! मैं तुज से सुवाल करता हूँ के

أَنْ تَرْفَعَ ذِكْرِي وَتَضَعَ زُرْمِي وَتُصَلِّحَ

मेरे जिक को बुलन्दी अता इरमा और मेरे गुनाहों का भोज डलका कर और मेरे कामों को

أَمْرِي وَتُطَهِّرَ قَلْبِي وَتُنَوِّرَ لِي فِي قَبْرِي

दुरुस्त इरमा और मेरे हिल को पाक कर और मेरे लिये कब्र में रोशनी इरमा

وَتَغْفِرَ لِي ذَنْبِي وَأَسْأَلُكَ الدَّرَجَاتِ الْعُلَى

और मेरे गुनाह मुआफ़ इरमा और मैं तुज से जन्त के गिंये द-रजों की लीक मांगता

مِنَ الْجَنَّةِ طَامِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

امین بجاء النبی الامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم .

એક અહમ મસ્જલ : મુલ્તઝમ કે પાસ નમાઝે તવાફ કે બા'દ આના ઉસ તવાફ મેં હૈ જિસ કે બા'દ સમૂય હૈ ઓર જિસ કે બા'દ સમૂય ન હો મ-સલન તવાફે નફલ યા તવાફુઝિયારહ (જબ કે હજ કી સમૂય સે પહલે ફારિગ હો ચુકે હો) ઉસ મેં નમાઝ સે પહલે મુલ્તઝમ સે લિપટિયે, ફિર મકામે ઈબ્રાહીમ કે પાસ જા કર દો રકઅત નમાઝ અદા કીજિયે.

(الْمَسْأَلَةُ الْمَتَّقِيَّةُ ص ۱۳۸)

અબ ઝમઝમ પર આઘયે ! : અબ બાબુલ કા'બા કે સામને વાલી સીધ મેં દૂર રખે હુએ આબે ઝમઝમ શરીફ કે કૂલરોં પર તશરીફ લાઈયે ઓર (યાદ રહે ! મસ્જિદ મેં આબે ઝમઝમ પીતે વક્ત એ'તિકાફ કી નિચ્ચત હોના ઝરૂરી હૈ) કિબ્લા રૂ ખડે ખડે તીન સાંસ મેં ખૂબ પેટ ભર કર પિયેં, ફરમાને મુસ્તફા صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ હૈ : હમારે ઓર મુનાફિકીન કે દરમિયાન ફર્ક યેહ હૈ કે વોહ ઝમઝમ પેટ ભર કર નહીં પીતે. (ابن ماجه ج ۳ ص ۴۸۹ حدیث ۳۰۶۱) હર બાર બિસ્મિલ્લાહ સે શુરૂઅ કીજિયે ઓર પીને કે બા'દ الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ કહિયે હર બાર કા'બાએ મુશરફા કી તરફ નિગાહ ઉઠા

કર દેખ લીજિયે, બાકી પાની જિસ્મ પર ડાલિયે યા મુંહ, સર
 ઓર બદન પર ઉસ સે મસહ કર લીજિયે મગર યેહ એહતિયાત
 રખિયે કે કોઈ કતરા ઝમીન પર ન ગિરે. પીતે વક્ત દુઆ
 કીજિયે કે કબૂલ હૈ.

દો ફરામીને મુસ્તફા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ﴿1﴾ યેહ (આબે
 ઝમઝમ) બા બ-ર-કત હૈ ઓર ભૂકે કે લિયે ખાના હૈ ઓર મરીઝ
 કે લિયે શિફા હૈ. (અબુદાઉદ ટિયાલસી સ ૬૧ હદિથ ૬૦૪). ﴿2﴾ ઝમઝમ જિસ
 મુરાદ સે પિયા જાએ ઉસી કે લિયે હૈ.

(અબુદાઉદ ટિયાલસી સ ૩૦૬૨ હદિથ ૬૯૦)

યેહ ઝમઝમ ઉસ લિયે હૈ જિસ લિયે ઇસ કો પિયે કોઈ
 ઇસી ઝમઝમ મેં જન્નત હૈ, ઇસી ઝમઝમ મેં કૌસર હૈ

(ઝૌકે ના'ત)

આબે ઝમઝમ પી કર યેહ દુઆ પઢિયે

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَرِزْقًا وَاسِعًا

તરજમા : ઐ અલ્લાહ! મેં તુઝ સે ઇલ્મે નાફેઅ ઓર કુશાદા રિઝ્ક

وَشِفَاءً مِّنْ كُلِّ دَاءٍ ط

ઓર હર બીમારી સે સિહ્હત યાબી કા સુવાલ કરતા હૂં.

આબે ઝમઝમ પીતે વક્ત દુઆ માંગને કા તરીકા :

શારેહે મુસ્લિમ શરીફ હઝરતે સય્યિદુના ઈમામ ન-વવી શાફેઈ

હૈ જો મગ્ફિરત યા મરઝ વગૈરા સે શિફા કે લિયે આબે ઝમઝમ પીના યાહતા હૈ કે કિબ્લા રૂ હો કર ફિર **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** ^ط

પઢે ફિર કહે : “ઐ અલ્લાહ મુઝે યેહ હદીસ પહોંચી કે તેરે રસૂલ **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ને ફરમાયા : “આબે ઝમઝમ ઉસ મક્સદ કે લિયે હૈ કે જિસ કે લિયે ઈસે પિયા જાએ.”

(મસન્દામ અમદજ ૫૦૨૧૬૧ હદિથ ૧૮૦૦) (ફિર યૂં દુઆએં માંગે મ-સલન) ઐ અલ્લાહ ! મેં ઈસે પીતા હૂં તાકે તૂ મુઝે બખ્શ દે યા ઐ અલ્લાહ ! મેં ઈસે પીતા હૂં ઈસ કે ઝરીએ અપને મરઝ સે શિફા યાહતે હુએ, ઐ અલ્લાહ ! પસ તૂ મુઝે શિફા અતા ફરમા દે” ઔર મિસ્લ ઈસ કે (યા’ની હસ્બે ઝરૂરત ઈસી તરહ મુપ્તલિફ દુઆએં કરે) (الايضاح في مناسك الحج للنووي ص ٤٠١)

ઝિયાદા ઠન્ડા ન પિયેં : બહુત ઠન્ડા પાની ઈસ્તિ’માલ ન

ફરમાએં કહીં આપ કી ઈબાદત મેં રુકાવટ કે અસ્બાબ ન પૈદા હો જાએં ! નફ્સ કી ખ્વાહિશ કો દબાતે હુએ ઐસે કૂલર સે આબે ઝમઝમ નોશ ફરમાએં જિસ પર લિખા હો : **زَمْزَمٌ غَيْرُ مُبَرَّدٍ**

(યા’ની ગૈર ઠન્ડા ઝમઝમ).

नजर तेज होती है : आभे जमजम देखने से नजर तेज होती और गुनाह दूर होते हैं, तीन³ युद्धू सर पर डालने से जिल्लतो रुस्वाँ से छिङ्गात होती है.

(البحر العمیق فی المناسک ج ۵ ص ۲۰۶۹-۲۰۷۳)

तू उर साल उज पर बुला या ँलाडी

वडां आभे जमजम पिवा या ँलाडी

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

सङ्ग व भर्वह की सअ्य¹ : अगर कोँ भजभूरी या थकन वगैरा न हो तो अन्नी वरना आराम कर के सङ्ग व भर्वह की सअ्य के लिये तय्यार हो जाँये, याद रहे के सअ्य में ँजतिबाअ या'नी कन्धा जुला रभना नहीं है. अब सअ्य के लिये उ-जरे अस्वद का पहले ही की तरह दोनों² हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ :

بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰهِ
पढ कर ँस्तिलाम कीजिये. और न हो सके तो उस की तरह मुँह कर के **اللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ** और दुइद पढते हुअे झौरन बाभुससङ्ग पर आँये ! “कोहे सङ्ग” यूँके

1 : तहभाने (BASEMENT) में सअ्य कीजिये.

“मस्जिद उराम” से बाहर वाकेअ है और हमेशा मस्जिद से बाहर निकलते वक्त उलटा पाँ निकासना सुन्नत है, लिहाजा यहाँ भी पहले उलटा पाँ निकालिये और हस्बे मा’भूल दुरुद शरीफ़ पढ कर मस्जिद से बाहर आने की येह दुआ पढिये :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ وَرَحْمَتِكَ

औ अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** मैं तुझ से तेरे फ़ज़ल और तेरी रहमत का सुवाल करता हूँ.

अब दुरुदो सलाम पढते हुअे सज़ा पर धतना यढिये के का’बअे मुअज़्ज़मा नज़र आ जाअे और येह बात यहाँ मा’भूली सा यढने पर हासिल हो जाती है, अवामुन्नास की तरह ज़ियादा उपर तक न यढिये अब येह दुआ पढिये :

أَبْدَعُ بِمَا بَدَأَ اللَّهُ تَعَالَى بِهِ ۖ إِنَّ الصَّفَاو

मैं उस से शुरुअ करता हूँ जिस को अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ने पहले ज़िक्र किया. **तर-ज-मअे क-ज़ुल धमान** : बेशक सज़ा और

الْبُرُوءَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ

मर्वह अल्लाह के निशानों से हैं तो जो इस घर का हज

أَوْ اعْتَبَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۗ

या उम्रह करे, इस पर कुछ गुनाह नहीं के धन दोनों के डेरे करे

﴿ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴾ (١٥٨)

और जो कोई भली बात अपनी तरफ़ से करे तो अल्लाह
 नेकी का सिला देने वाला ખબરदार है। (अल्बक़र: 158)

सज़ा पर अवाम के मुफ्तलिफ़ अन्दाज़ : काफ़ी लोग
 का'बा शरीफ़ की तरफ़ हथेलियां करते हैं, बा'ज हाथ लहरा
 रहे होते हैं तो बा'ज तीन³ बार कानों तक हाथ उठा कर छोड़
 देते हैं, आप ऐसा न करें बल्के हस्बे मा'मूल दुआ की तरफ़
 हाथ कन्धों तक उठा कर का'बअे मुअज़्ज़मा की तरफ़ मुंह किये
 उतनी देर तक दुआ मांगिये जितनी देर में सू-रतुल फ-करह
 की 25 आयतों की तिलावत की जाये, ખૂબ गिडगिडा कर और
 हो सके तो रो रो कर दुआ मांगिये के येह कबूलिय्यत का मकाम
 है. अपने लिये और तमाम जिन्नो ईन्स मुस्लिमीन की ખैर
 व भलाई के लिये और अेहसाने अज़ीम डोगा के मुज
 गुनहगारों के सरदार सगे मदीना ग़फ़ी ग़ने की बे हिसाब
 भगि़रत होने के लिये भी दुआ मांगिये. नीज़ दुइद शरीफ़ पढ
 कर येह दुआ पढिये :¹

دينه

1 : रम्ये जमरात, वुकूफ़े अ-रज़ात वगैरा के लिये जिस तरफ़ निय्यत शर्त नहीं
 ईसी तरफ़ सअ्य में भी शर्त नहीं बिगैर निय्यत के भी अगर किसी ने
 सअ्य की तो हो जायेगी मगर सअ्य में निय्यत कर लेना मुस्तहब है.
 निय्यत नहीं होगी तो सवाब नहीं मिलेगा.

الْمَلِكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ

मुल्क है और उसी के लिये उम्ह है, वोही जिन्दा करता और मारता है और वोह भुद जिन्दा है

لَا يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ

भरता नहीं, उसी के हाथ में भैर है और वोह हर शै पर

قَدِيرٌ ط لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ صَدَقَ وَعْدُهُ

कादिर है. अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई मा'बूद नहीं जो अकेला है, उस ने अपना वा'दा सच्चा किया

وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَأَعَزَّ جُنْدَهُ وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ

और अपने बन्दे की मदद की और अपने लश्कर को गादिलभ किया और काङ्कियों की जमाअतों को तन्हा उस ने शिकस्त दी.

وَحْدَهُ ط لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई मा'बूद नहीं उम उसी की ँबादत करते हैं,

مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ . وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ط

उसी के लिये दीन को ढालिस करते हुअे अगर्चे काङ्किर भुरा मानें.

﴿ فَسُبْحَانَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की पाकी है शाम व

تُصِحُّونَ ⑭ وَلَهُ الْحَدُّ فِي السَّمَوَاتِ

सुध और उसी के लिये उध है आस्मानों

وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ ⑮

और जमीन में और तीसरे पहर को और जोहर के वक्त,

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ

वोह जिन्दा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को

الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ

जिन्दा से निकालता है और जमीन को उस के मरने के बाद

مَوْتِهَا ⑯ وَكَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ⑰ اللَّهُمَّ

जिन्दा करता है और इसी तरह तुम निकाले जाओगे ॥ धवाही !

كَمَا هَدَيْتَنِي لِلْإِسْلَامِ أَسْأَلُكَ أَنْ لَا

तूने जिस तरह मुझे ईस्लाम की तरफ़ हिदायत की, तुझ से सुवाल करता हूँ के

تَنْزِعَهُ مِنِّي حَتَّى تَوْفَّأَنِي وَأَنَا مُسْلِمٌ ط

ईसे मुझ से जुदा न करना यहां तक के मुझे ईस्लाम पर मौत दे,

سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के लिये पाकी है और अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के लिये
हुम्द है और अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई मा'बूद नहीं

وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

और अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) सब से बड़ा है, और गुनाह से ड़िरना
और नेकी की ताकत नहीं मगर अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की मदद से

الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ اللَّهُمَّ أَحْيِنِي عَلَى سُنَّةِ

शे भरतर व बुजुर्ग है. धलाही ! तू मुज को अपने

نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

नबी मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नत पर जिन्दा रख

وَتَوْفِنِي عَلَى مِلَّتِهِ وَأَعِزَّنِي مِنْ مَضَلَّاتِ

और इन की भिल्लत पर वज़ात दे और ड़ितनों की गुमराहियों

الْفِتَنِ اللَّهُمَّ اجْعَلْنَا مِنْ يَحِبُّكَ

से बना, धलाही ! तू मुज को उन लोगों में कर शे तुज से मडब्बत रखते हैं

وَيُحِبُّ رَسُولَكَ وَأَنْبِيَآكَ وَمَلَآئِكَتَكَ

और तेरे रसूल व अम्बिया व मलाअेका और नेक बन्दों से

وَعِبَادَكَ الصَّالِحِينَ ط اللَّهُمَّ بَسِّرْ لِي

महबूबत रખते हें. ઇલાહી ! મેરે લિયે આસાની મુયસ્સર કર

الْيُسْرَى وَجَنَّبْنِي الْعُسْرَى اللَّهُمَّ أَحْيِنِي

और मुझे सफ़्ती से बचा, इलाही ! अपने रसूल मुहम्मद

عَلَى سُنَّةِ رَسُولِكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ

की सुन्नत पर मुझ को जिन्दा रख

تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهِ وَسَلَّمَ وَتَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَ

और मुसलमान मार और

الْحَقِّينِ بِالصَّالِحِينَ وَاجْعَلْنِي مِنْ

નેકોં કે સાથ મિલા ઝાનતુન્નઈમ

وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ وَاعْفُرْ لِي خَطِيئَتِي

કા વારિસ કર ડિયામત કે દિન મેરી ખતા

يَوْمَ الدِّينِ ط اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ إِيمَانًا كَامِلًا

બખ્શ દે. ઇલાહી ! તુઝ સે ઈમાને કામિલ

وَقَلْبًا خَاشِعًا وَنَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا

और कल्बे भाशेअ का उम सुवाल करते हैं और उम तुज से एल्मे नाफेअ

وَيَقِينًا صَادِقًا وَدِينًا قِيمًا وَنَسْأَلُكَ

और यकीने सादिक और दीने मुस्तकीम का सुवाल करते हैं और उर

الْعَفْوُ وَالْعَافِيَةَ مِنْ كُلِّ بَلِيَّةٍ وَنَسْأَلُكَ

बला से अफ्वो आफ़ियत का सुवाल करते हैं और

تَمَامَ الْعَافِيَةِ وَنَسْأَلُكَ دَوَامَ الْعَافِيَةِ

पूरी आफ़ियत और आफ़ियत की उमेशगी

وَنَسْأَلُكَ الشُّكْرَ عَلَى الْعَافِيَةِ وَنَسْأَلُكَ

और आफ़ियत पर शुक का सुवाल करते हैं और आदमियों

الْغِنَى عَنِ النَّاسِ ط اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ

से बे नियाजी का सुवाल करते हैं. एलाही ! तू दुइदो सलाम

وَبَارِكْ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ

व ब-र-कत नाजिल कर हमारे सरदार मुहम्मद एलैहो वसलैम

وَصَحْبِهِ عَدَدَ خَلْقِكَ وَرِضَانُفِكَ

और धन की आल व अस्खाब पर ब कदरे शुमार तेरी मप्लूक और तेरी रिजा

وَزِينَةَ عَرْشِكَ وَمَدَادِ كَلِمَاتِكَ كَلِمًا

और वज़न तेरे अर्श के और ब कदरे दरज़ी

ذَكَرَكَ الذَّاكِرُونَ وَغَفَلَ عَن ذِكْرِكَ

तेरे कलिमात के जब तक जिक्र करने वाले तेरा जिक्र करते रहें और जब तक गाड़िल तेरे

الْفَافِلُونَ ط أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ ﷺ

जिक्र से गाड़िल रहें. أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

दुआ अत्म होने के बा'द हाथ छोड दीजिये और दुरुद शरीफ़ पढ कर सअ्यू की निथ्यत अपने दिल में कर लीजिये मगर ज़बान से भी कह लेना बेहतर है. मा'ना जेड़न में रभते हुअे धस तरह निथ्यत कीजिये :

सअ्यू की निथ्यत

اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ السَّعْيَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ

तरजमा : ओ अल्लाह ! मैं तेरी पुशनूदी की भातिर सझा और भर्वह के दरमियान सअ्यू के

سَبْعَةَ أَشْوَاطٍ لَوْجِهَكَ الْكَرِيمِ فَيَسِّرُهُ

सात झरे करने का धरादा कर रहा हूँ तो धसे मेरे लिये आसान इरमा दे

لِيُتَقَبَّلَهُ مِنِّي ط

और धसे मेरी तरफ से कबूल इरमा.



सझ/मर्वह से उतरने की दुआ



اللَّهُمَّ اسْتَعْمِلْنِي بِسُنَّةِ نَبِيِّكَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! عَزَّ وَجَلَّ! तू मुझे अपने धारे नभी की सुन्नत का ताबेअ बना दे

عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ وَتَوَفَّنِي عَلَى مِلَّتِهِ وَأَعِدْنِي مِنْ

और मुझे उन के दीन पर भौत नसीब इरमा और मुझे पनाह दे

مُضَلَّاتِ الْفِتَنِ بِرَحْمَتِكَ يَا أَرْحَمَ الرَّحِمِينَ ط

झितनों की गुमराहियों से अपनी रहमत के साथ, औ सभ से जियादा रहम करने वाले.

सझ से अब जिको दुउद में मशगूल दरभियाना याल यलते हुअे जानिबे मर्वह यलिये (आज कल तो यहां संगे मरमर बिछा हुवा है और अेर कूलर भी लगे हैं. अेक सअ्य वोह भी थी जे

सय्यि-दतुना छाजिरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने की थी, ऊरा अपने जेहन में वोह दिल खिला देने वाला मन्जर ताजा कीजिये, जब यहां बे आबो गयाह मौदान था और नन्हे मुन्ने ईस्माईल عَلَى شِدْقَةِ پَیْاسِ سَیِّدِ الْبَلَدِ رَحْمَةً وَرَحْمَةً से बिलक रहे थे और हजरते सय्यि-दतुना छाजिरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا तलाशे आब (पानी) में बेताब बिल-बिलाती धूप के अन्दर धन संगलाप रास्तों में फिर रही थीं) जूं ही पहला सज्ज भील आये मर्द दौडना शुद्ध कर दें. (मगर मुहज्जब तरीके पर न के बे तलाशा) और सुवार सुवारी तेज कर दें, हां अगर भीड जियादा हो तो थोडा रुक जाईये जब के भीड कम होने की उम्मीद हो. दौडने में येह याद रखिये के फुद को या किसी दूसरे को धजा न पड़ोये के यहां दौडना सुन्नत है जब के किसी मुसल्मान को कस्टन धजा देना हराम. ईस्लामी बहनें न दौड़ें. अब ईस्लामी भाई दौडते हुअे और ईस्लामी बहनें चलते हुअे येह दुआ पढ़ें :

सज्ज भीलों के दरमियान पढने की दुआ

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ إِنَّكَ

औ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मुझे मुआफ़ इरमा और मुज पर रहम कर और मेरी पताओं जे के यकीनन तेरे ईल्म में हैं उन से दर गुजर इरमा, बेशक तू

تَعْلَمُ مَا لَا نَعْلَمُ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ

जानता है हमें उस का ईल्म नहीं. बेशक तू ईज्जत व ईकराम वाला है

وَاهْدِنِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ ۖ اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا

और मुझे सिराते मुस्तकीम पे काँठम रफ, और अल्लाह! मेरे उज को

مَبْرُورًا وَسَعِيًّا مَشْكُورًا وَذَنْبًا مَغْفُورًا ۝

मबरूर और मेरी सअ्य को मश्कूर (पसन्दीदा) कर और मेरे गुनाहों को बफ़श दे.

जब दूसरा सफ़्त मील आये तो आहिस्ता हो जाँये और दरमियाना याल से जानिबे मर्वह बढे यलिये. और लीजिये! मर्वह शरीफ़ आ गया, अवा मुन्नास दूर ठीपर तक यढे लुअे हैं. आप उन की नक्कल मत कीजिये यहाँ पडली सीढी पर यढने बढके उस के करीब जमीन पर ञडे होने से त्मी मर्वह पर यढना हो गया, यहाँ अगरेँ एमारात बन जाने के सबब का'बा शरीफ़ नऊर नहीं आता मगर का'बअे मुशररफ़ा की तरफ़ मुँह कर के सफ़ा की तरह उतनी ही देर तक द्हुआ माँगिये. अब निय्यत करने की ऊरत नहीं के वोह तो पडले हो चुकी येह अक ईरा हुवा.

अब हस्बे साबिक द्हुआ पढते लुअे मर्वह से जानिबे सफ़ा यलिये और हस्बे मा'मूल मीलैने अफ़रैन (या'नी सफ़्त मीलों) के दरमियान मर्द दौउते लुअे और ईस्लामी बहनें यलते लुअे वोही द्हुआ पढें, अब सफ़ा पर पढोंय कर द्दो ईरे पूरे लुअे. ईसी तरह सफ़ा और मर्वह के दरमियान यलते, दौउते

सातवां डेरा मर्वड पर अत्म डोगा, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ आप की सअ्य मुकम्मल हुई.

दौराने सअ्य अेक ढररी अेहतियात : असा अवकाल लोड मस्जिद में नमाज पढ रहे डोते हैं. दौराने तवाइ तो नमाजी के आगे से गुजरना ज़रूरी है मगर दौराने सअ्य ना ज़रूरी. अैसे मौकअ पर रुक कर नमाजी के सलाम डेरने का इन्तजार कर लीजिये. डं किसी गुजरने वाले को आड बना कर गुजर सकते हैं.

नमाजे सअ्य मुस्तहब है : अज डो सके तो मस्जिदे इराम में दो रकअत नमाज नइल (अगर मकइल वकत न डो तो) अदा कर लीजिये के मुस्तहब है. डमारे प्यारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सअ्य के आ'द मताइ के कनारे उ-जरे अस्वद की सीध में दो नइल अदा डरमाओ हैं.

ई-डी (مُسْنَدُ إمام احمد ج ١٠ ص ٣٥٤ حديث ٢٧٣١٣، رَدُّ الْمُحْتَار ج ٣ ص ٥٨٩) तवाइ व सअ्य का नाम उमरड है. कारिन व मु-तमत्तेअ के लिये येडी “उमरड” डो गया.

शरइ मुज को उमरे का मौला दिया है

करम मुज गुनडगार पर येड अडा है

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

तवाइ कुदूम : मुइरिद के लिये येह तवाइ, तवाइ कुदूम या'नी हाजिरिये दरबार का मुजरा (या'नी सलामी) हुवा. कारिन एस के आ'द तवाइ कुदूम की निखत से मजीद अेक तवाइ व सअ्य कर ले. तवाइ कुदूम, कारिन व मुइरिद दोनों के लिये सुन्नते मुअककदा है, अगर तर्क किया तो बुरा किया मगर दम वगैरा वाजिब नहीं. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1111)

हल्क या तकसीर : अब मर्द हल्क करें या'नी सर मुंडवा दें या तकसीर करें या'नी बाल कतरवाअें. मगर हल्क करवाना बेहतर है. हुजुरे अकदस صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने छिज्जतुल वदाअ में हल्क कराया और सर मुंडवाने वालों के लिये तीन बार हुआअे रहमत इरमाई और कतरवाने वालों के लिये अेक बार. (بخاری ج ۱ ص ۵۷۴ حدیث ۱۷۲۸)

तकसीर की ता'रीइ : तकसीर या'नी कम अऊ कम यौथाई (1/4) सर के बाल उंगली के पोरे बराबर कटवाना. एस में येह अेहतियात रबिये के अेक पोरे से जियादा कटें ताके सर के बीच में जे छोटे छोटे बाल छोते हैं वोह भी अेक पोरे के बराबर कट जाअें. आ'ऊ लोग केंयी से दो तीन जगह के यन्द बाल काट लिया करते हैं, उ-नइय्यों के लिये येह तरीका गलत है और एस तरह अेहराम की पाबन्दियां भी ખत्म न होंगी.

ઇસ્લામી બહનોં કી તક્સીર : ઇસ્લામી બહનોં કો સર મુંડાના હરામ હૈ વોહ સિફ તક્સીર કરવાએ. ઇસ કા આસાન તરીકા યેહ હૈ કે અપની ચુટિયા કે સિરે કો ઉંગલી કે ગિર્દ લપેટ કર ઉતના હિસ્સા કાટ લે, લેકિન યેહ એહતિયાત લાઝિમી હૈ કે કમ અઝ કમ ચૌથાઈ (1/4) સર કે બાલ એક પોરે કે બરાબર કટ જાએ.

લગાઓ દિલ કો ન દુન્યા મેં હર કિસી શૈ સે
તઅલ્લુક અપના હો કા'બે સે યા મદીને સે

(સામાને બખ્શિશ)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

તવાફે કુદૂમ વાલોં કે લિયે હિદાયત : તવાફે કુદૂમ મેં ઇઝતિબાઅ વ રમલ ઓર સઅ્ય ઝરૂરી નહીં મગર ઇસ મેં નહીં કરેંગે તો યેહ સારે અફઆલ “તવાફુઝિઝયારહ” મેં કરને હોંગે, હો સકતા હૈ ઉસ વક્ત થકન વગૈરા કે સબબ દુશ્વારી પેશ આએ લિહાઝા ઇસે મુત્લકન તરકીબ મેં દાખિલ કર દિયા હૈ કે ઇસ તરહ તવાફુઝિઝયારહ મેં ઇન ચીઝોં કી હાજત ન હોગી.

મુ-તમતેઅ કે લિયે હિદાયત : મુફરિદ વ કારિન તો હજ કે રમલ વ સઅ્ય સે “તવાફે કુદૂમ” મેં ફારિગ હો ચુકે મગર

मु-तमत्तेअ ने जो तवाफ़ व सअय़ किये वोह “उम्रे” के थे और
 ँस के लिये “तवाफ़े कुदूम” सुन्नत नहीं है के ँस में इरागत पा
 ले. लिहाजा अगर “मु-तमत्तेअ” भी पहले से इरिग होना
 याहे तो जब उज का अहराम बांधे उस वक्त अक नईली तवाफ़ में
 रमल व सअय़ कर ले, अब उसे भी तवाफ़ुज़्ज़ियारह में ँन
 उमूर की इजत न रहेगी. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1112) 6 या 7
 या 8 जुल इज्जह को अगर उज का अहराम बांधा तो उमूमन
 बहुत ज़ियादा भीड होती है, अगर याहें तो उज के रमल व
 सअय़ के लिये अभी नईली तवाफ़ न कीजिये, तवाफ़ुज़्ज़ियारह में
 कर लीजिये के अहराम भी नहीं होगा और उम्मीद है भीड में भी
 कदरे कमी पाअेंगे, 10 को इरि भी पूब हुजूम होता है अलबत्ता
 11 और 12 को रश में कड़ी कमी आ जाती है.

तमाम हाजियों के लिये म-दनी इल : अब तमाम
 हुज्जज्जे किराम (कारिन, मु-तमत्तेअ और मुइरिद) सब के सब
 मिना शरीफ़ जाने के लिये मक्कअे मुअज़्ज़मा رَادَهَا اللَّهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا
 में आठवीं जुल इज्जह के ँन्तिजार में अपनी जिन्दगी के
 हसीन लम्हात गुजार रहे हैं. प्यारे आशिकाने रसूल! येह वोह
 मुकदस गलियां हैं जिन में हमारे प्यारे प्यारे आका मक्की
 म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी इयाते तय्यिबा
 के कभो बेश 53 साल गुजारे हैं, यहां हर जगह मडभूबे अकरम,

रसूले मुह्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नकशे कदम हैं, एन मुबारक गलियों का भूष भूष अदब कीजिये. **अबरदार!** गुनाह तो कुज गुनाह का तसव्वुर भी न आने पाये के हुदूटे हरम में अगर अक नेकी लाभ के बराबर है तो गुनाह भी लाभ गुना है. गाली गलोय, गीबत, युगली, जूट, बढ निगाडी, बढ गुमानी वगैरा हमेशा हराम हैं मगर यहां का जुर्म तो लाभ गुना है. हरगिज ऐसी हमाकत मत कीजिये के हल्क करवाते हुअे साथ ही **عَاذَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** ! दाढी भी मुंडवा दी ! **अबरदार!** दाढी मुंडवाना या कतरवा कर अक मुट्टी से छोटी कर डालना दोनों हराम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं और यहां तो अगर अक बार भी येह उ-र-कत करेंगे तो लाभ बार हराम का गुनाह मिलेगा. **ऐ आशिकाने रसूल!** अब तो आप के येहरे को मक्के मदीने की हवाओं यूम रही हैं, मान जाँये ! एन मुबारक बालों को बढने ही दीजिये और अब तक जितनी बार मुंडवाई या अक मुट्टी से घटाई एस से तौबा कर लीजिये और हमेशा के लिये प्यारे आका मक्की म-दनी मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की पाकीजा सुन्नत को अपने येहरे पर सजा लीजिये.

सरकार का आशिक भी क्या दाढी मुंडाता है ?

क्यूँ एशक का येहरे से एंजहार नहीं होता !

(वसाएले बफ़िशश, स. 234)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

जब तक मक्क़े मुकर्रमा में रहें क्या करें ?¹ :

﴿1﴾ पूज नफ़ली तवाफ़ कीजिये, येह याद रहे के तवाफ़े नफ़ल में तवाफ़ के बा'द पहले मुत्तजम से लिपटना है इस के बा'द दो रक़अत मकामे एब्राहीम पर अदा करनी हें **﴿2﴾** कभी हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के नाम का तवाफ़ कीजिये तो कभी ग़ौसुल आ'ज़म **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** के नाम का, कभी अपने पीरो मुर्शिद के नाम का कीजिये तो कभी अपने वालिदैन के नाम का **﴿3﴾** पूज नफ़ली रोज़े रખ कर ई रोज़ा लाभ लाभ रोज़े का सवाब लूटिये, इस बात का ध्यान रखिये के मस्जिदुल हराम (या किसी भी मस्जिद) में रोज़ा एफ़तार करने के लिये षजूर वगैरा जामें या आभे जमजम पियें अ'तिकाफ़ की निय्यत होना ज़रूरी है **﴿4﴾** जब कभी का'बतुल्लाह पर नज़र पड़े तीन³ बार **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ** कहिये और दुर्रद शरीफ़ पढ कर हुआ मांगिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ !** कबूल होगी **﴿5﴾** जिन की पैदल उज की निय्यत है वोह दो चार रोज़ कबल मिना शरीफ़, मुज़दलिफ़ा शरीफ़ और अ-रफ़ात शरीफ़ हाज़िर हो कर अपने जैमे देष कर निशानियां मुकर्रर कर लें, नीज उस रास्ते का एन्तिजाभ कर लें के ज़े बा आसानी उन जैमों तक पड़ोया दे, वरना भीड में सप्त आज़माएँश हो सकती है. (इस्लामी बहनों को बस में ही आङ्गियत

1 : जियारते उ-रमैन के बारे में सफ़हा 242 मुला-उज़ा इरमाएँये.

है. पैदल चलने में ईस्लामी भाईयों से ईप्तिदात और बिछड़ने का ખतरा रहता है नीज़ मुज़्दविफ़ा में दाबिले के वक्त लाभों की भीड़ में ईस्लामी बहनों को संभालने में वोह आजमाईश होती है के ﴿الْمُؤْمِنُونَ﴾ ﴿6﴾ “शोपिंग” में ज़ियादा वक्त सई करने के बज़ाअे ईबादत में वक्त गुज़ारने की कोशिश इरमाईये, बार बार येह सुनइरी मौकअ हाथ नहीं आता.

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

यप्पलों के बारे में मइरी मस्थला : मस्जिदे हराम व मस्जिदुन्-अविरियशरीफ़ के मुबारक दरवाज़ों के बाहर बे शुमार लोग जूते यप्पल उतार देते हैं इर वापसी में ज़े भी जूता पसन्द आया पहन कर चलते बनते हैं ! ईस तरह के जूते या यप्पल बिला ईजाज़ते शर-ई जितनी बार ईस्ति'माल करेंगे उतनी ता'दाद में गुनाह होता रहेगा म-सलन बिला ईजाज़ते शर-ई अेक बार के उठाअे हुअे जूते 100 बार पहने तो 100 मर्तबा पहनने का गुनाह हुवा. ईन जूतों के अहकाम “लुक्ता” (या'नी किसी की गिरी पडी चीज़) के हैं के मालिक मिलने की उम्मीद ही अत्म हो ज़ाअे तो जिस को येह “लुक्ता” मिला अगर येह इकीर है तो फुद रअ सकता है वरना किसी इकीर को दे दे.

जिस ने दूसरों के जूते ना जघन धस्ति' माल कर लिये अब क्या करें ? : मजकूर अन्दाज पर दुन्या में जिस ने जहां से भी इस तरह की उ-र-क्त की वोह गुनहगार है. अपने लिये “लुक्ता” या'नी गिरी पडी थीज उठा ले जाने वाले पर ईर्ज है के तौबा भी करे और इस तरह जितने भी जूते यप्पल या थीजें ली हैं, अगर इन के अस्ल मालिकों या वोह न रहे हों तो उन के वारिसों तक पड़ोयाना मुश्किन न हो तो वोह सारी थीजें या अगर वोह अश्या बाकी नहीं रहीं तो उन की कीमत किसी मिस्किन को दे दे. या उन की कीमत मस्जिद व मद्रसा वगैरा में दे दे. (लुक्ते के तइसीली मसाएल के लिये बहारे शरीअत जिल्द 2 सईहा 471 ता 484 का मुता-लआ इरमाएये)

आह ! जो ओ युका छूं, वक्ते दिरौं

डोगा उसरत का सामना या रब !

(जौके ना'त)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

धस्लामी जहनों के लिये म-दनी झूल : औरतें नमाज इरोद गाह (या'नी क्रियाम गाह) ही में पढ़ें. नमाजों के लिये जो मस्जिदने करीमैन में छाजिर होती हैं जहालत है के मक्सूद सवाब है और खुद प्यारे सरकार, म-दनी ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

ने इरमाया : “औरत को मेरी मस्जिद (या’नी मस्जिदे न-अवी
 (على صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) में नमाज पढने से ज़ियादा सवाब घर में पढना
 है।” (अहारे शरीअत, जि. 1, स. 1112, 27108 हदीथ 310 من سنن الإمام احمد بن حنبل ج 10)

तवाइ में सात जाते हराम हैं

तवाइ अगरे नइल हो, उस में येह सात जाते हराम हैं :

﴿1﴾ बे वुजू तवाइ करना ﴿2﴾ बिगैर मजबूरी डोली में या किसी
 की गोद में या किसी के कन्धों वगैरा पर तवाइ करना ﴿3﴾ बिला
 उज़र बैठ कर सरकना या घुटनों पर चलना ﴿4﴾ का’बे को सीधे
 हाथ पर ले कर उलटा तवाइ करना ﴿5﴾ तवाइ में “हतीम” के
 अन्दर हो कर गुज़रना ﴿6﴾ सात इरों से कम करना ﴿7﴾ ज़े उज़्व
 सत्र में दाबिल है उस का यौथाई (1/4) हिस्सा ખુला होना,
 म-सदन रान या आजाद औरत का कान या कलाई. (अहारे शरीअत,
 जि. 1, स. 1112) ईस्लामी जलनें खूब अहतियात करें, दौराने
 तवाइ खूसून ह-जरे अस्वद का ईस्तिलाम करते वक्त काई
 खवातीन की यौथाई कलाई तो क्या जा’ज अवकात पूरी कलाई
 ખुल जाती है ! (तवाइ के ईलावा ली गैर महरम के सामने सर के
 बाल या कान या कलाई ખोलना हराम व गुनाह है. पर्टे के तइसीली
 अहकाम मा’लूम करने के लिये दा’वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे
 मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 397 सइहात पर मुशतमिल
 किताब, “पर्टे के जारे में सुवाल जवाब” का मुता-लआ इरमाईये)

تواہ کے گیارہ مکڑھات

﴿۱﴾ کڑول آات کرنا ﴿۲﴾ لیکو دوا یا تیلوات یا نا'ت و موناآات یا کوہ کلام اولند آاواآ سے کرنا ﴿۳﴾ امدو سلاات و منکات کے سوا کوہ شے'ر پھنا ﴿۴﴾ ناپاک کپڑوں میں تواہ کرنا (مستا'مل و پھل یا آوتے ساآ لیلے تواہ ن کرے اهلایاات ہسی میں ہے) ﴿۵﴾ رمل یا ﴿۶﴾ ہآتیاآ یا ﴿۷﴾ آوسآے سآگے آسود آاں آاں ہن کا دکم ہے ترق کرنا ﴿۸﴾ تواہ کے ہرےں میں لیااا آاسیلا آنا. اں آڑرت آو تو ہستیآ کے لیلے آا سکتے ہں, وڑو کر کے آاکی پورا کر لیاآیلے ﴿۹﴾ آک تواہ کے آا'د آب تک اوس کی آو رکآتوں ن پھ لےں دوسرا تواہ شڑآ کر آنا. اں آگر مکڑھ وکت آو تو ہرآ نلآ. م-سلن سوبھے ساآک سے لے کر سڑآ اولند آونے تک یا آا'د نماآے آسر سے گڑبے آاآتاآ تک, کے ہس میں کہ تواہ بیاہر "نماآے تواہ" آہآ ہں الابآا مکڑھ وکت گڑر آانے کے آا'د ہر تواہ کے لیلے آو آو رکآات آاا کرنی آوںگی ﴿۱۰﴾ تواہ میں کھ آانا ﴿۱۱﴾ پشاآ یا ریل وگہرا کی شلآ آوتے آوآے تواہ کرنا.

(آلارے شریآت, آ. 1, س. 1113, ۱۶۰ من القاری للقرآی)

तवाङ्क व सअ्य में येह सात काम जायल हैं : ﴿1﴾

सलाम करना ﴿2﴾ जवाब देना ﴿3﴾ ज़रत के वक्त बात करना ﴿4﴾ पानी पीना (सअ्य में भा भी सकते हैं) ﴿5﴾ हम्दो ना'त या मन्कबत के अशआर आहिस्ता आहिस्ता पठना ﴿6﴾ दौराने तवाङ्क नमाज़ी के आगे से गुज़रना जाँठल है के तवाङ्क भी नमाज़ ही की तरह है मगर सअ्य के दौरान गुज़रना जाँठल नहीं ﴿7﴾ इतवा पूछना या इतवा देना.

(अज़न, स. 1114, الْمَسْأَلَةُ الْمُنْقِطَةُ ص 112)

सअ्य के 10 मक़्दहात : ﴿1﴾ बिगैर ज़रत ईस के इरों में ज़ियादा इंसिला (वक़्फ़ा, दूरी) देना. हां कज़ाअे हाजत या तजदीदे वुज़ू के लिये जा सकते हैं (सअ्य में वुज़ू ज़रती नहीं, मुस्तहब है) ﴿2﴾ खरीद व ﴿3﴾ इरोप्त ﴿4﴾ कुज़ूल कलाम ﴿5﴾ “परेशान नज़री” या'नी एधर उधर कुज़ूल देबना सअ्य में भी मक़्दह है और तवाङ्क में और ज़ियादा मक़्दह ﴿6﴾ सफ़ा, या ﴿7﴾ मर्वह पर न यठना (भा'मूली सा यदिये उपर तक नहीं) ﴿8﴾ बिगैर मजबूरी मर्द का “मस्आ” में न दौडना ﴿9﴾ तवाङ्क के आ'द बहुत ताप्पीर से सअ्य करना ﴿10﴾ सत्रे औरत न होना.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1115)

सअ्य के चार मु-तफरिफ म-दनी कूल : ﴿1﴾ सअ्य में पैदल चलना वाजिब है जब के उजूर न हो (बिला उजूर सुवारी पर या घिसट कर की तो दम वाजिब होगा) (أَبَا التَّيَّابِ التَّنَائِيكِ ص 178) ﴿2﴾ सअ्य के लिये तदारत शर्त नहीं हैज व निहास वाली भी कर सकती है (عَلَيْهِ السَّلَامُ) ﴿3﴾ जिस्म व लिबास पाक हों और बा वुजू भी हों येह मुस्तहब है. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1110) ﴿4﴾ सअ्य शुउअ करते वक्त पहले सफ़ा की दुआ पढिये फिर सअ्य की नियत कीजिये. सअ्य के मु-तअदिद अफ़आल हैं, जैसा के उ-जरे अस्वद का इस्तिलाम, सफ़ा पर बढना, दुआ मांगना वगैरा इन सब पर नियतें कर ले तो अच्छा है, कम अऊ कम दिल में येह नियत होना भी काफी है हुसूले सवाब के लिये अस्ल सअ्य से पहले के अफ़आल कर रहा हूँ.

इस्लामी बहनों के लिये पास ताकीद : इस्लामी बहनों यहां भी और हर जगह मर्दों से अलग थलग रहें. अक्सर नादान औरतें “उ-जरे अस्वद” और रुकने यमानी को यूमने के लिये या का’बतुद्दाह शरीफ़ के करीब जाने के लिये बे धउक मर्दों में जा घुसती हैं. तौबा ! तौबा ! येह सप्त बेबाकी है. इस्लामी बहनों के लिये ठीक द्योपहर के वक्त म-सलन दिन के 10 बजे तवाफ़ करना मुनासिब है के उस वक्त भीउ कम होती है.

બારિશ ઓર મીઝાબે રહમત : બારિશ કે દૌરાન હતીમ શરીફ મેં બહુત ભીડ હો જાતી હૈ, મીઝાબે રહમત સે નિઘાવર હોને વાલા મુબારક પાની લેને કે લિયે હાજી સાહિબાન દીવાના વાર લપકતે હૈં ઈસ મેં ઝખ્મી હોને બલકે કુચલ કર મર જાને તક કા ખતરા હોતા હૈ, ઐસે મૌકઅ પર ઈસ્લામી બહનોં કો દૂર રહના ઝરૂરી હૈ.

હે તવાફે ખાનએ કા'બા સઆદત મરહબા !

ખૂબ બરસતા હૈં યહાં પર અબ્રે રહમત મરહબા !

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

હજ કા એહરામ બાંધ લીજિયે : અગર આપ ને અભી તક હજ કા એહરામ નહીં બાંધા તો 8 ઝુલ હિજ્જહ કો ભી બાંધ સકતે હૈં મગર સહૂલત 7 કો રહેગી ક્યૂંકે મુઅલ્લિમ અપને અપને હાજિયોં કો સાતવીં કી ઈશા કે બા'દ સે મિના શરીફ પહોંચાના શુરૂઅ કર દેતે હૈં. મસ્જિદે હરામ મેં ગૈર મકરૂહ વક્ત મેં એહરામ કે દો નફલ અદા કર કે મા'ના પર નઝર રખતે હુએ ઈસ તરહ હજ કી નિચ્ચત કીજિયે :

اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْحَجَّ فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقَبَّلْهُ

ઐ અલ્લાહ! મેં હજ કા ઈરાદા કરતા હૂં તૂ મેરે લિયે ઈસે આસાન કર ઓર મુઝ સે

مِنِّي وَأَعِنِّي عَلَيْهِ وَبَارِكْ لِي فِيهِ ط نَوَيْتُ

कबूल करमा और इस में मेरी मदद कर और मेरे लिये इस में ब-र-कत दे, नियत की मैंने

الْحَجَّ وَأَحْرَمْتُ بِهِ لِلَّهِ تَعَالَى ط

उज की और अल्लाह के लिये इस का अहराम बांधा.

नियत के बा'द इस्लामी भाई बुलन्द आवाज से और इस्लामी बहनें धीमी आवाज में तीन तीन मर्तबा लम्बैक पढ़ें. अब अेक बार फिर आप पर अहराम की पाबन्धियां आरंभ हो गईं.

अेक मुझीद भस्वरा : अगर आप याहें तो अेक नईली तवाइ में उज के इजतिबाअ, रमल और सअ्य से फ़ारिग हो लीजिये, इस तरह तवाइज्जियारह में आप को रमल और सअ्य की ज़रत नहीं रहेगी. मगर येह जेहन में रहे के 7 और 8 को भीउ बहुत ज़ियादा होती है, नीज 10 को तवाइज्जियारह में भी काई हुजूम होता है अलबत्ता 11 और 12 के तवाइज्जियारह में रश में कमी आ जाती है और सअ्य में भी कदरे आसानी रहती है.

मिना को रवानगी : आज आठवीं शब है, बा'दे नमाजे इशा हर तरफ़ धूम पडी है, सब को अेक ही धुन है के मिना यलो ! आप भी तय्यार हो जाइये, अपनी ज़रिय्यात की अश्या म-सलन तस्बीह, मुसल्ला, किब्ला नुमा, गले में लटकाने

वाली पानी की बोतल, ज़रूरत की दवाओं, मुआविलम का अड्रेस और येह तो हर वक्त साथ ही होना चाहिए ताके रास्ता भूल जाने या **عَدَاةَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ** हादिसे या बेहोशी की सूरत में काम आये. अगर हज्जनें साथ हैं तो सज्ज या किसी भी नुमायां रंग के कपडे का टुकडा उन के सर की पिछली जानिब बुरकअ में सी लीजिये, ताके भीउत्माड में पहचान हो सके, राह चलते ખુसूसन रश में उन्हें अपने आगे रभिये अगर आप आगे रहे और येह जियादा पीछे रह गઈ तो बिछड सकती हैं. **अभराजात** भराये तआम व कुरबानी वगैरा वगैरा साथ लेना न भूलिये, यूल्हा न लीजिये के वहां मन्अ है. अगर मुश्किन हो तो **मिना**, अ-रफात, मुज़दलिफा वगैरा का सफ़र पैदल ही तै कीजिये के जब तक मक्का शरीफ़ पलटेंगे हर कदम पर सात करोड नेकियां मिलेंगी. **وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ**. रास्ते भर लब्बैक और जिक्को दुरद की ખूब ખूब कसरत कीजिये. જૂં ही **मिना** शरीफ़ नज़र आये दुरद पाक पढ कर येह दुआ पढिये :

اللَّهُمَّ هَذِهِ مِنِّي فَأَمِّنْ عَلَيَّ بِمَا مَنَنْتَ

औ अल्लाह **عَزَّ وَجَلَّ** ! येह मिना है मुज पर वोह अहसान इरमा जे

بِهِ عَلَيَّ أَوْلِيَا نِكَ ط

तूने अपने औलिया पर इरमाया.

औ लीजिये ! अब आप मिना शरीफ़ की हसीन वादियों

में दाखिल हो गये, मरहबा ! किस कदर दिलकुशा मन्जर है, क्या जमीन, क्या पहाड, हर तरफ़ भैमों की बहार है. आप भी अपने मुअल्लिम की तरफ़ से दिये हुअे भैमे में क्रियाम इरमाईये. 8 की ओडर से ले कर कल नवीं की इज तक पांय नमाओं आप को मिना शरीफ़ में अदा करनी हें क्यूंके अल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के प्यारे महुबूब के प्यारे महुबूब ने औसा ही क्रिया है.

मिना शरीफ़ में पहले दिन जगह के लिये लडाइयां :
 मिना शरीफ़ की आज की हाजिरी अजीम इबादत है, और लाभों लाभ हुज्जत इंस इबादत के लिये जम्न हो गये हें, इंस लिये शैतान भी अेक दम बिफ़रा हुवा है और बात बात पर हाजियों को गुस्सा दिला रहा है, इंस का यूं भी इजहार हो रहा है के भैमों में जगह के लिये बा'ज हुज्जत उलजने और शोर शराबे में मशगूल हें. आप शैतान के वार से होशियार रहिये अगर कोई हाज साहिब आप की जगह पर वाकेई काबिज हो गये हें तो हाथ जोड कर नरमी से उन को समजाईये अगर वोड नहीं मानते और आप के पास कोई मु-तबादिल जगह भी नहीं तो जगडने के बजाअे मुअल्लिम के आदमी को तलब इरमा लीजिये, اِنَّ سَاءَ اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ आप का मस्बला उल हो जाअेगा. बहर हाल आप को दिल बडा रबना और अल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मेहमानों के साथ नरमी और दर गुजर से काम लेना है, आज का दिन बहुत अहम है हो सकता है कुछ लोग गपशप कर रहे हों, मगर आप अपनी इबादत में लगे

रहिये, हो सके तो उन को नेकी की दा'वत दीजिये के येह भी
 अेक आ'ला ह-रजे की ँबादत है. आज आने वाली रात
 शबे अ-रफ़ा है, मुम्किन हो तो येह रात ज़रूर ँबादत में
 गुज़ारिये के सोने के दिन बहुत पड़े हैं, अैसे मवाकेअ बार
 बार कहां नसीब होते हैं !

दुआअे शबे अ-रफ़ा : इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 है : जो शप्स अ-रफ़े की रात में येह दुआअें हज़ार मर्तबा पढे तो जो
 कुछ अद्लाह तआला से मांगेगा पाअेगा जब के गुनाह या कत्अे
 रेह्म (या'नी रिश्तेदारी काटने) का सुवाल न करे. (दुआ येह है :)

سُبْحَانَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ عَرْشُهُ ط سُبْحَانَ

पाक है वोह जिस का अर्श बुलन्दी में है. पाक है

الَّذِي فِي الْأَرْضِ مَوْطِئُهُ ط سُبْحَانَ الَّذِي فِي

वोह जिस की हुकूमत ज़मीन में है, पाक है वोह के जिस का

الْبَحْرِ سَبِيلُهُ ط سُبْحَانَ الَّذِي فِي النَّارِ

रास्ता दरिया में है, पाक है वोह के नार में उस की

سُلْطَانُهُ ط سُبْحَانَ الَّذِي فِي الْجَنَّةِ رَحْمَتُهُ ط

सल्तनत है, पाक है वोह के जन्नत में उस की रहमत है,

سُبْحَانَ الَّذِي فِي الْقَبْرِ قَضَاءُهُ ط سُبْحَانَ الَّذِي

पाक है वोह के कब्र में उसी का हुकम है, पाक है वोह के

فِي الْهَوَاءِ رُوحَهُ ط سُبْحَانَ الَّذِي رَفَعَ السَّمَاءَ ط

हवा में जो रहें हैं उसी की मिल्क हैं, पाक है वोह के जिस ने आस्मान को बुलन्द किया,

سُبْحَانَ الَّذِي وَضَعَ الْأَرْضَ ط سُبْحَانَ الَّذِي لَا

पाक है वोह के जिस ने जमीन को पस्त किया, पाक है वोह के उस के अजाब से

مَلَجًا وَلَا مَنبَجِي مِنْهُ إِلَّا إِلَيْهِ ط

पनाह व नजात की कोई जगह नहीं मगर उसी की तरफ़.

नवीं रात मिना में गुजारना सुन्नते मुअक्कदा है :

रातों रात मुअद्लिमां की बसें सूअे अ-रफ़ात शरीफ़ यल पडती हैं और मिना शरीफ़ में नवीं रात गुजारने की सुन्नते मुअक्कदा लाभों हाजियों की झैत हो जाती है. बहारे शरीअत में है : अगर रात को मिना में रहा मगर सुब्हे सादिक होने से पडले या नमाजे इज्ज से पडले या आइताब निकलने से पडले अ-रफ़ात को यला गया तो बुरा किया. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1120) मा'लूमात की कमी के बाईस बे शुमार हुज्जज सुब्हे सादिक

से कबूल ही नमाजे इज्ज अदा कर लेते हैं ! जल्द बाजी से काम लेने के बजाए हाज साहिबान अपने मुअल्लिम से मिल कर मिना शरीफ में रात गुजारने की तरकीब बना लीजिये, **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आप के लिये तुलूमे आफ्ताब के बा'द बस का बन्दो बस्त हो जायेगा.

यलो अ-रफात यलते हैं वहां हाज बनंगे हम

गुनड से पाक होंगे लौट के जिस हम यलेंगे हम

अ-रफात शरीफ को रवानगी : आज 9 जुल डिज्जल को नमाजे इज्ज मुस्तहब वक्त में अदा कर के लब्बैक और जिको हुआ में मशगूल रहिये यहां तक के सूरज तुलूअ होने के बा'द मस्जिदे पैफ शरीफ के सामने वाकेअ कोडे सबीर पर यमके, अब धउक्ते हुअे हिल के साथ जानिबे अ-रफात शरीफ यलिये और रास्ते त्तर लब्बैक और जिको हुइद की कसरत रहिये. हिल को ખयाले गैर से पाक करने की कोशिश कीजिये के आज वोह दिन है के कुए का उज कबूल किया जायेगा और कुए को उन्हीं मकबूलीन के तुईल बप्शा जायेगा. महइम है वोह जो आज महइम रहा, अगर वस्वसे आएं तो उन से भी लडाई मत बांधिये के यूं भी शैतान की काम्याबी है के उस ने आप को किसी और काम पर लगा दिया ! बस आप की अक ही धुन हो के मुजे अपने रब **رَبِّكَ** से काम है. यूं करने से **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** शैतान नाकाम व ना मुराद दफ्अ होगा.

महब्बत में अपनी गुमा या एलाही

न पाउं मैं अपना पता या एलाही

(वसाएले बप्शिश, स. 78)

राहे अ-रफ़ात की दुआ

(भिना शरीफ़ से निकल कर येह दुआ पठ लीजिये :)

اللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا خَيْرَ غَدْوَةٍ وَعَدْوَةٍ تَهَاقَطُ

औ अल्लाह एज़्र व ज़ल मेरी एस सुब्ह को तमाम सुब्हों से अख़ी बना दे

وَقَرِّبْهَا مِنْ رِضْوَانِكَ وَأَبْعِدْهَا مِنْ سَخَطِكَ

और एसे अपनी पुशनूदी से करीब कर और अपनी नापुशी से दूर कर.

اللّٰهُمَّ إِلَيْكَ تَوَجَّهْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَ

औ अल्लाह एज़्र व ज़ल मैं तेरी तरफ़ मु-तवज्जएह हुवा और तुज़ पर मैं ने तवक्कुल किया और

وَجْهَكَ أَرَدْتُ فَاجْعَلْ ذَنْبِي مَغْفُورًا وَ

तेरे वजहे करीम का एरादा किया तो मेरे गुनाह बप्श और

حَاجِّي مَبْرُورًا وَأَرْحَمِنِي وَلَا تَخَيِّبْنِي

मेरे हज को मबूर कर और मुज़ पर रहम फ़रमा और मुझे महज़म न कर

وَبَارِكْ لِي فِي سَفَرِي وَأَقْضِ بَعْرَفَاتِي

और मेरे सफ़र में मेरे लिये ७-२-कत अता इरमा और अ-रफ़ात में मेरी

حَاجَتِي إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

हाजत पूरी कर, बेशक तू हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है।

अ-रफ़ात शरीफ़ में दाखिला : अै लीजिये ! अब आप अ-रफ़ात शरीफ़ के करीब आ पड़ोये, तउप ज़ाईये और आंसूओं को बहने दीजिये के अ-करीब आप उस मुकदस मैदान में दाखिल होंगे के जहां आने वाला महइम लौटता ही नहीं। जब नजर ज-बले रहमत को यूमे लब्बैक व हुआ में और ज़ियादा कोशिश कीजिये के अब ज़े हुआ मांगेंगे إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ कबूल होगी। दिल संभाले, निगाहें नीची किये लब्बैक की पैहम तकरार करते हुअे रोते रोते मैदाने अ-रफ़ाते पाक में दाखिल हों।

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ! येह वोह मुकदस मकाम है जहां आज लाफ़ों मुसल्मान अेक ही लिबास (अेहराम) में मल्बूस जम्अ हैं, हर तरफ़ लब्बैक की सदाअें गूंज रही हैं। यकीन जानिये बे शुमार औलियाअे किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दो² नबी हजरते सय्यिहुना भिजर और हजरते सय्यिहुना عَلَىٰ نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام भी बरोजे अ-रफ़ा

મૈદાને અ-રફાતે મુબારક મેં તશરીફ ફરમા હોતે હૈં. અબ આપ બખૂબી આજ કે દિન કી અહમ્મિયત કા અન્દાજા લગા સકતે હૈં. હઝરતે સય્યિદુના ઇમામ જા'ફરે સાદિક رَحْمَةُ اللَّهِ الْخَالِقِ સે મરવી હૈ : કુછ ગુનાહ ઐસે હૈં જિન કા કફ્કારા વુકૂફે અ-રફા હી હૈ. (યા'ની વોહ સિફ વુકૂફે અ-રફાત સે હી મિટતે હૈં)

(توث القلوب ج ۲ ص ۱۹۹)

યોમે અ-રફા કે દો અઝીમુશ્શાન ફઝાઇલ :

﴿1﴾ અ-રફે સે ઝિયાદા કિસી દિન મેં અલ્લાહ તઆલા અપને બન્દોં કો જહન્નમ સે આઝાદ નહીં કરતા ફિર ઉન કે સાથ મલાએકા પર મુબાહાત (યા'ની ફખ્ર) ફરમાતા હૈ. (મુસ્લમ વ ૭૦૩ હદિથ ૧૩૬૪)

﴿2﴾ અ-રફે સે ઝિયાદા કિસી દિન મેં શૈતાન કો ઝિયાદા સગીર વ ઝલીલ વ હકીર ઓર ગૈઝ (યા'ની સપ્ત ગુસ્સે) મેં ભરા હુવા નહીં દેખા ગયા ઓર ઇસ કી વજહ યેહ હૈ કે ઇસ દિન મેં રહમત કા નુઝૂલ ઓર અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ કા બન્દોં કે બડે બડે ગુનાહ મુઆફ ફરમાના શૈતાન દેખતા હૈ. (મુઘ્લા અમમ માલક જ ૧ વ ૩૪૬ હદિથ ૧૪૨)

કિસી ને જબ ઓરતોં કો દેખા.....: એક શખ્સ ને

અ-રફા કે દિન ઓરતોં કી તરફ નઝર કી, રસૂલુલ્લાહ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ફરમાયા : “આજ વોહ દિન હૈ કે જો શખ્સ કાન ઓર આંખ ઓર ઝબાન કો કાબૂ મેં રખે, ઉસ કી મઙ્ગિરત હો જાએગી.” (શુબ્બુ અઇમાન જ ૩ વ ૬૬૧ હદિથ ૬૦૭)

یا ایلہا ایلہ ۷۷ کزું تہری ریکا کتے واسیتے
 کر کبूल ایلے کو مۇلّممہ مۇستفّا کتے واسیتے

اٰمِیْنِ بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْنِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

अ-रफ़ात में कंकरों को गवाह करने की रमान
अरुम हिकायत : ७७रते सय्यिदुना अँब्राहीम वासित्ती

عَالِيَهُ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ने अक बार ७७ के मौकअ पर मैदाने
 अ-रफ़ात में सात कंकर हाथ में उठाये और उन से फ़रमाया :
 अँ कंकरो ! तुम गवाह हो जाओ के मैं कहता हूँ :
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ
 सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुलّمमह (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ)
 उस के बन्दे आस और रसूल हैं. फिर जब सोये तो प्वाब में
 देखा के मउशर बरपा है और हिसाब किताब हो रहा है,
 उन से भी हिसाब लिया जाता है और हुकमे दोज़भ सुनाया
 जाता है, अब फिरिश्ते सूये जउन्नम लिये जा रहे हैं जब
 जउन्नम के दरवाजे पर पछोंयते हैं तो उन सात कंकरों में से
 अक कंकर दरवाजे पर आ कर रोक बन जाता है फिर दूसरे
 दरवाजे पर पछोंये तो दूसरा कंकर असी तरह दरवाजे के
 आगे आ गया, यूँही जउन्नम के सातों दरवाजों पर हुवा
 फिर मलायेका अर्शे मुअदला के पास ले कर हाजिर हुये.

અલ્લાહ તઆલા ને ઈશાદ ફરમાયા : ઐ ઈબ્રાહીમ ! તૂ ને કંકરોં કો અપને ઈમાન પર ગવાહ રખા તો ઉન બે જાન પથ્થરોં ને તેરા હક ઝાએઅ ન ક્રિયા, તો મેં તેરી ગવાહી કા હક કેસે ઝાએઅ કર સકતા હું ! ફિર અલ્લાહ તબા-ર-ક વ તઆલા ને ફરમાન જારી ક્રિયા કે ઈસે જન્નત કી તરફ લે જાઓ યુનાન્યે જબ જન્નત કી તરફ લે જાયા ગયા તો જન્નત કા દરવાઝા બન્દ પાયા, કલિમએ પાક કી ગવાહી આઈ ઔર આપ ﷺ; જન્નત મેં દાખિલ હો ગએ. (۳۷ صَحِيحُ الْمُسْلِمِ)

પુશ નસીબ હાજિયો ઔર હજજનો ! : આપ ભી મૈદાને અ-રફાત મેં સાત કંકર ઉઠા કર મઝકૂરા કલિમા યા કલિમએ શહાદત પઢ કર ઉન કો ગવાહ બના કર વાપસ વહીં રખ દીજિયે નીઝ દુન્યા મેં જહાં ભી હોં મૌકઅ મિલને પર દરખ્તોં, પહાડોં, દરિયાઓં, નહરોં ઔર બારિશ કે કતરોં વગૈરા વગૈરા કો કલિમા શરીફ સુના કર અપને ઈમાન કા ગવાહ બનાતે રહિયે.

“બારાને રહમત” કે નવ હુરફ કી નિસ્બત સે વુફૂફે અ-રફાત શરીફ કે 9 મ-દની ફૂલ

﴿1﴾ જબ દો પહર કરીબ આએ તો નહાઓ કે સુન્નતે મુઅક્કદા હે ઔર ન હો સકે તો સિર્ફ વુઝૂ. (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 1123) ﴿2﴾ આજ યા'ની 9 ઝુલ હિજજહ કો દો પહર ઢલને (યા'ની

नमाजे जोहर का वक्त शुद्ध होने) से ले कर दसवीं की सुब्हे सादिक के दरमियान जो कोई अहराम के साथ अक लम्हे के लिये भी अ-रफाते पाक में दाखिल हुवा वोह हाज हो गया, आज यहां का वुकूफ उज का रुकने आ'जम है ﴿3﴾ अ-रफात शरीफ में वक्ते जोहर में जोहर व अस्र मिला कर पढी जाती है¹ मगर इस की बा'ज शराहत हैं ﴿4﴾ हाज को आज बे रोजा होना और हर वक्त बा वुजू रहना सुन्नत है ﴿5﴾ ज-बले रहमत के करीब जहां सियाह पथर का इर्श है वहां वुकूफ करना अइजल है ﴿6﴾ बा'ज लोग “ज-बले रहमत” के उपर यद जाते और वहां से भडे भडे रुमाल हिलाते रहते हैं, आप ऐसा न कीजिये और उन की तरफ भी दिल में बुरा भयाल न लाईये, आज का दिन औरों के अब देपने का नहीं, अपने अबों पर शर्म-सारी और गिर्या व जारी का है ﴿7﴾ वुकूफ के लिये भडा रहना अइजल है शर्त या वाजिब नहीं, बैठा रहा जब भी वुकूफ हो गया वुकूफ में नियत और रुब डिब्ला होना अइजल है ﴿8﴾ नमाजों के बा'द इरन वुकूफ करना सुन्नत है. (अहारे शरीअत, जि. 1, स. 1124) ﴿9﴾ मौकिफ (या'नी ठहरने की जगह) में हर तरह के साअे हत्ता के छत्री लगाने से बचिये, हां जो मजबूर है वोह मा'जूर है. (अजान, स. 1128) छत्री लगाने तो मर्द येह अहतियात इरमाअे के सर से मस (TOUCH) न हो वरना कफ़ारे की सूरते पैदा हो सकती हैं.

1 : आप अपने अपने भैमों ही में जोहर की नमाज जोहर के वक्त में और अस्र की नमाज अस्र के वक्त में बा जमाअत अदा कीजिये.

धमामे अहले सुज्जत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ كِي पास नसीहत :
 बढ निगाडी उमेशा उराम है न के अहराम में, न के मौकिक या
 मस्जिदुल उराम में, न के का'बे के सामने, न के तवाफे बैतुल्लाह
 में. येह तुम्हारे इम्तिहान का मौकअ है, औरतों को हुक्म दिया
 गया है के यहां मुंह न छुपाओ और तुम्हें हुक्म दिया गया है के
 उन की तरफ़ निगाह न करो, यकीन जानो के येह अडे इज्जत
 वाले बादशाह की बांढियां हैं और इस वक्त तुम और वोह
 सब पास दरबार में हाजिर हो, बिना तश्बीह शेर का बय्या
 उस की बगल में हो उस वक्त कौन उस की तरफ़ निगाह उठा
 सकता है तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ वाहिदे कइहार की कनीजें, के उस के
 दरबारे पास में हाजिर हैं, उन पर बढ निगाही किस कदर
 सप्त होगी. **وَلِلَّهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ** (तर-ज-मअे कन्जुल इमान :
 और अल्लाह की शान सब से बुलन्द. (१०: १६५, النمل: १०)) हां हां !
 डोशियार ! इमान बयाअे हुअे, कल्ब व निगाह संभाले हुअे,
 हरम (याद रहे ! अ-रफ़ात हुदूदे हरम से बाहर है) वोह जगह
 है जहां गुनाह के इरादे से भी पकडा जाता है और अक गुनाह
 लाभ के बराबर ठहरता है. अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ भैर की तौफ़ीक दे.

(इतावा २-जविथ्या मुअर्रजा, जि. 10, स. 750)

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

गुनाहों से मुअ को बया या इलाही

बुरी आदतें भी छुडा या इलाही

(वसाइले अफ़्शिश, स. 79)

अ-रफ़ात शरीफ़ की दुआओं (अ-रबी)

﴿1﴾ दो पहर के वक्त दौराने पुकूफ़ भौकिफ़ में मुन्द-र-जअे
 जैल कलिमअे तौलीद, सूरअे ँप्लास शरीफ़ और फिर ँस के
 भा'द दिया हुवा दुइद शरीफ़ सो सो बार पढने वाले की ब
 हुकमे हदीस अफ़िश कर दी जाती है, नीज अगर वोह तमाम
 अ-रफ़ात शरीफ़ वालों की सिफ़ारिश कर दे तो वोह भी कबूल
 कर ली जाअे.

(अविफ़) येह कलिमअे तौलीद
 100 बार पढिये :

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ط

अल्लाह अक़्बर के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये

الْمَلِكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ط

मुल्क है और तमाम भूबियां उसी के लिये हैं, वोही जिन्दा करता और मारता
 है और वोह हर शै पर कुदरत रफ़ने वाला है.

(आ) सूरअे ँप्लास शरीफ़ 100 बार (जम) येह दुइद शरीफ़ 100 बार पढिये :

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى (سَيِّدِنَا) مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ

औ अल्लाह अक़्बर के सिवा कोई मा'बूद नहीं! हमारे सरदार हजरत मुहम्मद अल्लैहि सल्लै अलैहि वसल्लै अलैहि अर्रुइ अर्रुइ बेज जिस तरह तूने दुइद

عَلَى (سَيِّدِنَا) إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ (سَيِّدِنَا)

बेजे हमारे सरदार हजरते इब्राहीम अल्लैहि सल्लै अलैहि वसल्लै अलैहि अर्रुइ अर्रुइ और हमारे सरदार हजरते इब्राहीम अल्लैहि सल्लै अलैहि वसल्लै अलैहि अर्रुइ अर्रुइ

إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ ط

की आल पर, बेशक तू ता'रीफ़ किया गया बुज़ुर्ग है और हम पर भी उन के साथ.

﴿2﴾ اللَّهُ أَكْبَرُ وَلِلَّهِ الْحُدُ तीन बार, फिर अविमये तौहीद अेक बार, इस के बा'द येह दुआ

اللَّهُمَّ اهْدِنِي بِالْهُدَى وَنَقِّنِي وَأَعْصِمْنِي

तीन बार पढिये: और अदलाह अुजल अुजल! मुज को छिटायत के साथ रहनुमाँ कर और पाक कर और परहेज गारी के साथ गुनाह

بِالتَّقْوَىٰ وَاعْفِرْ لِي فِي الْأَخِرَةِ وَالْأُولَىٰ ط

से महकूज रह और दुन्या व आभिरत में मेरी भगिरत इरमा.

इस के बा'द अेक बार येह दुआ पढिये :

اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ حَجَّامَبْرُورًا وَذَنْبًا مَغْفُورًا ط

अै अदलाह अुजल अुजल! इस हज को मअइर कर और गुनाह अमश दे.

اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كَأَلَّذِي نَقُولُ وَخَيْرًا

ँलाडी ! तेरे लिये हम्द है जैसी हम कहते हैं और उस से बेहतर

مِمَّا نَقُولُ اللَّهُمَّ لَكَ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَ

जिस को हम कहें. अै अदलाह अुजल अुजल! मेरी नमाज व ँबादत और

مَحْيَايَ وَمَمَاتِي وَإِلَيْكَ مَأْبِيٌّ وَوَلَاكَ رَبٌّ

मेरा जन्मा और मरना तेरे ही लिये है और तेरी ही तरफ़ मेरी वापसी है और तू ही मेरा दगार !

تُرَاتِي ۞ اللَّهُمَّ اعْوِذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

तू ही मेरा वारिस है. ॐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ अज़ाबे कब्र

وَسُوسَةِ الصَّدْرِ وَشَتَاتِ الْأَمْرِ ۞

और सीने के वस्वसे और काम की परा-गन्दगी (परेशानी) से.

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا تَجِيءُ بِهِ

धवाही ! मैं सुवाल करता हूँ उस चीज़ की धेर का जिस को

الرِّيحُ وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا تَجِيءُ بِهِ

धवा लाती है और उस चीज़ के शर से पनाह मांगता हूँ जिससे

الرِّيحُ ۞ اللَّهُمَّ اهْدِنَا بِالْهُدَى وَزَيْنًا

धवा लाती है. धवाही ! छिदायत की तरफ़ हम को रहनुमाँ कर और तक्वा से हम को

بِالتَّقْوَى وَاعْفِرْ لَنَا فِي الْأَخِرَةِ وَالْأُولَى ۞

जीनत धनायत कर और आभिरत और दुन्या में हम को बपश दे.

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ رِزْقًا طَيِّبًا مُبَارَكًا ط

ਠਵਾਈ ! ਮੈਂ ਰਿੜ੍ਹਕੇ ਪਾਕੀਯਾ ਔਰ ਆ ਆ-੨-ਕਤ ਕਾ ਤੁਝ ਸੇ ਸੁਵਾਲ ਕਰਤਾ ਛੂੰ.

اللَّهُمَّ إِنَّكَ أَمَرْتَ بِالذُّعَاءِ وَقَضَيْتَ

ਠਵਾਈ ! ਤੂ ਨੇ ਢੁਆ ਕਰਨੇ ਕਾ ਢੁਕਮ ਢਿਯਾ ਔਰ ਕਭੂਲ

عَلَى نَفْسِكَ بِالْإِجَابَةِ وَإِنَّكَ لَا تَخْلِفُ

ਕਰਨੇ ਕਾ ਝਿਮਮਾ ਤੂ ਨੇ ਖੁਢ ਢਿਯਾ ਔਰ ਭੇਸ਼ਕ ਤੂ ਵਾ'ਢੇ ਢੇ ਖਿਲਾਫ਼

الْمِيعَادَ وَلَا تَنْكُثُ عَهْدَكَ ط اللَّهُمَّ مَا أَحْبَبْتَ

ਨਠੀ ਕਰਤਾ ਔਰ ਅਪਨੇ ਅਢੁਢ ਕੋ ਨਠੀ ਤੋੜਤਾ. ਠਵਾਈ ! ਭੋ ਅਝੀ ਆਰੋ ਤੁਝੇ ਮਢਭੂਭ ਠੈਂ

مِنْ خَيْرٍ فَجَبِّبْهُ الْيُنَاوَيْسِرْهُ لَنَا وَمَا

ਊਠੈਂ ਢਮਾਰੀ ਮਢਭੂਭ ਕਰ ਢੇ ਔਰ ਢਮਾਰੇ ਢਿਯੇ ਮੁਯਸ਼ਸਰ ਕਰ ਔਰ ਭੋ

كَرِهْتَ مِنْ شَرِّ فَكْرِهْهُ الْيُنَاوَايْجِبْنَاهُ

ਭੁਰੀ ਆਰੋ ਤੁਝੇ ਨਾ ਪਸਨਢ ਠੈਂ ਊਠੈਂ ਢਮਾਰੀ ਨਾ ਪਸਨਢ ਕਰ ਔਰ ਢਮ ਕੋ ਊਨ ਸੇ ਭਯਾ

وَلَا تَنْزِعْ مِنَّا الْإِسْلَامَ بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا ط

ਔਰ ਠਸਵਾਮ ਕੀ ਠਰਫ਼ ਤੂਨੇ ਢਮ ਕੋ ਢਿਢਾਯਤ ਫ਼ਰਮਾਠ ਤੋ ਠਸ ਕੋ ਢਮ ਸੇ ਭੁਢਾ ਨ ਕਰ.

اللَّهُمَّ إِنَّكَ تَرَى مَكَانِي وَتَسْمَعُ كَلَامِي

ਠਲਾਡੀ ! ਤੂ ਮੇਰੇ ਮਕਾਨ ਕੋ ਢੇਖਤਾ ਔਰ ਮੇਰੇ ਕਲਾਮ ਕੋ ਸੁਨਤਾ ਹੈ

وَتَعْلَمُ سِرِّي وَعَلَا نِيَّتِي وَلَا يَخْفَى

ਔਰ ਮੇਰੇ ਪੋਸ਼ੀਢਾ ਔਰ ਆਖਿਰ ਕੋ ਜਾਨਤਾ ਹੈ ਕੇ ਮੇਰੇ ਕਾਮ ਮੇਂ ਸੇ ਕੋਠੈ ਸੈ

عَلَيْكَ شَيْءٌ مِّنْ أَمْرِي أَنَا الْبَائِسُ الْفَقِيرُ

ਤੁਝ ਪਰ ਮਝੜੀ (ਯਾ'ਨੀ ਢੁਪੀ) ਨਡੀ. ਮੈਂ ਨਾ ਮੁਰਾਢ, ਮੋਢਤਾਯ, ਟੁਝ ਪਰ ਮਝੜੀ (ਯਾ'ਨੀ ਢੁਪੀ) ਨਡੀ. ਮੈਂ ਨਾ ਮੁਰਾਢ, ਮੋਢਤਾਯ,

الْمُسْتَعِيثُ الْمُسْتَجِيرُ الْوَجِلُ الْمُسْفِقُ الْمَقْرُ

ਝਰਿਯਾਢ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ, ਪਨਾਢ ਯਾਢਨੇ ਵਾਲਾ, ਟੁਝ ਸੇ ਡਰਨੇ ਵਾਲਾ,

الْمُعْتَرِفُ بِذُنُوبِهِ أَسْأَلُكَ مَسْأَلَةَ الْمُسْكِينِ

ਅਪਨੇ ਗੁਨਾਢ ਕਾ ਮੁਕਿਰ ਵ ਮੋ'ਤਰਿਝ (ਯਾ'ਨੀ ਠਕਰਾਰ ਵ ਐ'ਤਿਰਾਝ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ) ਢੂੰ, ਮਿਸਕੀਨ ਕੀ ਟਰਢ ਟੁਝ ਸੇ ਸੁਵਾਲ ਕਰਤਾ ਢੂੰ

وَأَبْتَهِلُ إِلَيْكَ ابْتِهَالِ الْمَذْنُوبِ الذَّلِيلِ

ਔਰ ਗੁਨਢਗਾਰ ਝਲੀਲ ਕੀ ਟਰਢ ਟੁਝ ਸੇ ਆਯਿਝੀ ਕਰਤਾ ਢੂੰ

وَأَدْعُوكَ دُعَاءَ الْخَائِفِ الْمُضْطَرِّ دُعَاءَ

ਔਰ ਡਰਨੇ ਵਾਲੇ ਮੁਝ਼ਟਰ ਕੀ ਟਰਢ ਟੁਝ ਸੇ ਢੁਆ ਕਰਤਾ ਢੂੰ,

مَنْ خَضَعَتْ لَكَ رَقَبَتَهُ وَفَاضَتْ لَكَ

उस की मिसल हुआ जिस की गरदन तेरे लिये ठुकी हुई और आंभें जारी

عَيْنَاهُ وَنَحَلْ لَكَ جَسَدَهُ وَرَعِمَ أَنْفُهُ^ط

और बदन लागिर और नाक भाक में मिली है.

اللَّهُمَّ لَا تَجْعَلْنِي بَدْعَايِكَ رَبِّي شَقِيًّا

औ परवर दगार दगार ! तू अपनी छिदायत से मुझे मडरुम न कर

وَكُنْ أَبِي رَاءٍ وَفَارْحِيمَايَا خَيْرِ الْمَسْئُولِينَ

और मुझ पर बहुत मेहरबान हो जा और बहुत बेहतर सुवाल किये गये

وَخَيْرِ الْمُعْطِينَ^ط

और बेहतर देने वाले.

﴿3﴾ अभीरुल मुअमिनीन उजरते सय्यिहुना अलिय्युल मुर्तजा शेरे
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ لَهُ رَسُوْلُهُ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ
ने इरमाया के मेरी और अम्बिया की हुआ अ-रफा के दिन येह है :

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ^ط لَهُ الْمُلْكُ

अल्लाह के सिवा कोई छबाहत के लाईक नहीं, वोह यक्ता है उस
का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये मुल्क है

وَلَهُ الْحَمْدُ مَجْمُوعٌ وَتُسَمِّيْتٌ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ

और उसी के लिये सब भूबियां हैं, वोह जिन्दा है और उसे कभी मौत नहीं आयेगी और वोह हर चीज पर

قَدِيرٌ ۞ اللَّهُمَّ اجْعَلْ فِي سَمْعِي نُورًا وَفِي

कुदरत रहने वाला है. ऐ अल्लाह ! मेरी कुव्वते समाअत को नूर कर और

بَصَرِي نُورًا وَفِي قَلْبِي نُورًا ۞ اللَّهُمَّ

मेरी नजर को नूर कर और मेरे दिल में नूर भर दे. ऐ अल्लाह !

اشْرَحْ لِي صَدْرِي وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ۞ وَأَعُوذُ بِكَ

मेरा सीना खोल दे और मेरा काम आसान कर और मैं तेरी पनाह मांगता हूँ

مِنْ وَسَاوِسِ الصَّدرِ وَتَشْتِيتِ الْأَمْرِ

सीने के वस्वसों और काम की परा-गन्धगी (छिन्तिशार)

وَعَذَابِ الْقَبْرِ ۞ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ

और अज्राबे कब्र से. ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ उस की बुराई से

مَا يَلِجُ فِي اللَّيْلِ وَشَرِّ مَا يَلِجُ فِي النَّهَارِ

जो रात में दाखिल होती है और उस की बुराई से जो दिन में दाखिल होती है

કે એક આધ કત્રએ આંસૂ તો ટપક હી જાએ કે યેહ કબૂલિયત
 કી દલીલ હે, અગર રોના ન આએ તો રોને જૈસી સૂરત હી
 બના લીજિયે કે અચ્છોં કી નકલ ભી અચ્છી હૈ. તાજદારે મદીના,
 રાહતે કલ્બો સીના صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और तमाम
 अम्बियाએ કિરામ عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام और तमाम सहाबએ
 કિરામ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और અહલે બૈતે અત્હાર કા વસીલા અપને
 પરવર દગાર عَزَّوَجَلَّ કે દરબાર મેં પેશ કીજિયે. હુઝૂરે ગૌસે
 પાક, ખ્વાજા ગરીબ નવાઝ और आ'ला હઝરત ઇમામ અહમદ
 રઝા رَحْمَتُ اللهِ تَعَالَى كَا वासिता દીજિયે, હર વલી और हर आशिके
 નબી કા સદકા માંગિયે. આજ રહમત કે દરવાઝે ખોલે ગએ હેં,
 عَزَّوَجَلَّ اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ માંગને વાલા નાકામ નહીં હોગા, અલ્લાહ
 કી રહમત કી ઘન્ધોર ઘટાએ ઝૂમ ઝૂમ કર આ રહી હેં, રહમતોં
 કી મૂસલા ધાર બારિશ બરસ રહી હૈ. સારે કા સારા અ-રફાત
 અન્વારો તજલ્લિયાત और रહमतो બ-રકાત મેં ડૂબા હુવા હૈ !
 કભી અપને ગુનાહોં और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ કી કહ્હારી और उस
 કે અઝાબ સે પનાહ માંગતે હુએ બૈદ કી તરહ લરઝિયે તો કભી
 એસે જઝબાત હોં કે उस કી રહમતે બે પાયાં કી ઉમ્મીદ સે
 મુરઝાયા હુવા દિલ ગુલે નૌ શિગુફ્તા કી તરહ ખિલ ઉઠે.

અદ્દલ કરે તાં થરથર કમ્બન ઉચ્ચિયાં શાનાં વાલે

ફઝલ કરે તાં બખ્ષો જાવન મેં જહે મુંહ કાલે

दुआअे अ-रफ़ात (७६)

(दौराने दुआ वक्तन इ वक्तन लब्बैक व दुइद शरीफ़ पढिये)

दोनो² हाथ एस तरह उठाएये के सीने, कन्धे या येहरे की सीध में रहें या एतने बुलन्द हो जाअें के बगल की रंगत नजर आ जाअे, यारों सूरतो में उथेलियां आस्मान की तरफ़ झैली हुए रहें के दुआ का किब्ला आस्मान है. अब यूं दुआ शुरुअ कीजिये :

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ
 عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ^ط يَا أَرْحَمَ الرَّحِيمِينَ
 يَا أَرْحَمَ الرَّحِيمِينَ ¹
 يَا رَبَّنَا يَا رَبَّنَا يَا رَبَّنَا يَا رَبَّنَا ²

जिस कदर दुआअे मासूरा (या'नी कुरआनो हदीस की दुआअें) याद

1 : म-दनी आका कुरमाते हें : एस्मे पाक "اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلَّمَ" पर ओक झिरिश्ता अद्लाह एउु जल ने मुकरर इरमाया है जो शप्स एसे (या'नी (اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) तीन बार कहत है झिरिश्ता निदा करता है : "मांग के अर-हमुराहिमीन तेरी तरफ़ मु-तवज्जेह हुवा." (अह्सनुल विआ, स. 70)

2 : सय्यिदुना एमाम जा'फ़रे सादिक कुरमाते हें : जो शप्स एज्ज (या'नी लायारी) के वक्त पांच बार "يَا رَبَّنَا" कहे, अद्लाह एउु जल एसे एस चीज से अमान बप्शे जिस से भौफ़ रभता है और वोह जो दुआ मांगता है वोह अता करता है. (अह्सनुल विआ, स. 71)

हों, वोह अ-रबी में अर्ज करने के बा'द अपने दिली जज्बात अपनी मा-दरी ज्जबान में अपने रहमत वाले परवर दगार **عَزَّ وَجَلَّ** के दरबारे गुहर बार में एस यकीने मोहूकम के साथ, के आप की दुआ कबूल हो रही है एस तरह अर्ज कीजिये :

يَا اللَّهُ يَا رَحْمَنُ يَا رَحِيمُ

तूने मुझे ईन्सान बनाया, **मुसल्मान** किया और मेरे हाथों में दामने रहमते आ-लमिय्यान **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** अता इरमाया. या अल्लाह **عَزَّ وَجَلَّ** ! ओ मुहम्मदे अ-रबी **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के पालिक **عَزَّ وَجَلَّ** ! मैं किस ज्जबान से तेरा शुक्र अदा करूँ के तू ने मुझे हज का शरफ़ बप्शा. मेरी किस कदर प्शुश बप्ती है के मैं उस मैदाने अ-रफ़ात के अन्दर हाजिर हूँ जिसे यकीनन भीठे भीठे **मुस्तफ़ा** **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की कदम बोसी का शरफ़ मिला है, दुन्या के कोने कोने से आने वाले लाभों **मुसल्मान** आज यहाँ जम्न हुअे हैं, ईन में यकीनन तेरे दौ² नबी हजरते ईल्य़ास व हजरते **पिउर** **عَلَىٰ نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** और बे शुमार औलियाअे किराम भी मौजूद हैं. युनान्ये ओ रब्बे रसूले करीम **عَزَّ وَجَلَّ** ! आज जो रहमत की बारिशें नबियों और वलियों पर बरस रही हैं उन्हीं की सदके अेक आध कतरा मुज गुनहगार पर भी बरसा दे.

या अल्लाहु या रहमानु या हन्नानु या मन्नानु
 बप्श दे बप्शे हुआओं का सदका या अल्लाह मेरी जोली तर दे

(वसाईले बप्शिश, स. 107)

(अव्वल आबिर दुर्रदे पाक और तीन बार लब्बैक पढिये)

या रब्बे मुस्तफ़ा! عَزَّ وَجَلَّ! मेरी कमजोरी और ना तुवानी तुज पर आशकार है, आह! मैं तो वोह कमजोर बन्दा हूँ के न गर्मी भरदाशत कर सकता हूँ न सर्दी, मुज में जटमल, मय्थर के उंक की ल्मी सहार नहीं हत्ता के अगर ख्यूटी ल्मी काट ले तो बेयैन हो जाता हूँ, आह! अगर कोई परों वाला मा'मूली सा कीडा कपडों में घुस कर पर इउ-इडाता है तो मुजे उछाल कर रभ देता है, आह! हाअे मेरी भरबादी! अगर गुनाहों के सबज मुजे कभ्र में तेरे कइरो गज्जब की आग ने घेर लिया तो मैं क्या करुंगा! आह! अगर मेरे कफ़न में सांप और बिखरू घुस गअे तो मेरा क्या बनेगा! अै रब्बे मुहम्मद! عَزَّ وَجَلَّ! ज तुईले मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ करम कर दे, मुजे नज़्ज व कभ्र व हशर की तकलीफ़ों से बया ले, यकीनन तेरे करम की इकत अेक नज़र हो जाअे तो मुज पापी व बदकार के दोनों जहां संवर जाअें, अै रब्बे महबूब! عَزَّ وَجَلَّ! मुज पर अपना इज़्जो अेहसान इरमा और मुज से हमेशा हमेशा के लिये राजी हो जा और मुजे अपना पसन्दीदा बन्दा बना ले.

गुनाहगार तलब गारे अइवो रहमत है

अजाब सहने का किस में है हौसला या रब

(वसाधले अफ़िशश, स. 97)

(अव्वल आबिर दुइदे पाक और तीन बार लब्बैक पढिये)

या रब्बे मुस्तफ़ा! عَزَّ وَجَلَّ! तेरे प्यारे रसूल, मुहम्मद म-दनी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तेरा येह इशादि मुज तक पड़ोया

युके हैं के “**ऐ ईब्ने आदम!** जब तक तू मुज से दुरा करता रहेगा और पुर उम्मीद रहेगा मैं तेरे गुनाहों को बपशता रहूंगा, **ऐ ईब्ने आदम!** अगर तेरे गुनाह आस्मान तक पड़ोंय जायें और फिर भी अगर तू मुज से बपशिश तलब करेगा तो मैं मुआफ़ कर दूंगा और मुझे कोई परवाल न होगी, **ऐ ईब्ने आदम!** अगर तू जमीन भर गुनाहों के साथ मेरे पास आयेगा मगर इस डाल में के तू ने कोई कुफ़ व शिर्क न किया हो तो मैं जमीन भर रहमत व मग़्फ़िरत के साथ तेरे पास पड़ोंयूंगा.”¹ तो **ऐ मेरे मक्की म-दनी मउभूब** **عَزَّ وَجَلَّ** के मा'बूद **عَزَّ وَجَلَّ** ! अगर मैं ने गुनाहों से जमीन व आस्मान भर दिये हैं मगर फिर भी मुझे तेरी रहमत पर नाज है, **ईलाही** **عَزَّ وَجَلَّ** ! मेरे गौसे आ'जम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم**, मेरे गरीब नवाज **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی** और मेरे ईमाम अहमद रज़ा खान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** का और मेरे मुशिद करीम का वासिता मेरी बे हिसाब मग़्फ़िरत इरमा, मेरी बे हिसाब मग़्फ़िरत इरमा, मेरी बे हिसाब मग़्फ़िरत इरमा.

तू बे हिसाब बपश के हैं बे शुमार जुम
 देता हूँ वासिता तुझे शाहे डिजाज का

(जैके ना'त)

(अव्वल आभिर दुरददे पाक और तीन बार लबबैक पढिये)

ऐ रब्बे मुहम्मदे मुस्तफ़ा **عَزَّ وَجَلَّ** ! मैं ईकरार करता हूँ के मैं

ने बडे बडे गुनाहों का धरतिकाब किया है मगर येह सब के
 सब तेरी शाने अइवो दर गुजर के सामने बहुत ही छोटे हैं,
 औ मेरे प्यारे प्यारे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! यकीनन तेरी भगिंरत व
 बख्शिश गुनहगारों को ढूंउती है और मुज से बढ कर इस
 मैदाने अ-रफ़ात में कोई मुजरिम न डोगा ! औ मेरे म-दनी
 नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के रब्बे गनी عَزَّوَجَلَّ ! मैं अपने
 गुनाहों पर शरमिन्दा हूं और उम्मीद करता हूं के तेरी बख्शिश
 का धन्नाम मुज गुनहगार पर जरूर डोगा, या धलाडल
 आ-लमीन عَزَّوَجَلَّ ! तुजे भु-लफ़ाअे राशिदीन الرِّضْوَانِ عَلَيْهِمُ और
 उम्मडतुल मुअमिनीन الرِّضْوَانِ عَلَيْهِمُ का वासिता, बीबी फ़ातिमा
 और ह-सनैने करीमै रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ, बिलाले हबशी
 और उवैस कर्नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का सदका, मेरी
 बी बख्शिश इरमा और मेरे मुशिदे करीम, मेरे असातिजअे
 किराम, तमाम उ-लमा व मशाधये अडले सुन्नत और मेरे
 वालिदैन और घर के तमाम अइराद को बख्श दे और सारी
 उम्मत की भगिंरत इरमा.

दवाम दीन पे अल्लाह महमत इरमा

हमारी बडके सब उम्मत की भगिंरत इरमा

(अव्वल आपिर दुइदे पाक और तीन बार लब्बैक पढिये)

औ मुहम्मदे मा'सूम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के भुदाअे
 हय्यो कय्यूम ! बेशक मुसल्मानों का स-दका व भौरात करना तू
 पसन्द इरमाता है. तो औ जवादो करीम मुज से बढ कर

नेकियों के मुआ-मले में गरीब व मुझलिस कौन होगा ! और
 देने वालों में तुज से बढ कर अता करने वाला कौन होगा ! तो
 अै मादिके मुस्तफ़ा! عَزَّ وَجَلَّ ! अ तुकैले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 मुजे दीन पर इस्तिकामत, अपनी दाईमी रिजा, जहन्नम से
 अमान और बे हिसाब मग़ि़रत की धैरात से नवाज़ कर मुज
 पर अेहसाने अज़ीम इरमा.

हुसैन इब्ने अली के लाडलों का वासिता मौला

बया ले हम को तू नारे जहन्नम से बया मौला

(अव्वल आबिर दुइदे पाक और तीन बार लब्बैक पढिये)

अै अपने मलभूअ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पसीने
 में भुशभू पैदा करने वाले ! अै मरीजों को शिफ़ा देने
 वाले ! तमाम मुसल्मानों में सब से बडा मलभूअते दुन्या
 का मरीज और गुनाहों का बीमार “साईले शिफ़ा” बन
 कर तेरी बारगाहे बेकस पनाह में हाज़िर है, या
 शाइयल अमराज ! मैं हुब्बे दुन्या और गुनाहों की
 बीमारी से सिद्धत याबी का सुवाल करता हूं, अै परवर
 दगार عَزَّ وَجَلَّ ! सय्यिदुल अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के
 सदके मुजे शिफ़ाअे कामिला अता इरमा, मुजे नेक बना
 दे और मुजे मरीजे इशके मुस्तफ़ा बना और मुजे गमे
 मदीना से नवाज़ दे.

में गुनाहों में लिथडा हुवा हूं बढ से बढतर हूं बिगडा हुवा हूं
 अइवे जुर्मो कुसूरो ખતા की मेरे मौला तू ખैरात दे दे
 (अव्वल आખिर दुइदे पाक और तीन बार लब्बैक पढिये)

या रब्बे मुस्तफ़ा! عُزْرُكَ لِيكُ الْهَمْلِيكُ ! तुझे तमाम अम्बिया व सहाबा
 व अहले बैत व जुम्ला औलिया का वासिता हमारे बीमारों
 को शिफ़ा अता इरमा, कर्जदारों के कर्जे उतार दे, तंगदस्तों को
 इराफ़ दस्ती दे, बे रोज़गारों को हलाल आसान रोज़ी अता
 इरमा, बे औलाहों को बिगैर ओपरेशन के आइफ़ियत के साथ
 नेक औलाह अता कर, जिन के रिश्तों में रुकावटें हैं उन्हें नेक
 रिश्ते नसीब इरमा, या रब्बे मुस्तफ़ा! عُزْرُكَ لِيكُ الْهَمْلِيكُ ! मुसल्मानों को
 इरिंगी इेशन की आइत से छुडा कर इत्तिबाअे सुन्नत की
 सआदत इनायत इरमा, या रब्बे मुस्तफ़ा! عُزْرُكَ لِيكُ الْهَمْلِيकُ ! जो बे जो
 मुकदमों में घिरे हैं उन्हें नजात अता इरमा, जिन के इठे हैं उन
 को मना दे, जिन के बिछडे हैं उन को मिला दे, जिन के घरों में
 ना याकियां हैं उन को आपस में शीरो शकर कर दे, या रब्बे
 मुस्तफ़ा! عُزْرُكَ لِيكُ الْهَمْلِيकُ ! जिन पर सेइर है या जो आसेब जदा हैं उन्हें
 सेइर व आसेब से छुटकारा अता इरमा, या रब्बे मुस्तफ़ा
 عُزْرُكَ لِيكُ الْهَمْلِيकُ ! मुसल्मानों को आइतो बलिय्यात से बया, दुश्मनों
 की दुश्मनी, शरीरों के शर, लासिहों के हसद और बढ निगाहों
 की निगाहे बढ से मलकूज व मामून इरमा.

वोड के अर्से से बीमार हें जो जिन्नो जद्द से बेजार हें जो
 अपनी रहमत से उन को शिफा की मेरे मौला तू भैरात दे दे
 (अव्वल आबिर दुर्रदे पाक और तीन बार लठ्ठैक पढिये)

या रब्बे करीम ! बीबी इतिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का
 वासिता, सय्यिदह जैनज, सय्यिदह सकीना, बीबी हुव्वा,
 बीबी सारह, बीबी हाजिरा, बीबी आसिया और बीबी
 मरयम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ का सदका, हमारी माओं बहनों और
 बहु बेटियों को शर्मो उया की यादर नसीज इरमा और उन्हें
 हर ना महरम मअ अपने देवर व जेठ, ययाजाद, जालाजाद,
 झूझाजाद, मामूंजाद, बहनोई, झूझा और जालू,¹ सब से
 सडीह शर-ई पर्दा करने की तौफीक अता इरमा.

दे दे पर्दा मेरी बेटियों को माओं बहनों सभी औरतों को
 बीक दे दे तू अपनी अता की मेरे मौला तू भैरात दे दे
 (अव्वल आबिर दुर्रदे पाक और तीन बार लठ्ठैक पढिये)

या अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! अैसा अमल जो तेरी बारगाह में
 मकबूल न हो, अैसा हिल जो तेरी याद से गाईल रहे, अैसी आंज
 जो झिल्में डिरामे देजती और बढ निगाडी करती रहे, अैसे कान जो

1 : बढ डिस्मती से इन तमाम अजीजों से आज कल उभूमन पर्दा नहीं किया
 जाता हालां के शरीअत ने इन के साथ भी पर्दे का हुकम दिया है. इन की
 आपस में बे पर्दगी और बे तकल्लुफी में सप्त गुनहगारी और अजाबे नार
 की हकदारी है.

गाने बाजे और गीबत व युगली सुनते रहें, जैसे पाँउं जो
 बुरी मजलिसों की तरफ़ चल कर जाते रहें, जैसे हाथ जो जुल्म
 के लिये उठते रहें, ऐसी ज़बान जो कुज़ूल गोर्ध और गाली
 गलोय से बाज़ न आये, ऐसा दिमाग जो बुरे मन्सूबे बांधता
 रहे और जैसे सीने से जो मुसल्मानों के कीने से लबरेज़ हो
 तेरी पनाह मांगता हूँ, ओ मेरे प्यारे परवर दगार عَزَّ وَجَلَّ ! मक्के
 मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और तेरी अता से कुल
 भुदाई के मालिको मुप्तार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सदके जुम्ला
 मुजतहिदीन व अर्धम्मअे अर-बआ और सलासिले अर-बआ
 के तमाम औलियाअे किराम رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام के वसीले से अपना
 ताबेअे इरमान बना कर मुज पर इज़्लो अेहसान इरमा.

ओ भुदाअे मुस्तफ़ा عَزَّ وَجَلَّ ! तुजे हर आशिके रसूल का
 वासिता, तुजे गमे मुस्तफ़ा में रोने वाली आंख और तडपने
 वाला दिल ईनायत इरमा और सख्या आशिके रसूल बना
 और मेरा सीना मडब्बते उबीब का मदीना बना दे और तुजे
 बे वफ़ा दुन्या का नहीं मदीने का दीवाना बना दे.

पीछा मेरा दुन्या की मडब्बत से छुडा दे

या रब ! मुजे दीवाना मदीने का बना दे

(वसाईले बज्शिश, स. 100)

(अव्वल आबिर दुइदे पाक और तीन बार लब्बैक पढिये)

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّ وَجَلَّ ! तुजे का'बअे मुशर्रफ़ा और गुम्बदे

ખઝરા કા વાસિતા, મેરે હજ વ ઝિયારત ઓર મેરી જાઈઝ દુઆએ જો મેરે હક મેં બેહતર હોં વોહ કબૂલ ફરમા ઓર મુઝે મુસ્તજાબુદા'વાત બના દે મેરી ઓર મૈદાને અ-રફાત મેં હાઝિર હર હાજી કી મઙ્ગિરત ફરમા, ઓર મુઝે હર સાલ હજ વ ઝિયારતે મદીના સે મુશરફ ફરમા ઓર મુઝે મદીનએ પાક મેં ઝેરે ગુમ્બદે ખઝરા જલ્વએ મહબૂબ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ મેં આફિયત કે સાથ શહાદત, જન્નતુલ બકીઅ મેં મદફન ઓર જન્નતુલ ફિરદૌસ મેં અપને પ્યારે હબીબ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા પડોસ નસીબ ફરમા. યા રબ્બે મુસ્તફા ! મુઝે જિન જિન ઈસ્લામી ભાઈયોં ઓર ઈસ્લામી બહનોં ને દુઆઓં કે લિયે કહા હૈ, બ તુફૈલે તાજદારે મદીના صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ઉન સબ કી હર જાઈઝ મુરાદ મેં ઉન કી બેહતરી પર નઝર ફરમા ઓર ઉન સબ કી બખ્શિશ કર દે.

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

જિન જિન મુરાદોં કે લિયે અહબાબ ને કહા

પેશે ખબીર ક્યા મુઝે હાજત ખબર કી હૈ

(હદાઈકે બખ્શિશ શરીફ)

(અવ્વલ આખિર દુરૂદે પાક ઓર તીન બાર લખબૈક પઢિયે)

ગુરૂબે આફતાબ કે બા'દ તક દુઆ જારી રખિયે ! :

ઈસી તરહ આહો ઝારી કે સાથ દુઆ જારી રખિયે યહાં તક કે આફતાબ ડૂબ જાએ ઓર રાત કા હલકા સા હિસ્સા આ જાએ,

ईस से पहले जाये वुक्फ़ (या'नी जहां आप ठहरे हुअे हें) से चल पडना मन्अ है और गुरुबे आफ़ताब से कब्ल हुदूदे अ-रफ़ात से बाहर निकल जाना हराम है और दम लाजिम, अगर गुरुबे आफ़ताब से कब्ल ही वापस अ-रफ़ात में दाखिल हो गया तो दम साकित हो जायेगा. याद रहे ! आज छाज को नमाजे मगरिब यहां नहीं बल्के ईशा के वक्त में मुज्दलिसा में मगरिब व ईशा मिला कर पढनी है.

गुनाहों से पाक हो गये : प्यारे प्यारे छाजियो ! आप के लिये येह जरूरी है के अल्लाह عزّوجلّ के सख्ये वा'दों पर भरोसा कर के यकीन कर लीजिये के आज मैं गुनाहों से अैसा पाक हो गया हूं जैसा के उस दिन जब के मां के पेट से पैदा हुवा था. अब कोशिश कीजिये के आयन्दा गुनाह न हों. नमाज, रोजा, जकात वगैरा में हरगिज कोताही न हो, झिल्मों डिरामों और गानों बाजों नीज हराम रोजी कमाने, दाढी मुंडाने या अेक मुट्ठी से घटाने, मां बाप का दिल दुभाने वगैरा वगैरा गुनाहों में मुलव्वस हो कर कहीं झिर आप शैतान के युंगल में न ईंस जायें.

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

मुज़्दलिका को रवानगी : जब गुर्जुमे आरुताब का यकीन हो जाये तो अ-रफ़ात शरीफ़ से जानिबे मुज़्दलिका शरीफ़ चलिये, रास्ते भर ज़िक्रो दुरुद और हुआ व लब्बैक व ज़ारी व बुका (या'नी रोने घोने) में मसरूफ़ रहो. कल मैदाने अ-रफ़ात शरीफ़ में हुकूमतलाह मुआफ़ हुमे यहाँ हुकूमत एबाद मुआफ़ इरमाने का वा'दा है. (बहारे शरीअत, ज़ि. 1, स. 1131, 1133) **ऐ लीजिये!**

मुज़्दलिका शरीफ़ आ गया ! हर तरफ़ यदल पदल और ખૂબ रौनक लगी हुई है, मुज़्दलिका के शुर्अ में काफ़ी रश होता है, आप बे धडक आगे से ખૂब आगे बढ़ते चले जाँयें **اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** अन्दर की तरफ़ काफ़ी कुशादा जगल मिल जायेगी मगर येड अेडतियात रहे के कहीं मिना शरीफ़ की उद में दाખिल न हो जाँ. पैदल चलने वालों के लिये मश्वरा है के मुज़्दलिका में दाખिल होने से पहले पहले इस्तिन्जा वुजू की तरकीब बना लें वरना भीड में सप्त आजमाँश हो सकती है.

मगरिब व एशा मिला कर पढने का तरीका : यहाँ आप को अेक ही अज़ान और अेक ही इकामत से नमाजे मगरिब व एशा वक्ते एशा में अदा करनी हैं, लिहाज़ा अज़ान व इकामत के बा'द पहले मगरिब के तीन³ इर्ज अदा कर लीजिये, सलाम इेरते ही इौरन एशा के इर्ज पढिये फिर मगरिब की सुन्नतें, नइलें (अव्वाबीन) इंस के बा'द एशा की सुन्नतें, नइलें और वित्र व नवाइल अदा कीजिये. (बहारे शरीअत, ज़ि. 1, स. 1132)

कंकरियां युन लीजिये : आज की शब बा'ज अकाबिर उ-लमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى के नजदीक लै-लतुल कद्र से भी अइजल है, येह रात गइलत या ખુશ गप्पियों में जाअेअ करना सप्त महइभी है, हो सके तो सारी रात लब्बैक और जिको दुरइ में गुजारिये. (अैजन, स. 1133) रात ही में शैतानों को मारने के लिये पाक जगह से उन्यास कंकरियां भजूर की गुठली की साँज के बराबर युन लीजिये बल्के कुछ जियादा ले लीजिये ताके वार भाली जाने वगैरा की सूरत में काम आ सकें, धन को तीन³ बार धो लीजिये, कंकरियां बडे पथर को तोड कर न बनाईये. नापाक जगह से या मस्जिद से या जमरे के पास से कंकरियां मत लीजिये.

अेक ऋरी अेहतियात : आज नमाजे इज अव्वल वक्त में अदा करना अइजल है मगर नमाज उस वक्त अदा कीजिये जब के सुब्हे सादिक यकीनी तौर पर हो जाअे. उभूमन मुअल्लिम के आदमी बहुत जल्दी मयाते हैं और धिन्दिदाअे वक्ते इज से पहले ही “सलाह सलाह” यिल्लाना शुइअ कर देते हैं और बा'ज हुज्जज वक्त से कब्ल ही नमाज अदा कर लेते हैं ! आप अैसा मत कीजिये बल्के दूसरों को भी नरमी के साथ नेकी की दा'वत दीजिये के अमी वक्त नहीं हुवा, जब तोप का गोला¹ छूटे तब नमाज अदा कीजिये.

1 : सुब्हे सादिक के वक्त मुज्दलिफा में तोप का गोला यलाया जाता है ताके हुज्जज को इज की नमाज के वक्त का पता चल जाअे.

वुकूई मुज्दलिफ़ा : मुज्दलिफ़ा में रात गुजारना सुन्नते मुअक़्कदा है मगर इस का वुकूई वाजिब है. वुकूई मुज्दलिफ़ा का वक्त सुब्हे सादिक से ले कर तुलूअे आफ़ताब तक है, इस के दरमियान अगर अेक लम्हा भी यहां गुजार लिया तो वुकूई हो गया, जाहिर है के जिस ने इज्ज के वक्त में मुज्दलिफ़ा के अन्दर नमाजे इज्ज अदा की उस का वुकूई सहीह हो गया, जे कोई सुब्हे सादिक से पहले ही मुज्दलिफ़ा से यला गया उस का वाजिब तर्क हो गया, लिहाजा उस पर दम वाजिब है. हां, औरत, बीमार या जर्ईफ़ या कमजोर के जिन्हें भीउ के सभब ईजा पहोंयने का अन्देशा हो अगर मजबूरन यले गये तो कुछ नहीं. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1135)

कोहे मशअरुल उराम पर अगर जगह न मिले तो उस के दामन में और अगर येह भी न हो सके तो वादिये मुहस्सर¹ के सिवा, के यहां वुकूई करना ना जाईज है जहां जगह मिल जाये वुकूई कीजिये और वुकूई अ-रफ़ात वाली तमाम बातें यहां भी मल्हूज़ रभिये या'नी लब्बैक की कसरत कीजिये और जिक्को दुर्रुह और दुर्रा में मशगूल हो जाईये. (अैजान, स. 1133)

1 : येह मिना और मुज्दलिफ़ा के बीच में है और येह इन दोनों की हुदूह से पारिज मुज्दलिफ़ा से मिना को जाते हुअे भाअें (या'नी उलटे) हाथ को जे पहाउ पउता है उस की चोटी से शुइअ हो कर 545 हाथ तक है. यहां अस्हाबे ईल (या'नी हाथी वाले) आ कर ठहरे थे और उन पर अजाबे अबाबील नाजिल हुवा था, यहां वुकूई जाईज नहीं. इस जगह से जल्द गुजरना और अजाबे एलाही से पनाह मांगनी चाहिये.

! إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ
 शरीर में हुकूकुल्लाह मुआर्र हुअे थे यहां हुकूकुल एभाद मुआर्र
 इरमाने का वा'दा है. (हुकूकुल एभाद मुआर्र होने की तईसील
 सईहा 18 पर गुजरी)

नमाज से कबल मगर तुलूअे इज्ज के भा'द यहां से
 यला गया या तुलूअे आर्रताब के भा'द गया तो भुरा किया
 मगर उस पर दम वगैरा वाजिब नहीं. (अैजन)

**मुग्दलिफ़ा से मिना जाते हुअे रास्ते में पढने की
 दुआ :** जब तुलूअे आर्रताब में दो रकअत पढने का वक्त
 बाकी रह जाअे तो सूअे मिना शरीर्र रवाना हो जाएथे और
 रास्ते भर लब्बैक और जिको दुर्रद की तकरार रबिये. और
 येह दुआ पढिये :

اللَّهُمَّ إِلَيْكَ أَفْضْتُ وَمِنْ عَذَابِكَ أَشْفَقْتُ

अै अल्लाह एज्जुजल्ल ! मैं तेरी तरई वापस हुवा और तेरे अजाब से उरा

وَالَيْكَ رَجَعْتُ وَمِنْكَ رَهْبْتُ فَاقْبَلْ

और तेरी तरई रुजूअ किया और तुज से भौई किया, तू मेरी एभादत कबूल

نُسْكِي وَعَظْمُ اجْرِي وَارْحَةُ تَضْرَعِي

कर और मेरा अज्ज जियादा कर और मेरी आजिजी पर रहम कर

وَاقْبَلْ تَوْبَتِي وَاسْتَجِبْ دُعَائِي ط

और मेरी तौबा कबूल कर और मेरी दुआ मुस्तजाब (या'नी मकबूल) इरमा.

मिना नजर आये तो येह दुआ पढिये

मिना शरीफ़ नजर आये तो (अव्वल आभिर दुइद शरीफ़ के साथ) वोडी दुआ पढिये जे **मक्कअे मुकर्रमा** **رَادَهَا اللَّهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا** से आते हुअे मिना देभ कर पढी थी. दुआ येह है :

اللَّهُمَّ هَذِهِ مِنِّي فَأَمِّنْ عَلَيَّ بِمَا مَنَنْتَ بِهِ عَلَيَّ أَوْ لِيَاكَ

तरजमा : ऐ अइलाह! येह मिना है मुज पर वोह ओहसान इरमा जे तूने अपने औलिया पर इरमाया.

या एलाही इजल कर तुज को मिना का वासिता

हाजियों का वासिता कुल औलिया का वासिता

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

दसवीं गुल हिज्जह का पहला काम रम्य :

मुजदलिक़ा शरीफ़ से मिना शरीफ़ पछोंय कर सीधे जमरतुल अ-कबाह या'नी बडे शैतान की तरफ़ तशरीफ़ लाईये, आज सिर्फ़ ईसी अेक को कंकरियां मारनी हें. पहले का'बअे शरीफ़ की सन्त मा'लूम कर लीजिये फिर जमरे से कम अऊ कम पांच⁵ हाथ (या'नी तकरीबन ढाई गज) दूर

(जियादा की कोई कैद नही) इस तरह ખડે હોં કે મિના આપ કે સીધે હાથ પર ઔર કા'બા શરીફ ઉલટે હાથ કી તરફ રહે ઔર મુંહ જમરે કી તરફ હો, સાત કંકરિયાં અપને ઉલટે હાથ મેં રખ લીજિયે બલકે દો તીન ઝાઈદ લે લીજિયે.¹ અબ સીધે હાથ કી ચુટકી મેં લે કર ઔર હાથ અચ્છી તરહ ઉઠા કર કે બગલ કી રંગત ઝાહિર હો હર બાર **بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ** કહતે હુએ એક એક કર કે સાત કંકરિયાં ઈસ તરહ મારિયે કે તમામ કંકરિયાં જમરે તક પહોંચેં વરના કમ અઝ કમ તીન³ હાથ કે ફાસિલે તક ગિરેં. પહલી કંકરી મારતે હી લબ્બૈક કહના મૌકૂફ કર દીજિયે જબ સાત પૂરી હો જાએં તો વહાં ન રુકિયે, ન સીધે જાઈયે ન દાએં બાએં બલકે ફૌરન ઝિકો દુઆ કરતે હુએ પલટ આઈયે. (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 1193) (ફૌરન પલટના હી સુન્નત હૈ મગર અબ જદીદ તા'મીરાત કે સબબ પલટના મુમ્કિન નહીં રહા લિહાઝા કંકરિયાં માર કર કુછ આગે બઢ કર “યૂ ટર્ન” કી તરકીબ કરની હોગી.)

રમ્ય કે વક્ત એહતિયાત કે 5 મ-દની ફૂલ

ખુશ નસીબ હાજિયો ! રમ્યે જમરાત કે વક્ત ખુસૂસન દસવીં કી સુબહ હાજિયોં કા ઝબર દસ્ત રેલા હોતા હૈ ઔર બા'ઝ અવકાત ઈસ મેં લોગ કુચલે ભી જાતે હેં. સગે

¹ : કાશ ! ઈસ વક્ત દિલ મેં નિચ્યત હાઝિર હો જાએ કે મુઝ પર જો બુરી ખ્વાહિશાત મુસલ્લત હેં ઉન્હેં માર ભગાને મેં કામ્યાબ હો જાઊં.

मदीना **عَنْهُ** ने 1400 सि.हि. में दसवीं को सुब्ह **मिना शरीफ** में अपनी आंघों से येह लरजा भैज मन्जर देया था के लाशों को उठा उठा कर अेक कितार में लिटाया जा रहा था मगर अब जगह में काई तौसीअ कर दी गई है नीचे के डिस्से के ँलावा ँपर यार⁴ मन्जिलें मजीद बना दी गई हैं ँस लिये हुजूम काई तकसीम हो जाता है. **कुछ अेहतियातें अर्ज करता हूं :**

- ﴿1﴾** 10वीं की सुब्ह काई हुजूम होता है, दो पहर के तीन यार बजे लीड कम हो जाती है अब अगर ँस्लामी बहनें ली साथ हों तो हरज नहीं ँपर की मन्जिल से रम्य करेंगे तो रश और ली कम मिलेगा और खुली हवा ली मिल सकेगी
- ﴿2﴾** रम्य में छडी, छत्री और दीगर सामान साथ न ले जाँये, ँन्तिजामिया के अहल कार ले लेते हैं, वापस मिलना दुश्वार होता है. हां, छोटा सा स्कूल बेग अगर कमर पर लटका हुवा हो तो बा'ज अवकात ले जाने देते हैं मगर 10वीं की रम्य में येह ली न ही ले जाँें तो बेहतर है के रोक लिया तो आप आजमाँश में पड सकते हैं. 11 और 12 की रम्य में छोटी मोटी चीजें ले जाने के मुआ-मले में ँन्तिजामिया की तरफ से सप्ती कदरे कम हो जाती है
- ﴿3﴾** व्हील येर वालों के लिये रम्य का मुनासिब वक्त तीनों दिन बा'द नमाजे अस्र है
- ﴿4﴾** कंकरियां भारते वक्त कोँ चीज हाथ से छूट कर गिर जाँे या पाँ से यप्पल निकलती महसूस हो तो हुजूम होने की सूरत में हरगिज मत लुकिये
- ﴿5﴾** जब कुछ रु-इका मिल कर रम्य

करना याहें तो पहले ही से वापस मिलने की कोशिश करनी
 जगह मुक़रर कर के उस की निशानी याद रख लीजिये वरना
 बिछड़ जाने की सूरत में बेहद परेशानी हो सकती है. लीड के
 दीगर मकामात पर भी इस बात का खयाल रखिये. सगे
 मदीना عَنْ ने जैसे जैसे बूढ़े छाजियों और छज्जनों को
 बिछड़ते देखा है के बेयारों को अपने मुअत्लिम तक का नाम
 मा'लूम नहीं होता और फिर बियारों के लिये वोह आज़माईश
 होती है के الْأَمَانُ وَالْحَفِظُ .

“अल्लाहु गइज़ार” के आठ हुइइ की निरुमत से रम्य के 8 म-दनी इल

❶ : صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : एो इरामीने मुस्तइ
 अर्र की गइ : रम्ये जिमार में क्या सवाब है ? आप
صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाई इरमाया : तू अपने रब के
 नजदीक इस का सवाब उस वक्त पाओगा के तुजे इस की
 जियादा छाजत होगी. (❷) (مُعْجَمٌ أَوْسَطُ ج ٣ ص ١٥٠ حدیث ٤١٤٧) जमरों
 की रम्य करना तेरे लिये कियामत के दिन नूर होगा.
 (❸) (الترغيب والترهيب ج ٢ ص ١٣٤ حدیث ٣) सात कंकरियों से कम मारना
 ज़ाईज नहीं. अगर सिर्फ़ तीन मारीं या बिल्कुल रम्य न की
 तो दम वाजिब होगा और अगर चार मारीं तो बाकी छर
 कंकरों के बदले स-दका है. (❹) (رَدُّ الْمَحْتَارِ ج ٣ ص ٦٠٨) अगर सब

कंकरियां अेक साथ ईंकीं तो येह सात नहीं इकत अेक मानी
 जाअेगी. (ایضاً ص 107) ﴿5﴾ कंकरियां जमीन की जिन्स से
 होना जरूरी हैं. (जैसे कंकर, पथर, यूना, मिट्टी) अगर मंगनी
 मारी तो रम्य नहीं होगी. (تَرْفُخُ رَوْرُؤُ الْمَحْتَارِ ج 3 ص 108) ﴿6﴾
 ईसी तरह भा'ज लोग जमरात पर उब्बे या जूते मारते हैं
 येह भी कोई सुन्नत नहीं और कंकरी के बढले जूता या उब्बा
 मारा तो रम्य होगी ही नहीं ﴿7﴾ रम्य के लिये बेहतर येही है
 के मुज्दलिफ़ा से कंकरियां ली जाअें मगर लाजिमी नहीं दुन्या
 के किसी भी हिस्से की कंकरियां मारेंगे रम्य दुरुस्त है ﴿8﴾
 दसवीं की रम्य तुलूअे आफ़ताब से ले कर ज्वाल तक सुन्नत
 है, ज्वाल (या'नी इब्तिदाअे वक्ते जोहर) से ले कर गुर्बे
 आफ़ताब तक मुबाह (या'नी जा'इज) है और गुर्बे आफ़ताब
 से सुब्हे सादिक तक मक़्ज़ुह है. अगर किसी उज़्र के सबब हो
 म-सलान थरवाहे ने रात में रम्य की तो कराहत नहीं. (ایضاً ص 110)

इस्लामी बहनों की रम्य : उभूमन देखा जाता है के मर्द
 बिला उज़्र औरतों की तरफ़ से रम्य कर दिया करते हैं ईस
 तरह इस्लामी बहनें रम्य की सआदत से महज़ूम रह जाती हैं
 और यूंके रम्य वाजिब है लिहाजा तर्क वाजिब के सबब उन
 पर दम भी वाजिब हो जाता है लिहाजा इस्लामी बहनें
 अपनी रम्य ખुद ही करें.

मरीजों की रम्य : भा'ज हाज साहिबान यूं तो हर जगह दन्दनाते फिरते हैं लेकिन मा'भूली सी बीमारी के सभब वोह दूसरों से रम्य करवा लेते हैं.

मरीज की तरफ से रम्य का तरीका : सदरुशशरीअह, बहरुत्तरीकह उजरते अल्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फिरमाते हैं : जो शप्स मरीज हो, के जमरे तक सुवारी पर भी न जा सकता हो, वोह दूसरे को हुकम कर दे के उस की तरफ से रम्य करे और उस को याहिये के पहले अपनी तरफ से सात कंकरीयां मारने के बा'द मरीज की तरफ से रम्य करे या'नी जब के खुद रम्य न कर युका हो और अगर यूं किया के अक कंकरी अपनी तरफ से मारी फिर अक मरीज की तरफ से, यूंही सात बार किया तो मकरह है और मरीज के बिगैर हुकम रम्य कर दी तो जा'ज न हु' और अगर मरीज में 'तनी ताकत नहीं के रम्य करे तो बेहतर येह के उस का साथी उस के हाथ पर कंकरी रज कर रम्य कराये. यूंही बेहोश या मजनून या ना समज की तरफ से उस के साथ वाले रम्य कर दें और बेहतर येह के उन के हाथ पर कंकरी रज कर रम्य करायें.

“ઈલાહીમ” કે સાત હુરફ કી નિસ્બત સે હજ કી કુરબાની કે 7 મ-દની ફૂલ

﴿1﴾ દસવીં કો બડે શૈતાન કી રમ્ય કરને કે બા'દ કુરબાન ગાહ તશરીફ લાઈયે ઓર કુરબાની કીજિયે, યેહ વોહ કુરબાની નહીં જો બ-કરહ ઈદ મેં હુવા કરતી હૈ બલકે હજ કે શુકાને મેં કારિન ઓર મુ-તમત્તેઅ પર વાજિબ હૈ યાહે વોહ ફકીર હી ક્યું ન હો, મુફરિદ કે લિયે યેહ કુરબાની મુસ્તહબ હૈ યાહે વોહ ગની (માલદાર) હો ﴿2﴾ યહાં ભી જાનવર કી વોહી શરાઈત હેં જો બ-કરહ ઈદ કી કુરબાની કી હોતી હેં. (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 1140) મ-સલન બકરા (ઈસ મેં બકરી, દુમ્બા, દુમ્બી ઓર ભેડ (નર વ માદા) દોનોં શામિલ હેં) એક સાલ કા હો, ઈસ સે કમ ઉમ્મ હો તો કુરબાની જાઈઝ નહીં, ઝિયાદા હો તો જાઈઝ બલકે અફઝલ હૈ. હાં દુમ્બા યા ભેડ કા છ મહીને કા બચ્ચા અગર ઈતના બડા હો કે દૂર સે દેખને મેં સાલ ભર કા મા'લૂમ હોતા હો તો ઉસ કી કુરબાની જાઈઝ હૈ. (تَرْغِيبُ الرِّجَالِ فِي دَعْوَةِ الدِّينِ ص ۹۳) યાદ રખિયે ! મુતલકન છ માહ કે દુમ્બે કી કુરબાની જાઈઝ નહીં, ઈસ કા ઈતના ફર્બા (યા'ની તગડા) ઓર કદઆવર હોના ઝરૂરી હૈ કે દૂર સે દેખને મેં સાલ ભર કા લગે. અગર 6 માહ બલકે સાલ મેં એક દિન ભી કમ ઉમ્મ કા દુમ્બે યા ભેડ કા બચ્ચા જો દૂર સે દેખને મેં સાલ ભર કા નહીં લગતા તો ઉસ કી કુરબાની નહીં હોગી ﴿3﴾ અગર જાનવર કા કાન એક તિહાઈ (1/3) સે ઝિયાદા કટા હોગા તો

कुरबानी होगी ही नहीं और अगर तिलाई या ईस से कम कटा
 हुवा हो, या गिरा हुवा हो या उस में सूराफ़ हो ईसी तरह कोई
 थोडा सा अँब हो तो कुरबानी हो तो जायेगी मगर मक़रूहे (तन्जीही)
 होगी ﴿4﴾ ज़ब्र करना आता हो तो फ़ुद ज़ब्र करे के सुन्नत है,
 वरना ज़ब्र के वक्त हाज़िर रहे. (बहारे शरीअत, ज़ि. 1, स. 1141)
 दूसरे को भी कुरबानी का नाईब कर सकते हैं¹ ﴿5﴾ ओंट की
 कुरबानी अज़ज़ल है के उमारे प्यारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने
 ख़िज़्ज़तुल वदाअ के मौक़अ पर अपने दस्ते मुबारक से 63 ओंट
 नहूर फ़रमाये. और सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की
 ईज़ाज़त से बक़िया ओंट उज़रते मौला अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ
 ने नहूर किये. (مسلم من 134 حديث 1218) अक़ और रिवायत में है के
 सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पास पांय या 69 ओंट
 लाये गये तो ओंटों पर भी गोया अक़ वज़ह तारी था और वोह
 ईस तरह आगे बढ रहे थे के हर अक़ याहता था के पहले मुजे
 नहूर होने की सआदत मिल जाये. (ابوداؤد ج 2 ص 211 حديث 1760)

हर ईक की आरज़ू है पहले मुज़ को ज़ब्र फ़रमायें
 तमाशा कर रहे हैं मरने वाले ईद कुरबां में

(जौके ना'त)

دينه

1 : कुरबानी के मसाईल की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-अतुल मदीना
 की मत्बूआ बहारे शरीअत, ज़िल्द 3 सफ़हा 327 ता 353 नीज़ मक-त-अतुल
 मदीना का मत्बूआ रिसाला "अब्लक घोडे सुवार" पढिये.

﴿6﴾ बेहतर येह है के जल्द के वक्त जानवर के दोनों हाथ, अक पाँउ बांध लीजिये जल्द कर के फोल दीजिये. येह कुरबानी कर के अपने और तमाम मुसल्मानों के उज व कुरबानी कबूल होने की दृआ मांगिये. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1141) **﴿7﴾** दसवीं को कुरबानी करना अइजल है ग्यारहवीं और बारहवीं को भी कर सकते हैं मगर बारहवीं को गुइबे आइताब पर कुरबानी का वक्त ખत्म हो जाता है.

हाज और न-करह ईद की कुरबानी

सुवाल : हाज पर न-करह ईद की कुरबानी वाजिब है या नहीं ?
जवाब : मुकीम मालदार हाज पर वाजिब है, मुसाफिर हाज पर नहीं अगरे मालदार हो. न-करह ईद की कुरबानी का हरम शरीफ में होना जरूरी नहीं, अपने मुल्क में भी किसी को कल कर करवाई जा सकती है. अलबत्ता दिन का ખयाल रખना होगा के जहां कुरबानी होनी है वहां भी और जहां कुरबानी वाला है वहां भी दोनों जगह अय्यामे कुरबानी हों. मुकीम हाज पर कुरबानी वाजिब होने के बारे में “अल बरूरुईक” में है : अगर हाज मुसाफिर है तो उस पर कुरबानी वाजिब नहीं है, वरना वोह (या’नी मुकीम हाज) मक्की की तरह है और (गनी होने की सूरत में) उस पर कुरबानी वाजिब है. (الْبَحْرُ الرَّاقِعُ ٢٤ ص ٦٠٦)
 उ-लमाअे किराम ने जिस हाज पर कुरबानी वाजिब न होने का कौल किया है उस से मुराद वोह हाज है जो मुसाफिर हो.

युनान्चे “मब्सूत” में है : कुरबानी शहर वालों पर वाजिब है, छाजियों के धलावा और यहां शहर वालों से मुराद मुक्रीम हैं और छाजियों से मुराद मुसाफिर हैं, अहले मक्का पर कुरबानी वाजिब है अगर्चे वोह उज करे. (المبسوط للسرخسی ج ٦، الجزء الثانی عشر ص ٢٤)

कुरबानी के टोकन : आज कल बहुत सारे छाज साहिबान बेंक में कुरबानी की रकम जम्मा करवा कर टोकन हासिल करते हैं, आप औसा मत कीजिये. धंदारे के जरीअे कुरबानी करवाने में सरासर खतरा है क्यूंके मु-तमतेअ और कारिन के लिये येह तरतीब वाजिब है के पहले रम्य करे फिर कुरबानी और फिर उल्क अगर धस तरतीब के खिलाफ़ किया तो दम वाजिब हो जायेगा. अब आप ने धंदारे को रकम जम्मा करवा दी, उन्हों ने अगर्चे कुरबानी का वक्त भी बता दिया फिर भी धस बात का पता लगना बेहद दुश्वार है के आप की तरफ़ से कुरबानी वक्त पर हुँ या नहीं ! अगर आप ने कुरबानी से पहले ही उल्क करवा दिया तो आप पर “दम” वाजिब हो जायेगा. धंदारे के जरीअे कुरबानी करवाने वालों को येह धज्तिवार दिया जाता है के अगर वोह अपनी कुरबानी का सहीह वक्त मा’लूम करना चाहें तो 30 अफ़राद पर अपना अेक नुमायन्दा मुन्तखब कर लें उस को फिर “जुसूसी पास” जारी किया जाता है और वोह जा कर सब की कुरबानियां होती देख सकता है. मगर यहां भी अेक खतरा मौजूद है और वोह येह के धंदारे

વાલે લાખો જાનવર ખરીદતે હૈં ઓર ઉન સબ કા બે ઐબ હોના કરીબ બ ના મુમ્કિન હૈ. અકસર કારવાન વાલે ભી ઇજતિમાઈ કુરબાનિયોં કી તરકીબ કરતે હૈં મગર ઉન મેં ભી બા'ઝોં કી “બદ ઉન્વાનિયોં” કી બદ તરીન દાસ્તાનેં હૈં ! બહર હાલ મુનાસિબ યેહી હૈ કે અપની કુરબાની આપ ખુદ હી કરેં.

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

“યા રબ ! ઉમ્મતે તબી કો બખ્શ દે” કે સતરહ હુરફ કી નિસ્બત સે હલ્ક ઓર તક્સીર કે 17 મ-દની ફૂલ

હજ વ ઉમ્મે કે એહરામ ખોલને કે વક્ત સર મુંડાને કે મુ-તઅલ્લિક દો ફરામીને મુસ્તફા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ મુલા-હઝા ફરમાઈયે : ﴿1﴾ બાલ મુંડાને મેં હર બાલ કે બદલે એક નેકી હૈ ઓર એક ગુનાહ મિટાયા જાતા હૈ (1) સર મુંડાને મેં જો બાલ ઝમીન પર ગિરેગા, વોહ તેરે લિયે કિયામત કે દિન નૂર હોગા ﴿2﴾ (2) કુરબાની સે ફારિગ હો કર કિબ્લે કી તરફ મુંહ કર કે ઇસ્લામી ભાઈ હલ્ક કરેં યા'ની તમામ સર કે બાલ મુંડવા દેં યા તક્સીર કરેં યા'ની કમ અઝ કમ ચૌથાઈ (1/4) સર કે બાલ ઉગલી કે પોરે કે બરાબર કટવાએં. દો તીન જગહ સે ચન્દ બાલ કેંચી સે કાટ લેના કાફી નહીં ﴿3﴾ હલ્ક હો યા તક્સીર સીધી જાનિબ સે ઇબ્તિદા

कीजिये ﴿5﴾ ईस्लामी बहनें सिर्फ तक्सीर करवाएं या'नी यौथाई (1/4) सर के बालों में से हर बाल उंगली के पोरे के बराबर कटवाएं या फुट ही कैंची से काट लें. एन्हें सर मुंडवाना हराम है. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1142) (याद रहे ! औरत का गैर मर्द से बाल कटवाना कुजा उस के आगे अपने बाल ज़ाहिर करना भी ज़ाहिर नहीं) ﴿6﴾ बाल यूँके छोटे बडे़ डोते हैं लिहाजा अेक पोरे से ज़ियादा कटवाएं ताके यौथाई सर के बाल कम अज कम अेक पोरे के बराबर कट जायें ﴿7﴾ अब अेहराम से बाहर होने का वक्त आ गया तो अब मोहरिम (या'नी अेहराम वाला) अपना या दूसरे का सर मूंड या कसर कर सकता है अगरे दूसरा भी मोहरिम होे ﴿8﴾ हलक या तक्सीर से पहले अगर नापुन कतरवायेंगे या अत बनवायेंगे तो कर्फ़ारा लाज़िम आयेगा. ईस मौकअ पर सर मुंडवाने के बा'द मूँछें तरशवाना, मूअे जेरे नाई दूर करना मुस्तहब है ﴿9﴾ हलक या तक्सीर का वक्त अय्यामे नहर या'नी 10, 11 और 12 जुल डिज्जल है और अइज़ल 10. अगर बारहवीं के गु़रुबे आफ़ताब तक हलक या कसर न किया तो दम लाज़िम आयेगा (१११ص ३، २، १، १) ﴿10﴾ जिस के सर पर बाल न हों, कुदरती गन्ज हो उसे भी सर पर उस्तरा फिरवाना वाज़िब है (१११ص ६) ﴿11﴾ अगर किसी के सर पर कुडियां हैं. जिन की वजह से मुंडवा नहीं सकता और बाल भी एतने बडे़ नहीं के कटवा सके तो ईस मजबूरी के सबब उस से मुंडवाना

और कतरवाना साकित हो गया उसे भी मुंडवाने और कतरवाने वालों की तरह सब चीजें हलाल हो गयीं मगर बेहतर यह है कि अय्यामे नहूर अत्म होने तक वह दस्तूर अहराम में रहे (अबू)

﴿12﴾ उलक या कस्र मिना शरीफ़ में सुन्नत है जब कि हुदूदे हरम में वाजिब. अगर हुदूदे हरम से बाहर किया तो हम वाजिब होगा.

﴿13﴾ उलक या तकसीर के दौरान यह तकबीर पढते रहिये और फ़ारिग हो कर भी पढिये :

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ
وَاللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ وَاللَّهُ أَحْمَدُ

﴿14﴾ आ'द इरागत अव्वल आभिर दुइद शरीफ़ के साथ यह हुआ पढिये :

اللَّهُمَّ أَنْتَ لِي لِكُلِّ شَعْرَةٍ حَسَنَةٌ وَأَمَحُّ
عَنِّي بِهَا سَيِّئَةٌ وَأَرْفَعُ لِي بِهَا عِنْدَكَ دَرَجَةً

तरजमा : ओ अल्लाह ! हर बाल के बदले मेरे लिये एक नेकी लिख दे और एक गुनाह मिटा दे और अपने हां हर बाल के बदले मेरा एक द-रजा बुलन्द करमा दे. (अबू अयूब) और तमाम उम्मत के लिये हुआ अ मग़्फ़िरत कीजिये

﴿15﴾ मुफ़रिद अगर कुरबानी करना चाहे तो उस के लिये मुस्तअब यह है कि उलक या तकसीर कुरबानी के आ'द करवाये और अगर उलक के आ'द कुरबानी की जब भी हरज नहीं और तमतोअ और

किरान वाले के लिये उल्क या तकसीर कुरबानी के भा'द करना वाजिब है, अगर पहले उल्क या तकसीर करेगा तो दम वाजिब हो जायेगा (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1142) ﴿16﴾ भाल दफ्न कर दें और हमेशा बदन से जो चीज भाल, नाभुन, भाल जुदा हो दफ्न कर दिया करें. (अैज्ज, स. 1144) ﴿17﴾ उल्क या तकसीर के भा'द अब औरत से सोलभत करने, ब शह्वत उसे हाथ लगाने, बोसा लेने, शर्मगाह देपने के सिवा जो कुछ अेहराम ने हराम किया था सब उलाल हो गया. (अैज्ज)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

“का'भे का तवाङ्क” के दस हुइइ की निरभत से तवाङ्के गियारत के 10 म-दनी इल

﴿1﴾ तवाङ्कगियारत को “तवाङ्के ँङ्काजा” भी कहते हैं ये उ उज का दूसरा रुकन है, ँस का वक्त 10 गुल डिज्जतिल हराम की सुभे सादिक से शुइअ होता है ँस से कबल नहीं हो सकता. ँस में यार इरे इर्र हैं बिगैर ँस के तवाङ्क होगा ही नहीं और उज न होगा और पूरे सात करना वाजिब है ﴿2﴾ तवाङ्कगियारत दसवीं गुल डिज्जत को कर लेना अइजल है, लिहाजा पहले जम्तुल अ-कबल की रम्य इर “कुरबानी” और ँस के भा'द उल्क या तकसीर से इरिग हो लें, अब अइजल ये उ है के कुछ कुरबानी का गोशत भा कर पैदल मक्कअे मुकर्रमा زادها الله شرفاً وتَعْظِيماً हाजिर हो और ये उ भी अइजल है के

बाबुरसलाम से मस्जिदुल हराम शरीफ में दाखिल हों ﴿3﴾
 अफ़जल वक्त तो 10 तारीख़ ही है मगर तीनों दिन या'नी
 बारहवीं के गुड़बे आइताब तक तवाफ़े ज़ियारत कर सकते हैं
 यूँके 10 तारीख़ को भीउ ज़ियादा होती है लिहाज़ा अपनी सड़ूलत
 को पेशे नज़र रखना बहुत मुझीद रहेगा. इस तरह **اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ**
मु-तअदिद तकलीफ़ देह चीज़ों और बा'ज सूरतों में दूसरों की
 ईजा रसानियों, औरतों से गुडमुड होने उन से बदन टकराने
 और नफ़सो शैतान के बहकावे में आ कर होने वाले गुनाहों से
 बयत हो जाओगी ﴿4﴾ बा वुजू और सत्रे औरत के साथ तवाफ़
 कीजिये. (अक्सर इस्लामी बहनों की क्लाईयां दौराने तवाफ़ फुली
 होती हैं अगर “तवाफ़ुज़्ज़ियारत” के चार डेरे या इस से ज़ियादा
 इस तरह किये के यहारुम (1/4) क्लाई या चौथाई (1/4) सर के
 बाल फुले थे तो दम वाजिब हो गया. अगर सत्रे औरत के साथ
 इस तवाफ़ का ईआदा (या'नी नअे सिरे से) कर लिया तो दम
 साकित हो जाओगा) ﴿5﴾ अगर कारिन और मुफ़रिद “तवाफ़े
 कुदूम” में और **मु-तमतेअ** हज का अहराम बांधने के बा'द
 किसी नफ़ली तवाफ़ में हज के “रमल व सअ्य” से फ़ारिग हो
 चुके हों तो अब तवाफ़े ज़ियारत में इस की हाजत नहीं ﴿6﴾
 अगर हज के रमल व सअ्य से पहले फ़ारिग नहीं हुअे थे
 तो अब रोज़ मर्रा के कपड़ों ही में कर लीजिये. हां
 “ईजतिबाअ” नहीं हो सकेगा क्यूँके अब इस का मौकअ न
 रहा ﴿7﴾ जो ग्यारहवीं को न जाअे बारहवीं को कर ले इस

के बा'द बिना उज़र तापीर गुनाह है, जुमनि में ओक कुरबानी
 करनी होगी. हां म-सलन औरत को हैज या निफ़ास आ गया
 तो एन के अत्म के बा'द तवाफ़ करे मगर हैज या निफ़ास से
 अगर जैसे वक्त पाक हुँई के नहा धो कर बारहवीं तारीख में
 आइताब डूबने से पहले चार इरे कर सकती है तो करना
 वाजिब है, न करेगी गुनहगार होगी. यूँही अगर एतना
 वक्त उसे मिला था के तवाफ़ कर लेती और न किया अब हैज
 या निफ़ास आ गया तो गुनहगार हुँई. (अज़न, स. 1145) ﴿8﴾
 अगर तवाफ़ुज़्ज़ियारह न किया औरतें हलाल न होंगी याहे
 भरसों गुजर जायें. (عالمگیری ج ۱ ص ۲۳۲) एसी तरह अगर
 बीवी ने नहीं किया तो शोहर उस के लिये हलाल न होगा
 ﴿9﴾ तवाफ़ से इरिग हो कर दो रकअत “वाजिबुत्तवाफ़” अ
 दस्तूर अदा कीजिये एस के बा'द “मुत्तम” पर भी हाज़िरी
 दीजिये और “आबे अमम” भी पूज पेट भर कर नोश
 कीजिये ﴿10﴾ الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ ! मुबारक हो के आप का उज
 मुकम्मल हो गया और औरतें भी हलाल हो गईं.

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**“या अल्लाह ! शैतान से पनाह दे” के अहारह हुरइ
 की निशत से ग्यारह और बारह की रम्य के 18 म-दनी इल**

﴿1﴾ 11 और 12 जुल डिज्जल को तीनों शैतानों को
 कंकरियां मारनी हैं. एस की तरतीब येह है : पहले जम्रुल उला

(या'नी छोटा शैतान) फिर **जम्रतुल वुस्ता** (या'नी मंजला शैतान) और आबिर में **जम्रतुल अ-कबल** (या'नी बडा शैतान) ﴿2﴾ दो पहर (या'नी जोहर का वक्त शुद्ध होने) के बाद **जम्रतुल उला** (या'नी छोटे शैतान) पर आँधये और किले की तरफ मुँह कर के **सात कंकरियां** मारिये (कंकरी पकडने और मारने का तरीका इसी किताब के सफ़हा 187 पर गुज़रा) कंकरियां मार कर **जम्रे** से कुछ आगे बढ़ जाँधये और उलटे हाथ की जानिब हट कर किल्ला उभरे हो कर दोनों हाथ कंधों तक उठाँधये के हथेलियां आस्मान की तरफ नहीं बल्के किले की जानिब रहें,¹ अब हुआ व इस्तिस्फ़ार में कम अज कम 20 आयतें पढने की भिकदार मशगूल रहिये ﴿3﴾ अब **जम्रतुल वुस्ता** (या'नी मंजले शैतान) पर भी इसी तरह कीजिये ﴿4﴾ फिर आबिर में **जम्रतुल अ-कबल** (या'नी बडे शैतान) पर उस तरह “**रम्य**” कीजिये जिस तरह आप ने 10 तारीख को की थी (तरीका सफ़हा 186 पर गुज़रा) याद रहे ! बडे शैतान की **रम्य** के बाद आप को ठहरना नहीं, झैरन पलट पडना और इसी दौरान हुआ भी करनी है. (दुरुस्त तरीका येही है मगर अब झैरन पलटना मुम्किन नहीं रहा लिहाजा कंकरियां मार कर कुछ आगे बढ़ कर “**यू टर्न**” की तरकीब इरमा लीजिये) ﴿5﴾ बारहवीं को भी इसी तरह तीनों जमरात की **रम्य** कीजिये ﴿6﴾

1 : रम्ये जिमार के बाद हुआ में हथेलियों का रुख का'बे की तरफ हो. उ-जरे अस्वद के सामने पडा होने के वक्त हथेलियों का रुख उ-जरे अस्वद की तरफ हो और बाकी अहवाल में आस्मान की तरफ हो.

जवाले आइताब (या'नी इब्तिदाअे वक्ते जोहर) से शुइअ होता है. लिहाजा ग्यारहवीं और बारहवीं की रम्य दो पहर से पहले अस्लान (या'नी बिल्कुल) सहीड नहीं. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1148) ﴿7﴾ दसवीं, ग्यारहवीं और बारहवीं की रातें (अक्सर या'नी हर रात का आधे से जियादा हिस्सा) **मिना शरीफ़** में गुजारना **सुन्नत** है ﴿8﴾ बारहवीं की रम्य कर के गुइबे आइताब से पहले पहले इब्तियार है के **मक्कअे मुअज्जमा** رَاَدَاَ اللّٰهُ شَرَفًا وَّعَظِيْمًا को रवाना हो जाअें मगर बा'दे गुइबे यला जाना मा'यूब. अब अेक दिन और ठहरना और तेरहवीं को ब दस्तूर दो पहर ढले (या'नी इब्तिदाअे वक्ते जोहर) रम्य कर के मक्का शरीफ़ जाना होगा और येही अइजल है ﴿9﴾ अगर मिना में तेरहवीं की **सुब्हे सादिक** हो गइ अब **रम्य** करना वाजिब हो गया अगर बिगैर रम्य किये यले गअे तो **दम वाजिब** होगा ﴿10﴾ ग्यारहवीं और बारहवीं की **रम्य** का वक्त आइताब ढलने (या'नी जोहर का वक्त शुइअ होने) से सुब्हे सादिक तक है मगर बिला उजूर आइताब डूबने के बा'द रम्य करना **मक्इह** है ﴿11﴾ तेरहवीं की रम्य का वक्त **सुब्हे सादिक** से गुइबे आइताब तक है मगर सुब्ह से इब्तिदाअे वक्ते जोहर तक मक्इहे (तन्जीही) है, जोहर का वक्त शुइअ होने के बा'द मस्नून है ﴿12﴾ किसी दिन की रम्य अगर रह गइ तो दूसरे दिन कजा कर लीजिये और **दम** भी देना होगा. कजा का आबिरी वक्त तेरहवीं के गुइबे आइताब तक है ﴿13﴾ रम्य अेक दिन की रह गइ और आप ने तेरहवीं के **गुइबे आइताब** से पहले पहले कजा कर ली तब भी और अगर नहीं की जब भी या

એક સે ઝિયાદા દિનોં કી રહ ગઈ બલકે બિલકુલ રમ્ય કી હી નહીં હર સૂરત મેં સિઈ એક હી દમ વાજિબ હૈ ﴿14﴾ ઝાઈદ બચી હુઈ કંકરિયાં કિસી કો ઝરૂરત હો તો ઉસ કો દે દીજિયે યા કિસી પાક જગહ ડાલ દીજિયે, ઈન કો જમ્રોં પર ફેંક દેના મકરૂહે (તન્જીહી) હૈ ﴿15﴾ આપ ને કંકરી મારી ઓર વોહ કિસી કે સર વગૈરા સે ટકરા કર જમ્રે કો લગી યા તીન હાથ કે ફાસિલે પર ગિરી તો જાઈઝ હો ગઈ ﴿16﴾ અગર આપ કી કંકરી કિસી પર ગિરી ઓર ઉસ ને હાથ વગૈરા કા ઝટકા દિયા જિસ સે વહાં તક પહોંચી તો ઉસ કે બદલે કી દૂસરી મારિયે ﴿17﴾ ઊપર કી મન્જિલ સે રમ્ય કી ઓર કંકરી જમ્રે કે ગિર્દ બની હુઈ પિયાલા નુમા ફસીલ (યા'ની બાઉન્ડ્રી) મેં ગિરી તો જાઈઝ હો ગઈ ક્યૂંકે ફસીલ મેં સે લુઢક કર યા તો જમ્રે કો લગતી હૈ યા તીન³ હાથ કે ફાસિલે કે અન્દર અન્દર ગિરતી હૈ ﴿18﴾ અગર શક હો કે કંકરી અપની જગહ પહોંચી યા નહીં તો દોબારા મારિયે. (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 1146, 1148)

«وَالْعِيَادَاتُ» કે બારહ હુરૂફ કી નિસ્બત સે રમ્ય કે 12 મકરૂહાત

(નમ્બર 1 ઓર 2 સુન્નતે મુઅક્કદા કે તર્ક કી વજહ સે ઈસાઅત. જબ કે બકિયા સબ મકરૂહે તન્જીહી હેં)

﴿1﴾ દસવીં કી રમ્ય બિગૈર મજબૂરી કે ગુરૂબે આફતાબ કે બા'દ કરના. (સુન્નતે મુઅક્કદા કે ખિલાફ હોને કે સબબ ઈસાઅત હૈ) ﴿2﴾ જમ્રોં મેં ખિલાફે તરતીબ કરના

﴿3﴾ तेरहवीं की रम्य जोहर का वक्त शुद्ध होने से पहले करना ﴿4﴾ बड़ा पथर मारना ﴿5﴾ बड़े पथर को तोड़ कर कंकरियां बनाना ﴿6﴾ मस्जिद की कंकरियां मारना ﴿7﴾ जम्मे के नीचे जो कंकरियां पड़ी हैं उन में से उठा कर मारना (मक़्दुहे तन्जीही है) के येह ना मक़्बूल कंकरियां हैं, जो मक़्बूल होती हैं वोह गैबी तौर पर उठा ली जाती हैं और कियामत के दिन नेकियों के पलडे में रभी जाअेंगी ﴿8﴾ जान बूझ कर सात से जियादा कंकरियां मारना ﴿9﴾ नापाक कंकरियां मारना ﴿10﴾ रम्य के लिये जो सप्त मुकर्रर हुँ उस के जिलाफ़ करना ﴿11﴾ जम्मे से पांच हाथ से कम झासिले पर भडे होना. जियादा का कोँ मुजा-यका नहीं (अलबत्ता येह ज़री है के करीब हो तब भी कंकरी मारी ही जाअे, सिर्फ़ रभ देने के अन्दाज में न हो.) ﴿12﴾ मारने के बदले कंकरी जम्मे के करीब डाल देना.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1148, 1149)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

**“या जुदा बार बार हज नरीब कर” के उन्नीस
 हुँ की निरुधत से तवाफ़े रुप्सत के 19 म-दनी झूल**

﴿1﴾ जब रुप्सत का धरादा हो उस वक्त “आझाकी
 डाज्” पर तवाफ़े रुप्सत वाजिब है, न करने वाले पर दम

واڙيڻ ٺوٺا هئ. ڀس ڪو تواڙئ وڌاڻ اؤر تواڙئ سڌر ٺي ڪڙتو هئ **﴿2﴾** ڀس مئ ڀڙڙتياڻ، رمل اؤر سڻڻ نڙي **﴿3﴾** ڀمره واولو ڀر واڙيڻ نڙي **﴿4﴾** هئڙ و نيڙاس واولي ڪي سيٽ ٺوڪ هئ ٺو ڙا سڪٺي هئ ڀس ڀر اڻڻ ڀهڙ تواڙ واڙيڻ نڙي اؤر ڌم ٺي نڙي **﴿5﴾** تواڙئ رڻسٺ مئ سڙڙ تواڙ ڪي نيڻٺ ٺي ڪاڙي هئ، واڙيڻ، اڌا، وڌاڻ (ڀا'ني رڻسٺ) وڙهرا اڌڪاڙ نيڻٺ مئ شامل ٺونا ڙڌري نڙي ڀڙا تڪ ڪه تواڙئ نڙڌل ڪي نيڻٺ ڪي ڙڻ ٺي واڙيڻ اڌا ٺو ڙا **﴿6﴾** سڙڌر ڪا ڀراڌا ٺا، تواڙئ رڻسٺ ڪر ڌيا ڙڙر ڪي سي ڀڙڙهه سه ٺڌرنا ڀڙا ڙهسا ڪه ڙاڙي وڙهرا مئ ڀمڻن ٺاڻيڙ ٺو ڙاٺي هئ اؤر ڀڪامٺ ڪي نيڻٺ نڙي ڪي ٺو ووي ٺي تواڙ ڪاڙي هئ، ڌوڻارا ڪرني ڪي ٺاڙت نڙي اؤر مڙڙيڌل ٺرام مئ نماڙ وڙهرا ڪه ڌيه ڙاڻه مئ ٺي ڪوڀ مڙا-ڀڪا نڙي، ٺا مڙسٺڻڻ ڀهڙ هئ ڪه ڙڙر تواڙ ڪر له ڪه اڻڻيڙي ڪام تواڙ رڌه **﴿7﴾** تواڙئ ڙياڙت ڪه ٺا'ڌ ڙو ٺي ڀڙلا نڙڌي تواڙ ڪيا ووي تواڙئ رڻسٺ هئ **﴿8﴾** ڙو ٺيڙهرا تواڙ ڪه رڻسٺ ٺو ڙا ٺو ڙڻ تڪ مياڪاٺ سه ٺاڌر ن ٺو ووا واپس اڻاهه اؤر تواڙ ڪر له **﴿9﴾** اڙر مياڪاٺ سه ٺاڌر ٺونه ڪه ٺا'ڌ ڀاڌ اڻا ٺو واپس ٺونا ڙڌري نڙي ٺڌڪه ڌم ڪه ڌيه ڙانور ٺرم مئ ٺهڙ ڌه، اڙر واپس ٺو ٺو ڀمره ڪا اڌرام ٺانڀ ڪر واپس اڻاهه اؤر ڀمره سه ڙارڙڙ ٺو ڪر

तवाङ्के रुप्सत बज्ज लाअे, अब ँस सूरत में दम साकित हो
 जाअेगा ﴿10﴾ तवाङ्के रुप्सत के तीन इरे छोडेगा तो उर इरे
 के बढले अेक अेक स-दका दे और अगर यार से कम किये हें
 तो दम देना होगा ﴿11﴾ हो सके तो बे करारी के साथ रोते
 रोते तवाङ्के रुप्सत बज्ज लाँये के न जाने आयन्दा येह
 सआदत मुयस्सर आती भी है या नहीं ﴿12﴾ बा'दे तवाङ्क
 ब दस्तूर हो रकअत वाजिबुतवाङ्क अदा कीजिये ﴿13﴾ तवाङ्के
 रुप्सत के बा'द ब दस्तूर जमजम शरीफ पर हाजिर हो कर
 आबे जमजम नोश कीजिये और बदन पर डालिये ﴿14﴾
 इर दरवाज्जे का'बा के सामने खडे हो कर हो सके तो
 आस्तानअे पाक को बोसा दीजिये और कबूले उज व जियारत
 और बार बार हाजिरी की दुआ मांगिये. और दुआअे
 जाअेअ (या'नी رَبِّهِمْ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ) या येह दुआ पढिये :

السَّائِلُ بِبَابِكَ يَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ
 وَمَعْرُوفِكَ وَيَرْجُو رَحْمَتَكَ

(तरजमा : तेरे दरवाजे पर साँल तेरे इज़्जो अेहसान का सुवाल
 करता है और तेरी रहमत का उम्मीद वार है) (बहारे शरीअत, जि.
 1, स. 1152) ﴿15﴾ मुल्तजम पर आ कर गिलाङ्के का'बा थाम कर
 उसी तरह यिमटिये और जिको दुइद और दुआ की कसरत कीजिये
 ﴿16﴾ इर मुम्किन हो तो उ-जरे अस्वद को बोसा दीजिये और

જો આંસૂ રખતે હૈં ગિરાઈયે ﴿17﴾ ફિર કા'બએ મુશરફા કી તરફ મુંહ ક્રિયે ઉલટે પાઉં યા હસ્બે મા'મૂલ ચલતે હુએ બાર બાર મુઝ કર કા'બએ મુઅઝ્ઝમા કો હસરત સે દેખતે, ઉસ કી જુદાઈ પર આંસૂ બહાતે યા કમ અઝ કમ રોને જૈસી સૂરત બનાએ મસ્જિદુલ હરામ સે હમેશા કી તરહ ઉલટા પાઉં બઢા કર બાહર નિકલિયે ઔર બાહર નિકલને કી દુઆ પઢિયે ﴿18﴾ હૈઝ વ નિફાસ વાલી દરવાઝએ મસ્જિદ પર ખડી હો કર બ નિગાહે હસરત કા'બએ મુશરફા કી ઝિયારત કરે ઔર રોતી હુઈ દુઆ કરતી હુઈ પલટે ﴿19﴾ ફિર બ કદરે કુદરત કુ-કરાએ મક્કએ મુઅઝ્ઝમા મેં ખૈરાત તક્સીમ કીજિયે.

(બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 1151, 1153)

યા ઈલાહી ! હર બરસ હજ કી સઆદત હો નસીબ

બા'દે હજ જા કર કરૂં દીદારે દરબારે હબીબ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

હજ્જે બદલ : જિસ પર હજ ફર્ઝ હો ઉસ કી તરફ સે ક્રિયે જાને વાલે હજ્જે બદલ કી કુછ શર્તે હૈં મગર હજ્જે નફલ કી કોઈ શર્ત નહીં, યેહ તો ઈસાલે સવાબ કી એક સૂરત હૈ ઔર ઈસાલે સવાબ ફર્ઝ નમાઝ વ રોઝા, હજ વ ઝકાત, સ-દકાત વ ખૈરાત વગૈરા તમામ આ'માલ કા હો સકતા હૈ. લિહાઝા અગર અપને મહૂમ વાલિદૈન વગૈરા કી તરફ સે આપ અપની મરઝી સે હજ કરના ચાહેં યા'ની ન ઉન પર ફર્ઝ થા ન ઉન્હોં ને

वसियत की थी तो इस की कोई शराहत नहीं है. अहरामे उज, वालिद या वालिदा की नियत से बांध लीजिये और तमाम मनासिके उज बजा लाईये. इस तरह झाअेदा येह डोगा के उन को अेक उज का सवाब मिलेगा और उज करने वाले को ब हुकमे हदीस हस उज का सवाब अता किया जायेगा. (राظی ص ۲۷۷ حدیث ۲۰۸۷)

लिहाजा जब भी नईल उज की सआहत मिले तो अईजल येही है के वालिद या वालिदा की तरफ से कीजिये. याद रहे ! इसाले सवाब के लिये किये जाने वाले उजजे तमतोअ या किरान की कुरबानी वाजिब है और उज करने वाला भुद अपनी नियत से करे और इस का भी इसाले सवाब कर दे.

“या भुदा हज का शरइ अता कर” के सतरह हुइइ की निरअत से हजे भदल के 17 शराहत

अब जिन लोगों पर उज इर्ज हो युका उन के उजजे भदल की शराहत पेश की जाती है :

﴿1﴾ जो उजजे भदल करवाता हो उस के लिये जरूरी है के उस पर उज इर्ज हो युका हो या'नी अगर इर्ज न होने के बा वुजूद उस ने उजजे भदल करवाया तो इर्ज उज अदा न हुवा. या'नी बा'द में अगर उस पर उज इर्ज हो गया तो पहला उजजे भदल किफायत न करेगा ﴿2﴾ जिस की तरफ से उज किया हो वोह इस कदर आजिज व मजबूर हो के भुद उज कर ही न सकता हो. अगर इस काबिल

हो के पुष्ट हो कर सकता है तो उस की तरफ़ से उज्जे बढल नहीं हो सकता ﴿3﴾ वक्ते हो से मौत तक उज़र बराबर बाकी रहे. या'नी उज्जे बढल करवाने के बा'द मौत से पहले पहले अगर पुष्ट हो करने के काबिल हो गया तो जो हो दूसरे से करवा लिया था वोह नाकाफी हो गया ﴿4﴾ हां ! अगर वोह कोई ऐसा उज़र था जिस के जाने की उम्मीद ही न थी म-सलन नाबीना है और उज्जे बढल करवाने के बा'द अंधियारा हो गया तो अब दोबारा हो करने की ज़रूरत नहीं ﴿5﴾ जिस की तरफ़ से उज्जे बढल किया जाये पुष्ट उस ने हुक्म ली दिया हो बिगैर उस के हुक्म के उज्जे बढल नहीं हो सकता ﴿6﴾ हां, वारिस ने अगर मूरिस (या'नी वारिस करने वाले) की तरफ़ से किया तो इस में हुक्म की ज़रूरत नहीं ﴿7﴾ तमाम अपराजात या कम अज कम अक्सर अपराजात भेजने वाले की तरफ़ से हों (मुलज्जस अज बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1201, 1202) ﴿8﴾ वसियत की थी के मेरे माल से हो करवा दिया जाये मगर वारिस ने अपने माल से करवा दिया तो उज्जे बढल न हुवा, हां अगर येह नियत हो के तर्के (या'नी मय्यित के छोडे हुये माल) में से ले लूंगा तो हो जायेगा और अगर लेने का इरादा न हो तो नहीं होगा और अगर अजनबी ने अपने माल से उज्जे बढल करवा दिया तो न हुवा, अगर्ये वापस लेने का इरादा हो, अगर्ये वोह मरूम पुष्ट उसी को उज्जे बढल करने को कह गया हो. (२४ ص ६) ﴿9﴾ अगर यूं कहा के मेरी तरफ़ से उज्जे बढल करवा दिया जाये और येह न कहा के मेरे माल से अब अगर

વારિસ ને ખુદ અપને માલ સે હજજે બદલ કરવા દિયા ઔર વાપસ લેને કા ભી ઈરાદા ન હો, હો ગયા. (أَيْضًا) ﴿10﴾ જિસ કો હુકમ દિયા વોહી કરે અગર જિસ કો હુકમ થા ઉસ ને કિસી દૂસરે સે કરવા દિયા તો ન હુવા. (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 1202) ﴿11﴾ મય્યિત ને જિસ કે બારે મેં વસિયત કી થી ઉસ કા ભી અગર ઈન્તિકાલ હો ગયા યા વોહ જાને પર રાઝી નહીં તો અબ દૂસરે સે હજ કરવા લિયા ગયા તો જાઈઝ હૈ. (رَدُّ الْمُحْتَارِ ٤ ص ١٩) ﴿12﴾ હજજે બદલ કરને વાલા અક્સર રાસ્તા સુવારી પર કત્અ (યા'ની તે) કરે વરના હજજે બદલ ન હોગા ઔર ખર્ચ ભેજને વાલે કો દેના પડેગા. હાં ! અગર ખર્ચ મેં કમી પડી તો પૈદલ ભી જા સકતા હૈ. (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 1203) ﴿13﴾ જિસ કી તરફ સે હજજે બદલ કરના હૈ ઉસી કે વતન સે હજ કો જાએ. (એઝન) ﴿14﴾ અગર આમિર (હુકમ દેને વાલે) ને “હજ” કા હુકમ દિયા થા ઔર ખુદ મામૂર (યા'ની જિસ કો હુકમ દિયા ગયા ઉસ) ને હજજે તમતોઅ કિયા તો ખર્ચા વાપસ કર દે. (ફતાવા ર-ઝવિયા મુખર્રજા, જિ. 10, સ. 660) કયું કે “હજજે તમતોઅ” મેં હજ કા એહરામ “મીકાતે આમિર” સે નહીં હોગા બલકે હરમ હી સે બંધેગા. હાં આમિર કી ઈજાઝત સે એસા કિયા ગયા (યા'ની હજજે તમતોઅ કિયા ગયા) તો મુઝા-યકા નહીં. ﴿15﴾ “વસી” ને (યા'ની જિસ કો વસિયત કર ગયા થા કે તૂ મેરી તરફ સે હજ કરવા દેના, ઉસ ને) અગર મય્યિત કે છોડે હુએ માલ કા તીસરા હિસ્સા ઈતના થા કે વતન સે આદમી ભેજા જા સકતા થા, ફિર ભી અગર ગૈર જગહ સે ભેજા તો યેહ હજ મય્યિત

की तरफ़ से न हुआ. हां वोह जगह वतन से धतनी करीब हो के वहां जा कर रात के आने से पहले वापस आ सकता है तो हो जायेगा वरना उसे याहिये के फुद अपने माल से मय्यित की तरफ़ से दोबारा उज करवाये. (عالمگیری ج ۱ ص ۲۰۹، رَدُّ الْمُحْتَار ج ۴ ص ۲۷)

﴿16﴾ आमिर (या'नी जिस ने उज का हुकम दिया है उसी) की नियत से उज करे और अइजल येह है के जमान से भी कइ ले और अगर उस का नाम भूल गया है तो येह नियत कर ले के जिस ने भेजा है (या जिस के लिये भेजा है) उस की तरफ़ से करता हूं. (رَدُّ الْمُحْتَار ج ۴ ص ۲۰) **﴿17﴾** अगर अहराम बांधते वक्त नियत करना भूल गया तो जब तक अइआले उज शुरूअ न किये हों धप्तियार है के नियत कर ले. (ایضاً ص ۱۸)

“आओ हज करै” के नव हुरइ की निरुधत से हज्जे भदल के 9 मु-तइरिफ़ म-दनी इल

﴿1﴾ “वसी” (या'नी वसियत करने वाले) ने धस साल किसी को उज्जे भदल के लिये मुकरर किया मगर वोह धस साल न गया साले आयन्दा जा कर अदा किया, अदा हो गया, उस पर कोध जुर्माना नहीं. (عالمگیری ج ۱ ص ۲۱)

﴿2﴾ उज्जे भदल करने वाले के लिये जरूरी है के जो कुछ

1 : कुहां की जगह जिस के नाम पर उज करना याहता है उस का नाम ले
 رَبِّكَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ اللَّهُمَّ رَبِّكَ... الخ म-सलन

بچیا ہئے وولہ واپس کر دے. اگريے بھلوت تھوڈی سئی یئوڑ ھو ۛسے
 رچ لےنا جھئوڑ نھئی. اگريے شرت کر لئی ھو کے جو کھو بچیا
 وولہ واپس نھئی دھوگا کے یھل شرت بائیل ھئے. ھان ھو^۲ سورتوں مئے
 رچنا جھئوڑ ھوگا : (1) بھجنے واولا ۛس کو وکئیل کر دے کے
 جو کھو بچ جھمے وولہ اپنے آپ کو ھلہا کر کے (یا'نئی
 بتئیرے توھفہ دے کر) کھوڑا کر لےنا (2) یھل کے بھجنے واولا
 کرئیل بول بئوت ھو اور ھس ترھ وئسئیھت کر دے کے جو کھو بچے
 ۛس کئی مئے نے تھوڑے وئسئیھت کئی. (مولچھس اڑ بھارے شریھت, جئ.
 1, س. 1210, ۳۸ رڈالٹھتار, رڈالٹھتار ۛج ۛص ۛۛ) ﴿3﴾ بھلتر یھل ھئے کے جئسے
 ھوڑھے بھل کے لئیے بھج جھمے پھلے وولہ چھد اپنے ھئوڑ ھوڑ
 سے سوبوک ھوش (یا'نئی بئریھوڑئوڑمما) ھو چوکا ھو, اگريے ۛسے
 کو بھج جئس نے چھد ھوڑ نھئی کئیا جھ بئی ھوڑھے بھل ھو
 جھمےگا. (۲۰۷ ۛج ۛص ۛۛ) ۛسئا شچس جئس نے ھئوڑ ھونے کے
 با وچھد ھوڑ ن کئیا ھو ۛسے ھوڑھے بھل پر بئجوانا
 مکرھے تھرئی بئی ھئے. (الٹسلكُ التَّنْقِیْطُ للقاری ۛص ۛۛ) ﴿4﴾ بھلتر
 یھل ھئے کے ۛسے شچس کو بھجئے جو ھوڑ کے اھھال اور
 ترئیکے سے آگاھ ھو, اگريے موراھک یا'نئی کرئیل بول بولوگ
 بچے سے ھوڑھے بھل کر وایا جھ بئی اھ ھو جھمےگا.
 (بھارے شریھت, جئ. 1, س. 1204, ۲۰ رڈالٹھتار ۛج ۛص ۛۛ) ﴿5﴾
 بھجنے واولے کے پئسوں سے ن کئسئی کو چاننا چللا سکتا
 ھئے ن ھکئیر کو دے سکتا ھئے, ھان بھجنے واولے نے ھجھت ھئی ھو تو
 موڑا-چکا نھئی. (بھارے شریھت, جئ. 1, س. 1210, ۛۛ۷ ۛص ۛۛ)

﴿6﴾ डर किस्म के जुर्में धृष्टियारी के दम जुद उज्जे बढल अदा करने वाले पर हैं भेजने वाले पर नहीं **﴿7﴾** अगर किसी ने न जुद उज किया हो न वारिस को वसियत की हो और धृष्टिकाल कर गया और वारिस ने अपनी मरजी से अपनी तरफ से उज्जे बढल करवा दिया (या जुद किया) तो
 اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ उम्मीद है के उस की तरफ से अदा हो जायेगा.
﴿8﴾ (عالمگیری ج ۱ ص ۲۰۸) उज्जे बढल करने वाला अगर मक्कअे मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا ही में रह गया तो येह भी जाधत है लेकिन अइजल येह है के वापस आये, आने जाने के अपराजात भेजने वाले के जिम्मे हैं. **﴿9﴾** (أَيْضًا) उज्जे बढल करने वाला भेजने वाले की रकम से मदीनअे मुनव्वरह زَادَهَا اللهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا का अेक बार सफर कर सकता है, मक्के मदीने की जियारतों पर अर्थ नहीं कर सकता, दरमियाना द-रजे का खाना खायेगा, जिस में गोशत भी दाखिल है, अलबत्ता सीअ कबाअ, यरगा वगैरा उम्दा खाने, मिठाईयां, ठन्डी ओतलें इल कूट वगैरा नहीं खा सकते, नीज अजूरें, तस्बीहात वगैरा तअरुकात खाने की भी धृष्टिकाल नहीं. (उज्जे बढल की मजीद तइसीलात के लिये मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सइहा 1199 ता 1211 का मुता-लआ जइरी है)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ



मदीने की हाजिरी

उसन उज कर लिया का'बे से आंभों ने जिया पाई
 यलो देभें वोड बस्ती जिस का रस्ता हिल के अन्दर है

जौक बढाने का तरीका : मदीनअे मुनव्वरउ
 زَادَهَا اللَّهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا का मुकदस सङ्गर आप को मुबारक हो ! रास्ते
 भर दुरुदो सलाम की कसरत कीजिये और ना'तिया अशआर
 पढते रहिये या हो सके तो टेप रेकोर्डर पर ખુश ईल्हान ना'त
 प्वानों के केसिट सुनते रहिये के إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ इस तरउ तरकिक्ये
 जौक के अस्बाब होंगे. मदीनअे पाक की अ-उ-मतो रिफ्तत
 का तसव्वुर बांधते रहिये, इस के इजाईल पर गौर करते
 रहिये.¹ इस से भी إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ आप का शौक मज्दीह बढेगा.



मदीना कितनी ढेर में आयेगा ! : मक्कअे मुकर्रमा
 زَادَهَا اللَّهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا से मदीनअे मुनव्वरउ का
 इंसिला तक्रीबन 425 किलो मीटर है जिसे आम दिनों में
 बस तक्रीबन 5 घन्टे में तै कर लेती है मगर उज के दिनों में बा'उ
 دِينِهِ

1 : दौराने कियामे उ-रमैन शरीफैन इजाईले मक्का व मदीना पर मब्नी कुतुब
 का मुता-लआ तरकिक्ये जौक का बेइतरीन जरीआ है नीऊ ईशके रसूल
 رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का ना'तिया उजरत का वल्लेह
 दीवान “उदाईके अफ्शिश” और उस्ताजे जमन मौलाना उसन रजा पान
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ ذُو الْوَيْنِ का कलाम “जौके ना'त” का ખूब मुता-लआ इरमाईये.

मस्जिदों की बिना पर रफ्तार कम रही जाती और पड़ोयने में बस तकरीबन 8 ता 10 घन्टे ले लेती है. “मर्कजे इस्तिफ्वाले हुज्जत” पर बस रुकती है, यहां पासपोर्ट का इन्टिराज होता है और पासपोर्ट रफ कर अक कार्ड जारी किया जाता है जिसे हाज ने संभाल कर रफना होता है, यहां की कारवाह में बसा अवकात कइ घन्टे ली लग जाते हैं, सफ्र का इल मीठा है. अन्करीब आप **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** भीठे मदीने के गली कूयों के जल्वे लूटेंगे, जल्ल ही आप गुम्बद जजरा के दीदार से अपनी आंभें ठन्डी करेंगे. जूं ही दूर से मस्जिदुन्न-बविखिशरीफ़ के मीनारे नूरबार पुर वकार पर निगाह पड़ेगी, सज्ज सज्ज गुम्बद नजर आयेगा **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** आप के कलब में हलयल मय जायेगी और आंभों से बे इफ्तियार आंसू छलक पड़ेंगे.

साधम कमाले जल्ल की कोशिश तो की मगर

पलकों का हल्ला तोड कर आंसू निकल गये

उवाये मदीना से आप के मशामे हिमाग मुअत्तर हो रहे होंगे और आप अपनी इह में ता-जगी महसूस कर रहे होंगे, हो सके तो नंगे पाउ रोते हुये मदीनये मुनव्वरह **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की इजाओं में दाखिल हों.

जूते उतार लो यलो बा होश बा अदब

देषो मदीने का हसीं गुलजार आ गया

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

नंगे पाँउं रहने की कुरआनी दलील : और यहाँ नंगे पाँउं रहना कोई ज़िलाई शर-अ ई'ल भी नहीं बल्के मुकदस सर ज़मीन का सरासर अदब है. युनाय्ते उज़रते सय्यिहुना मूसा कलीमुद्दाह عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से हम कलामी का शरफ़ हासिल किया तो अद्दाह عَزَّوَجَلَّ ने ईशाद इरमाया :

فَاخَذَ نَعْلَيْكَ ۚ إِنَّكَ بِالرَّادِ الْمُقَدَّسِ طُومَى ۝ (१२:५६)

तर-ज-मअे कज़ुल ईमान : तो अपने जूते उतार डाल, बेशक तू पाक जंगल तुवा में है.

जब तूरे सीना की मुकदस वादी में सय्यिहुना मूसा कलीमुद्दाह عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को फुद अद्दाह तबा-र-क व तआला जूते उतार लेने का हुकम इरमाये तो मदीना तो इर मदीना है, यहाँ अगर नंगे पाँउं रहा ज़अे तो क्यूं सआदत की बात न होगी ! करोड़ों मालिकियों के पेशवा और मशहूर आशिके रसूल उज़रते सय्यिहुना ईमाम मालिक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ मदीनअे पाक شَرَفًا وَتَعْظِيمًا की गलियों में नंगे पैर यला करते थे. (الطبقات الكبرى للشعراني الجزء الاول ص ११) आ५ में कत्नी رَحْمَةً اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ मदीनअे मुनव्वरह شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में कत्नी घोडे पर सुवार न होते, इरमाते हैं : मुजे अद्दाह عَزَّوَجَلَّ से

હયા આતી હૈ કે ઉસ મુબારક ઝમીન કો અપને ઘોડે કે કદમોં તલે રોંદૂં જિસ મેં ઉસ કે પ્યારે મહબૂબ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ મૌજૂદ હૈ. (યા'ની આપ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા રૌઝએ અન્વર હૈ)

(احياء العلوم ج ١ ص ٤٨)

એ બાકે મદીના ! તૂ હી બતા મેં કેસે પાઉ રખ્યું યહાં

તૂ બાકે પા સરકાર કી હૈ આંખોં સે લગાઈ જાતી હૈ

હાઝિરી કી તર્યારી : હાઝિરિયે રૌઝએ રસૂલ

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ સે પહલે મકાન વગૈરા કા બન્દો બસ્ત કર લીજિયે, હાજત હો તો ખા પી લીજિયે, અલ ગરઝ હર વોહ બાત જો ખુશૂઓ ખુજૂઅ મેં માનેઅ હો ઉસ સે ફારિગ હો લીજિયે. અબ તાઝા વુજૂ કીજિયે ઈસ મેં મિસ્વાક ઝરૂર હો બલ્કે બેહતર યેહ હૈ કે ગુસ્લ કર લીજિયે, ધુલે હુએ કપડે બલ્કે હો સકે તો નયા સફેદ લિબાસ, નયા ઈમામા શરીફ વગૈરા ઝૈબે તન કીજિયે, સુરમા ઓર ખુશબૂ લગા લીજિયે ઓર મુશક અફઝલ હૈ, અબ રોતે હુએ દરબાર કી તરફ બઢિયે.

(બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 1223 માખૂઝન)

એ લીજિયે ! સબ્ઝ ગુમ્બદ આ ગયા : એ લીજિયે !

વોહ સબ્ઝ સબ્ઝ ગુમ્બદ જિસે આપ ને તસ્વીરોં મેં દેખા થા, ખયાલોં મેં ચૂમા થા અબ સયમુચ આપ કી આંખોં કે સામને હૈ.

अशकों के मोती अब निछावर जाँधरो करो वोह सञ्ज गुम्बद मम्बअे अन्वार आ गया
 अब सर जुकाअे भा अदब पढते हुअे दुरद
 रोते हुअे आगे बढो दरबार आ गया

(वसाँले बज्शिश, स. 473)

हां ! हां ! येह वोही सञ्ज गुम्बद है जिस के दीदार के
 लिये आशिकाने रसूल के दिल बे करार रहते और आंभें
 अशकबार हो जाया करती हैं, जुदा عَزَّ وَجَلَّ की कसम ! रौजअे
 रसूलुद्दाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ से अजीम जगह दुन्या के किसी
 मकाम में तो कुज्ज जन्नत में भी नहीं है.

फिरदौस की बुलन्दी भी धू सके न इस को
 जुल्दे बरीं से लीया भीठे नबी का रौजा

(वसाँले बज्शिश, स. 298)

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल
 मदीना की मत्बूआ किताब "वसाँले बज्शिश" के सईहा
 298 के हाशिये में है : रौजा के लइजी मा'ना हैं : बाग. शे'र
 में रौजा से मुराद वोह डिस्सअे जमीन है जिस पर रहमते
 आलम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ का जिसमे मुअज्जम तशरीफ़ इरमा
 है. इस की इजीलत बयान करते हुअे इ-कहाअे किराम
 صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ के इरमाते हैं : महुबूबे दावर
 ज़िस्मे अन्वर से जमीन का जो डिस्सा लगा हुवा है. वोह का'बा
 शरीफ़ से बढके अर्शो कुर्सी से भी अइजल है. (تَرْخِیْمٌ ۶ ص ۶۲)

हो सके तो बाबुल बकीअ से हाजिर हों : अब सरापा अ-दबो डोश बने, आंसू बहाते या रोना न आये तो कम अऊ कम रोने जैसी सूरत बनाये. बाबे बकीअ¹ पर हाजिर हों. “**الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ**” अऊर कर के उर्रा ठहर जाईये. गोया सरकारे जी वकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के शाडी दरबार में हाजिरी की ईजाजत मांग रहे हैं. अब **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** कइ कर अपना सीधा कदम मस्जिद शरीफ में रभिये और इमातन अदब हो कर दाबिले मस्जिदे न-बवी **عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ** हों ईस वक्त जो ता'जीम व अदब ईऊ है वोइ हर आशिके रसूल का दिल जानता है. हाथ, पाँउ, आंभ, कान, उबान, दिल सब भयाले गैर से पाक कीजिये और रोते हुअे आगे बढ़िये, न ईद गिद नऊरें घुमाईये, न ही मस्जिद के नकशो निगार देभिये, बस अेक ही तउप, अेक ही लगन और अेक ही भयाल हो के भागा हुवा मुजरिम अपने आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाडे बेकस पनाह में पेश होने के लिये यला है.

¹ : येइ मस्जिदे न-बवी **عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ** के जानिबे मशरिक वाकेअ है. उमूमन दरबान बाबे बकीअ से हाजिरी के लिये नही जाने देते लिहाजा लोग बाबुस्सलाम ही से हाजिर होते हैं ईस तरइ हाजिरी की ईबतिदा सरे अकदस से डोगी और येइ भिलाई अदब है क्यूंके बुजुर्गों की भिदमत में कदमों की तरइ से आना ही अदब है. अगर बाबे बकीअ से हाजिरी न हो सके तो बाबुस्सलाम से भी हरज नही. अगर भीउ वगैरा न हो तो कोशिश कीजिये के बाबे बकीअ से हाजिरी हो जाये.

यला हूं अक मुजरिम की तरल में जनिबे आका

नजर शरमिन्दा शरमिन्दा, बदन लरजीदा लरजीदा

नमाजे शुक्राना : अब अगर मकड़ल वक्त न हो और ग-ल-बअे शौक मोडलत दे तो दो दो रकअत तडिय्यतुल मस्जिद व शुक्रानअे बारगाले अकदस अदा कीजिये, पडली रकअत में अल उम्द शरीफ़ के बा'द **قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ** और दूसरी में अल उम्द शरीफ़ के बा'द **قُلْ هُوَ اللَّهُ** शरीफ़ पढिये.

सुनहरी जलियों के ३ ब३ : अब अ-दबो शौक में डूबे, गरदन जुकाअे, आंभें नीची किये, रोने वाली सूरत बनाअे बडके षुद को बजोर रोने पर लाते, आंसू बडाते, थर-थराते, कप-कपाते, गुनाहों की नदामत से पसीना पसीना डोते, सरकारे नामदार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के इज्जलो करम की उम्मीद रअते, आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के क-दमैने शरीफ़ेन¹ की तरफ़ से सुनहरी जलियों के ३ ब३ मुवा-जडा शरीफ़ में (या'नी येहरअे मुबारक के सामने) डालिर डों के सरकारे मदीना, राडते कलबो सीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** अपने मजारे पुर अन्वार में ३ ब डिबला जलवा अफ़रोज हें, मुबारक

¹ : बाबुल बकीअ से डालिरी मिली तो पडले क-दमैने शरीफ़ेन आअेंगे और बाबुस्सलाम से आअे तो पडले सरे अकदस आअेगा.

कदमों की तरफ़ से हाज़िर होंगे तो सरकारे दौ जहाँ
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की निगाहे बेकस पनाह बराहे रास्त आप
 की तरफ़ होगी और येह बात आप के लिये दोनों जहाँ में
 काफ़ी है. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1224)

मुवा-जहा शरीफ़ पर हाज़िरी¹ : अब सरापा अदब
 बने जेरे किन्दील उन यांदी की कीलों के सामने जौ सुनहरी
 जालियों के दरवाज़अे मुवा-रका में उपर की तरफ़ जानिबे
 मशरिक लगी हुँ हैं, किबले को पीठ किये कम अऊ कम यार
 हाथ (या'नी तकरीबन दौ गऊ) दूर नमाज़ की तरह हाथ
 बांध कर सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के येहूरअे पुर
 अन्वार की तरफ़ रुख कर के जेहें हों के “इतावा आलमगीरी”
 वगैरा में येही अदब लिखा है के **يَقِفُ كَمَا يَقِفُ فِي الصَّلَاةِ** या'नी
 “सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दरबार में ईस तरह
 जडा हो जिस तरह नमाज़ में जडा होता है.” यकीन
 मानिये ! सरकारे जी वकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ अपने
 मजारे फ़ाईज़ुल अन्वार में सखी हकीकी दुन्यावी जिस्मानी
 हयात से उसी तरह जिन्दा हैं जिस तरह वफ़ात शरीफ़
 से पहले थे और आप को भी देख रहे हैं बल्के आप के दिल

¹ : लोग उमूमन जे सुराफ़ को “मुवा-जहा शरीफ़” समजते हैं बल्के अक्सर उर्दू
 किताबों में भी येही लिखा है मगर रहीकुल उ-रमैन में आ'ला हज़रत عَلَيْهِ تَعَالَى عَلَيْهِ
 की तहकीक के मुताबिक मुवा-जहा शरीफ़ की निशान देही की गई है.

में जो पयालात आ रहे हैं उन पर भी मुत्तलअ (या'नी भा
 ખબર) हैं. ખબરદાર ! જાલી મુબારક કો બોસા દેને યા હાથ
 લગાને સે બચિયે કે યેહ ખિલાફે અદબ હૈ, હમારે હાથ ઈસ
 કાબિલ હી નહીં કી જાલી મુબારક કો ધૂ સકે, લિહાઝા ચાર
 હાથ (યા'ની તકરીબન દો ગઝ) દૂર રહિયે, યેહ ઉન કી રહમત
 ક્યા કમ હૈ કે આપ કો અપને મુવા-જ-હએ અક્કસ કે કરીબ
 બુલાયા ! સરકારે નામદાર صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કી નિગાહે કરમ
 અગર્યે હર જગહ આપ કી તરફ થી, અબ ખુસૂસિયત ઔર
 ઈસ દ-ર-જએ કુર્બ કે સાથ આપ કી તરફ હૈ.

(બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 1224, 1225)

દીદાર કે કાબિલ તો કહાં મેરી નઝર હૈ
 યેહ તેરી ઈનાયત હૈ જો રુખ તેરા ઈધર હૈ

**બારગાહે રિસાલત صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ મેં સલામ અર્ઝ
 કીજિયે :** અબ અદબ ઔર શૌક કે સાથ ગમગીન ઔર દર્દ
 ભરી આવાઝ મેં મગર આવાઝ ઈતની બુલન્દ ઔર સપ્ત ન હો
 કે સારે આ'માલ હી ઝાએઝ હો જાએ, ન બિલ્કુલ હી પસ્ત
 (યા'ની ધીમી) કે યેહ ભી સુન્નત કે ખિલાફ હૈ, મો'તદિલ (યા'ની
 દરમિયાની) આવાઝ મેં ઈન અલ્લાઝ કે સાથ સલામ અર્ઝ કીજિયે :

السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ

તરજમા : ઐ નબી صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ આપ પર સલામ ઔર
 અલ્લાહ عُزَّوَجَلَّ કી રહમતે

أَسْأَلُكَ الشَّفَاعَةَ يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 یا'نی یا رسؤل اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم ! میں آپ سے شفا اات
 کا سوال کرتا ہوں۔

سید کے اکبر کی بیعت میں سلام :
 کیر مشرک کی جان (اپنے سیدے ہاے کی ترے) آدھے گز
 کے کربی ہٹ کر (کربی ہٹے سوراہ کی ترے) ہڑرتے
 سخیہنا سید کے اکبر کے رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے یوں اے انور
 کے سامنے دست ہستا (یا'نی اسی ترے ہاے ہاں کر) ہڈے
 ہڈے کر ان کو سلام پش کیجیے، ہڈتر یہ ہے کے ہڈ
 ترے سلام اے کیجیے :

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيفَةَ رَسُولِ اللَّهِ ط

اے ہڈ کے رسؤل اللہ ! آپ پر سلام،

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَزِيرَ رَسُولِ اللَّهِ ط

اے رسؤل اللہ کے وزیر آپ پر سلام،

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ رَسُولِ

اے گارے سؤر میں رسؤل اللہ کے رفیق !

اللَّهُ فِي الْغَارِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ ^ط

आप पर सलाम और अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमतें और ७-२-कतें.

झाड़के आ'उम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ **की भिदमत में सलाम :**

झिर ठतना ही मजीद जानिबे मशरिक (अपने सीधे हाथ की तरफ़) थोडा सा सरक कर (आभिरी सूराभ के सामने) उतरते सख्थिदुना झाड़के आ'उम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के ३ अरु अरु कीजिये :

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ ^ط **السَّلَامُ**

औ अमीरुल मुअमिनीन ! आप पर सलाम,

عَلَيْكَ يَا مَتَمَّعَ الْأَرْبَعِينَ ^ط **السَّلَامُ عَلَيْكَ**

औ यालीस का अदद पूरा करने वाले ! आप पर सलाम,

يَا عَزَّ الْإِسْلَامَ وَالْمُسْلِمِينَ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ ^ط

औ इस्लाम व मुस्लिमीन की इज्जत ! आप पर सलाम और अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमतें और ७-२-कतें.

दोबारा अेक साथ शैभेन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا **की भिदमतों में**

सलाम : झिर बालिशत त्तर जानिबे मगरिब या'नी अपने उलटे हाथ की तरफ़ सरकिये और दोनों छोटे सूराभों के बीच में षडे डो कर अेक साथ सख्थिदुना सिद्दीके अकबर व झाड़के आ'उम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا

की प्रिदमतों में इस तरह सलाम अर्ज कीजिये :

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا خَلِيفَتِي رَسُولِ اللَّهِ ط السَّلَامُ

और सलूतुल्लाह व सल्लम व अल्लै व अल्लै व अल्लै ! आप दोनों पर सलाम,

عَلَيْكُمْ يَا وَزِيرِي رَسُولِ اللَّهِ ط السَّلَامُ عَلَيْكُمْ

और सलूतुल्लाह व सल्लम व अल्लै व अल्लै व अल्लै ! आप दोनों पर सलाम, और सलूतुल्लाह

يَا ضَمِجِي رَسُولِ اللَّهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ ط

सलूतुल्लाह व सल्लम व अल्लै व अल्लै व अल्लै ! (अबू बक व उमर
रुज़ी अल्लै व अल्लै) आप दोनों पर सलाम हो

اسْأَلُكَ الشَّفَاعَةَ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى

और अल्लाह व अल्लै व अल्लै की रहमते और ब-र-कते. आप दोनों साहिबान से
सुवाल करता हूँ के सलूतुल्लाह व सल्लम व अल्लै व अल्लै व अल्लै

اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَيْكُمْ وَأَبَارِكُ وَسَلَّمَ ط

के हुज़ूर मेरी सिफ़ारिश कीजिये, अल्लाह व अल्लै व अल्लै पर और आप दोनों पर
हुज़ूर व ब-र-कत और सलाम नाज़िल फ़रमाओ

येह दुआओं मांगिये : येह तमाम हाज़िरियां कबूलिय्यते
दुआ के मकामात हैं, यहां दुन्या व आखिरत की तलाशियां
मांगिये. अपने वालिदैन, पीरो मुर्शिद, उस्ताद, औलाद,
अहले खानदान, दोस्त व अहबाब और तमाम उम्मत के

लिये हुआ अमे मगिरेत कीजिये और शह-शाहे रिसालत
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शफ़ाअत की भीक मांगिये, जुसूसन
 मुवा-जहा शरीफ़ में ना'तिया अशआर अर्ज कीजिये, अगर
 नीचे दिया हुआ मक्तअ यहां सगे मदीना غُفَى عَنْهُ की तरफ़ से
 12 बार अर्ज कर दें तो अेहसाने अजीम होगा :

पड़ोसी जुलुद में अतार को अपना बना लीजे

जहां हैं धतने अेहसां और अेहसां या रसूलव्लाह

**“मदीनतुल मुनव्वरह” के बारह हुइफ़ की निरखत से
 बारगाहे रिसालत में हाजिरी के १२ म-दनी इल**

﴿1﴾ मिम्बरे अतहर के करीब हुआ मांगिये ﴿2﴾ जन्त
 की क्यारी में (या'नी जे जगह मिम्बर व हुजरअे मुनव्वरह के
 दरमियान है, उसे हदीस में “जन्त की क्यारी” इरमाया)
 आ कर दो रकअत नइल गैरे वक्ते मक़ुह में पढ कर हुआ
 कीजिये ﴿3﴾ जब तक मदीनअे तय्यिबा اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا की
 हाजिरी नसीब हो, अेक सांस बेकार न जाने दीजिये ﴿4﴾
 अरुरिख्यात के सिवा अकसर वक्त मस्जिदुन्न-अविख्यिशशरीफ़
 عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام में आ तहारत हाजिर रहिये, नमाज व
 तिलावत व जिहो हुइद में वक्त गुजारिये, हुन्या की बात तो
 किसी भी मस्जिद में न थालिये न के यहां ﴿5﴾ मदीनअे
 तय्यिबा اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में रोज़ा नसीब हो जुसूसन गरमी में
 तो क्या कलना के धस पर वा'दअे शफ़ाअत है ﴿6﴾ यहां हर

નેકી એક કી પયાસ હઝાર લિખી જાતી હૈ, લિહાઝા ઇબાદત મેં ઝિયાદા કોશિશ કીજિયે, ખાને પીને કી કમી ઝરૂર કીજિયે ઓર જહાં તક હો સકે તસદુક (યા'ની ખૈરાત) કીજિયે ખુસૂસન યહાં વાલોં પર ﴿7﴾ કુરઆને મજ્હદ કા કમ સે કમ એક ખત્મ યહાં ઓર એક હતીમે કા'બએ મુઅઝ્ઝમા મેં કર લીજિયે ﴿8﴾ રૌઝએ અન્વર પર નઝર ઇબાદત હૈ જૈસે કા'બએ મુઅઝ્ઝમા યા કુરઆને મજ્હદ કા દેખના તો અદબ કે સાથ ઇસ કી કસરત કીજિયે ઓર દુરુદો સલામ અર્ઝ કીજિયે ﴿9﴾ પન્જગાના યા કમ અઝ કમ સુબ્હ, શામ મુવા-જહા શરીફ મેં અર્ઝ સલામ કે લિયે હાઝિર હોં ﴿10﴾ શહૂર મેં ખ્વાહ શહૂર સે બાહર જહાં કહીં ગુમ્બદે મુબારક પર નઝર પડે, ફૌરન દસ્ત બસ્તા ઉધર મુંહ કર કે સલાતો સલામ અર્ઝ કીજિયે, બે ઇસ કે હરગિઝ ન ગુઝરિયે કે ખિલાફે અદબ હૈ ﴿11﴾ હત્તલ વસ્ખ કોશિશ કીજિયે કે મસ્જિદે અવ્વલ યા'ની હુઝૂરે અક્દસ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કે ઝમાને મેં જિતની થી ઉસ મેં નમાઝ પઢિયે ઓર ઉસ કી મિકદાર 100 હાથ તૂલ (લમ્બાઈ) ઓર 100 હાથ અર્ઝ (ચૌડાઈ) (યા'ની તક્રીબન 50X50 ગઝ) હૈ અગર્યે બા'દ મેં કુછ ઇઝાફા હુવા હૈ, ઉસ (યા'ની ઇઝાફા શુદ્દા હિસ્સે) મેં નમાઝ પઢના ભી મસ્જિદુન્ન-બવિયિશશરીફ عَلِيٍّ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ હી મેં પઢના હૈ ﴿12﴾ રૌઝએ અન્વર કા ન તવાફ કીજિયે, ન સજદા, ન ઇતના ઝુકના કે રુકૂઅ કે બરાબર હો. રસૂલુલ્લાહ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કી તા'ઝીમ ઉન કી ઇતાઅત મેં હૈ. (માખૂઝન બહારે શરીઅત, જિલ્દ અવ્વલ, સ. 1227 તા 1228)

आलम वजह में रकसां मेरा पर पर डोता

काश ! में गुम्बदे पजरा का कबूतर डोता

जाली मुबारक के ३ बर पढने का विर्द : जो कोई

हुजुरे अकरम, नूरे मुजरसम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की कब्रे
मुअज़्जम के ३ बर पडा हो कर येह आयते शरीफ़ा अेक
बार पढे :

﴿إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا﴾⁽⁵⁷⁾

झिर 70 मर्तबा येह अर्ज करे : صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ وَسَلَّمَ يَا رَسُولَ اللهِ :
झिरिश्ता इस के जवाब में यूं कहता है : ओ कुलां ! तुज पर
अल्लाह एज़्जल का सलाम हो. झिर झिरिश्ता उस के लिये दूआ
करता है : या अल्लाह एज़्जल ! इस की कोई हाजत ऐसी न
रहे जिस में येह नाकाम हो. (अम्वहबुल्लदीये ज ३ व ६१२)

दूआ के लिये जाली मुबारक को पीठ मत डीजिये :

जब जब सुनहरी जालियों के ३ बर हाज़िरी की सआदत मिले
एधर उधर हरगिज न देणिये और भास कर जाली शरीफ़ के
अन्दर जांकना तो बहुत बड़ी जुरअत है. क़िबले की तरफ़ पीठ
किये कम अज कम चार⁴ हाथ (या'नी तकरीबन दू गज) जाली

मुबारक से दूर पडे रहिये और मुवा-जहा शरीफ़ की तरफ़ रुख़ कर के सलाम अर्ज कीजिये, हुआ भी मुवा-जहा शरीफ़ ही की तरफ़ रुख़ किये मांगिये. बा'ज लोग वहां हुआ मांगने के लिये का'बे की तरफ़ मुंह करने को कहते हैं, उन की बातों में आ कर हरगिज़ हरगिज़ सुनहरी ज़ालियों की तरफ़ आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को या'नी का'बे के का'बे को पीठ मत कीजिये.

का'बे की अ-ज-मतों का मुन्किर नहीं हूँ लेकिन

का'बे का भी है का'बा मीठे नबी का रौज़ा

(वसा'ले ब'शिश, स. 298)

पयास हज़ार अ'तिकाफ़ का सवाब : जब जब आप मस्जिदुन्न-बविस्शरीफ़ عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام में दाख़िल हों तो अ'तिकाफ़ की निखत करना न भूलिये, इस तरह हरे बार आप को “पयास हज़ार नहली अ'तिकाफ़” का सवाब मिलेगा और जिम्नन पाना, पीना, ँफ़तार करना वगैरा भी ज़ा'ज हो जायेगा. अ'तिकाफ़ की निखत इस तरह कीजिये :

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْإِعْتِكَافِ¹ तरजमा : मैं ने सुन्नते अ'तिकाफ़ की निखत की.

1 : बाबुरसलाम और बाबुरहमद से मस्जिद न-बवी عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام में दाख़िल हों तो सामने वाले सुतून मुबारक पर गौर से देखेंगे तो सुनहरी हर्की से “نَوَيْتُ سُنَّتَ الْإِعْتِكَافِ” उभरा हुवा नज़र आयेगा जो के आशिकाने रसूल की याद दिहानी के लिये है.

रोजाना पांच हज का सवाल : ખુસૂસન ચાલીસ નમાઝે બલકે તમામ ફર્ઝ નમાઝે મસ્જિદુન્ન-બવિયિયશશરીફ હી મેં અદા કીજિયે કે તાજદારે મદીના, રાહતે કલબો સીના صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने आलीशान है : “जो शप्स वुजू कर के मेरी मस्जिद में नमाज़ पढने के इरादे से निकले येह उस के लिये अेक हज के बराबर है.”

(شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٣ ص ٤٩٩ حديث ٤١٩١)

सलाम ज़बानी ही अर्ज़ कीजिये : वहां जो भी सलाम अर्ज़ करना है, वोह ज़बानी याद कर लेना मुनासिब है, किताब से देख कर सलाम और दुआ के सींगे वहां पढना अजब सा लगता है क्यूंके सरवरे काअेनात, शह-शाहे मौजूदात जिस्मानी हयात के साथ हुजरअे मुबा-रका में डिब्ले की तरफ़ रुख़ किये तशरीफ़ इरमा हैं और हमारे दिलों तक के ખतरात (या'नी ખयाલાत) से आगाह हैं. ઈસ તસવ્વુર કે કાઈમ હો જાને કે બા'દ કિતાબ સે દેખ કર સલામ વગૈરા અર્ઝ કરના બ ઝાહિર ભી ના મુનાસિબ મા'લૂમ હોતા હૈ, મ-સલન આપ કે પીર સાહિબ આપ કે સામને મૌજૂદ હોં તો આપ ઉન કો કિતાબ સે પઠ પઠ કર સલામ અર્ઝ કરેંગે યા ઝબાની હી “યા હઝરત **عليكم السلام**” કહેંગે ? ઉમ્મીદ હૈ આપ મેરા મુદઆ સમઝ ગએ હોંગે. યાદ રખિયે! બારગાહે રિસાલત صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ મેં બને સજે અલ્ફાઝ નહીં બલકે દિલ દેખે જાતે હૈ.

अल धन्तिआर.....! अल धन्तिआर.....! : सञ्ज सञ्ज गुम्बद और हुजरअे मक्सूरा (या'नी वोह मुबारक कमरा जिस में हुजूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की कब्र मुनव्वर है) पर नजर जमाना एबादत और कारे सवाब है. जियादा से जियादा वक्त मस्जिदुन्न-अविख्यिशरीफ़ علی صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام में गुजारने की कोशिश कीजिये. मस्जिद शरीफ़ में बैठे हुअे दुर्रदो सलाम पढते हुअे हुजरअे मुतह्दरा पर जितना हो सके निगाहे अकीदत जमाया कीजिये और एस हसीन तसव्वुर में डूब जाया कीजिये गोया अन्करीब हमारे भीठे भीठे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हुजरअे मुनव्वरह से बाहर तशरीफ़ लाने वाले हैं. हिजरो फिराक और एन्तिआरे आकाअे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ में अपने आंसूओं को बहने दीजिये.

क्या जबर आज ही दीदार का अरमां निकले

अपनी आंभों को अकीदत से बिछाअे रबिये

अेक मेमन हाजु को दीदार हो गया : सगे मदीना عُفَى عَنْهُ को 1400 सि.हि. की हाजिरी में मदीनाअे पाक اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में बाबुल मदीना करायी के अेक नौ जवान हाजु ने बताया के मैं मस्जिदुन्न-अविख्यिशरीफ़ علی صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام में रहमते आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हुजरअे मक्सूरा के पीछे पुश्ते अत्हर की जानिब सञ्ज जालियों के पीछे बैठा हुवा था के अैन

बेदारी के आलम में, मैं ने देखा के अथानक सञ्ज सञ्ज
 जालियों की रुकावट हट गई और ताजदारे मदीना, करारे
 कल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पाक से बाहर
 तशरीफ़ ले आये और मुज से इरमाने लगे : “मांग क्या
 मांगता है ?” मैं नूर की तजल्लियों में इस कदर गुम हो
 गया के कुछ अर्ज करने की ज़सारत (या’नी हिम्मत) ही न
 रही, आह ! मेरे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जल्वा दिखा कर
 मुझे तउपता छोड कर अपने हुजरअे मुतह्दरा में वापस
 तशरीफ़ ले गये .

शरबते दीद ने एक आग लगाई दिल में तपिशे दिल को बढाया है बुजाने न दिया
 अब कहां जायेगा नकशा तेरा मेरे दिल से तह में रब्बा है इसे दिल ने गुमाने न दिया
गलियों में न थूकिये ! : मक्के मदीने की गलियों में थूका
 न कीजिये, न ही नाक साफ़ कीजिये. जानते नहीं इन गलियों
 से उमारे प्यारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ गुज़रे हैं .

ओ पाअे नज़र डोश में आ, कूअे नबी है आंभों से भी यलना तो यहां बे अ-दबी है
जन्नतुल बकीअ : जन्नतुल बकीअ शरीफ़ नीज़ जन्नतुल
 मब्ज़ला (मक्कअे मुकर्रमा) दोनों मुकदस कब्रिस्तानों के मकबरों और
 मज़ारों को शहीद कर दिया गया है. हज़ारहा सहाबअे किराम
 رَضَوْنَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ और बे शुमार अहले बैते अत्तार

વ ઔલિયાએ કિબાર વ ઉશ્શાકે ઝાર رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّارُ કે મઝારાત કે નુકૂશ તક મિટા દિયે ગએ હૈં. હાઝિરી કે લિયે અન્દર દાખિલે કી સૂરત મેં આપ કા પાઉ مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ કિસી ભી સહાબી યા આશિકે રસૂલ કે મઝાર શરીફ પર પડ સકતા હૈ ! શર-ઈ મસ્જલા યેહ હૈ કે આમ મુસલ્માનોં કી કબ્રોં પર ભી પાઉ રખના હરામ હૈ. “રદુલ મુહતાર” મેં હૈ : (કબ્રિસ્તાન મેં કબ્રેં મિટા કર) જો નયા રાસ્તા નિકાલા ગયા હો ઉસ પર ચલના હરામ હૈ. (رَدُّ الْمُنْتَهَجِ ص ۱۱۲) બલકે નએ રાસ્તે કા સિર્ફ ગુમાન હો તબ ભી ઉસ પર ચલના ના જાઈઝ વ ગુનાહ હૈ. (رَدُّ الْمُنْتَهَجِ ص ۱۱۳) લિહાઝા મ-દની ઈલ્તિજા હૈ કે બાહર હી સે સલામ અર્ઝ કીજિયે ઓર વોહ ભી જન્નતુલ બકીઅ કે સદ્ર દરવાઝે (MAIN ENTRANCE) પર નહીં બલકે ઉસ કી ચાર દીવારી કે બાહર ઉસ સમ્ત ખડે હોં જહાં સે કિબ્લે કો આપ કી પીઠ હો તાકે મદફૂનીને બકીઅ કે ચેહરે આપ કી તરફ રહેં. અબ ઈસ તરહ

અહલે બકીઅ કો સલામ અર્ઝ કીજિયે

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُؤْمِنِينَ فَإِنَّا

તરજમા : તુમ પર સલામ હો એ મોમિનોં કી બસ્તી મેં રહને વાલો ! હમ ભી

إِنْ شَاءَ اللَّهُ بِكُمْ لَاحِقُونَ ط اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَاهِلِ

! عَزَّ وَجَلَّ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ! تُوْم سے آا مِللنے وَاळे هُے. اے اَللّٰهُمَّ a

الْبَقِيْعِ الْغُرُقْدِ ط اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَلَهُمْ

مَغْفِرَتِ اَللّٰهُمَّ a

दिलों पर अन्जर फिर जाता : आह ! अेक वक्त वोह था के जब छिजाजे मुकद्दस में अहले सुन्नत की “अिदमत” का दौर था और उस वक्त के अतीबो ईमाम भी आशिकाने रसूल हुवा करते थे, जुमुआ के रोज दौराने अुत्बा जब अतीब साहिब मस्जिद न-अवी शरीफ الصَّلَاة وَالسَّلَامُ में रौजअे अन्वर की तरफ हाथ से ईशारा करते हुअे اَلصَّلَاة وَالسَّلَامُ عَلٰى هٰذَا النَّبِيِّ ط ईस नबिये मोहतरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ पर हुइदो सलाम हो) कहते तो अजारां आशिकाने रसूल के दिलों पर अन्जर फिर जाता और वोह अजअुद रइतगी के आलम में राने लग जाया करते.

अल वदाह हाजिरी : जब मदीनअे मुनव्वरहु تَعْظِيْمًا اَللّٰهُمَّ اَللّٰهُمَّ اَللّٰهُمَّ اَللّٰهُمَّ a से रुअसत होने की जं सोज घडी आअे राने हुअे और न हो सके तो राने जैसा मुंह अनाअे मुवा-जहा शरीफ में हाजिर हो कर राने कर सलाम अर्ज कीजिये और फिर सोज व

रिक्त के साथ यूँ अर्ज कीजिये :

اَلْوَدَاعُ يَا رَسُولَ اللَّهِ اَلْوَدَاعُ يَا رَسُولَ اللَّهِ
 اَلْوَدَاعُ يَا رَسُولَ اللَّهِ اَلْفِرَاقُ يَا رَسُولَ اللَّهِ
 اَلْفِرَاقُ يَا رَسُولَ اللَّهِ اَلْفِرَاقُ يَا رَسُولَ اللَّهِ
 اَلْفِرَاقُ يَا حَبِيبَ اللَّهِ اَلْفِرَاقُ يَا نَبِيَّ اللَّهِ
 اَلْاَمَانُ يَا حَبِيبَ اللَّهِ لَاجِعَلَهُ اللَّهُ تَعَالَى
 اِخْرَ الْعَهْدِ مِنْكَ وَلَا مِنْ زِيَارَتِكَ وَلَا
 مِنْ اَلْوُقُوفِ بَيْنَ يَدَيْكَ اَلْاَمِنْ خَيْرٍ
 وَعَافِيَةٍ وَصِحَّةٍ وَسَلَامَةٍ اِنْ عِشْتُ
 اِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى جِئْتُكَ وَاِنْ مِتُّ فَاوَدَعْتُ
 عِنْدَكَ شَهَادَتِي وَاَمَانَتِي وَعَهْدِي وَمِيثَاقِي
 مِنْ يَوْمِنَا هَذَا اِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ وَهِيَ شَهَادَةٌ

أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ
 أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ ﴿سُبْحَانَ رَبِّكَ
 رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٨٠﴾ وَسَلَامٌ عَلَى
 الْمُرْسَلِينَ ﴿١٨١﴾ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٨٢﴾
 آمِينَ آمِينَ آمِينَ يَا رَبِّ الْعَالَمِينَ بِحَقِّ طَهٍ وَبِئْسَ

अल वदाअ ताजदारे मदीना

आह ! अब वक्ते रुख्त है आया अल वदाअ ताजदारे मदीना
 सद मअे हिज कैसे सडूंगा अल वदाअ ताजदारे मदीना
 बे करारी बढी जा रही है हिज की अब घडी आ रही है
 दिल हुवा जाता है पारा पारा अल वदाअ ताजदारे मदीना
 किस तरह शौक से मैं यला था दिल का गुन्या भुशी से भिला था
 आह ! अब छूटता है मदीना अल वदाअ ताजदारे मदीना

कूअे जलनलं की रंगीं इजलओ ! अै मुअततर मुअभुअर हवलओ !
 लओ सललल अलभरर अल हडलरल अल वदलअ तलजदलरे डदरनल
 कलश ! कलसुत डेरल सलथ देतल डौत डुडल डल-वरी डेरल करतल
 जलन कदडुडु डे कुरडलन करतल अल वदलअ तलजदलरे डदरनल
 सुओजे उदुदत से जलतल रहुं डैं इशक डुं तेरे धुलतल रहुं डैं
 डुज कुओ दीवलनल सडुजे जडलनल अल वदलअ तलजदलरे डदरनल
 डैं जहलं डुडल रहुं डेरुे अलकल हओ नजुर डुं डदरने कल जलवल
 इदुतलजल डेरुे डकडुल इरडल अल वदलअ तलजदलरे डदरनल
 कुइ न हुसुने अडल कर सकल हुं नजुर डनुद अशक डैं कर रहल हुं
 डस डेही है डेरल कुल असलसल अल वदलअ तलजदलरे डदरनल
 आंभ से अल हुवल डून जलरुी इह डर डुडल है अल रनुज तलरुी
 जलद अततलर कुओ कुर डुललनल अल वदलअ तलजदलरे डदरनल
 अल डलले की तरह शैडुेने करुी डैनु रकुुी कुी डलक

बारगाड़ों में भी सलाम अर्ज कीजिये, ખૂબ रो रो कर दुआओं
 मांगिये बार बार छात्रिरी का सुवाल कीजिये और मदीने में
 ईमान व आझियत के साथ मौत और जन्तुल बकीअ में
 मदफ्न की भीक मांगिये. बा'दे इरागत रोते हुअे उलटे पाँउ
 यलिये और बार बार दरबारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को
 ईस तरह उसरत भरी नजर से देखिये जिस तरह कोई बर्या
 अपनी मां की गोद से जुदा होने लगे तो बिलक बिलक कर
 रोता और उस की तरफ उम्मीद भरी निगाहों से देखता है के
 मां अब बुलायेगी, के अब बुलायेगी और बुला कर शकत
 से सीने से चिभटा लेगी. अै काश ! रुपसत के वक्त अैसा हो
 जाअे तो कैसी ખुश बज्ती है, के मदीने के ताजदार
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बुला कर अपने सीने से लगा लें और बे
 करार इह कदमों में कुरबान हो जाअे.

હે તમન્નાએ અતાર યા રબ ઉન કે કદમોં મેં યૂં મૌત આએ
 જૂમ કર જબ ગિરે મેરા લાશા થામ લેં બઢ કે શાહે મદીના

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
 تُوْبُوْا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرُ اللهُ
 صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

مککھے मुकर्रमा زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا **की भियारतें**
विलादत गाहे सरवरे आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उउरते
 अल्लामा कुतुबुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمُبِينِ इरमाते हें : हुजुरे अकरम
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की विलादत गाह पर दुआ कबूल होती है.
 (ब्लदालमिन स २०) यहां पछोंयने का आसान तरीका येह है के आप
 कोहे मर्वह के किसी भी करीबी दरवाजे से बाहर आ जाईये.
 सामने नमाजियों के लिये बहुत बडा ईलाता बना हुवा है,
 ईलाते के उस पार येह मकाने आलीशान अपने जल्वे लुटा
 रहा है, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**, दूर ही से नजर आ जायेगा. पलीफ़ा
 हाइन रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَجِيدِ की वालिदमे मोह-त-रमा
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने यहां मस्जिद ता'मीर करवाई थी. आज कल
 इस मकाने अ-उमत निशान की जगह लायब्रेरी काईम है
 और उस पर येह बोर्ड लगा हुवा है : **“مَكْتَبَةُ مَكَّةَ الْمُكْرَمَةِ”**

ज-बले अबू कुठैस : येह दुन्या का सभ से पहला
 पहाड है, मस्जिदुल हराम के बाहर सफ़ा व मर्वह के करीब
 वाकेअ है. इस पहाड पर दुआ कबूल होती है, अहले
 मक्का कइत साली के मौकअ पर इस पर आ कर दुआ
 मांगते थे. हदीसे पाक में है के उ-जरे अस्वद जन्त से
 यहीं नाजिल हुवा था (अरबीब ज २४ स १२५ हदीथ २०) इस पहाड को

“अल अमीन” भी कहा गया है के “तूफ़ाने नूह” में
 ६-७रे अस्वद इस पहाड पर ब छिड़ाजते तमाम तशरीफ़
 इरमा रहा, का’बअे मुशर्रफ़ा की ता’मीर के मौकअ पर
 इस पहाड ने डजरते सय्यिदुना एब्राहीम **अलीलुल्लाह**
 عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام
 एधर है.” (بلد الامين ص २०ॴ ترجمہ قلیل) मन्कूल है : हमारे प्यारे आका
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْه وَسَلَّمَ ने इसी पहाड पर जल्वा अफ़रोज डो
 कर यांढ के ढो टुकडे इरमाअे थे. यूंके मक्कअे मुकर्रमा
 پहाडों के दरमियान घिरा हुवा है युनान्थे
 इस पर से यांढ देखा जाता था पहली रात के यांढ को छिलाल
 कहते हैं विलाला इस जगह पर बतौरे यादगार **मस्जिद छिलाल**
 ता’मीर की गई. बा’अ लोग इसे मस्जिद बिलाल **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ**
 पहाड पर **وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمَ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْه وَسَلَّمَ** -
 अब शाही महल ता’मीर कर दिया गया है, और अब उस
 मस्जिद शरीफ़ की जियारत नहीं हो सकती. 1409 सि.दि. के
 मौसिमे ६७ में इस महल के करीब बम के धमाके हुअे थे और
 कई हुज्जतजे किराम ने जामे शहादत नोश किया था, इस विये
 अब महल के गिर्द सप्त पहरा रहता है. महल की छिड़ाजत
 के पेशे नजर इसी पहाड की सुरंगों में बनाअे हुअे वुजूफाने
 भी जत्म कर दिये गअे हैं. अेक रिवायत के मुताबिक डजरते
 सय्यिदुना आदम **सफ़ियुल्लाह** عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام
 ज-बले अबू कुबैस पर वाकेअ “गारुल कन्ज” में मदफून हैं जब

के अके मुस्तनद रिवायत के मुताबिक मस्जिद ढेके में दफन हैं जो के मिन शरीफ में है.

وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَمُ وَرَسُوْلُهُ اَعْلَمُ - عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ -

पदी-जतुल कुब्रा का मकाने रहमत निशान : मकके मदीने के सुल्तान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ४७ तक मकके मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَتَعْظِيْمًا में रहे इसी मकाने आलीशान में सुकूनत पजीर रहे. सय्यिदुना एब्राहीम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के एलावा तमाम औलाद ज शुभूल शहजादिये कौनेन बीबी इतिमा जहरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की यहीं विलाहत हुए. सय्यिदुना जिब्रएले अमीन الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ ने बारहा एस मकाने आलीशान के अन्दर बारगाडे रिसालत में हाजिरी दी, हुजुरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ पर कसरत से नुजूले वइय इसी में हुवा. मस्जिद उराम के बा'द मकके मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَتَعْظِيْمًا में एस से बढ कर अइजल कोई मकाम नहीं. मगर सद करोड बढके अरबों परबों अइसोस ! के अब एस के निशान तक मिटा दिये गअे हैं और लोगों के यलने के लिये यहां हमवार इर्श बना दिया गया है. मर्वह की पहाडी के करीब वाकेअ बाबुल मर्वह से निकल कर बाई तरफ (LEFT SIDE) हसरत भरी निगाहों से सिर्फ एस मकाने अर्श निशान की इजाओं की जियारत कर लीजिये.

गारे ज-जले सौर : येह गारे मुबारक मक्का मे मुकर्रमा
 كَادَهَا اللّٰهُ شَرْفًا وَتَعْظِيْمًا की दाईं जनिज महल्ल मे मस्जिदा की तरफ़
 कभो बेश यार⁴ किलो मीटर पर वाकेअ “ज-जले सौर” मे है.
 येह वोह मुकदस गार है जिस का जिक्र कुरआने करीम मे है,
 मक्के मदीने के ताजवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने यारे गार व
 यारे मजार उजरते सय्यिदुना सिदीके अकबर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के
 साथ ज वक्ते हिजरत यहां तीन रात किया म पजीर रहे. जब
 दुश्मन तलाशते हुअे गारे सौर के मुंह पर आ पछोये तो
 उजरते सय्यिदुना सिदीके अकबर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ गमजदा हो
 गअे और अर्ज की : या रसूलद्लाह ! दुश्मन एतने करीब आ
 युके हें के अगर वोह अपने कदमों की तरफ़ नजर डालेंगे तो
 हमें देख लेंगे, सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने तसल्ली
 देते हुअे इरमाया : لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا तर-ज-मअे कन्जुल
 ईमान : गम न जा बेशक अल्लाह हमारे साथ है. (प. १०, التوبة: ६०).
 इसी ज-जले सौर पर काजील ने सय्यिदुना हाजील
 رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को शहीद किया.

गारे हिरा : ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ खुदूरे
 रिसालत से पहले यहां जिको इक मे मशगूल रहे हें. येह
 किव्ला रुख वाकेअ है. सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 पर पहली वख्य इसी गार मे उतरी, जो के
 اِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ से तक पांय आयते हें. येह

કઈ ખુ-લફા અપને અપને દૌર મેં ઈસ કી તર્જીન મેં હિસ્સા લેતે રહે. અબ યેહ તૌસીઅ મેં શામિલ કર લિયા ગયા હૈ ઓર કોઈ અલામત નહીં મિલતી.

મહલ્લએ મસ્ફલા : યેહ મહલ્લા બડા તારીખી હૈ, હઝરતે સય્યિદુના ઈબ્રાહીમ ખલીલુલ્લાહ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام યહીં રહા કરતે થે, હઝરાતે સિદ્દીક વ ફારૂક વ હમ્ઝા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ ભી ઈસી મહલ્લએ મુબા-રકા મેં ક્રિયામ પઝીર થે. યેહ મહલ્લા ખાનએ કા'બા કે હિસ્સએ દીવાર “મુસ્તજાર” કી જાનિબ વાકેઅ હૈ.

જન્નતુલ મઅ્લા : જન્નતુલ બકીઅ કે બા'દ જન્નતુલ મઅ્લા દુન્યા કા સબ સે અફઝલ કબ્રિસ્તાન હૈ. યહાં ઉમ્મુલ મુઅમિનીન ખદી-જતુલ કુબ્રા, હઝરતે સય્યિદુના અબ્દુલ્લાહ بِنِ ابْنِ اُمِّرٍ ઓર કઈ સહાબા વ તાબિઈન رَضُوا انَّ اللهَ تَعَالَى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِينَ ઓર ઔલિયા વ સાલિહીન رَحِمَهُمُ اللهُ اَلْحَبِيبِينَ કે મઝારાતે મુકદ્દસા હૈં. અબ ઈન કે કુબ્બે (યા'ની ગુમ્બદ) વગૈરા શહીદ કર દિયે ગએ હૈં, મઝારાત મિસ્માર કર કે ઉન પર રાસ્તે નિકાલે ગએ હૈં. લિહાઝા બાહર રહ કર દૂર હી સે ઈસ તરહ સલામ અઝ કીજિયે :

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ

સલામ હો આપ પર એ કબ્રોં મેં રહને વાલો !

المؤمنين والمسلمين وإن شاء الله

ان شاء الله عزوجل ! اور ہم بھی

بكم لأحقون^ط فسئل الله لنا ولكم العافية^ط

آپ سے मिलने वाले हैं. हम अल्लाह से आप की और अपनी आर्कित्त के तालिब हैं.

अपने लिये अपने वालिदैन और तमाम उम्मत की मङ्कित के लिये दुआ मांगिये और बिल खुसूस अडले जन्नतुल मअ्ला के लिये ँसाले सवाल कीजिये. ँस कब्रिस्तान में दुआ कबूल डोती है.

मस्जिडे जिन्न : येड मस्जिड जन्नतुल मअ्ला के करीब वाकेअ है. सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से नमाजे इज में कुरआने पाक की तिलावत सुन कर यहां जिन्नात मुसल्मान हुअे थे.

मस्जिदुरायह : येड मस्जिडे जिन्न के करीब डी सीधे डाय की तरफ है. “रायड” अ-रबी में ऊन्डे को कडते हैं. येड वोड तारीफी मकाम है जहां इत्डे मक्का के मौकअ पर डमारे प्यारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपना ऊन्डा शरीफ नरख इरमाया था.

ਮਸ੍ਜਿਦੇ ਖੈਫ਼ : ਯੇਹ ਮਿਨਾ ਸ਼ਰੀਫ਼ ਮੇਂ ਵਾਕੇਅ ਹੈ. ਫਿਜ਼ਾਤੁਲ ਵਦਾਅ ਕੇ ਮੌਕਅ ਪਰ ਫੁਮਾਰੇ ਘਾਰੇ ਘਾਰੇ ਆਕਾ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ਨੇ ਯਹਾਂ ਨਮਾਜ਼ ਅਦਾ ਫ਼ਰਮਾਏ ਹੈ. ਰਹਮਤੇ ਆਲਮ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ਨੇ ਫ਼ਰਮਾਯਾ : **صَلَّى فِي مَسْجِدِ الْخَيْفِ سَبْعُونَ نَبِيًّا** : ਮਸ੍ਜਿਦੇ ਖੈਫ਼ ਮੇਂ 70 ਅੰਬਿਯਾ (عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) ਨੇ ਨਮਾਜ਼ ਅਦਾ ਫ਼ਰਮਾਏ. (مُعْجَم أَوْسَط ج 4 ص 117 حديث 5407) ਔਰ ਫ਼ਰਮਾਯਾ : **صَلَّى فِي الْمَسْجِدِ الْخَيْفِ قَبْرُ سَبْعِينَ نَبِيًّا** (مُعْجَم كَبِير ج 12 ص 316 حديث 13020) . ਏਹੀ ਕੀ ਕਥਨ ਹੈ. ਅਭ ਈਸ ਮਸ੍ਜਿਦ ਸ਼ਰੀਫ਼ ਕੀ ਕਾਫ਼ੀ ਤੌਸੀਅ ਛੋ ਯੁਕੀ ਹੈ. ਜਾਏਰੀਨੇ ਕਿਰਾਮ ਕੋ ਯਾਦਿਯੇ ਕੇ ਭਸਦ ਅਕੀਦਤੋ ਔਲਤਿਰਾਮ ਈਸ ਮਸ੍ਜਿਦ ਸ਼ਰੀਫ਼ ਕੀ ਜ਼ਿਯਾਰਤ ਕਰੇਂ, ਅੰਬਿਯਾਔ ਕਿਰਾਮ ਈਸ ਮਸ੍ਜਿਦ ਸ਼ਰੀਫ਼ ਕੀ ਖ਼ਿਦਮਤੋਂ ਮੇਂ ਈਸ ਟਰਫ਼ ਸਲਾਮ ਅਰਜ਼ ਕਰੇਂ : **فِي سَائِلِهِ سَابِعٌ كَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الصَّلَاةَ وَالسَّلَامَ** ਕਿਰ ਈਸਾਲੇ ਸਵਾਭ ਕਰ ਕੇ ਦੁਆ ਮਾਂਗੇਂ.

ਮਸ੍ਜਿਦੇ ਭਿਧਰਾਨਾ : ਮਕਕਔ ਮੁਕਰਰਮَا رَادَهَا اللهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا سے ਜਾਨਿਭੇ ਟਾਏਫ਼ ਤਕਰੀਭਨ 26 ਕਿਲੋ ਮੀਟਰ ਪਰ ਵਾਕੇਅ ਹੈ. ਆਪ ਭੀ ਯਹਾਂ ਸੇ ਉਮਰੇ ਕਾ ਔਲਰਾਮ ਭਾਂਧਿਯੇ ਕੇ ਫ਼ੁਲੇ ਮਕਕਾ ਕੇ ਭਾ'ਦ ਟਾਏਫ਼ ਸ਼ਰੀਫ਼ ਫ਼ੁਲ ਕਰ ਕੇ ਵਾਪਸੀ ਪਰ ਫੁਮਾਰੇ ਘਾਰੇ ਆਕਾ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ਨੇ ਯਹਾਂ ਸੇ ਉਮਰੇ ਕਾ ਔਲਰਾਮ ਔਭੇ

तन इरमाया था. यूसुफ़ बिन माहक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِقِ इरमाते
 हैं : मकामे जिधराना से 300 अम्बियाअे किराम الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ
 ने उमरे का अेहराम बांधा है, सरकारे नामदार
 صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने जिधराना पर अपना असा मुबारक
 गाडा जिस से पानी का यश्मा उबला जो निहायत ठन्डा और
 भीठा था. (بلد الامين ص ۲۲۱، اخبار كره، ۷/ ۵۶۷ ص ۲۴، ۲۴) मशहूर है उस जगह पर
 कुंआं है. सय्यिदुना ँब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا इरमाते हैं :
 हुजुरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने ताईफ़ से वापसी पर यहां
 कियाम किया और यहीं भाले गनीमत भी तकसीम इरमाया.
 आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने 28 शव्वालुल मुकर्रम को यहां से
 उमरे का अेहराम बांधा था. (بلد الامين ص ۲۲۱، ۲۲) ँस जगह की निस्बत
 कुरैश की अेक औरत की तरफ़ है जिस का लकभ जिधराना था.
 (اليض ص ۱۳۷) अवाम ँस मकाम को “बडा उमरह” बोलते हैं. येह
 निहायत ही पुरसोज मकाम है, उजरते सय्यिदुना शैष अब्दुल
 हक मुहदिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي “अब्बारुल अप्यार” में
 नकल करते हैं के मेरे पीरो मुर्शिद उजरते सय्यिदुना शैष अब्दुल
 वद्दाब मुत्तकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي ने मुजे ताकीद इरमाई है के
 मौकअ मिलने पर जिधराना से ज़र उमरे का अेहराम
 बांधना के येह अैसा मु-तबर्क मकाम है के मैं ने यहां अेक
 रात के मुप्तसर से हिस्से के अन्दर सो से जाईद बार
 मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ का प्वाब में दीदार किया है

- لِحَسَانِهِ۔
 उजरते सय्यिदुना शैफ अब्दुल वख्दाब मुत्तकी
 का मा'मूल था के उम्रे का ओहराम बांधने के लिये
 रोजा रफ कर पैदल जिर्हराना जाया करते थे. (مُلَخَّصٌ از اخبار الاخيار ص 278)

मजारे मैमूना : رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا : मदीना रोड पर “नवारिया”
 के करीब वाकेअ है. ता दमे तहरीर यहां की हाजिरी का अेक
 तरीका येह है के आप अस 2 A या 13 में सुवार हो जाईये,
 येह अस मदीना रोड पर तन्धम या'नी मस्जिदे आईशा
 से गुजरती हुई आगे बढती है, मस्जिदुल हराम
 से तकरीबन 17 किलो मीटर पर ईस का आबिरी स्टोप
 “नवारिया” है, यहां उतर जाईये और पलट कर रोड के उसी
 कनारे पर मक्कअे मुक्करमा رَاذَاهَا اللهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا की तरफ़ यलना
 शुुरुअ कीजिये, दस या पन्धरह मिनट यलने के बा'द अेक पोलीस
 येक पोस्ट (नुक्तअे तइतीश) है फिर मौकिई हुज्जज बना हुवा
 है ईस से थोडा आगे रोड की उसी जानिब अेक यार दीवारी
 नजर आअेगी, यहीं उम्मुल मुअमिनीन उजरते सय्यि-दतुना
मैमूना رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का मजारे झाईजुल अन्वार है. येह मजारे
 मुबारक सडक के बीय में है. लोगों का कलना है के सडक की
 ता'मीर के लिये ईस मजार शरीफ़ को शहीद करने की कोशिश की
 गई तो ट्रेक्टर (TRACTOR) उलट जाता था, नायार यहां यार
 दीवारी बना दी गई. हमारी प्यारी प्यारी अम्मीजान सय्यि-दतुना

میں مونا رضى الله تعالى عنها كى كرامت مرلوا !

االهه ءسلاام كى ما-ءرانه شفىك

بانوانه تءارء ٱه لاءاااا سلاام

“ءا بااى ! ءشمه كرءم” كه ءءاره ءرفف كى نلسءء سه
مرففءول ءرام مء نمااا مفسءفا كه 11 مكااماء

﴿1﴾ باءولءاء شرفف كه انءءر ﴿2﴾ مكامه ءءرااام
 كه ٱهءه ﴿3﴾ مءاف كه كناره ٱر ء-ءره اسوءء كى سهء مء
 ﴿4﴾ ءءام اور باءول كا'با كه ءرمببانا روكنه ءراكى كه
 كرىب ﴿5﴾ مكامه ءرفرء ٱر ءه باءول كا'با اور ءءام كه
 ءرمببانا ءهءاره كا'با كى ءء مء هء. ءس مكام كو “مكامه
 ءمامءه ءبءراءل” ببى كهءءه هءن. شاهنشاءه ءه اءلام
 صلى الله تعالى عليه وآله وسلم نه ءسى مكام ٱر سءببءنا ءبءراءل
 كو ٱاىب نماااا مء ءمامء كا شرفف باءشا. ءسى
 موبارء مكام ٱر سءببءنا ءءرااام باءولءلاء
 على نببنا وءببنا الصلوة والسلام نه “ءا'ببره كا'با” كه وءء مبءءى كا
 ءارا باءااا ءا ﴿6﴾ باءول كا'با كى ءرفف روبا كر كه.
 (ءرءاااا كا'با كى سهء مء نمااا اءءا كرنا ءمام اءءراء
 كى سهء سه اءءول هء¹) ﴿7﴾ مبءابره رءمء كى ءرفف روبا
ءببنا

1 : كهءا ءءا هء : ٱاك و ءبءء ءرءاااا كا'با ءى كى سمء واكء هءن.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَىٰ اِحْسَانِهِ وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَمُ وَرَسُوْلُهُ اَعْلَمُ وَعَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

कर के. (कहा जाता है के मजारे जियाबार में सरकारे आली वकार
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का येडूरमे पुर अन्वार ईसी जानिब है)
 ﴿8﴾ तमाम हतीम में जुसूसन भीजाबे रहमत के नीये ﴿9﴾
 रुकने अस्वद और रुकने यमानी के दरमियान ﴿10﴾ रुकने
 शामी के करीब ईस तरह, के “बाबे उम्रह” आप
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की पुश्ते अकदस के पीछे होता. ज्वाह
 आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ”हतीम“ के अन्दर हो कर नमाज
 अदा इरमाते या बाहर ﴿11﴾ हजरते सय्यिदुना आदम
 सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के नमाज पढने के मकाम
 पर जो के रुकने यमानी के दाईं या बाईं तरफ़ है और ज़हिर
 तर येह है के मुसल्लाअे आदम “मुस्तज़ार” पर है.

(किताबुल हज, स. 274)

मदीनअे मुनव्वरह की जियारतें

रौ-अतुल जन्नह : ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के
 हुजरअे मुबा-रका (जिस में सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का
 मजारे पुर अन्वार है) और भिम्बरे नूरबार (जहां आप
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ भुत्बा ईशाद इरमाया करते थे) का
 दरमियानी डिस्सा जिस का तूल (या’नी लम्बाई) 22 मीटर और

अर्ज (यौडाई) 15 मीटर है रौ-उतुल जन्नड या'नी “जन्नत की क्यारी” है. युनान्चे उमारे प्यारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने आलीशान है : مَا بَيْنَ بَيْتِي وَمَسْبَرِي رَوْضَةٌ مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ - या'नी मेरे घर और मिम्बर की दरमियानी जगड जन्नत के भागों में से अेक भाग है. (بخاری ج ۱ ص ۴۰۲ حدیث ۱۱۹۰) आम भोलयाल में लोग एसे “रियाउल जन्नड” कहते हैं मगर असल लइज “रौ-उतुल जन्नड” है.

येह प्यारी प्यारी क्यारी तेरे पाना भाग की
सई एस की आबो ताब से आतश सकर की है

(हदाईके बख्शिश शरीफ)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلٰی مُحَمَّدٍ

मस्जिदे कुबा : मदीनअे तयिबु रَادَهَا اللهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا से तकरीबन तीन किलो मीटर जुनूब मगरिब की तरफ “कुबा” नामी अेक कदीमी गाँव है जहां येह मु-तबर्क मस्जिद बनी हुई है, कुरआने करीम और अहादीसे सहीहा में एस के इजाईल निहायत अेहतिमाम से बयान इरमाअे गअे हैं. आशिकाने रसूल मस्जिदुन्न-बविगियशशरीफ عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से दरमियानी याल यल कर पैदल तकरीबन 40 मिनट में मस्जिदे कुबा पडोंय सकते हैं. बुपारी शरीफ में है :

હુઝૂરે અન્વાર صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ હર હફતે કભી પૈદલ તો કભી સુવારી પર મસ્જિદે કુબા તશરીફ લે જાતે થે.

(بُخَارِي ج ۱ ص ۴۰۲ حدیث ۱۱۹۳)

ઉમ્મે કા સવાબ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ દો ફરામીને મુસ્તફા :

﴿1﴾ મસ્જિદે કુબા મેં નમાઝ પઢના ઉમ્મે કે બરાબર હૈ
 ﴿2﴾ જિસ શખ્સ ને અપને ઘર મેં વુઝૂ કિયા ફિર મસ્જિદે કુબા મેં જા કર નમાઝ પઢી તો ઉસે ઉમ્મે કા સવાબ મિલેગા.

(ابن ماجه ج ۲ ص ۱۷۰ حدیث ۱۴۱۲)

મઝારે સય્યિદુના હમ્મા : આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ગઝ્વએ ઉહુદ (૩ સિ.હિ.) મેં શહીદ હુએ થે, આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કા મઝારે ફાઈઝુલ અન્વાર ઉહુદ શરીફ કે કરીબ વાકેઅ હૈ. સાથ હી હઝરતે સય્યિદુના મુસ્અબ બિન ઉમૈર رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ઓર હઝરતે સય્યિદુના અબ્દુલ્લાહ બિન જહ્શ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કે મઝારાત ભી હૈં. નીઝ ગઝ્વએ ઉહુદ મેં 70 સહાબએ કિરામ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ ને જામે શહાદત નોશ કિયા થા ઉન મેં સે બેશતર શુ-હદાએ ઉહુદ ભી સાથ હી બની હુઈ ચાર દીવારી મેં હૈં.

शु-हदाअे उहुद عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ को सलाम करने की

इमीलत : सय्यिदुना शैख अब्दुल हक मुहदिस देहलवी नकल करते हैं : जो शप्स ँन शु-हदाअे उहुद से गुजरे और ँन को सलाम करे येह कियात तक उस पर सलाम भेजते रहते हैं. शु-हदाअे उहुद عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ और बिल पुसूस मजारे सय्यिदुशु-हदा सय्यिदुना हम्मा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से बारहा जवाभे सलाम की आवाज सुनी गई है.

(جذبُ القلوب ص 177)

सय्यिदुना हम्मा की भिदमत में सलाम

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَنَا حَمْرَةَ السَّلَامِ ط

तरजमा : सलाम हो आप पर औ सय्यिदुना हम्मा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ. सलाम

عَلَيْكَ يَا عَمْرَسُؤْلِ اللهِ ط السَّلَامُ عَلَيْكَ

हो आप पर औ मोहतरम यया रसूलुल्लाह के, सलाम हो صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

يَا عَمْرَسُؤْلِ اللهِ ط السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَمْرَسُؤْلِ اللهِ

आप पर औ अम्मे बुरुर्ग-वार अल्लाह के नबी के, सलाम हो आप पर औ यया صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

حَبِيبِ اللَّهِ ط السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَمَّ

अल्लाह उ आप पर औ यया
 مصلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم کی عز ووجل ا

المُصْطَفَى ط السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الشُّهَدَاءِ

मुस्ताफा सलाम हो आप औ सरदार शहीदों के
 مصلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم

وَيَا أَسَدَ اللَّهِ وَأَسَدَ رَسُولِهِ ط السَّلَامُ عَلَيْكَ

और औ शेर अल्लाह उसा के रसूल
 मصلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم . सलाम

يَا سَيِّدَنَا عَبْدَ اللَّهِ بْنِ جَحْشٍ ط السَّلَامُ عَلَيْكَ

हो आप पर औ सय्यदुना अबुल्लाह बिन जहश
 رضی اللہ تعالیٰ عنہ ४९श

يَا مُصْعَبَ بْنَ عُمَيْرٍ ط السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا

औ मुस्अब बिन उमैर . رضی اللہ تعالیٰ عنہ . सलाम हो औ

شُهِدَاءِ أَحَدٍ كَافَّةً عَامَّةً وَرَحْمَةً اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ ط

शु-हदाओ उहुद आप सभी पर और अल्लाह उरुमतें और ब-र-कतें.

शु-हदाओ उहुद عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ को मजभूय सलाम

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا شُهَدَاءَ يَا سَعْدَاءَ

तरजमा : सलाम हो आप पर ओ शहीदो ! ओ नेक भप्तो !

يَا نُجَبَاءَ يَا نَقَبَاءَ يَا أَهْلَ الصِّدْقِ وَالْوَفَاءِ

ओ शरीफो ! ओ सरदारो ! ओ मुजस्समे सिद्धको वफा !

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا مُجَاهِدِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

सलाम हो आप पर ओ मुजाहिदो ! अल्लाह उरुज की राह में
जिहाद का हक अदा करने वालो !

حَقِّ جِهَادِهِ ۞ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ

तर-ज-मओ क-जुल ईमान : सलामती हो तुम पर तुम्हारे
सब्र का बहला तो पिछला घर क्या ही

عُقْبَى الدَّارِ ۞ السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا شُهَدَاءَ

भूब मिला ॥ सलाम हो ओ शु-हदाओ

أَحَدِكُمْ كَأَنَّكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ

उहुद आप सबी पर और अल्लाह उरुज की रहमते और ब-र-कते नाजिल हो.

ज़ियारतों पर हाज़िरी के दो तरीके : भीठे भीठे मक्के मदीने के आँरों ! ज़ियारतों और एन के पतों को ब षौके तवालते रकीकुल उ-रमैन दर्ज नहीं किया, शाईकीन आशिकाने रसूल, ज़ियारात और एमान अङ्गरोज हिकायात की मा'लूमात के लिये तब्दीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते ईस्लामी के ईशाअती एदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ क़िताब, "आशिकाने रसूल की हिकायतें मअ मक्के मदीने की ज़ियारतें" का मुता-लआ इरमाअें और अपने एमान को गर्माअें. अलबत्ता क़िताब पढ कर हर शप्स ज़ियारात के मकामात पर पडोंय जाअे येह दुश्वार है. ज़ियारत की दो सूरतें हैं : अेक तो येह के मस्जिदुन्न-बविख्यिशरीफ़ **ज़ियारह !** **ज़ियारह !** की सदाअें लगाते रहते हैं, आप उन की गाडियों में सुवार हो जाँये. येह आप को मसाजिदे ખમ્सा, मस्जिदे कुबा और मजारे सय्यिदुना હમ્મા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ले जाअेंगे. दूसरी येह के मक्के मदीने की मज़ीद ज़ियारतों के लिये आप को अैसे आदमी तलाश करने होंगे जो उजरत ले कर ज़ियारतें करवाते हों.

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

જરાઇમ ઓર ઇન કે કફરારે

સુવાલ વ જવાબ કે મુતા-લએ સે કબલ ચન્દ ઝરૂરી ઇસ્તિલાહાત વગૈરા ઝેહન નશીન કર લીજીયે.

દમ વગૈરા કી તા'રીફ :

﴿1﴾ દમ યા'ની એક બકરા. (ઇસ મેં નર, માદા, દુમ્બા, ભેડ, નીઝ ગાય યા ઊંટ કા સાતવાં હિસ્સા સબ શામિલ હૈં)

﴿2﴾ બ-દના યા'ની ઊંટ યા ગાય. (ઇસ મેં બૈલ, ભેંસ વગૈરા શામિલ હૈં)

ગાય બકરા વગૈરા યેહ તમામ જાનવર ઉન હી શરાઇત કે હોં જો કુરબાની મેં હૈં.

﴿3﴾ સ-દકા યા'ની સ-દ-કએ ફિત્ર કી મિકદાર. આજ કલ કે હિસાબ સે સ-દ-કએ ફિત્ર કી મિકદાર 2 કિલો મેં સે 80 ગ્રામ કમ ગન્દુમ યા ઉસ કા આટા યા ઉસ કી રકમ યા ઉસ કે દુગને જવ યા ખજૂર યા ઉસ કી રકમ હૈં.

દમ વગૈરા મેં રિઆયત : અગર બીમારી, સપ્ત સદા, સપ્ત ગરમી, ફોડે ઓર ઝખ્મ યા જૂઓં કી શદીદ તકલીફ કી વજહ સે કોઈ જુર્મ હુવા તો ઉસે “જુર્મે ગૈર ઇખ્તિયારી” કહતે હૈં. અગર કોઈ

“जुर्मै गैर इप्तियारी” सादिर हुवा जिस पर दम वाजिब होता है तो इस सूरत में इप्तियार है के याहे तो दम दे दे और अगर याहे तो दम के बदले छ मिसकीनों को स-दका दे दे. अगर अक ही मिसकीन को छ स-दके दे दिये तो अक ही शुमार होगा. लिहाजा येह जरूरी है के अलग अलग छ मिसकीनों को दे. दूसरी रियायत येह है के अगर याहे तो दम के बदले छ मसाकीन को दोनों वक्त पेट भर कर खाना खिला दे. तीसरी रियायत येह है के अगर स-दका वगैरा नहीं देना चाहता तो तीन रोजे रफ ले “दम” अदा हो गया. अगर कोई ऐसा जुर्मै गैर इप्तियारी किया जिस पर स-दका वाजिब होता है तो इप्तियार है के स-दके के बजाये अक रोजा रफ ले.

(मुलभ्मस अज बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1162)

दम, स-दके और रोजे के जरूरी मसाधल : अगर कफ़ारे के रोजे रफें तो येह शर्त है के रात से या'नी सुब्हे सादिक से पहले पहले येह नियत कर लें के येह हुलां कफ़ारे का रोजा है. इन “रोजों” के लिये न अहराम शर्त है न ही इन का पै दर पै होना. स-दके और रोजे की अदाअगी अपने वतन में भी कर सकते हैं, अलबत्ता स-दका और खाना अगर हरम के मसाकीन को पेश कर दिया जाये तो येह अज़ल है. दम और ब-दना के जानवर का हरम में ज़ह होना शर्त है.

हज की कुरबानी और दम के गोशत के अहकाम :

उज के शुक्राने की कुरबानी हुदूदे हरम में होना शर्त है. इस का गोशत आप भुद भी भाँये, मालदार को भी पिलाँये और मसाकीन को भी पेश कीजिये, मगर कफ़ारा या'नी "दम" और "ब-दने" वगैरा का गोशत सिर्फ़ मोहताजों का एक है, न भुद भा सकते हैं न गनी को पिला सकते हैं. (मुलम्बस अज बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1162, 1163) दम हो या शुक्राने की कुरबानी, ज़ह के बा'द गोशत वगैरा हरम के बाहर ले जाने में हरज नहीं. मगर ज़ह हुदूदे हरम में होना जरूरी है.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दरिये : बा'ज नादान जान भूज़ कर "जुर्म" करते हैं और कफ़ारा भी नहीं देते. यहाँ दो गुनाह हुअे, अक तो जान भूज़ कर जुर्म करने का और दूसरा कफ़ारा न देने का. अैसों को कफ़ारा भी देना होगा और तौबा भी वाजिब होगी. हां मजबूरन जुर्म करना पडा या बे भयाली में हो गया तो कफ़ारा काफ़ी है गुनाह नहीं हुवा इस लिये तौबा भी वाजिब नहीं और येह भी याद रभिये के जुर्म याहे याद से हो या भूले से, इस का जुर्म होना जानता हो या न जानता हो, पुशी से हो या मजबूरन, सोते में हो या जागते में, बेहोशी में हो या होश में, अपनी मरज़ी से क्रिया हो या दूसरे के जरीअे करवाया हो हर सूरत में कफ़ारा लाज़िमी है, अगर नहीं देगा तो गुनहगार होगा. जब पर्ज सर पर आता है तो बा'ज लोग येह भी कह दिया

करते हैं : “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुआझ़ फ़रमायेगा !” और फिर वोह दम वगैरा नहीं देते. औसों को सोयना याहिये के कफ़ारात शरीअत ही ने वाजिब किये हैं और जान भूळ कर टालम टोल करना शरीअत ही की खिलाफ़ वर्ज़ा है जो के सप्त तरीन जुर्म है. भा'ज माल के मतवाले नादान हुज्जाज, उ-लमाअे किराम से यहाँ तक पूछते सुनाई देते हैं के सिर्फ़ गुनाह है ना ! दम तो वाजिब नहीं ? (مَعَادِ اللَّهِ) सद करोड अफ़सोस ! यन्द सिक्के बयाने ही की इक है, गुनाह के सबब होने वाले सप्त अजाब के इस्तिस्काक की कोई परवाह नहीं, गुनाह को हलका जानना बहुत सप्त बात बल्के भा'ज सूरतों में कुई है. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ म-दनी इक नसीब फ़रमाये.

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

कारिन के लिये डबल कफ़ारा होता है : जहाँ अेक कफ़ारे (या'नी अेक दम या अेक स-दके) का हुकूम है वहाँ कारिन के लिये दो कफ़ारे हैं. (इयाइहस 171) ना बालिग अगर जुर्म करे तो कोई कफ़ारा नहीं.

कारिन के लिये कहां दुगना कफ़ारा है और कहां नहीं : आम तौर पर किताबों में लिखा होता है के जहाँ हाज्ज मुफ़रिद या मु-तमतेअ पर अेक दम या स-दका लाजिम आता है वहाँ उज्जे किरान वाले पर दो दम या दो स-दके लाजिम आते

हैं, येह मस्अला अपनी जगह दुरुस्त है लेकिन इस की जास सूरते हैं या'नी औसा नहीं के जहां भी उज्जे ईफ़राद या तमत्तोअ वाले पर अक दम लाजिम आये तो कारिन पर दो दम करार दे दिये जाअें, लिहाजा इस की मुकम्मल वजाहत पेश की जा रही है ताके कोई गलत फ़हमी न रहे. उजरते अद्लामा शामी قَدَسَ سَيِّدُ السَّامِي के ईशाद का फ़ुलासा है : अहराम बांधने वाले पर नईसे अहराम की वजह से जो काम करना हराम हैं अगर उन में से कोई काम उज्जे ईफ़राद करने वाला करेगा तो उस पर अक दम लाजिम होगा जब के उज्जे किरान करने वाला या जो इस के हुक्म में है वोह करेगा तो उस पर दो दम लाजिम होंगे और स-दके के बारे में भी कारिन का येही हुक्म है के इस पर दो स-दके लाजिम होंगे क्यूंके इस ने उज और उम्रह दोनों का अहराम बांधा हुवा है और अगर इस ने उज के वाजिबात में से किसी वाजिब को तर्क किया जैसे सअ्य या रम्य छोड दी, जनाबत की हालत में या बे वुजू उज या उम्रे का तवाफ़ किया या हरम की घास काटी तो इस पर उबल सजा लाजिम नहीं होगी क्यूंके येह नईसे अहराम के मन्नूआत में से नहीं हैं बल्के उज व उम्रह के वाजिबात और हरम के मन्नूआत में से हैं. (رَدُّ الْمُحْتَار ج ٣ ص ١٠٧-١٠٨)

इसी मस्अले की मुकम्मल तर्कसील उजरते अद्लामा अली कारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي ने भयान इरमाई है : कारिन या जो कारिन के हुक्म में है उस पर दम या स-दका वगैरा लाजिम

आने में उसूल येह है के (नईसे ओहराम की वजह से) हर वोह मन्नुअ काम जिसे करने की सूरत में मुईरिद पर ओक दम या ओक स-दका वगैरा देना लाजिम आओ, उस काम को करने की वजह से कारिन पर या जो कारिन के हुकम में है उस पर हज और उम्रे के ओहराम की वजह से दो दम और दो स-दके लाजिम आओगे, अलबत्ता यन्द् सूरतें ऐसी हैं जिन में एन पर सिई ओक दम या ओक स-दका वगैरा लाजिम आओगा (और एस की अस्ल वजह वोही है के एन चीजों का तअल्लुक नईसे ओहराम के मन्नुआत के साथ नहीं है)

﴿1﴾ जब हज या उम्रह करने वाला ओहराम के बिगैर भीकात से गुजर जाओ और वापस लौटने के बजाओ वही से हज्जे किरान का ओहराम बांध ले तो उस पर ओक दम लाजिम आओगा क्यूंके उस ने जो मन्नुअ काम किया है वोह हज्जे किरान का ओहराम बांधने से पहले किया है ﴿2﴾ अगर कारिन ने या जो कारिन के हुकम में है उस ने हरम का दरप्त काटा तो उस पर ओक जजा लाजिम है. क्यूंके दरप्त काटने का तअल्लुक ओहराम की जिनायत से नहीं है ﴿3﴾ अगर पैदल हज या उम्रह करने की मन्नत मानी इरि म-सलन हज के दिनों में हज्जे किरान किया और सुवार हो कर हज के लिये गया तो एस पर (सुवार होने की वजह से) ओक दम लाजिम है ﴿4﴾ अगर तवाहुज्जियारह जनाबत की हालत में किया या वुजू के बिगैर किया तो ओक ही जजा लाजिम होगी क्यूंके तवाइजे जियारत की जिनायत सिई हज के साथ ही

ખાસ છે. ઈસી તરહ અગર ખાલી ઉમ્રહ કરને વાલે ને ઉમ્રે કા તવાફ ઈસી તરહ ક્રિયા તો ઉસ પર એક જઝા (દમ યા સ-દકા) લાઝિમ હૈ ﴿5﴾ અગર કારિન યા જો કારિન કે હુકમ મેં હૈ વોહ કિસી ઉઝર કે બિગૈર ઈમામ સે પહલે અ-રફાત સે લૌટ આયા ઔર અભી સૂરજ ભી ગુરૂબ નહીં હુવા તો ઉસ પર એક દમ લાઝિમ હૈ ક્યૂંકે યેહ હજ કે વાજિબાત કે સાથ ખાસ હૈ ઔર ઉમ્રે કે એહરામ કે સાથ ઈસ કા કોઈ તઅલ્લુક નહીં ﴿6﴾ કિસી ઉઝર કે બિગૈર મુઝ્દલિફા કા વુકૂફ તર્ક કર દિયા તો કારિન ઔર જો કારિન કે હુકમ મેં હૈ ઉસ પર એક દમ લાઝિમ હૈ ﴿7﴾ અગર ઉસ ને ઝબ્હ કરને સે પહલે હલ્ક કરવા લિયા તો ઉસ પર એક દમ લાઝિમ હૈ ﴿8﴾ અગર ઉસ ને અય્યામે નહ્ર ગુઝરને કે બા'દ હલ્ક કરવાયા તો ઉસ પર એક દમ લાઝિમ હૈ ﴿9﴾ અગર ઉસ ને અય્યામે નહ્ર ગુઝરને કે બા'દ કુરબાની કા જાવનર ઝબ્હ ક્રિયા તો ઉસ પર એક દમ લાઝિમ હૈ ﴿10﴾ અગર ઉસ ને મુકમ્મલ રમ્ય ન કી યા ઈતની રમ્ય છોડ દી જિસ કી વજહ સે દમ યા સ-દકા લાઝિમ આએ તો ઉસ પર એક દમ યા એક સ-દકા લાઝિમ હૈ ﴿11﴾ અગર ઉસ ને ઉમ્રે યા હજ મેં સે કિસી એક કી સઅ્ય છોડ દી તો ઉસ પર એક દમ લાઝિમ આએગા ﴿12﴾ અગર ઉસ ને તવાફે સદ્ર (યા'ની તવાફે વદાઅ) છોડ દિયા તો ઉસ પર એક દમ લાઝિમ આએગા ક્યૂંકે ઈસ કા તઅલ્લુક આફાકી હાજી કે સાથ હૈ, ઉમ્રહ કરને વાલે કે સાથ મુત્લકન ઈસ કા કોઈ તઅલ્લુક નહીં.

નોટ : કારિન પર દો જઝાએં લાઝિમ હોને કા જો ઉસૂલ બયાન ક્રિયા ગયા ઉસ મેં હર વોહ શખ્સ દાખિલ હૈ જો દો એહરામ જમ્મ કરે ઓર દો એહરામોં કો જમ્મ કરના ચાહે સુન્નત સે હો જૈસે વોહ મુ-તમતેઅ જો હદ્ય સાથ લે કર આયા યા હદ્ય સાથ લે કર ન આયા થા લેકિન અભી ઉમ્રે કે એહરામ સે બાહર નહીં આયા થા કે ઉસ ને હજ કા એહરામ બાંધ લિયા યા સુન્નત સે ન હો જૈસે **مَكَرَّمَا** رَزَاكَ اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا કે રિહાઈશી યા જો મક્કએ પાક કે રિહાઈશી કે મા'ના મેં હૈ ઉસ ને હજજે કિરાન કા એહરામ બાંધ લિયા, ઈસી તરહ હર વોહ શખ્સ જિસ ને એક નિયત કે સાથ યા દો નિયતોં કે સાથ યા એક નિયત પર દૂસરી નિયત કો દાખિલ કર કે દો હજ યા દો ઉમ્રે કે એહરામ જમ્મ કર દિયે, યૂંહી અગર સો હજ યા સો ઉમ્રે કરને કી નિયત સે એહરામ બાંધા ઓર ઉન્હેં પૂરા કરને સે પહલે કોઈ જુર્મ સરઝદ હુવા તો ઉસ પર (ઉસ જુર્મ કે હિસાબ સે) સો જઝાએં લાઝિમ હોંગી. (الْمَسْأَلَةُ الْمُنْقَطِعَةُ لِلْقَارِي ص ٤٠٦-٤١٠ مُلَخَّصًا)

તવાફે ઝિયારત કે બારે મેં સુવાલ વ જવાબ

સુવાલ : ઓરત તવાફે ઝિયારત કર રહી થી, દૌરાને તવાફ માહવારી શુરૂઅ હો ગઈ, કયા કરે ?

જવાબ : ફૌરન તવાફ મૌકૂફ કર કે મસ્જિદુલ હરામ સે બાહર આ જાએ. અગર તવાફ જારી રખા યા મસ્જિદ કે અન્દર હી રહી તો ગુનહગાર હોગી.

સુવાલ : અગર ચાર ફેરોં કે બા'દ હૈઝ આયા તો ઓર કમ કે બા'દ આયા તો કયા હુકમ હૈ ?

जवाब : तवाफ़ के दौरान अगर औरत को हैज़ शुद्ध हो जाये तो याहे यार यक्कर कर लिये हों या न कर पाई हो, वोह तवाफ़ फ़ौरन तर्क कर दे के हैज़ की हालत में तवाफ़ करना या मस्जिद में रहना ज़ाईज नहीं और मस्जिदुल हुराम से बाहर निकल जाये, हो सके तो तयम्मुम कर के बाहर आये के येह अह्वत (या'नी अहतियात से ज़ियादा करीब) व मुस्तहब है. फिर जब औरत पाक हो जाये तो अगर यार या ईस से ज़ियादा यक्कर कर लिये थे तो बक़िया यक्कर कर के अपने उसी तवाफ़ को पूरा करे. और अगर तीन या ईस से कम यक्कर लगाये थे तो अब भी बिना (या'नी जहां से छोडा वहां से शुद्ध) कर सकती है. जिस औरत को तीन यक्करों के बाद हैज़ आया है अगर उसे अपने हैज़ की आदत मा'लूम थी और हैज़ आने से कबल उसे इतना वक्त मिला था के अगर वोह याहती तो यार यक्कर लगा सकती थी तो ईस सूरत में उस पर यार यक्कर मुअप्पर (या'नी ताप्पीर से) करने की वजह से हम लाज़िम होगी और वोह गुनहगार भी होगी. **बहारे शरीअत में है :** "यूंही अगर इतना वक्त उसे मिला था के तवाफ़ कर लेती और न किया अब हैज़ या निज़ास आ गया तो गुनहगार हुई." (बहारे शरीअत, जिल्द अय्यल, स. 1145) लेकिन जो औरत यार यक्कर लगा चुकी है उस पर इन तीन यक्करों में ताप्पीर करने की वजह से

कुछ लाजिम नहीं होगा क्यूंके तवाफ़े जियारत के अक्सर
 हिस्से का वक्त के अन्दर होना वाजिब है न के पूरे का.
 बहारे शरीअत, “उज के वाजिबात” में है : “तवाफ़े
 ँफ़ाजा का अक्सर हिस्सा अय्यामे नहूर में होना.
 अ-रफ़ात से वापसी के बा’द जो तवाफ़ किया जाता है
 उस का नाम तवाफ़े ँफ़ाजा है और ँसे तवाफ़े जियारत
 भी कहते हैं. तवाफ़े जियारत के अक्सर हिस्से से जितना
 जाँद है या’नी तीन फ़ेरे अय्यामे नहूर के गैर में भी हो
 सकता है.” (अज़न, स. 1049) और अगर औरत ने
 यार यक्कर पूरे कर लिये थे और बक़िया तीन मजबूरी
 ज्वाह बिगैर मजबूरी ँसी (या’नी माहवारी की) हालत
 में पूरे किये या वैसे ही यार फ़ेरे कर के बली गई और
 बक़िया फ़ेरे छोड़ दिये तो दम लाजिम होगा. और अगर
 येह हैज की हालत में किये हुअे तवाफ़ का ँआदा कर ले
 तो दम साक़ित हो जायेगा अगर अय्यामे नहूर के बा’द
 ँआदा करे. और अगर तीन पाकी की हालत में किये थे
 और बक़िया यार हैज की हालत में किये तो ब-दना
 लाजिम आयेगा नीज़ ँआदा करना वाजिब होगा.
 बहारे शरीअत में है : “तवाफ़े इर्ज़ कुल या अक्सर
 या’नी यार फ़ेरे जनाअत या हैज व निफ़ास में किया तो
 ब-दना है और बे वुजू किया तो दम और पहली
 सूरत में तहारत के साथ ँआदा वाजिब.” (अज़न,
 स. 1175) और पाक हो कर ँआदा करने की सूरत में

બ-દના સાકિત હો જાએગા જૈસા કે ઊપર બયાન હુવા.

હાએગા કી સીટ બુક હો તો તવાફે ઝિયારત કા કયા કરે ?

સુવાલ : હાએગા કી નિશસ્ત મહફૂઝ હો તો તવાફે ઝિયારત કા કયા કરે ?

જવાબ : નિશસ્ત મન્સૂખ કરવાએ ઔર બા'દે તહારત (યા'ની પાક હો કર ગુસ્લ કે બા'દ) તવાફે ઝિયારત કરે. અગર નિશસ્ત મન્સૂખ કરવાને મેં અપની યા હમ-સફરોં કી સખ્ત દુશ્વારી હો તો મજબૂરી કી સૂરત મેં તવાફે ઝિયારત કર લે મગર “બ-દના” યા'ની ગાય યા ઊંટ કી કુરબાની લાઝિમ આએગી ઔર તૌબા કરના ભી ઝરૂરી હૈ ક્યૂંકે જનાબત કી હાલત મેં મસ્જિદ મેં દાખિલ હોના ઔર તવાફ કરના દોનોં કામ ગુનાહ હૈં. અગર બારહવીં કે ગુરૂબે આફતાબ તક તહારત કર કે તવાફુઝિયારહ કા ઇઆદા કરને મેં કામ્યાબ હો ગઈ તો કફફારા સાકિત હો ગયા ઔર બારહવીં કે બા'દ અગર પાક હોને કે બા'દ મૌકઅ મિલ ગયા ઔર ઇઆદા કર લિયા તો “બ-દના” સાકિત હો ગયા મગર દમ દેના હોગા.

સુવાલ : બા'ઝ ખવાતીન હૈઝ રોકને કી ગોલિયાં ઇસ્તિ'માલ કરતી હૈં તો ઉન બારી કે દિનોં મેં જબ કે હૈઝ દવા કે ઝરીએ બન્દ હુવા હો તવાફુઝિયારહ કર સકતી હૈં યા નહીં ?

જવાબ : કર સકતી હૈં. (મગર અપની લેડી ડૉક્ટર સે મશ્વરા કર લેં ક્યૂંકે ઇન કા ઇસ્તિ'માલ બા'ઝ દફઆ નુક્સાન

देह होता है और अगर फ़ौरी नुक़सान का ग-ल-बअे
 उन हो तो दवा का इस्ति'माल मन्नुअ है. अलबत्ता
 हैज बन्द होने की सूरत में तवाफ़ दुरुस्त हो
 जायेगा।

सुवाल : अगर किसी ने बे वुजू या नापाक कपड़ों में
 तवाफ़ुज़्ज़ियारह कर लिया तो क्या हुक़म है ?

जवाब : बे वुजू तवाफ़े ज़ियारत किया तो दम वाजिब हो गया.
 हां, बा वुजू इआदा करना मुस्तहब है नीज़ इआदा
 कर लेने से दम भी वाजिब न रहता बल्के बारहवीं के
 बा'द भी अगर इआदा कर लिया तो दम साकित हो
 गया. नापाक कपड़ों में हर किस्म का तवाफ़ मक़रूहे
 (तन्ज़ीही) है. कर लिया तो कफ़ारा नहीं.

तवाफ़ की नियत का अहम तरीन म-दनी इल

सुवाल : दसवीं को तवाफ़ुज़्ज़ियारह के लिये हाज़िर हुअे मगर
 ग-लती से “नइली तवाफ़” की नियत कर ली, अब
 क्या करना चाहिये ?

जवाब : आप का तवाफ़े ज़ियारत अदा हो गया. येह बात
 ज़ेह्न नशीन कर लीजिये के तवाफ़ में नियत ज़रूर इर्क
 है के इस के बिगैर तवाफ़ होता ही नहीं मगर इस में
 येह शर्त नहीं के किसी मुअय्यन (या'नी मज्सूस) तवाफ़
 की नियत की जाये. हर तरह का तवाफ़ इकत “नियते
 तवाफ़” से अदा हो जाता है, बल्के जिस तवाफ़

को किसी भास वक्त के साथ मजसूस कर दिया गया है अगर उस मजसूस वक्त में आप ने किसी दूसरे तवाफ़ की निखत की ली, जब ली येह दूसरा न होगी बल्के वोह होगा जो मजसूस है. म-सलन उम्रे का अहराम बांध कर बाहर से छाजिर हुअे और उम्रे के तवाफ़ की निखत न की मुत्लकन (सिर्फ) “तवाफ़” की निखत की बल्के “नफ़ली तवाफ़” की निखत की, हर सूरत में येह उम्रे ही का तवाफ़ माना जायेगा. इसी तरह “किरान” का अहराम बांध कर छाजिर हुअे और आने के बा’द जो पहला तवाफ़ किया वोह “उम्रे” का है और दूसरा तवाफ़ “तवाफ़े कुदूम”.

(الْمَسْلُكُ الْمُنْتَقِطُ لِلْقَارِي ص ١٤٥)

सुवाल : अगर तवाफ़े जियारत किये बिगैर वतन यला गया तो क्या कफ़ारा है ?

जवाब : कफ़ारे से गुजारा नहीं क्यूंके उज ही न हुवा. इस का कोई ने’मल बदल (Alternative) नहीं लिहाजा लाजिमी है के दोबारा मक्कअे मुक्क़र्रमा शَرَفًا وَتَعْظِيمًا छाजिर हो और तवाफ़े जियारत करे, जब तक तवाफ़े जियारत नहीं करेगा औरतें हलाल नहीं होंगी याहे बरसों गुजर जायें. अगर औरत ने येह भूल की है तो जब तक तवाफ़े जियारत न करे वोह मर्द के लिये हलाल न होगी अगर कंवारों ने किया तो शादी कर ली

लें तो जभ तक तवाड़े जियारत न कर लें “उलाल” न छोंगे.

तवाड़े रुप्सत के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : तवाड़े वदाअ या'नी तवाड़े रुप्सत कर लिया फिर गाडी लेट हो गई अब नमाज के लिये मस्जिदुल हुराम जा सकते हैं या नहीं ? क्या वापसी के वक्त फिर तवाड़े रुप्सत भजा जाना होगा ?

जवाब : जा सकते हैं बल्के जितनी बार मौकअ मिले मजीद उम्रे और तवाड़ वगैरा भी कर सकते हैं. दोबारा तवाड़ करना वाजिब नहीं मगर कर ले तो मुस्तअब है. **سَدْرُشَرِيءِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** इरमाते हैं : सफ़र का ईरादा था तवाड़े रुप्सत कर लिया मगर किसी वजह से ठहर गया, अगर ईकामत की निय्यत न की तो वोही तवाड़ काई है मगर मुस्तअब येह है के फिर तवाड़ करे के पिछला काम तवाड़ रहे.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1151, २३६ص ۱ع عالمگیری)

तवाड़े रुप्सत का अहम मसअला

सुवाल : अगर उज के आ'द वतन रवानगी से कबल दो दिन जदा शरीफ़ में किसी अजीज के हां ठहरने का ईरादा है और फिर आ'द में “अजमे मदीना” है तो तवाड़े रुप्सत कब करें ?

જવાબ : જદા શરીફ જાને સે પહલે કર લીજિયે, કે તવાફે ઝિયારત કે બા'દ અગર નફલી તવાફ ભી ક્રિયા તો વોહી “અલ વદાઈ તવાફ” યા'ની તવાફે રુખ્સત હૈ ક્યૂંકે આફાકી કે લિયે તવાફે ઝિયારત કે ફૌરન બા'દ તવાફે રુખ્સત કા વક્ત શુરૂઅ હો જાતા હૈ ઔર આગે ગુઝરા કે હર તવાફ મુત્લકન તવાફ કી નિય્યત સે ભી અદા હો જાતા હૈ. અલ હાસિલ અગર રવાનગી સે કબ્લ તવાફે ઝિયારત કે બા'દ અગર કોઈ નફલી તવાફ કર લિયા હૈ તો તવાફે રુખ્સત અદા હો ચુકા.

સુવાલ : વક્તે રુખ્સત આફાકી ઔરત કો હૈઝ આ ગયા, તવાફે રુખ્સત કા ક્યા કરે? રુક જાએ યા દમ દે કર ચલી જાએ?

જવાબ : ઈસ પર અબ તવાફે રુખ્સત વાજિબ ન રહા, જા સકતી હૈ, દમ કી ભી હાજત નહીં.

(માખૂઝ અઝ બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 1151)

સુવાલ : જો મક્કએ મુકર્રમા **رَزَاكَهَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** યા જદા શરીફ મેં રહતે હૈં ક્યા ઉન પર ભી તવાફે રુખ્સત વાજિબ હૈ?

જવાબ : જી નહીં. જો લોગ મીકાત કે બાહર સે હજ પર આતે હૈં વોહ “આફાકી હાજી” કહલાતે હૈં, સિર્ફ ઉન હી પર બ વક્તે વાપસી તવાફે રુખ્સત વાજિબ હૈ.

સુવાલ : અહલે મદીના હજ કરેં તો વાપસી કે વક્ત ઉન પર તવાફે રુખ્સત વાજિબ હૈ યા નહીં?

जवाब : वाजिब है क्यूंके वोह “आझाकी हाज” है, मदीनअे मुनव्वरह **رَاَدَاَ اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** भीकात से भाहर है।

सुवाल : क्या उम्रह करने वाले पर भी तवाफ़े रुफ़सत वाजिब है ?

जवाब : हा नही, येह सिर्फ़ आझाकी हाज पर वक्ते रुफ़सत वाजिब है।

तवाफ़ के बारे में मु-तफ़रिह सुवाल व जवाब

सुवाल : भीउ के सबब या बे जयाली में किसी तवाफ़ के दौरान थोडी देर के लिये अगर सीना या पीठ का'बे की तरफ़ हो जाये तो क्या करें ?

जवाब : तवाफ़ में सीना या पीठ किये जितना झसिला तै किया हो उतने झसिले का धआदा (या'नी दोबारा करना) वाजिब है और अफ़जल येह है के वोह फ़ेरा ही नअे सिरे से कर लिया जाये।

धस्तिलामे हजर में हाथ कहां तक उठाये ?

सुवाल : तवाफ़ में ह-जरे अस्वद के सामने हाथ कन्धों तक उठाना सुन्नत है या नमाज़ी की तरह कानों तक ?

जवाब : धस में उ-लमा के मुफ़्तलिफ़ अक्वाल हैं. “इतावा हज व उम्रह” में जुदा जुदा अक्वाल नकल करते हुअे लिखा है : कानों तक हाथ उठाना मर्द के लिये है क्यूंके वोह नमाज़ के लिये भी कानों तक हाथ उठाता है और औरत कन्धों तक हाथ उठायेगी।

ઈસ લિયે કે વોહ નમાઝ કે લિયે યહીં તક હાથ ઉઠાતી હૈ. (ફતાવા હજ વ ઉમ્રહ, હિસ્સએ અવ્વલ, સ. 127)

સુવાલ : નમાઝ કી તરહ હાથ બાંધ કર તવાફ કરના કેસા ?

જવાબ : મુસ્તહબ નહીં હૈ, બચના મુનાસિબ હૈ.

તવાફ મેં ફેરોં કી ગિનતી યાદ ન રહી તો ?

સુવાલ : અગર દૌરાને તવાફ ફેરોં કી ગિનતી ભૂલ ગએ યા તા'દાદ કે બારે મેં શક વાકેઅ હુવા ઈસ પરેશાની કા ક્યા હલ હૈ ?

જવાબ : અગર યેહ તવાફ ફર્જ (મ-સલન ઉમ્રે કા તવાફ યા તવાફે ઝિયારત) યા વાજિબ (મ-સલન તવાફે વદાઅ) હૈ તો નએ સિરે સે શુરૂઅ કીજિયે, અગર કિસી એક આદિલ શખ્સ ને બતા દિયા કે ઈતને ફેરે હુએ તો ઉસ કે કૌલ પર અમલ કર લેના બેહતર હૈ ઓર દો^૨ આદિલ ને બતાયા તો ઉન કે કહે પર ઝરૂર અમલ કરે. ઓર અગર યેહ તવાફે ફર્જ યા વાજિબ નહીં મ-સલન તવાફે કુદૂમ (કે યેહ કારિન વ મુફરિદ કે લિયે સુન્નતે મુઅક્કદા હૈ) યા કોઈ નફલી તવાફ હૈ તો એસે મૌકઅ પર ગુમાને ગાલિબ પર અમલ કીજિયે. (રૈડાલ્મુહતાર ૩ ص ૦૮૨)

દૌરાને તવાફ વુઝૂ ટૂટ જાએ તો ક્યા કરે ?

સુવાલ : અગર તીસરે ફેરે મેં વુઝૂ ટૂટ ગયા ઓર નયા વુઝૂ કરને ચલે ગએ તો અબ વાપસ આ કર કિસ તરહ તવાફ શુરૂઅ કરેં ?

જવાબ : યાહું તો સાતોં ફેરે નએ સિરે સે શુરૂઅ કરેં ઓર યેહ ભી ઇખ્તિયાર હૈ કે જહાં સે છોડા વહીં સે શુરૂઅ કરેં. યાર સે કમ કા યેહી હુકમ હૈ. હાં યાર યા ઝિયાદા ફેરે કર લિયે થે તો અબ નએ સિરે સે નહીં કર સકતે જહાં સે છોડા થા વહીં સે કરના હોગા. “હ-જરે અસ્વદ” સે ભી શુરૂઅ કરને કી ઝરૂરત નહીં.

(ذُرِّمُخْتَارُو رَدُّ الْمُحْتَارِ ج 3 ص 82)

કતરે કે મરીઝ કે તવાફ કા અહમ મસઅલા

સુવાલ : અગર કોઈ કતરે વગૈરા કી બીમારી કી વજહ સે “મા’ઝૂરે શર-ઈ” હો, તવાફ કે લિયે ઉસ કા વુઝૂ કબ તક કારઆમદ રહતા હૈ ?

જવાબ : જબ તક ઉસ નમાઝ કા વક્ત બાકી રહતા હૈ. સદરુશરીઅહ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ફરમાતે હેં : મા’ઝૂર તવાફ કર રહા હૈ યાર ફેરોં કે બા’દ વક્તે નમાઝ જાતા રહા તો અબ ઇસે હુકમ હૈ કે વુઝૂ કર કે તવાફ કરે ક્યૂંકે વક્તે નમાઝ ખારિજ હોને સે મા’ઝૂર કા વુઝૂ જાતા રહતા હૈ ઓર બિગૈર વુઝૂ તવાફ હરામ અબ વુઝૂ કરને કે બા’દ જો બાકી હૈ પૂરા કરે ઓર યાર ફેરોં સે પહલે વક્ત ખત્મ હો ગયા જબ ભી વુઝૂ કર કે બાકી કો પૂરા કરે ઓર ઇસ સૂરત મેં અફઝલ યેહ હૈ કે સિરે સે કરે. (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 1101, 117 ص الْمَسْأَلَةُ الْمُتَقَرَّبَةُ)

सिर्फ़ कतरे आ जाने से कोई मा'जूरे शर-ई नहीं हो
 जाता, इस में काफ़ी तफ़सील है इस की मा'लूमात के
 लिये दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल
 मदीना की मत्बूआ 499 सङ्घात पर मुश्तमिल
 किताब, "नमाज़ के अडकाम" सङ्घा 43 ता 46 का
 मुता-लआ कीजिये.

औरत ने भारी के दिनों में नङ्घली तवाफ़ कर लिया तो ?

सुवाल : औरत ने भारी के दिनों में नङ्घली तवाफ़ कर लिया,
 क्या हुकम है ?

जवाब : गुनहगार भी हुई और दम भी वाजिब हुवा. युनान्घे
 अब्दलामा शामी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ इरमाते हैं : नङ्घली तवाफ़
 अगर जनाअत की (या'नी बे गुस्ली) हालत में (या
 औरत ने भारी के दिनों में) किया तो दम वाजिब है
 और बे वुजू किया तो स-दका. (161) رَدُّ الْمُنْحَرَجِ 3 ص 161 अगर
 बे गुस्ले ने पाकी हासिल करने के और बे वुजू ने वुजू
 करने के आ'द तवाफ़ का ईआदा कर लिया तो कफ़ारा
 साकित हो जायेगा. मगर कस्दन औसा किया हो तो
 तौबा करनी होगी क्यूंके भारी के दिनों में नीज़ बे वुजू
 तवाफ़ करना गुनाह है.

सुवाल : तवाफ़ में आठवें ફेरे को सातवां गुमान किया अब
 याद आ गया के येह तो आठवां ફेरा है अब क्या करे ?

जवाब : ँसी पर तवाङ्ग षतुड कर दीजिये. अगर जान भूङ कर आठवां डेरा शुडुअ डिया तो येड अेक जदीद (या'नी नया) तवाङ्ग शुडुअ डो गया अड ँस डे डी सात डेरे डूरे डीजिये. (अिषास ५१)

सुवाल : उडरे डे तवाङ्ग का अेक डेरा डूट गया तो कया कङ्ङारा डै ?

जवाब : उडरे का तवाङ्ग डङ्ग डै. ँस का अगर अेक डेरा डी डूट गया तो दड वाजिड डै, अगर डिल्कुल तवाङ्ग न डिया या अकसर (या'नी यार डेरे) तर्क डिये तो कङ्ङारा नडीं डलडे ँन का अदड करना लाजिड डै.

(أَبَابُ الْمَنَاسِكَ م ३०३)

सुवाल : कारिन या डुडरिद ने तवाङ्गे कुदूड तर्क डिया तो कया सजा डै ?

जवाब : उस पर डोड कङ्ङारा नडीं डेकिन सुनुते डुअककदड का तारिक डुवा और डुरा डिया ?

(أَبَابُ الْمَنَاسِكَ وَالْمَسْأَلَةُ الْمُتَقَبِّطُ م ३०३)

डस्जिदुल डरड डी डहली या दूसरी

डणिल से तवाङ्ग का डस्थला

सुवाल : डस्जिदुल डरड डी डतों से तवाङ्ग कर सकते डैं या नडीं ?

जवाब : अगर डस्जिदे डरड डी डत से का'डअे डुकदसा का तवाङ्ग डो तो डङ्ग तवाङ्ग अदड डो जाअेगा जड डे दरडियान डें दीवार वगैरा डजिड (आड, डदडी) न डो. डेकिन अगर नीये डताङ्ग डें गुनुजडश डै तो डत से तवाङ्ग डकडुड डै ँस डिये डे ँस

سूरत में बिला जरूरत मस्जिद की छत पर यदना और यलना पाया जाता है जो मक़रुह है। साथ ही इस हालत में तवाफ़, का'बे से करीब तर होने के बजाए बहुत दूर हो रहा है और बिला वजह अपने को सप्त मशक़त और तकान में डालना भी होता है, जब के करीब तर मक़ाम से तवाफ़ करना अज़ज़ल है और बिला वजह अपने को मशक़त में डालना मन्अ. हां अगर नीचे गुन्जार्श न हो या गुन्जार्श होने तक इन्तिज़ार से कोई मानेअ (या'नी रुकावट) हो तो छत से तवाफ़ बिला कराहत जा'रत है. وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَمُ. (माहनामा अशरफ़िया, जून 2005 ई. ग्यारहवां फ़िक्ली सेमीनार, स. 14)

दौराने तवाफ़ बुलन्द आवाज़ से मुनाजत पढना कैसा ?

सुवाल : दौराने तवाफ़ बुलन्द आवाज़ से हुआ, मुनाजत या ना'त शरीफ़ वगैरा पढना कैसा ?

जवाब : इतनी उंची आवाज़ से पढना जिस से दीगर तवाफ़ करने वालों या नमाज़ियों को तश्वीश या'नी परेशानी हो मक़रुहे तहरीमी, ना जा'रत व गुनाह है. अलबत्ता किसी को इज़ा न हो इस तरह गुन-गुनाने या'नी धीमी आवाज़ से पढने में हरज नहीं. यहां वोह साहिबान गौर इरमाअें जिन के मोबा'रल इन्ज़ से दौराने तवाफ़ ट्यून्ज़ बजती रहतीं और इबाहत गुज़ारों को परेशान करती रहती हैं इन सब को याहिये के तौबा करें. याद रबिये ! येह अहक़ाम सिर्फ़

જવાબ : હજ કી સમૂય વાજિબ હૈ, તો જિસ ને બિલકુલ સમૂય ન કી યા ચાર યા ચાર સે ઝિયાદા ફેરે તર્ક કર દિયે તો દમ વાજિબ હૈ, ચાર સે કમ ફેરે અગર તર્ક કિયે તો હર ફેરે કે બદલે મેં સ-દકા દે.

(બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 1177)

સુવાલ : જિસ કી હજ કી સમૂય રહ ગઈ, વતન ચલા ગયા ઔર દમ ભી ન દિયા, ફિર અલ્લાહ ﷻ ને ઉસે મૌકઅ દિયા ઔર દો સાલ બા'દ હજ કી સઆદત મિલ ગઈ, બાકી રહ જાને વાલી સમૂય કર સકતા હૈ યા નહીં ?

જવાબ : કર સકતા હૈ ઔર દમ ભી સાકિત હો ગયા. મગર યેહ સોચ કર સમૂય છોડ કર વતન ન ચલા જાએ કે ફિર આ કર કર લૂંગા કે ઝિન્દગી કા ભરોસા નહીં ઔર ઝિન્દા બચ ભી ગએ તો હાઝિરી યકીની નહીં.

સુવાલ : હજ કી સમૂય કે ચાર ફેરે કર લિયે ઔર એહરામ ખોલ દિયા યા'ની હલક વગૈરા કરવા લિયા અબ ક્યા કરે ?

જવાબ : તીન સ-દકે દે, અગર બા'દે હલક વગૈરા કે ભી બકિયા સમૂય અદા કર લે તો કફ્ફારા સાકિત હો જાએગા. યાદ રહે કે સમૂય કે લિયે ઝમાનએ હજ યા એહરામ શર્ત નહીં અગર અદા ન કી હો તો ઉમ્ર ભર મેં જબ ભી સમૂય બજા લાએ વાજિબ અદા હો જાએગા. (અબ કફ્ફારે કી હાજત નહીં રહેગી)

सुवाल : अगर तवाङ्ग से पहले ही सन्न्य कर ली तो क्या करना चाहिये ?

जवाब : **سَدْرُ شَرِيءِ اَحَدٍ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** इरमाते हैं : सन्न्य के लिये शर्त यह है के पूरे तवाङ्ग या तवाङ्ग के अक्सर हिस्से के बा'द हो, लिहाजा अगर तवाङ्ग से पहले या तवाङ्ग के तीन इरे के बा'द सन्न्य की तो न हुई और सन्न्य के कबल अहराम होना भी शर्त है, ज्वाह उज का अहराम हो या उम्रे का, अहराम से कबल सन्न्य नहीं हो सकती और उज की सन्न्य अगर चुकूँ अ-रङ्ग के कबल करे तो वक्ते सन्न्य में भी अहराम होना शर्त है और चुकूँ अ-रङ्ग के बा'द हो तो सुन्नत यह है के अहराम जोल युका हो और उम्रे की सन्न्य में अहराम वाजिब है या'नी अगर तवाङ्ग के बा'द सर मुंडा लिया फिर सन्न्य की तो सन्न्य हो गई मगर यूँके वाजिब तर्क हुवा लिहाजा दम वाजिब है. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1109)

बोस व कनार के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : अहराम की हालत में बीवी को हाथ लगाना कैसा ?

जवाब : बीवी को बिला शह्वत हाथ लगाना जाईज है मगर शह्वत के साथ हाथ में हाथ डालना या बदन को छूना हाराम है. अगर शह्वत की हालत में बोसो कनार किया या जिस्म को छुवा तो दम वाजिब हो जायेगा. यह अङ्गाल औरत के साथ हो या

અમરદ કે સાથ દોનોં કા એક હી હુકમ હૈ .

(نَزْمُ خُتَارٍ وَرَدُّ الْمُحْتَارِ ج ۳ ص ۱۶۷) अगर मोहरिमा को भी मर्द के धन अफ़्वाल से लज़्जत आये तो उसे भी दम देना पड़ेगा. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1173)

सुवाल : अगर तसव्वुर जम जाये या शर्मगाह पर नज़र पड जाये और धन्जाल हो (या'नी मनी निकल) जाये तो क्या कफ़ारा है ?

जवाब : धस सूरत में कोई कफ़ारा नहीं. (۱۴۴۱ھ ۱۷/۱۱) रहा हराम कर्दा औरत या अमरद से बद्द निगाही करना या कस्दन उन का “गन्दा” तसव्वुर बांधना येह अहराम के धलावा भी हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है. नीज़ धस तरह के गन्दे वस्वसे भी आये तो اللَّهُمَّ لُتِّفْ اَنْدُوکُ هोंने के बजाये इरन तवज्जोह उटाये. धसी तरह औरतो के लिये भी येही अहकाम है.

सुवाल : अगर अहतिलाम हो जाये तो ?

जवाब : कोई कफ़ारा नहीं. (۱۴۴۱ھ ۱۷/۱۱)

सुवाल : अगर ખુદા ન ખ્વાસ્તા કોઈ મોહરિમ મુશ્ત ઝની (હેંડ પ્રેકિટસ) કા મુર-તકિબ હુવા તો કયા કફારા હૈ ?

જવાબ : अगर धन्जाल हो गया (या'नी मनी निकल गई) तो दम वाजिब है वरना मकरुह. (۱۷/۱۱) येह ई'ल, ख्वाह अहराम में हो या न हो बहर हाल ना जाईज व

હરામ ઔર જહન્નમ મેં લે જાને વાલા કામ હૈ. આ'લા
 હઝરત ઈમામ અહમદ રજા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن
 ફરમાતે હૈં : જો મુશ્ત ઝની (યા'ની હેંડ પ્રેક્ટિસ Hand
 practice) કરતે હૈં અગર વોહ બિગૈર તૌબા કિયે
 મર ગએ તો બરોઝે કિયામત ઈસ હાલ મેં ઉઠેંગે કે
 ઉન કી હથેલિયાં ગાભન (યા'ની હામિલા) હોંગી જિસ
 સે લોગોં કે મજમએ કસીર મેં ઉન કી રુસ્વાઈ હોગી.

(મુલખ્ખસ અઝ ફતાવા ૨-ઝવિયા, જિ. 22, સ. 244)

એહરામ મેં અમ્રદ સે મુસા-ફહા કિયા ઔર.....?

સુવાલ : અગર અમ્રદ (યા'ની ખૂબ સૂરત લડકે) સે મુસા-ફહા
 કિયા ઔર શહ્વત આ ગઈ તો ક્યા સઝા હૈ ?

જવાબ : દમ વાજિબ હો ગયા. ઈસ મેં અમ્રદ¹ ઔર ગૈરે
 અમ્રદ કી કોઈ કૈદ નહીં, અગર દોનોં કો શહ્વત
 હુઈ ઔર દૂસરા ભી મોહરિમ હૈ તો વોહ ભી દમ દે.

મિયાં બીવી કા હાથ મેં હાથ ડાલ કર ચલના

સુવાલ : એહરામ મેં મિયાં બીવી કે એક દૂસરે કા હાથ પકડ
 કર તવાફ યા સઅ્ય કરને મેં અગર શહ્વત આ ગઈ
 તો ?

1 : વોહ લડકા યા મર્દ જિસ કો દેખને યા છૂને સે શહ્વત આતી હો એહરામ
 હો યા ન હો ઉસ સે દૂર રહના લાઝિમી હૈ. અગર મુસા-ફહા કરને યા ઉસે
 છૂને યા ઉસ કે સાથ ગુફ્ત-ગૂ કરને સે શહ્વત ભડકતી હો તો અબ ઉસ કે
 સાથ યેહ અફઆલ કરને જાઈઝ નહીં. ઈસ કી તફ્સીલી મા'લૂમાત કે લિયે
 દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કા મત્બૂઆ
 રિસાલા, “કૌમે લૂત કી તબાહ કારિયાં” (45 સફહાત) પઢિયે.

જવાબ : જિસ કો શહવત આઈ ઉસ પર દમ વાજિબ હૈ અગર દોનોં કો આ ગઈ તો દોનોં પર હૈ. અગર એહરામ વાલે મદોં ને એક દૂસરે કા હાથ પકડા હો જબ ભી યેહી હુકમ હૈ.

હમ બિસ્તરી કે બારે મેં સુવાલ વ જવાબ

સુવાલ : ક્યા જિમાઅ (યા'ની હમ બિસ્તરી) સે હજ ફાસિદ ભી હો સકતા હૈ ?

જવાબ : વુકૂફે અ-રફાત સે પહલે જિમાઅ ક્રિયા (યા'ની હમ બિસ્તરી કી) તો હજ ફાસિદ હો ગયા. ઉસે હજ કી તરહ પૂરા કર કે દમ દે ઓર સાલે આયન્દા હી મેં ઈસ કી કઝા કર લે. (૧૬૬૭૮૭૭) ઓરત ભી એહરામે હજ મેં થી તો ઉસ પર ભી યેહી લાઝિમ હૈ ઓર અગર ઈસ બલા મેં ફિર પડ જાને કા ખૌફ હો તો મુનાસિબ હૈ કે કઝા કે એહરામ સે ખત્મ તક દોનોં એસે જુદા રહેં કે એક દૂસરે કો ન દેખે. (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 1173)

સુવાલ : અગર મસ્અલા મા'લૂમ ન હો યા ભૂલ સે જિમાઅ (યા'ની હમ બિસ્તરી) કર બૈઠા ફિર ?

જવાબ : ભૂલ કર યા ન જાનતે હુએ હમ બિસ્તરી કી હો યા જાન બૂઝ કર, અપની મરઝી સે કી હો યા બિલજબ્ર સબ કા એક હુકમ હૈ. બલકે દૂસરી મજલિસ મેં દૂસરી બાર જિમાઅ કર બૈઠા તો દૂસરા દમ ભી દેના હોગા, હાં તર્કે હજ કા ઈરાદા કર લેને કે બા'દ જિમાઅ સે દમ લાઝિમ ન હોગા.

सुवाल : क्या जिमाअ से छाज का “अहराम” ખत्म हो जाता है ?

जवाब : ज़ नहीं, अहराम ब दस्तूर बाकी है जो यीजें मोहरिम के लिये ना ज़ाईज हैं वोह अब ली ना ज़ाईज हैं और वोही तमाम अहकाम हैं. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1175)

सुवाल : अगर हज फ़ासिद हो जाये और उसी वक्त नया अहराम उसी साल के हज के लिये बांध ले तो ?

जवाब : इस तरह न कफ़ारे से ખलासी होगी न अब इस साल का हज हो सकेगा के वोह तो फ़ासिद हो चुका, बहर हाल साले आयन्दा की कज़ा से बय नहीं सकेगा.

(अज़न)

सुवाल : मु-तमत्तेअ ने उम्रह कर के अहराम ખोल दिया है और अली मनासिके हज शुद्ध होने में कई रोज़ बाकी हैं, बीवी के साथ “मिलाप” हो सकता है या नहीं ?

जवाब : जब तक दोनों ने हज का अहराम नहीं बांधा, हो सकता है.

सुवाल : अगर उम्रे का अहराम बांधने के बा’द तवाफ़ वगैरा से कबल हम बिस्तरी कर ली तो क्या कफ़ारा है ?

जवाब : उम्रे में तवाफ़ के चार ફेरे करने से पहले अगर जिमाअ किया तो उम्रह फ़ासिद हो गया, उम्रह फिर से करे और हम ली देना होगा, अगर चार ફेरे या मुकम्मल तवाफ़ के बा’द किया तो सिर्फ़ हम वाजिब हुवा उम्रह सहीह हो गया. (१११७/७३३)

सुवाल : अगर मो'तमिर (या'नी उम्रुह करने वाला) तवाफ़ व सअ्य के बा'द मगर सर मुंडाने से पहले जिमाअ में मुभ्तला हो गया फिर तो कोई सज़ा नहीं ?

जवाब : क्यूं नहीं ! अब भी दम वाजिब होगा, हल्क या कसर करवाने के बा'द ही बीवी हलाल होगी.

नाप्पुन तराशने के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : मस्अला मा'लूम नहीं था और दोनों हाथों और दोनों पाँउ के नाप्पुन काट लिये अब क्या होगा ? अगर कफ़ारा हो तो वोह भी बता दीजिये.

जवाब : जानना या न जानना यहाँ उज़ूर नहीं होता, प्वाह भूल कर जुर्म करें या जान बूझ कर अपनी मरज़ी से करें या कोई ज़बर दस्ती करवाये कफ़ारा हर सूरत में देना होगा. **سَدْرُ شَرِيحَةِ الْعَلَمَةِ الرَّحْمَةِ لِلَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** हरमाते हैं :
 एक हाथ एक पाँउ के पाँयों नाप्पुन कतरे या बीसों एक साथ तो एक दम है और अगर किसी हाथ या पाँउ के पूरे पाँय न कतरे तो हर नाप्पुन पर एक स-दका, यहाँ तक के अगर यारों हाथ पाँउ के यार यार कतरे तो सोलह स-दके दे मगर येह के स-दकों की कीमत एक दम के बराबर हो जाये तो कुछ कम कर ले या दम दे और अगर एक हाथ या पाँउ के पाँयों एक जस्से में और दूसरे के

पांयों दूसरे जल्से में कतरे तो दो दम लाजिम हैं और यारों हाथ पाउं के यार जल्सों में तो यार दम.

(बछारे शरीअत, जि. 1, स. 1172, ۴۶۴۱۷۵۷)

सुवाल : नाप्पुन अगर दांत से कतर डाले तो क्या सजा है ?

जवाब : प्वाल ज्बेड से काटें या याकू से, नाप्पुन तराश (या'नी नेल कटर) से तराशें या दांतों से कतरें सब का अेक ही हुकम है. (बछारे शरीअत, जि. 1, स. 1172)

सुवाल : मोहरिम किसी दूसरे के नाप्पुन काट सकता है या नहीं ?

जवाब : नहीं काट सकता, ँस के वोही अडकाम हैं जे दूसरों के बाल दूर करने के हैं. (السَّلَةُ الْمُتَّقِصَةُ لِلْقَارِئِ ص ۳۳۲)

बाल दूर करने के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : अगर ! اللَّهُمَّ किसी मोहरिम ने अपनी दाढी मुंडवा दी तो क्या सजा है ?

जवाब : दाढी मुंडवाना या षशषशी करवा देना वैसे भी हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है और अेहराम की हालत में सप्त हराम. अलबत्ता अेहराम की हालत में सर के बाल भी नहीं काट सकते. बहर हाल दौराने अेहराम के हुकम के मु-तअद्लिक सदरुशरीअह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं : सर या दाढी के यहारुम बाल या जियादा किसी तरह दूर किये तो दम है और यहारुम से कम में स-दका और अगर खंदला है या दाढी में कम बाल हैं, तो अगर

यौथाई (1/4) की भिक्कार हैं तो कुल में दम वरना स-दका.
यन्त जगल से थोडे थोडे बाल लिये तो सब का मजमूआ
अगर यदारुम को पडोयता है तो दम है वरना स-दका.

(बडारे शरीअत, जि. 1, स. 1170, 109 व 3 ص 2) رَدُّ الْمُحْتَارِ ج 3

सुवाल : औरत अपने बाल ले सकती है या नहीं ?

जवाब : नहीं. औरत अगर पूरे सर या यौथाई (1/4) सर के
बाल अक पोरे के बराबर कतर ले तो दम दे और
कम में स-दका. (أَبَابُ التَّنَاسُكِ ص 217)

सुवाल : मोहरिम ने गरदन या बगल या मूअे जेरे नाइ ले
लिये तो क्या हुकम है ?

जवाब : पूरी गरदन या पूरी अक बगल में दम है और कम में
स-दका अगर्जे निरुह या जियादा हो. येही हुकम जेरे
नाइ का है. दोनों बगलें पूरी मुंडाअे जब त्मी अक
ही दम है.

(बडारे शरीअत, जि. 1, स. 1170, 109 व 3 ص 2) رَدُّ الْمُحْتَارِ ج 3

सुवाल : सर, दाढी, बगलें वगैरा सब अक ही मजलिस में
मुंडवा दिये तो कितने कइसारे होंगे ?

जवाब : ज्वाह सर से ले कर पाउं तक सारे बदन के बाल अक
ही मजलिस में मुंडवाअें तो अक ही कइसारा है.
अगर अलग अलग आ'जा के अलग अलग
मजलिस में मुंडवाअेंगे तो उतने ही कइसारे होंगे.

(رَدُّ الْمُحْتَارِ ج 3 ص 109-111)

सुवाल : अगर वुजू करने में बाल जडते हों तो क्या ँस पर ल्मी कङ्ङरल है ?

जवाल : क्यूनहीं ! वुजू करने में, ढुजाने में या कंधा करने में अगर दू या तीन बाल गिरे तो हर बाल के बदले में अेक अेक मुद्दी अनाज या अेक अेक टुकडा रूटी या अेक छुवारा ढैरलत करें और तीन से जियादल गिरे तो स-दकल देनल डूगल. (बडारे शरीअत, जि. 1, स. 1171)

सुवाल : अगर ढानल ढकाने में यूल्डे की गरढी से कुछ बाल जल गअे तो ?

जवाल : स-दकल देनल डूगल. (अैजन)

सुवाल : मूँछ सलङ् करवल दी, क्यल कङ्ङरल है ?

जवाल : मूँछ अगर्ये ढूरी मुंडवलें या कतरवलें स-दकल है.

(अैजन)

सुवाल : अगर सीने के बाल मुंडवल दिये तो क्यल करे ?

जवाल : सर, दलढी, गरदन, बगल और मूअे जेरे नलङ् के ँललवल बलकी आ'जल के बाल मुंडवलने में सलङ् स-दकल है. (अैजन)

सुवाल : बाल जडने की बलढारी डू और ढुद बढुद बाल जडते हों तो ँस पर कुँछ रलआयत ?

जवाल : अगर बलगैर डलथ लगलअे बाल गलर जलअें या बलढारी से तढलढ बाल ल्मी जड जलअें तो कुँछ कङ्ङरल नहीं. (अैजन)

सुवाल : मोहरिम ने दूसरे मोहरिम का सर मूंडा तो क्या सजा है ?

जवाब : अगर अहराम धोलने का वक्त आ गया है. तो अब दोनों अेक दूसरे के बाल मूंड सकते हैं. और अगर वक्त नहीं आया तो ँस पर कर्फारे की सूरत मुप्तलिक है. अगर मोहरिम ने मोहरिम का सर मूंडा तो जिस का सर मूंडा गया उस पर तो कर्फारा है ँी, मूंडने वाले पर भी स-दका है और अगर मोहरिम ने गैरे मोहरिम का सर मूंडा या मूँछें लीं या नाधुन तराशे तो मसाकीन को कुछ धैरात कर दे.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1142, 1171)

सुवाल : गैरे मोहरिम, मोहरिम का सर मूंड सकता है या नहीं ?

जवाब : वक्त से पहले नहीं मूंड सकता, अगर मूँडेगा तो मोहरिम पर तो कर्फारा है ँी, गैरे मोहरिम को भी स-दका देना ँोगा. (अैजन, 1171)

सुवाल : अगर बाल सफा पाउडर या CREAM से बाल साफ़ किये तो क्या मस्अला है !

जवाब : बहारे शरीअत में है : मूंडना, कतरना, मोयने से लेना या किसी यीज से बाल उडाना, सब का अेक हुकम है. (अैजन)

धुशबू के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : अहराम की ँालत में ँत्र की शीशी ँाथ में ली और ँाथ में धुशबू लग गँ तो क्या कर्फारा है ?

જવાબ : અગર લોગ દેખ કર કહેં કે યેહ બહુત સી ખુશ્બૂ લગ ગઈ હૈ અગર્યે ઉઝૂવ કે થોડે સે હિસ્સે મેં લગી હો તો દમ વાજિબ હૈ વરના મા'મૂલી સી ખુશ્બૂ ભી લગ ગઈ તો સ-દકા હૈ.

(માખૂઝ અઝ બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 1163)

સુવાલ : સર મેં ખુશ્બૂદાર તેલ ડાલ લિયા તો ક્યા કરે ?

જવાબ : અગર કોઈ બડા ઉઝૂવ મ-સલન રાન, મુંહ, પિંડલી યા સર સારે કા સારા ખુશ્બૂ સે આલૂદા હો જાએ ખ્વાહ ખુશ્બૂદાર તેલ કે ઝરીએ હો યા ઈત્ર સે, દમ વાજિબ હો જાએગા. (ઐઝન)

સુવાલ : બિછોને યા એહરામ કે કપડે પર ખુશ્બૂ લગ ગઈ યા કિસી ને લગા દી તો ?

જવાબ : ખુશ્બૂ કી મિક્દાર દેખી જાએગી, ઝિયાદા હૈ તો દમ ઔર કમ હૈ તો સ-દકા.

સુવાલ : જો કમરા (ROOM) રિહાઈશ કે લિયે મિલા ઉસ મેં કારપેટ, બિછોના, તક્યા, ચાદર વગૈરા ખુશ્બૂદાર હોં તો ક્યા કરે ?

જવાબ : મોહરિમ ઈન ચીઝોં કે ઈસ્તિ'માલ સે બચે. અગર એહતિયાત ન કી ઔર ઈન સે ખુશ્બૂ છૂટ કર બદન યા એહરામ પર લગ ગઈ તો ઝિયાદા હોને કી સૂરત મેં દમ ઔર કમ મેં સ-દકા વાજિબ હોગા. ઔર અગર ન લગે તો કોઈ કફ્ફારા નહીં મગર ઈસ સૂરત

में बयना बेहतर है. मोहरिम को याहिये मकान वाले से मु-तबाहिल धन्तिजाम का कहे, येह भी हो सकता है के इर्श और बिछोने वगैरा पर कोई बे पुशबू यादर बिछा ले, तक्ये का गिलाफ़ (cover) तब्दील कर ले या उसे किसी बे पुशबू यादर में लपेट ले.

सुवाल : जो पुशबू निय्यते अहराम से पहले बदन पर लगाई थी क्या निय्यते अहराम के बा'द उस पुशबू को जाईल (दूर) करना जरूरी है ?

जवाब : नहीं, सहरुशरीअह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं : अहराम से पहले बदन पर पुशबू लगाई थी, अहराम के बा'द इल कर और आ'जा को लगी तो कफ़ारा नहीं. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1163)

सुवाल : अहराम की निय्यत से पहले गले में जो बेग था उस में या बेह्ट की जेब में धत्र की शीशी थी, निय्यत के बा'द याद आने पर उसे निकालना जरूरी है या रहने दें ? अगर इसी शीशी की पुशबू हाथ में लग गई तब भी कफ़ारा होगा ?

जवाब : अहराम की निय्यत के बा'द वोह धत्र की शीशी बेग या बेह्ट से निकालना जरूरी नहीं और बा'द में उस शीशी की पुशबू हाथ वगैरा पर लग गई तो कफ़ारा लाजिम आयेगा, क्यूंके येह वोह पुशबू नहीं जो अहराम की निय्यत से पहले कपडे या बदन पर लगाई गई हो.

सुवाल : गले में निख्यत से पहले जो बेग पहना वोह पुशबूदार था, नीज उस के अन्दर पुशबूदार रुमाल या पुशबूवाली तवाफ़ की तस्बीह वगैरा भी मौजूद, एन का मोहरिम 'इस्ति'माल कर सकता है या नहीं ?

जवाब : एन चीजों की पुशबू कस्टन (या'नी ज्ञान बूज कर) सूँघना मक़रूह है और इस अेहतियात के साथ 'इस्ति'माल की 'इजाजत है के अगर उस की तरी बाकी है तो उतर कर अेहराम और बदन को न लगे लेकिन जाहिर है के तस्बीह में ऐसी अेहतियात करना निहायत मुश्किल है बल्के रुमाल में भी बयना मुश्किल है. लिहाजा एन के 'इस्ति'माल से बयने में ही आङ्खित है.

सुवाल : अगर दो तीन आ'इद पुशबूदार यादरें निख्यत से कबल गोद में रख ले या ओढ ले अब अेहराम की निख्यत करे. निख्यत के बा'द आ'इद यादरें हटा दे, उसी अेहराम की हालत में अब उन यादरों का 'इस्ति'माल करना कैसा ?

जवाब : अगर तरी बाकी है तो उन को 'इस्ति'माल की 'इजाजत नहीं और अगर तरी ખत्म हो चुकी है सिर्फ़ पुशबू बाकी है तो 'इस्ति'माल की 'इजाजत है मगर मक़रूहे (तन्जीही) है. **سَدْرُشَّارِيْهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** इरमाते हैं : अगर अेहराम से पहले बसाया (या'नी पुशबूदार किया) था और अेहराम में पहना तो मक़रूह है मगर क़फ़ारा नहीं. (अैज्ज, स. 1165)

કરવાના છે. ચૂંકે ઝિયાદા ખુશ્બૂ લગ જાને પર દમ હે
 લિહાઝા હો સકતા હૈ અપના નફસ ઝિયાદા ખુશ્બૂ કો
 ભી થોડી હી કહે)

સુવાલ : મોહરિમ જાન બૂઝ કર ખુશ્બૂદાર ફૂલ સૂંઘ સકતા હે
 યા નહીં ?

જવાબ : નહીં. મોહરિમ કા બિલ કસ્દ (યા'ની જાન બૂઝ કર)
 ખુશ્બૂ યા ખુશ્બૂદાર ચીઝ સૂંઘના મકરૂહે તન્જીહી હે,
 મગર કફફારા નહીં. (ઐઝન, 1163)

સુવાલ : બે પકાઈ ઇલાયચી યા ચાંદી કે વરક વાલે ઇલાયચી
 કે દાને ખાના કેસા ?

જવાબ : હરામ હૈ. અગર ખાલિસ ખુશ્બૂ, જૈસે મુશ્ક,
 ઝા'ફરાન, લોંગ, ઇલાયચી, દારચીની, ઇતની ખાઈ
 કે મુંહ કે અક્સર હિસ્સે મેં લગ ગઈ તો દમ વાજિબ
 હો ગયા ઔર કમ મેં સ-દકા. (ઐઝન, 1164)

સુવાલ : ખુશ્બૂદાર ઝર્દા, બિરયાની ઔર કોરમા, ખુશ્બૂ વાલી
 સૌફ, છાલિયા, કીમ વાલે બિસ્કિટ, ટોફિયાં વગૈરા
 ખા સકતે હૈં યા નહીં ?

જવાબ : જો ખુશ્બૂ ખાને મેં પકા લી ગઈ હો, યાહે અબ ભી
 ઉસ સે ખુશ્બૂ આ રહી હો, ઉસે ખાને મેં મુઝા-યકા
 નહીં. ઇસી તરહ ખુશ્બૂ પકાતે વક્ત તો નહીં ડાલી
 થી ઊપર ડાલ દી થી મગર અબ ઉસ કી મહક ઉડ
 ગઈ ઉસ કા ખાના ભી જાઈઝ હૈ, અગર બિગૈર પકાઈ
 હુઈ ખુશ્બૂ ખાને યા મા'જૂન વગૈરા દવા મેં મિલા

दी गई तो अब उस के अज्जा गिजा या दवा वगैरा बे
 पुशबू अश्या के अज्जा से जियादा हैं तो वोह पादिस
 पुशबू के हुकम में है और कफ़ारा है के मुंल के अक्सर
 हिस्से में पुशबू लग गई तो दम और कम में लगी तो
 स-दका और अगर अनाज वगैरा की मिक्दार जियादा
 है और पादिस पुशबू कम तो कोई कफ़ारा नहीं, हां
 पादिस पुशबू की मलक आती हो तो मक़ड़े तन्जीही है.

सुवाल : पुशबूदार शरबत, कूट जयूस, ठन्डी बोतलें वगैरा
 पीना कैसा है ?

जवाब : अगर पादिस पुशबू जैसे सन्दल वगैरा का शरबत
 है तो वोह शरबत तो पका कर ही बनाया जाता है,
 लिहाजा मुत्लकन पीने की इजाजत है और अगर
 उस के अन्दर पुशबू पैदा करने के लिये कोई एसेन्स
 (Essense) डाला जाता है तो मेरी मा'लूमात के
 मुताबिक उस के डालने का तरीका येह है के पकाये
 जाने वाले शरबत में उस के ठन्डा होने के बाद डाला
 जाता है और यकीनन येह कलील मिक्दार में होता
 है तो इस का हुकम येह है के अगर उसे तीन बार या
 जियादा पिया तो दम है वरना स-दका. बहारे
 शरीअत में है : “पीने की यीज में अगर पुशबू मिलाई
 अगर पुशबू गादिब है (तो दम है) या पुशबू कम है
 मगर उसे तीन बार या जियादा पिया तो दम है
 वरना स-दका.” (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1165)

सुवाल : मोडरिम नारियल का तेल सर वगैरा में लगा सकता है या नहीं ?

जवाब : कोई हरज नहीं, अलबत्ता तिल और जैतून का तेल पुशबू के हुकूम में है. अगर्ये ९न में पुशबू न हो येह जिस्म पर नहीं लगा सकते. हां, ९न के खाने, नाक में यढाने, ङम्म पर लगाने और कान में टपकाने में कङ्ङारा वाजिब नहीं. (अैज्ज, 1166)

सुवाल : अेहराम की हालत में आंभों में पुशबूदार सुरमा लगाना कैसा है ?

जवाब : हराम है. सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीकह उजरते अल्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी رحمة الله القوي फरमाते हैं : पुशबूदार सुरमा अेक या दो बार लगाया तो स-दका दे, ९स से ज़ियादा में दम और जिस सुरमे में पुशबू न हो उस के ९स्ति'माल में हरज नहीं, जब के ब उरत हो और बिला उरत मक़ुह (व खिलाई औला). (अैज्ज, 1164)

सुवाल : पुशबू लगा ली और कङ्ङारा त्मी दे दिया तो अब लगी रहने दें या क्या करें ?

जवाब : पुशबू लगाना जब जुर्म करार पाया तो बदन या कपडे से दूर करना वाजिब है और कङ्ङारा देने के बा'द अगर जाँल (या'नी दूर) न किया तो फिर दम वगैरा वाजिब होगा. (अैज्ज, 1166)

अेहराम में पुशबूदार साबुन का ९स्ति'माल

सुवाल : डिजाजे मुकदस के डोटलों में पुशबूदार साबुन, मुअत्तर

शेम्पू और पुशू वाले पाउउर हाथ धोने के लिये रभे जाते हैं और अहराम वाले बिला तकल्लुफ़् एन को एस्ति'माल करते हैं, तय्यारे में और अरपोर्ट पर भी अहराम वालों को येही मिलता है, कपडे और भरतन धोने का पाउउर भी डिजाजे मुकद्दस में पुशूदार ही होता है. एन चीजों के बारे में हुक्मे शर-ए क्या है ?

जवाब : अहराम वाले एन चीजों को एस्ति'माल करें तो कोए कफ़ारा लाजिम नहीं आयेगा. (अलबत्ता पुशू की निखत से एन चीजों का एस्ति'माल मकरूह है.)

(भापूज अज : अहराम और पुशूदार साबुन)¹

मोहरिम और गुलाब के फूलों के गजरे

सुवाल : अहराम की निखत कर लेने के बा'द अरपोर्ट वगैरा पर गुलाब के फूलों का गजरा पहना जा सकता है या नहीं ?

जवाब : अहराम की निखत के बा'द गुलाब का हार न पहना जाये, क्यूंके गुलाब का फूल जुद अैन (जाविस) पुशू है और एस की मलक बदन और लिबास में बस भी जाती है. युनान्ये अगर एस की मलक लिबास में बस गई और कसीर (या'नी जियादा)

1 : दा'वते इस्लामी की मजलिस "तलकीकाते शर'य्या" ने उम्मत की रहनुमाई के लिये इत्तिफाके राय से येह इतवा मुरतब इरमाया, मजीद तीन मुक्तदर उ-लमाअे अहले सुन्नत (1) मुक्तिये आ'जम पाकिस्तान अल्लामा अब्दुल कयूम हजारावी (2) श-रके मिल्लत हजरते अल्लामा मुहम्मद अब्दुल हकीम शरफ़् कादिरि और (3) कैजे मिल्लत हजरते अल्लामा कैज अहमद उवैसी (رحمۃ اللہ تعالیٰ) की तस्दीक हासिल की और मक-त-बतुल मदीना ने बनाम "अहराम और पुशूदार साबुन" येह रिसावा शाअेअ किया. तफ़सीलात के शा'ईकीन एसे हासिल करें या दा'वते इस्लामी की वेबसाइट : www.dawateislami.net पर मुला-हजा इरमाअे.

है और यार पहर या'नी बारह घन्टे तक उस कपडे को पहने रहा तो दम है वरना स-दका और अगर पुशबू थोड़ी है और कपडे में अेक बालिशत या ँस से कम (हिससे) में लगी है और यार पहर तक ँसे पहने रहा तो "स-दका" और ँस से कम पहना तो अेक मुट्ठी गन्दुम देना वाजिब है. और अगर पुशबू कलील (या'नी थोड़ी) है, लेकिन बालिशत से जियादा हिससे में है, तो कसीर (या'नी जियादा) का ही हुकम है या'नी यार पहर में "दम" और कम में "स-दका" और अगर येह डार पहनने के बा वुजूद कोर्ण मलक कपडों में न बसी तो कोर्ण कर्फ़ारा नहीं. (अहराम और पुशबूदार साबुन, स. 35 ता 36)

सुवाल : किसी से मुसा-इहा किया और उस के हाथ से मोहरिम के हाथ में पुशबू लग गई तो ?

जवाब : अगर पुशबू का अैन लगा तो "कर्फ़ारा" होगा और अगर अैन न लगा बल्के हाथ में सिर्फ़ मलक आई, तो कोर्ण कर्फ़ारा नहीं के ँस मोहरिम ने पुशबू के अैन से नईअ न उठाया, हां ँस को याहिये के हाथ को धो कर उस मलक को जाईल कर दे. (अैन, स. 35)

सुवाल : पुशबूदार शेम्पू से सर या दाढी धो सकते हैं या नहीं ?

जवाब : रिसाला "अहराम और पुशबूदार साबुन" सईहा 25 ता 28 से बा'ज ईक्तिबासात मुला-उज्ज हां : शेम्पू अगर सर या दाढी में ईस्ति'माल किया जाअे, तो पुशबू की मुमा-न-अत की ईद्वलत (या'नी वजह) पर गौर के

नतीजे में इस की मुमा-न-अत का हुक्म ही समझ में आता है, बल्के कर्फ़ारा भी होना चाहिए, जैसा के भित्ती (पुशबूदार बूटी) से सर और दाढी घोने का हुक्म है के येह बालों को नर्म करता है और जूअें मारता है और मोहरिम के लिये येह ना ज़ाईज है. “दुर्रे मुफ्तार” में है: सर और दाढी को भित्ती से घोना (हराम है) क्यूंके येह पुशबू है या जूअों को मारता है. (०१. १३८/१३९) साहिबैन (या’नी एमाम अबू यूसुफ़ और एमाम मुहम्मद (رحمة الله تعالى عليهما) के नज़दीक यूंके येह पुशबू नहीं, लिहाज़ा यहां “जिनायते कासिरा” (ना मुकम्मल जुर्म) का सुबूत होगा और इस का मूजब “स-दका” है. शेम्पू से सर घोने की सूरत में भी ब जाहिर “जिनायते कासिरा” (या’नी ना मुकम्मल जुर्म) का वुजूह ही समझ में आता है के इस में भी आग का अमल होता है. लिहाज़ा पुशबू का हुक्म तो साकित हो गया लेकिन बालों को नर्म करने और जूअें मारने की इल्लत (या’नी सबब) मौजूद है, लिहाज़ा “स-दका” वाजिब होना चाहिए. येह अन्न भी काबिले तवज्जोह है के अगर किसी के सर पर बाल और येहरे पर दाढी न हो, तो क्या अब भी हुक्म साबिक ही लगाया जायेगा.....? ब जाहिर इस सूरत में कर्फ़ारे का हुक्म नहीं होना चाहिए, क्यूंके हुक्मे मुमा-न-अत की इल्लत (सबब) बालों का नर्म और जूअों का हलाक होना था, और मज़क़रा सूरत में येह

ઇલ્લત મફકૂદ (યા'ની સબબ ગૈર મૌજૂદ) હૈ ઓર ઇન્તિકાએ ઇલ્લત (યા'ની સબબ કા ન હોના) ઇન્તિકાએ મા'લૂલ કો મુસ્તલ્ઝમ (લાઝિમ કરને વાલી) હૈ લેકિન ઇસ સે અગર મૈલ છૂટે તો યેહ મકરૂહ હૈ કે મોહરિમ કો મૈલ છુડાના મકરૂહ હૈ. ઓર હાથ ધોને મેં ઇસ કી હૈસિય્યત સાબુન કી સી હૈ ક્યૂંકે યેહ માએઅ (યા'ની લિક્વિડ, liquid) હાલત મેં સાબુન હી હૈ ઓર ઇસ મેં ભી આગ કા અમલ ક્રિયા જાતા હૈ.

સુવાલ : મસ્જિદૈને કરીમૈન કે ફર્શ કી ધુલાઈ મેં જો ખુશબૂદાર મહ્લૂલ (SOLUTION) ઇસ્તિ'માલ ક્રિયા જાતા હૈ, ઉસ મેં લાખોં મુહરિમીન કે પાઉસનતે (યા'ની આલૂદા) હોતે રહતે હૈં ક્યા હુકમ હૈ ?

જવાબ : કોઈ કફ્ફારા નહીં કે યેહ ખુશબૂ નહીં. ઓર બિલફર્ઝ યેહ મહ્લૂલ ખાલિસ ખુશબૂ ભી હોતા, તો ભી કફ્ફારા વાજિબ ન હોતા, ક્યૂંકે ઝાહિર યેહ હૈ કે યેહ મહ્લૂલ પહલે પાની મેં મિલાયા જાતા હૈ ઓર પાની ઇસ મહ્લૂલ સે ઝાઈદ ઓર યેહ મહ્લૂલ મગ્લૂબ (કમ) હોતા હૈ ઓર અગર માએઅ (યા'ની લિક્વિડ, liquid) ખુશબૂ કો કિસી માએઅ મેં મિલાયા જાએ ઓર માએઅ ગાલિબ હો, તો કોઈ જઝા નહીં હોતી. કુતુબે ફિક્હ મેં જો મશરૂબાત કા હુકમ ઉમૂમન તહરીર હૈ ઇસ સે મુરાદ ઠોસ ખુશબૂ કા માએઅ મેં મિલાયા જાના હૈ. અલ્લામા હુસૈન બિન મુહમ્મદ અબ્દુલ ગની મક્કી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيِّ “ઈશાદુસ્સારી”

સિલે હુએ કપડે વગૈરા કે મુ-તઅલ્લિક સુવાલ વ જવાબ

સુવાલ : મોહરિમ ને અગર ભૂલ કર સિલા હુવા લિબાસ પહન લિયા ઔર દસ મિનટ કે બા'દ યાદ આતે હી ઉતાર દિયા તો કોઈ કફ્ફારા વગૈરા હૈ યા નહીં ?

જવાબ : હૈ, અગર્યે એક લમ્હે કે લિયે પહના હો. જાન બૂઝ કર પહના હો યા ભૂલે સે, “સ-દકા” વાજિબ હો ગયા ઔર અગર ચાર પહર¹ યા ઈસ સે ઝિયાદા ચાહે લગાતાર કઈ દિન તક પહને રહા “દમ” વાજિબ હોગા. (ફતાવા ર-ઝવિયા મુખર્રજા, જિ. 10, સ. 757)

સુવાલ : અગર ટોપી યા ઈમામા પહના યા એહરામ હી કી ચાદર મોહરિમ ને સર યા મુંહ પર ઓઢ લી યા એહરામ કી નિયત કરતે વક્ત મર્દ સિલે હુએ કપડે યા ટોપી ઉતારના ભૂલ ગયા યા ભીડ મેં દૂસરે કી ચાદર સે મોહરિમ કા સર યા મુંહ ઢક ગયા તો કયા સજા હૈ ?

જવાબ : જાન બૂઝ કર હો યા ભૂલ કર યા કિસી દૂસરે કી કોતાહી કી બિના પર હુવા હો કફ્ફારે દેને હોંગે હાં જાન બૂઝ કર જુર્મ કરને મેં ગુનાહ ભી હૈ લિહાઝા તૌબા ભી વાજિબ હોગી. અબ કફ્ફારા સમઝ લીજિયે : મર્દ સારા સર યા સર કા ચૌથાઈ (1/4) હિસ્સા યા મર્દ ખ્વાહ ઔરત મુંહ કી ટિક્લી સારી યા'ની પૂરા ચેહરા યા ચૌથાઈ હિસ્સા ચાર પહર

¹ : ચાર પહર યા'ની એક દિન યા એક રાત કી મિકદાર મ-સલન તુલૂએ આફતાબ સે ગુરૂબે આફતાબ યા ગુરૂબે આફતાબ સે તુલૂએ આફતાબ યા દો પહર સે આધી રાત યા આધી રાત સે દો પહર તક. (હાશિયા અન્વારુલ બિશારહ મઅ ફતાવા ર-ઝવિયા મુખર્રજા, જિ. 10, સ. 757)

या क्रियादा लगातार छुपायें “दम” है और यौथाई से कम यार पहर तक या यार पहर से कम अगर्ये सारा मुंड या सर तो “स-दका” है और यहारुम (या’नी यौथाई) से कम को यार पहर से कम तक छुपायें तो कइफारा नहीं मगर गुनाह है. (अउन, स. 758)

सुवाल : नजले में कपडे से नाक पोंछ सकते हैं या नहीं ?

जवाब : कपडे से नहीं पोंछ सकते, कपडा या तोलिया दूर रख कर उस में नाक सिनक (या’नी जाड) लीजिये. सदरुशशरीअह, बहरुत्तरीकह छतरते अदलामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अमजद अली आ’जमी رحمة الله القوی फरमाते हैं : कान और गुद्दी के छुपाने में हरज नहीं. यूंही नाक पर ખાલી હાથ રખને में और अगर हाथ में कपडा है और कपडे समेत नाक पर हाथ रखा तो कइफारा नहीं मगर मक़ूह व गुनाह है. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1169)

ओहराम में टिशू पेपर का धस्ति’माल

सुवाल : टिशू पेपर से मुंड का पसीना या वुजू का पानी या नजले में नाक पोंछ सकते हैं या नहीं ?

जवाब : नहीं पोंछ सकते.

सुवाल : तो मुंड पर कपडे या टिशू पेपर का मास्क लगाना कैसा ?

जवाब : ना ज़रूरत व गुनाह है. शराईत पाये जाने की सूरत में कइफारा भी लाज़िम होगा.

सुवाल : मोहरिम ने भुशबूदार टिशू पेपर धस्ति’माल कर लिया तो ?

जवाब : पुशबूदार टिशू पेपर में अगर पुशबू का औन मौजूद है या'नी वोड पेपर पुशबू से लीगा हुवा है, तो उस तरी के बदन पर लगने की सूरत में जो हुकूम पुशबू का होता है, वोही इस का ली होगा. या'नी अगर कलील (या'नी कम) है और उजूवे कामिल (या'नी पूरे उजूव) को न लगे, तो स-दका, वरना अगर कसीर (या'नी जियादा) हो या कामिल (पूरे) उजूव को लग जाओ, तो दम है. और अगर औन मौजूद न हो बल्के सिर्फ मलक आती हो तो अगर इस से येहरा वगैरा पोंछा और येहरे या हाथ में पुशबू का असर आ गया, तो कोई "कफ़ारा" नहीं के यहाँ पुशबू का औन न पाया गया और टिशू पेपर का मक्सूदे अस्ली पुशबू से नफ़अ लेना नहीं. (अहराम और पुशबूदार साबुन, स. 31) अगर कोई जैसे कमरे में दाभिल हुवा जिस को धूनी दी गई और उस के कपडे में मलक बस गई, तो कोई कफ़ारा नहीं, क्यूंके उस ने पुशबू के औन से नफ़अ नहीं उठाया. (रदाउलमुताहह)

सुवाल : सोते वक्त सिली लुई यादर ओठ सकते हैं या नहीं ?

जवाब : येहरा बया कर अक बल्के इस से जियादा यादरें ली ओठ सकते हैं, ज्वाह पाउं पूरे ढक जाओं.

सुवाल : तय्यारे या बस वगैरा की अगली निशस्त के पीछे या तक्ये पर मुंड रफ कर मोहरिम सो गया क्या हुकूम है ?

जवाब : तक्ये में मुंड रખ कर सोने पर कोई कफ़ारा नहीं लेकिन येह मक़्दहे तहरीमी है. जब के बस वगैरा की अगली सीट के पीछे मुंड रખ कर सोना जाईज है क्यूंके उमूमी तौर पर सीट तप्ती, दरवाजे की तरह सप्त होती है न के तक्ये की तरह नर्म.

सुवाल : घुटनों में मुंड रખ कर सोना कैसा ? तक्ये पर मुंड रખ कर सोने में कफ़ारा नहीं मगर मक़्दह है, क्यूं ?

जवाब : अगर तो सिई घुटनों पर मुंड हो या'नी घुटने की सप्ती पर तो जाईज है, क्यूंके कपडे के अन्दर अगर सप्त यीज हो तो उस सप्त यीज का हुक्म लगता है न के कपडे का, जैसा के उ-लमा ने बोरी और गठडी (कपडे के ढलावा) का हुक्म लिखा है. लेकिन घुटने पर मुंड रખ कर सोने में येह कैफ़ियत बहुत मुश्किल है बल्के नींद के दौरान घुटने की सप्ती पर और सिई कपडे पर येहरा आता रहेगा लिहाजा इस से अह्तिराज किया (या'नी बया) जाये वरना कफ़ारे की सूरते पैदा हो सकती हैं और जहां तक तक्ये का तअद्लुक है तो वोह नरमी में कपडे के मुशाबेह है (इस लिये मन्अ किया गया) मगर **مِنْ كُلِّ اَلْوَجْهِ** (या'नी हर तरह से) कपडा नहीं (इस लिये कफ़ारा नहीं).

सुवाल : मोहरिम सर्दी से बचने के लिये जिप (zip) वाले बिस्तरे में येहरा और सर छोड कर बाकी बदन बन्द कर के सो सकता है या नहीं ?

જવાબ : સો સકતા હૈ. ક્યૂંકે આદતન ઈસે લિબાસ પહનના નહીં કહતે.

સુવાલ : મોહરિમ કો કતરે આતે હોં તો ક્યા કરે ?

જવાબ : બે સિલા લંગોટ બાંધ લે કે એહરામ મેં લંગોટ બાંધના મુત્લકન જાઈઝ હૈ જબ કે સિલાઈ વાલા ન હો.

(મુલખ્ખસ અઝ ફતાવા ૨-ઝવિયા, જિ. 10, સ. 664)

સુવાલ : ક્યા બીમારી વગૈરા કી મજબૂરી સે સિલા હુવા લિબાસ પહનને મેં ભી કફ્ફારે હેં ?

જવાબ : જી હાં. બીમારી વગૈરા કે સબબ અગર સર સે પાઉં તક સબ કપડે પહનને કી ઝરૂરત પેશ આઈ તો એક હી જુર્મે ગૈર ઈખ્તિયારી¹ હૈ. અગર ચાર પહર પહને યા ઝિયાદા તો દમ ઓર કમ મેં “સ-દકા” ઓર અગર ઉસ બીમારી મેં ઉસ જગહ ઝરૂરત એક કપડે કી થી ઓર દો² પહન લિયે મ-સલન ઝરૂરત કુરતે કી થી ઓર સિલાઈ વાલા બનિયાન ભી પહન લિયા તો ઈસ સૂરત મેં કફ્ફારા તો એક હી હોગા મગર ગુનહગાર હોગા ઓર અગર દૂસરા કપડા દૂસરી જગહ પહન લિયા મ-સલન ઝરૂરત પાજામે કી થી ઓર કુરતા ભી પહન લિયા તો એક જુર્મે ગૈર ઈખ્તિયારી હુવા ઓર એક જુર્મે ઈખ્તિયારી.

(મુલખ્ખસ અઝ બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 1168, ૧૬૧૫૯૫૫૫૫૫૫)

સુવાલ : અગર બિગૈર ઝરૂરત સારે કપડે પહન લિયે તો કિતને કફ્ફારે દેના હોંગે ?

1 : જુર્મે ગૈર ઈખ્તિયારી કા મસ્અલા સફહા 260 પર મુલા-હઝા ફરમાઈયે.

જવાબ : અગર બિગૈર ઝરૂરત સબ કપડે એક સાથ પહન લિયે તો એક હી જુર્મ હૈ. દો જુર્મ ઉસ વક્ત હેં કે એક ઝરૂરત સે હો ઔર દૂસરા બિલા ઝરૂરત. (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 1168)

સુવાલ : અગર મુંહ દોનોં હાથોં સે છુપા લિયા યા સર યા ચેહરે પર કિસી ને હાથ રખ દિયા ?

જવાબ : સર યા નાક પર અપના યા દૂસરે કા હાથ રખના જાઈઝ હૈ યુનાચે હઝરતે અલ્લામા અલી કારી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي ફરમાતે હેં : અપના યા દૂસરે કા હાથ અપને સર યા નાક પર રખના બિલ ઈત્તિફાક મુબાહ (યા'ની જાઈઝ) હૈ ક્યૂંકે એસા કરને વાલે કો ઢકને યા છુપાને વાલા નહીં કહા જાતા. (أَبَابُ الْمَنَاسِكِ وَالْمَسَالِكِ الْمُتَقَبِّطِ ص ۱۲۳)

સુવાલ : તો ક્યા મોહરિમ દુઆ માંગને કે બા'દ અપને હાથ મુંહ પર નહીં ફેર સકતા ?

જવાબ : ફેર સકતા હૈ, મુંહ પર હાથ રખને કી મુત્લકન ઈજાઝત હૈ, દાઢી વાલા ઈસ્લામી ભાઈ મુંહ પર બા'દે દુઆ બલ્કે વુઝૂ મેં ભી ઈસ અન્દાઝ મેં હાથ મલને સે બચે જિસ સે બાલ ગિરને કા અન્દેશા હો.

સુવાલ : અગર કન્ધે પર સિલે હુએ કપડે ડાલ લિયે તો ક્યા કફ્ફારા હૈ ?

જવાબ : કોઈ કફ્ફારા નહીં. سَدْرُشْشَرِيِّ અહ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ફરમાતે હેં : પહનને કા મતલબ યેહ હૈ કે વોહ કપડા ઈસ તરહ પહને જૈસે આદતન પહના જાતા હૈ, વરના

اگر کورتے کا تھبند باंध لیا یا پاڄامے کو تھبند کی ترھ لپेटا پاؤں پاँये में न डले तो कुछ नहीं. यूँही अंग-रभा झैला कर दोनों शानों पर रख लिया, आस्तीनों में हाथ न डले तो कङ्कारा नहीं मगर मकड़ह है और मोंढों (या'नी कन्धों) पर सिले कपडे डल लिये तो कुछ नहीं. (बडारे शरीअत, जि. 1, स. 1169)

पुकूँई अ-रफ़ात के बारे में सुवाल व जवाब

सुवाल : क्या दसवीं रात को भी पुकूँई अ-रफ़ात हो सकता है ?

जवाब : ७ हां, क्यूंके पुकूँई का वक्त 9 तुल हिज्जतिल हराम के इब्तिदाअे वक्ते जोहर से ले कर दसवीं की तुलूअे इज तक है. (१११, ११८, ११९, १२०)

मुअ्डलिफ़ा के बारे में अहम सुवाल

सुवाल : जिसे कोई मजबूरी न हो उसे मुअ्डलिफ़ा से मिना के लिये कब निकलना चाहिये ?

जवाब : तुलूअे आइताब में सिर्फ़ इतना वक्त बाकी रह जाअे जिस में (मस्नून किराअत के साथ) दो रकअत अदा की जा सकें उस वक्त चल पडे. अगर तुलूअे आइताब तक ठहरा रहा तो सुन्नते मुअक्कदा तर्क हुँई, औसा करना “बुरा” है मगर हम वगैरा वाजिब नहीं. हां मिना शरीफ़ की जानिब चल तो पडा मगर भीड वगैरा की वजह से मुअ्डलिफ़ा ही में सूरज तुलूअ हो गया तो तारिके सुन्नत नहीं कहलाअेगा.

(येह जवाब इतावा उज व उम्रह, हिस्सअे द्रुवुम सफ़हा
83 ता 87 से माफ़ूज़ है)

रम्य के मु-तअल्लिक सुवाल व जवाब

सुवाल : अगर किसी दिन आधी से ज़ियादा मारीं म-सलन ग्यारहवीं को तीन शैतानों को 21 कंकरियां मारनी थीं मगर 11 मारीं तो क्या सज़ा है ?

जवाब : ई कंकरी अेक अेक स-दका देना होगा. सदरुशशरीअह
 وَحَمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ
 की या अेक दिन की बिल्कुल या अक्सर तर्क कर दी
 म-सलन दसवीं को तीन कंकरियां तक मारीं या
 ग्यारहवीं वगैरा को 10 कंकरियां तक या किसी दिन
 की बिल्कुल या अक्सर रम्य दूसरे दिन की तो एन
 सभ सूरतों में दम है और अगर किसी दिन की निस्फ़
 से कम छोडी म-सलन दसवीं को यार कंकरियां मारीं,
 तीन छोड दीं या और दिनों की ग्यारह मारीं दस छोड
 दीं या दूसरे दिन की तो हर कंकरी पर अेक स-दका दे
 और अगर स-दकों की कीमत दम के बराबर हो जाअे
 तो कुए कम कर दे. (बहारे शरीअत, ज़ि. 1, स. 1178)

कुरबानी से मु-तअल्लिक सुवाल व जवाब

सुवाल : दसवीं की रम्य के बा'द अगर जद्दा शरीफ़ में जा कर
 तमतोअ की कुरबानी और हल्क करना याहें तो कर
 सकते हैं या नहीं ?

जवाब : नहीं कर सकते, क्यूंके जद्दा शरीफ़ हुदूदे हरम से बाहर है. करेंगे तो अेक कुरबानी का और दूसरा हल्क का यूं दो दम वाजिब हो जाअेंगे.

सुवाल : मु-तमत्तेअ और कारिन ने अगर रम्य से पहले कुरबानी कर दी या कुरबानी से पहले हल्क कर दिया तो क्या कफ़ारा है ?

जवाब : एन दोनों सूरतों में दम देना होगा.

सुवाल : अगर हज्जे एकराद वाले ने कुरबानी से पहले ही हल्क कर दिया तो क्या कोई सज़ा है ?

जवाब : नहीं, क्यूंके मुफ़रिद पर कुरबानी वाजिब नहीं उस के लिये मुस्तहब है. (अैज़न, स. 1140) अगर कुरबानी करना चाहे तो उस के लिये अफ़जल येह है के पहले हल्क करे फिर कुरबानी.

हल्क व तकसीर के मु-तअल्लिक सुवाल व जवाब

सुवाल : अगर हाज्ज ने बारहवीं के आ'द हरम से बाहर सर मुंडवाया तो क्या सज़ा होगी ?

जवाब : दो दम, अेक हरम से बाहर हल्क करवाने का, दूसरा बारहवीं के आ'द होने का. (रुदु'ल मुहत्तार 3/116)

सुवाल : अगर उम्रे का हल्क हरम से बाहर करवाना चाहे तो करवा सकता है या नहीं ?

जवाब : नहीं करवा सकता, करवाअेगा तो दम वाजिब होगा, हां एस के लिये वक्त की कोई कैद नहीं. (रुदु'ल मुहत्तार 3/116)

सुवाल : क्या जद्दा शरीफ़ वगैरा में काम करने वालों को भी
 हर बार उम्रे में हल्क या तकसीर करना वाजिब है ?

जवाब : ज़ हां. वरना अहराम की पाबन्दियां ખत्म न होंगी.

सुवाल : जिस औरत के बाल छोटे हों (जैसा के आज कल फ़ेशन
 है) उम्रों का भी जज्बा है मगर बार बार कस्र करने
 में सर के बाल ही खत्म हो जायेंगे, क्या करे ?
 अगर सर के सारे बाल खत्म हो गये या'नी अक
 पोरे से कम रह गये तो अब उम्रे करेगी तो कस्र
 मुम्किन न रहा, मुआफ़ी मिलेगी या क्या ?

जवाब : जब तक सर पर बाल मौजूद हों औरत के लिये हर
 बार कस्र वाजिब है. **رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**
 ने ईशाद फ़रमाया : “औरतों पर हल्क नहीं
 बल्के ईन पर सिर्फ़ तकसीर (वाजिब) है.”

(ابوداؤد ج ٢ ص ٢٩٥ حديث ١٩٨٤) ऐसी औरत जिस के बाल
 अक पोरे से कम रह गये हों, उस के लिये अब कस्र
 की मुआफ़ी है क्यूंके कस्र मुम्किन न रहा और हल्क
 कराना ईस के लिये मन्अ है. ऐसी सूरत में अगर
 हज का मुआ-मला है तो अफ़जल येह है के अय्यामे
 नह्र के आभिर में (या'नी 12 जुल हिज्जतिल हराम
 के गुरुबे आफ़ताब के बा'द) अहराम से बाहर आये,
 अगर अय्यामे नह्र के आभिर तक ईन्तिज़ार न भी
 किया तो कोई खीज़ लाज़िम न होगी.

मु-तफ़रिफ़ सुवाल व जवाब

सुवाल : सर या मुंछ उप्पी डो ज़ने की सूरत में पट्टी बांधना गुनाह तो नहीं ?

जवाब : मजबूरी की सूरत में गुनाह नहीं होगा, अलबत्ता “जुर्मे गैर इप्तियारी” का कफ़ारा देना आयेगा. लिहाजा अगर दिन या रात या इस से ज़ियादा देर तक इतनी थोड़ी पट्टी बांधी के थौथाई (1/4) या इस से ज़ियादा सर या मुंछ छुप गया तो दम और कम में स-दका वाजिब होगा (जुर्मे गैर इप्तियारी की तफ़सील सफ़हा 260 पर मुला-हजा इरमाइये) इस के इलावा जिस्म के दूसरे आ'जा पर नीज औरत के सर पर भी मजबूरन पट्टी बांधने में कोई मुजा-यका नहीं.

सुवाल : मु-तमत्तेअ और कारिन उज के इन्तिज़ार में हैं, इस दौरान उम्रह कर सकते हैं या नहीं ?

जवाब : कारिन का अहराम तो अभी बाकी है, येह तो कर ही नहीं सकता, रहा मु-तमत्तेअ तो इस बारे में उ-लमा का इप्तिलाफ़ है, बेहतर येही है के सिर्फ़ नफ़ली तवाफ़ जितने करना चाहे करता रहे अगर उम्रह कर भी ले तो आ'ज उ-लमा के नज़दीक कोई मुजा-यका नहीं. हां ! मनासिके उज से इरागत के आ'द मु-तमत्तेअ, कारिन, मुफ़रिद सभी उम्रह कर सकते हैं.

सुवाल : अरब शरीफ़ के मुप्तलिफ़ मकामात म-सलन हमाम और रियाज़ वगैरा वाले ज़े के मीकात से बाहर रहते हैं उन्हे

गवर्नमेन्ट की तरफ़ से एंजाऊत नहीं होती, वोह पोलीस को धोका देने के लिये बिगैर अेहराम भीकात से गुजर कर अेहराम बांधते और उज करते हैं, एन के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : ﴿1﴾ कानून की षिलाई वर्जी कर के अपने आप को जिल्लत पर पेश करना ना जाईज है ﴿2﴾ बिगैर अेहराम भीकात से आगे गुजरने की वजह से औद (या'नी भीकात तक दोबारा लौट कर अेहराम बांधना) या दम वाजिब होगा या'नी अगर ईसी तरह उज या उम्रह अदा कर लिया तो दम वाजिब होगा और गुनहगार भी होगा. और अगर अभी उज या उम्रह के अइआल शुइअ किये बिगैर ईसी साल भीकात तक वापस लौट कर किसी भी किस्म का अेहराम बांधे तो दम साकित हो जायेगा, वरना नहीं.

सुवाल : उज या उम्रे की सअ्य के कबल हल्क करवा लिया कई रोज गुजर गये क्या करे ?

जवाब : उज में हल्क का मस्नून वक्त सअ्य से कबल ही होता है या'नी हल्क से पहले सअ्य करना षिलाई सुन्नत है. लिहाजा अगर किसी ने सअ्य से कबल हल्क करवाया तो कोई हरज नहीं. और कई दिन गुजरने से भी मजीद कुछ लाजिम नहीं आयेगा क्यूंके सअ्य के लिये कोई वक्ते एन्तिहा (END TIME) मुकरर नहीं है. हां अगर वोह सअ्य के बिगैर “वतन” यला गया तो अब तर्क

वाजिब की वजह से दम लाजिम आयेगा, फिर अगर वोल् लौट कर सअ्य कर ले तो दम साकित हो जायेगा अलबत्ता बेहतर येल् है के अब वोल् दम ही दे के ईस में नईये झु-करा है. येल् हुक्म उसी वक्त है के जब हल्क अपने वक्त या'नी अय्यामे नइर में दसवीं की रम्य के बा'द करवाया हो, अगर रम्य से कब्ल या अय्यामे नइर के बा'द हल्क करवाया तो दम वाजिब होगा. उम्रे में अगर किसी ने सअ्य से कब्ल हल्क करवाया तो उस पर दम लाजिम आयेगा. फिर अगर पूरा या तवाफ़ का अकसर हिस्सा या'नी यार इरे कर चुका था तो अहराम से निकल जायेगा वरना नहीं. कर्छ दिन गुजर जाने की वजह से भी सअ्य साकित नहीं होगी क्यूंके येल् वाजिब है लिहाजा ईसे सअ्य करनी होगी.

सुवाल : जिस ने हज्जे ईफ़राद की नियत की मगर उम्रह कर के अहराम ખोल दिया ! क्या कइफ़ारा होगा और अब क्या करे ?

जवाब : हज का अहराम उम्रह कर के ખोल देना जाईज नहीं है और औसा करने से वोल् शप्स अहराम से बाहर नहीं होगा बल्के ब दस्तूर वोल् मोहरिम ही रहेगा, उस पर लाजिम है के वोल् हज के अइआल बज्जालाने के बा'द अहराम ખोले. बिगैर अइआले हज अदा किये अहराम उतारने की नियत कर लेना काई नहीं. लिहाजा जब ईस का अहराम बाकी है तो मम्नूआत का ईरतिकाब करने

પર કફ્ફારા ભી લાઝિમ હોગા, હાં કફ્ફારા સિર્ફ એક હી લાઝિમ આએગા અગર્યે સારે કે સારે મમ્નૂઆતે એહરામ કા ઈરતિકાબ કર લે જૈસે સિલે કપડે પહન લે, ખુશ્બૂ લગા લે, બાલ મુંડવા લે વગૈરહા, ઈન તમામ કે બદલે મેં સિર્ફ એક હી દમ લાઝિમ હોગા. ઓર અબ ઈસ પર લાઝિમ હૈ કે સિલે હુએ કપડે ઉતાર કર દોબારા એહરામ કે બે સિલે કપડે પહને, તૌબા કરે ઓર ઉસી સાબિકા હજ વાલે એહરામ કી નિચ્ચત કે સાથ હજ કે મનાસિક પૂરે કરે.

સુવાલ : જો બ-કરહ ઈદ કી કુરબાની કરના ચાહતા હૈ વોહ અગર ઝુલ હિજ્જહ કે ચાંદ કે બા'દ એહરામ બાંધે તો નાખુન ઓર ગૈર ઝરૂરી બાલ વગૈરા કાટે યા નહીં ? ક્યૂંકે ઈન દિનોં ઉસ કે લિયે નાખુન વગૈરા ન કાટના મુસ્તહબ હૈ. ઉસ કે લિયે અફઝલ કૌન સા અમલ હૈ ?

જવાબ : હાજી કો અગર હાજત હો તો ઉસ કે લિયે નાખુન ઓર બાલ કાટના મુસ્તહબ વ અફઝલ હૈ, યાદ રહે ! અગર ઈતને દિન હો ચુકે હૈં કે અબ નાખુન ઓર બાલ કાટે બિગૈર એહરામ બાંધ લેગા તો 40 દિન હો જાએંગે તો અબ કાટના ઝરૂરી હૈ ક્યૂંકે 40 દિન સે ઝિયાદા તાખીર ગુનાહ હૈ.

સુવાલ : તો ક્યા 13 ઝુલ હિજ્જતિલ હરામ સે ઉમ્રે શુરૂઅ કર દિયે જાએં ?

જવાબ : જી નહીં. અચ્યામે તશરીક યા'ની 9, 10, 11, 12, ઓર 13 ઝુલ હિજ્જતિલ હરામ ઈન પાંચ દિનોં મેં ઉમ્રે કા એહરામ બાંધના મકરૂહે તહરીમી (ના જાઈઝ વ

સુવાલ : માહવારી કી હાલત મેં ઔરત એહરામ કી નિચ્ચત કર સક્તી હૈ યા નહીં ?

જવાબ : કર સક્તી હૈ મગર એહરામ કે નફલ અદા નહીં કર સક્તી, નીઝ તવાફ પાક હોને કે બા'દ કરે.

સુવાલ : સિલાઈ વાલે ચપ્પલ પહનના કેસા હૈ ?

જવાબ : વસ્તે કદમ યા'ની કદમ કા ઉભરા હુવા હિસ્સા અગર ન છુપાએં તો હરજ નહીં.

સુવાલ : એહરામ મેં ગિરહ યા બક્સુવા (સેફ્ટી પિન) યા બટન લગાના કેસા ?

જવાબ : ખિલાફે સુન્નત હૈ. લગાને વાલે ને બુરા ક્રિયા, અલબત્તા દમ વગૈરા નહીં.

સુવાલ : ઉમૂમન હુજ્જાજ એહતિયાતન એક “દમ” દેતે હેં યેહ કેસા ? અગર બા'દ કો મા'લૂમ હુવા કે વાકેઈ એક દમ વાજિબ હુવા થા તો વોહ “દમે એહતિયાતી” કાફી હોગા યા નહીં ?

જવાબ : વાજિબ હોને કે બા'દ દિયા થા તો કાફી હો જાએગા મગર દેને કે બા'દ વાજિબ હુવા તો કાફી ન હોગા.

સુવાલ : મોહરિમ નાક યા કાન કા મૈલ નિકાલ સક્તા હૈ યા નહીં ?

જવાબ : વુઝૂ મેં નાક કે નર્મ બાંસે તક રૂએં રૂએં પર પાની બહાના સુન્નતે મુઅક્કદા હૈ ઔર ગુસ્લ મેં ફર્જ. લિહાઝા

अगर नाक में रेंठ सूख गઈ तो छुडाना ढोगा, और पलकों वगैरा में अगर आंभ की चीपड सूख गई है तो उसे भी वुजू और गुस्ल के लिये छुडाना इर्ज है मगर येह अेहतियात जरूरी है के बाल न टूटे. रहा कान का मैल निकालना तो एसे छुडाने की एंजाजत की सराहत किसी ने नहीं की लिहाजा एस का हुक्म वोही ढोगा जो बदन के मैल का है या'नी एस का छुडाना मकरूहे तन्जीही है. मगर येह अेहतियात जरूरी है के बाल न टूटे.

सुवाल : क्या जिन्दा वालिदैन के नाम पर उम्रह कर सकते हैं ?

जवाब : कर सकते हैं. इर्ज नमाज, रोजा, हज, जकात नीज हर किस्म के नेक काम का सवाब जिन्दा, मुर्दा सब को एसाल कर सकते हैं.

सुवाल : अेहराम की डालत में जूं मारने के कइइारे बता दीजिये.

जवाब : अपनी जूं अपने बदन या कपडे में मारी या इंक दी तो अेक जूं ढो तो रोटी का अेक टुकडा और ढो या तीन ढों तो अेक मुट्ठी अनाज और एस (या'नी तीन) से जियादा में स-दका. जूंमें मारने के लिये सर या कपडा धोया या धूप में डाला जब भी वोही कइइारे हैं जो मारने में हैं. दूसरे ने एस के कडने पर एस की जूं मारी जब भी एस (या'नी मोहरिम) पर कइइारा है

अगर्चे मारने वाला अहराम में न हो. जमीन वगैरा पर गिरी हुई जूँ या दूसरे के बदन या कपड़ों की जूँमें मारने में मारने वाले पर कुछ नहीं अगर्चे वोह दूसरा भी मोहरिम हो.

हज्जे अकबर (अकबरी हज)

सुवाल : जुमुआ को जो हज हो उसे हज्जे अकबर कहना कैसा है ?

जवाब : कोई हज नहीं. युनान्हे पारह 10 सू-रतुतौबह आयत नम्बर 3 में एशादि रब्बुल एबाद है :

وَأَذَانٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَىٰ
 النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ

तर-ज-मअ कन्जुल एमान : और मुनादी पुकार देना है अल्लाह और उस के रसूल की तरफ से सब लोगों में अडे हज के दिन.

(प १०, التوبة: ३)

सदरुल अफ़जिल हजरते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नएमुदीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي एस आयते करीमा के तहत फ़रमाते हैं : हज को हज्जे अकबर फ़रमाया, एस लिये के उस ज़माने में उम्रे को हज्जे अरगर कहा जाता था और ओक कौल येह है के उस हज को हज्जे अकबर एस लिये कहा गया के उस साल रसूले करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज फ़रमाया था और यूँके येह जुमुआ को वाकेअ हुवा था एस लिये मुसल्मान उस हज को जो रोजे जुमुआ हो हज्जे वदाअ का मुजकिर (या'नी याद दिलाने वाला)

જાન કર હજજે અકબર કહતે હૈં. (તફસીરે ખઝાઈનુલ
 ઈરફાન, સ. 354) ફરમાને મુસ્તફા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 હૈ : અય્યામ મેં બેહતરીન વોહ યૌમે અ-રફા હૈ જો
 જુમુઆ કે મુવાફિક હો જાએ ઓર ઉસ રોઝ કા હજ ઉન
 સત્તર હજજોં સે અફઝલ હૈ જો જુમુઆ કે દિન ન હોં.

(فتح الباری ج ۹ ص ۲۳۱ تحت الحديث ۶۰۶)

અરબ શરીફ મેં કામ કરને વાલોં કે લિયે

સુવાલ : અગર મક્કતુલ મુકર્રમા اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا મેં કામ કરને
 વાલે મ-સલન ડ્રાઈવર યા વહાં કે બાશિન્દે વગૈરા
 રોઝાના બાર બાર “તાઈફ શરીફ” જાએં તો કયા
 હર બાર વાપસી મેં ઉન્હેં રોઝાના ઉમ્રે વગૈરા કા
 એહરામ બાંધના ઝરૂરી હૈ ?

જવાબ : યેહ કાઈદા ઝેહન નશીન કર લીજિયે કે અહલે મક્કા
 અગર કિસી કામ સે “હુદૂદે હરમ” સે બાહર મગર
 મીકાત કે અન્દર (મ-સલન જદા શરીફ) જાએં તો
 ઉન્હેં વાપસી કે લિયે એહરામ કી હાજત નહીં ઓર
 અગર “મીકાત” સે બાહર (મ-સલન મદીનએ પાક,
 તાઈફ શરીફ, રિયાઝ વગૈરા) જાએં તો અબ બિગૈર
 એહરામ કે “હુદૂદે હરમ” મેં વાપસ આના જાઈઝ
 નહીં. ડ્રાઈવર યાહે દિન મેં કઈ બાર આના જાના કરે
 હર બાર ઉસ પર હજ યા ઉમ્રહ વાજિબ હોતા રહેગા.
 બિગૈર એહરામ કે મક્કતુલ મુકર્રમા اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا

आयेगा तो दम वाजिब होगा अगर १सी साल भीकत से बाहर जा कर अहराम बांध ले तो दम साकित हो जायेगा.

अहराम न बांधना हो तो हीला

सुवाल : अगर कोई शप्स जद्दा शरीफ में काम करता हो तो अपने वतन म-सलन पाकिस्तान से काम के लिये जद्दा शरीफ आया तो क्या अहराम लाजिमी है ?

जवाब : अगर निखत ही जद्दा शरीफ जाने की है तो अब अहराम की हाजत नहीं बल्के अब जद्दा शरीफ से मक्कतुल मुअज़्जमा **رَادَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** ली जाना हो जाये तो अहराम के बिगैर जा सकता है. लिहाजा जो शप्स मक्कतुल मुकर्रमा **رَادَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** में बिगैर अहराम जाना याहता हो वोह हीला कर सकता है बशर्ते के वाकेई उस का इरादा पहले म-सलन जद्दा शरीफ जाने का हो और मक्कअे मुअज़्जमा **رَادَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** उज व उमरे के इरादे से न जाता हो. म-सलन तिज्जरत के लिये जद्दा शरीफ जाता है और वहां से इरिग हो कर मक्कतुल मुकर्रमा का इरादा किया. अगर पहले ही से मक्कअे पाक **رَادَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** का इरादा है तो बिगैर अहराम नहीं जा सकता. जो शप्स दूसरे की तरफ से उज्जे बदल को जाता है उसे येह हीला जाईज नहीं.

उम्रह या हज के लिये सुवाल करना कैसा ?

सुवाल : भा'ज गरीब उश्शाक उम्रह या सफरे हज के लिये लोगों से माली धमदाह का सुवाल करते हैं, क्या औसा करना जाईज है ?

जवाब : हराम है. सदरुल अफाजिल मौलाना नईमुदीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَهْلِي نकल करते हैं : “भा'ज य-मनी हज के लिये बे सरो सामानी के साथ रवाना होते थे और अपने आप को मु-तवक्किल (या'नी अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ पर तरोसा रफने वाला) कहते थे और मक्कअे मुकर्रमा पड़ोंय कर सुवाल शुइअ कर देते और कत्बी गरब व भियानत के त्बी मुर-तकिब होते, उन के बारे में येह आयते मुकदसा नाजिल हुई और हुकम हुवा के तोशा (या'नी सफर के अपराजात) ले कर यलो औरों पर बार न डालो, सुवाल न करो के बेहतर तोशा (या'नी जादे राह) परहेज गारी है.”

(फजाईनुल धरफान, स. 67, मक-त-बतुल मदीना)

युनान्चे पारह 2 सू-रतुल ब-करह आयत नम्बर 197 में धशादि रब्बुल धबाह होता है :

وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَىٰ

 तर-ज-मअे क-जुल धमान : और तोशा साथ लो के सब से बेहतर तोशा परहेज गारी है.

(प २, البقره 197)

سَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

सुस्ताने मदीना, राहते कलबो सीना

का इरमाने भा करीना है : “जो शप्स लोगों से सुवाल
 करे हावां के न उसे झाका पलोंया न ँतने भाव बग्ये हें
 जिन की ताकत नहीं रभता तो कियामत के दिन ँस
 तरह आअेगा के उस के मुंह पर गोशत न ढोगा.”

(شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٣ ص ٢٧٤ حديث ٣٠٢٦)

मदीने के दीवानो ! अस सभ्र कीजिये, सुवाल की
 मुभा-न-अत में ँस कदर अेहतिमाम है के कु-कहाअे
 किराम رَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَام इरमाते हें : गुसल के भा'द अेहराम
 बांधने से पहले अपने बदन पर शुशू लगाएये बशर्ते
 के अपने पास मौजूद ढो, अगर अपने पास न ढो
 तो किसी से तलब न कीजिये के येह भी सुवाल है.

(رَدُّ الْمُحْتَارِ ج ٣ ص ٥٥٩)

जब बुलाया आका ने खुद ही इन्तिजाम ढो गअे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

उम्रे के वीजे पर हज के लिये रुकना कैसा ?

सुवाल : भा'ज लोग अपने वतन से र-मजानुल मुबारक में
 उम्रे का वीजा ले कर उ-रमैने तरियबैन
 زَاهِبًا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا जाते हें, वीजा की मुदत अत्म ढो जने
 के भा वुजूद वही रहते हें या हज कर के वतन वापस
 जाते हें उन का येह इ'ल शरअन दुरुस्त है या नहीं ?

जवाब : दुन्या के हर मुल्क का येह कानून है के बिगैर
 वीजा के किसी गैर मुल्की को रुकने नहीं दिया

जाता. उ-रमैने तय्यिबैन زَادَهُمُ اللَّهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيمًا में ली ये ही
 काईदा है. मुदते वीजा ખત્મ હોને કે બા'દ रुकने वाला
 अगर पोलीस के हाथ लग जाये, तो अब याहे वोड
 ओहराम की हालत में ही क्यूं न हो उसे कैद कर लेते
 हैं, न उसे उम्रड करने देते हैं न ही उज, सजा देने के
 बा'द “भुज” लगा कर उसे उस के वतन रवाना
 कर देते हैं. याद रहे ! जिस कानून की खिलाई वर्जी
 करने पर जिल्लत, रिश्वत और जूट वगैरा आझात में
 पडने का अन्देशा हो उस कानून की खिलाई वर्जी जाईज
 नहीं. युनान्हे मेरे आका आ'ला उजरत, धमामे
 अहले सुन्नत, मौलाना शाह धमाम अहमद रजा
 ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ફરમાते हैं : “मुबाह (या'नी
 जाईज) सूरतों में से बा'ज (सूरतें) कानूनी तौर पर
 जुर्म होती हैं उन में मुलव्वस होना (या'नी जैसे
 कानून की खिलाई वर्जी करना) अपनी जात को
 अजिथत व जिल्लत के लिये पेश करना है और वोड ना
 जाईज है.” (इतावा र-अविया, जि. 17, स. 370) लिहाजा
 बिगैर visa के दुन्या के किसी मुल्क में रहना या “उज”
 के लिये रुकना जाईज नहीं. गैर कानूनी जरआये से
 “उज” के लिये रुकने में काम्याबी हासिल करने को
 عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ اَللّٰهُ اَعْلٰمُ اَلْغَيْبِ
 का करम कडना सप्त बेबाकी है.

गैर कानूनी रुकने वाले की नमाज़ का अहम मस्यला

सुवाल : उज के लिये बिगैर visa रुकने वाला नमाज़ पूरी पढे या कसर करे ?

जवाब : उम्मे के वीजे पर जा कर गैर कानूनी तौर पर उज के लिये रुकने या दुन्या के किसी भी मुल्क में visa की मुद्दत पूरी होने के बा'द गैर कानूनी रहने की जिन की नियत हो वोह वीजा की मुद्दत खत्म होते वक्त जिस शहर या गाँव में मुकीम हों वहाँ जब तक रहेंगे उन के लिये मुकीम ही के अहकाम होंगे अगर ये बरसों पडे रहें. अलबत्ता अेक बार भी अगर 92 किलो मीटर या ९स से ज़ियादा फ़ासिले के सहर के ९रादे से उस शहर या गाँव से यले तो अपनी आबादी से बाहर निकलते ही मुसाफ़िर हो गये और अब उन की ९कामत की नियत बेकार है. म-सलन को९ शप्स पाकिस्तान से उम्मे के VISA पर मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللَّهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا गया, VISA की मुद्दत खत्म होते वक्त भी मक्का शरीफ़ ही में मुकीम है तो उस पर मुकीम के अहकाम हैं. अब अगर म-सलन वहाँ से मदीनतुल मुनव्वरह مَدِينَتُهَا اللَّهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا आ गया तो याडे बरसों गैर कानूनी पडा रहे, मुसाफ़िर ही है, यहाँ तक के अगर दोबारा मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللَّهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا आ जाये फिर भी मुसाफ़िर रहेगा,

ईस को “नमाज कसर” ही अदा करनी होगी. हां दोबारा VISA मिल जाने की सूरत में ईकामत की निथ्यत की जा सकती है.

हरम में कबूतरों, टिड्डियों को उडाना, सताना

सुवाल : हरम के कबूतरों और टिड्डियों को प्वाह म प्वाह उडाना कैसा ?

जवाब : आ'ला हजरत عليه السلام فرमाते हैं हरम के कबूतर उडाना मन्अ है. (मल्कूआते आ'ला हजरत, स. 208)

सुवाल : हरम के कबूतरों और टिड्डियों (तिरिडी) को सताना कैसा ?

जवाब : हराम है. सदरुशशरीअह عليه السلام فرमाते हैं : हरम के जानवर को शिकार करना या उसे किसी तरह ईजा देना सब को हराम है. मोहरिम और गैर मोहरिम दोनों ईस हुक्म में यक्सां हैं.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1186)

सुवाल : मोहरिम कबूतर जब्द कर के प्वा सकते हैं ?

जवाब : बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 1180 पर है : मोहरिम ने जंगल के जानवर को जब्द किया तो हलाल न हुवा बल्के मुद्र है, जब्द करने के बा'द उसे प्वा ली लिया तो अगर कफ़ारा देने के बा'द प्वाया तो अब फिर प्वाने का कफ़ारा दे और अगर नहीं दिया था तो अेक ही कफ़ारा काफ़ी है.

સુવાલ : હરમ કી ટિઝી પકડ કર ખા સકતે હૈં યા નહીં ?

જવાબ : હરામ હૈ. (વૈસે ટિઝી હલાલ હૈ, મછલી કી તરહ મરી હુઈ ભી ખા સકતે હૈં ઈસ કો ઝખ્હ કરને કી ઝરૂરત નહીં હોતી)

સુવાલ : મસ્જિદુલ હરામ કે બાહર લોગોં કે કદમોં સે કુચલ કર ઝખ્મી ઓર મરી હુઈ બે શુમાર ટિઝિયાં પડી હોતી હૈં અગર યેહ ટિઝિયાં ખા લીં તો ?

જવાબ : અગર કિસી ને ટિઝિયાં ખા લીં તો ઉસ પર કોઈ કફ્ફારા નહીં ક્યૂંકે હરમ મેં શિકાર હોને વાલે ઉસ જાનવર કા ખાના હરામ હૈ જો શર-ઈ તરીકે સે ઝખ્હ કરને સે હલાલ હોતા હો જૈસે હિરન વગૈરા. ઓર ઐસે શિકાર કે હરામ હોને કી વજહ યેહ હૈ કે હરમ મેં શિકાર કરને સે વોહ જાનવર મુદ્દાર કરાર પાતા હૈ ઓર મુદ્દાર કા ખાના હરામ હૈ. ટિઝી કા ખાના ઈસ લિયે હલાલ હૈ કે ઈસ મેં શર-ઈ તરીકે સે ઝખ્હ કરને કી શર્ત નહીં, યેહ જિસ તરહ ભી ઝખ્હ હો જાએ હલાલ હૈ, જૈસે પાઉં તલે રોંદને સે યા ગલા દબાને સે મારી જાએ તબ ભી હલાલ હી રહતી હૈ. અલબત્તા યેહ યાદ રહે કે બિલક્સ્દ (ઈરાદતન) ટિઝિયાં શિકાર કરને કી બહર હાલ હુદૂદે હરમ મેં ઈજાઝત નહીં.

સુવાલ : હરમ કે ખુશકી કે જંગલી જાનવર કો ઝખ્હ કરને કા કફ્ફારા ભી બતા દીજિયે.

કરેં તો સફાઈ કી સૂરત ક્યા હોગી ? ઈસી તરહ સુના હૈ કબૂતરોં કી તા'દાદ મેં કમી કે લિયે ઈન કો પકડ કર કહીં દૂર છોડ આતે યા ખા જાતે હૈં.

જવાબ : ટિક્કિયાં અગર ઈતની કસીર હૈં કે ઈન કી વજહ સે હરજ વાકેઅ હોતા હૈ તો ઈન કે મારને મેં કોઈ હરજ નહીં, ઈસ કે ઈલાવા મારને પર તાવાન લાઝિમ હોગા, યાહે જાન બૂઝ કર મારેં યા ગ-લતી સે મારી જાએં. હરમ કા કબૂતર પકડ કર ઝબ્હ કર દિયા તો તાવાન લાઝિમ હૈ યૂંહી હરમ સે બાહર ભી છોડ આને પર તાવાન લાઝિમ હોગા, જબ તક કે ઈન કે અમ્ન કે સાથ હરમ મેં વાપસ આ જાને કા ઈલ્મ ન હો જાએ. દોનોં સૂરતોં મેં તાવાન ઉસ કબૂતર કી કીમત હૈ ઔર ઈસ સે મુરાદ વોહ કીમત જો વહાં પર ઈસ તરહ કે મુઆ-મલાત કી મા'રિફત વ બસારત (યા'ની જાન પહયાન વ મા'લૂમાત) રખને વાલે દો શખ્સ બયાન કરેં ઔર અગર દો શખ્સ ન મિલતે હોં તો એક કી ભી બાત કા એ'તિબાર ક્રિયા જાએગા.

સુવાલ : હરમ કી મછલી ખાના કેસા ?

જવાબ : મછલી ખુશકી કા જાનવર નહીં, ઈસે ખા સકતે હૈં ઔર ઝરૂરતન શિકાર ભી કર સકતે હૈં.

સુવાલ : હરમ કે ચૂહે કો માર દિયા તો ક્યા કફ્ફારા હૈ ?

જવાબ : કોઈ કફ્ફારા નહીં ઈસ કો મારના જાઈઝ હૈ. બહારે

शरीअत जिल्द अव्वल सईहा 1183 पर है कव्वा, यील, भेरिया, बिखू, सांप, यूहा, धूस, छछूंदर, कटभन्ना कुत्ता (या'नी काट जाने वाला कुत्ता), पिस्सू, मखर, किल्ली, कछवा, केकडा, पतंगा, काटने वाली खूंटी, मज्जी, छुपकली, बुर और तमाम हशरातुल अर्ज (या'नी कीड़े मकोड़े), बिजजू, लोमड़ी, गीदड जब के येह दरिन्दे हम्ला करें या जे दरिन्दे जैसे हों जिन की आदत अक्सर इन्तिदाअन हम्ला करने की होती है जैसे शेर, चीता, तेंदवा (चीते की तरह का एक जानवर) इन सब के मारने में कुछ नहीं. यूंही पानी के तमाम जानवरों के कत्ल में कफ़ारा नहीं.

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

हरम के पेड वगैरा काटना

सुवाल : हरम के पेड वगैरा काटने के मु-तअद्विक भी कुछ हिदायात दे दीजिये.

जवाब : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-भतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सईहात पर मुश्तमिल किताब, “अहारे शरीअत जिल्द अव्वल” सईहा 1189 ता 1190 से यन्द मसाईल मुला-हज्ज हों : हरम के दरभ्त यार किस्म हैं : ﴿1﴾ किसी ने उसे बोया है और वोह ऐसा दरभ्त है जिसे लोग बोया करते हैं ﴿2﴾ बोया है मगर इस किस्म का नहीं जिसे लोग बोया करते हैं ﴿3﴾ किसी ने उसे बोया

नहीं मगर इस किस्म से है जिसे लोग बोया करते हैं
 ﴿4﴾ बोया नहीं, न उस किस्म से है जिसे लोग बोते
 हैं. पहली तीन किस्मों के काटने वगैरा में कुछ नहीं
 या'नी इस पर जुर्माना नहीं. रहा यह के वोह अगर
 किसी की मिल्क है तो मालिक तावान लेगा. यौथी
 किस्म में जुर्माना देना पडेगा और किसी की मिल्क है
 तो मालिक तावान भी लेगा और जुर्माना उसी वक्त
 है के तर हो और टूटा या उभडा हुवा न हो. जुर्माना
 यह है के उस की कीमत का गल्ला ले कर मसाकीन पर
 तसद्दुक करे, हर मिसकीन को अेक स-दका और अगर
 कीमत का गल्ला पूरे स-दके से कम है तो अेक डी
 मिसकीन को दे और इस के लिये हरम के मसाकीन
 होना जरूर नहीं और यह भी हो सकता है के कीमत
 डी तसद्दुक कर दे और यह भी हो सकता है के उस
 कीमत का जानवर खरीद कर हरम में जल्ह कर दे
 रोजा रचना काफ़ी नहीं. **मसअला 3 :** जो दरप्त सूख
 गया उसे उभाड सकता है और उस से नफ़अ भी उठा
 सकता है **मसअला 5 :** दरप्त के पत्ते तोडे अगर उस से
 दरप्त को नुकसान न पहोंया तो कुछ नहीं. यूँही जो
 दरप्त फलता है उसे भी काटने में तावान नहीं जब के
 मालिक से ईजाजत ले ली हो उसे कीमत दे दे **मसअला 6 :**
 यन्द शप्सों ने मिल कर दरप्त काटा तो अेक डी

તાવાન હૈ જો સબ પર તક્સીમ હો જાએગા, ખ્વાહ સબ મોહરિમ હોં યા ગૈર મોહરિમ યા બા'ઝ મોહરિમ બા'ઝ ગૈર મોહરિમ. **મસ્અલા 7 :** હરમ કે પીલૂ યા કિસી દરખ્ત કી મિસ્વાક બનાના જાઈઝ નહીં. **મસ્અલા 9 :** અપને યા જાનવર કે ચલને મેં યા ખૈમા નસ્બ કરને મેં કુછ દરખ્ત જાતે રહે તો કુછ નહીં. **મસ્અલા 10 :** ઝરૂરત કી વજહ સે ફતવા ઈસ પર હૈ કે વહાં કી ઘાસ જાનવરોં કો ચરાના જાઈઝ હૈ. બાકી કાટના, ઉખાડના, ઈસ કા વોહી હુકમ હૈ જો દરખ્ત કા હૈ. સિવા ઈઝખર ઓર સૂખી ઘાસ કે, કે ઈન સે હર તરહ ઈન્તિફાઅ જાઈઝ હૈ. ખુમ્બી કે તોડને, ઉખાડને મેં કુછ મુઝા-ચકા નહીં.

મીકાત સે બિગૈર એહરામ ગુઝરને કે બારે મેં સુવાલ જવાબ

સુવાલ : અગર કિસી આફાકી ને મીકાત સે એહરામ નહીં બાંધા, મસ્જિદે આઈશા સે એહરામ બાંધ કર ઉમ્રહ કર લિયા તો ક્યા હુકમ હૈ ?

જવાબ : અગર **મક્કતુલ મુકર્રમા** **رَزَادَهَا اللَّهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا** કે ઈરાદે સે કોઈ આફાકી ચલા ઓર મીકાત મેં બિગૈર એહરામ દાખિલ હો ગયા તો ઉસ પર દમ વાજિબ હો ગયા. અબ મસ્જિદે આઈશા સે એહરામ બાંધના કાફી નહીં યા તો દમ દે યા ફિર મીકાત સે બાહર જાએ ઓર વહાં સે ઉમ્રે વગૈરા કા એહરામ બાંધ કર આએ તબ દમ સાકિત હોગા.

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

બચ્ચોં કા હજ (સુવાલન જવાબન)

દુરુદ શરીફ કી ફઝીલત

રસૂલે નઝીર, સિરાજે મુનીર, મહબૂબે રબ્બે કદીર
 રસૂલે નઝીર, સિરાજે મુનીર, મહબૂબે રબ્બે કદીર
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા ફરમાને દિલ પઝીર હૈ : ઝિક્રે ઇલાહી
 કી કસરત કરના ઓર મુઝ પર દુરુદે પાક પઢના ફકર (યા'ની
 તંગદસ્તી) કો દૂર કરતા હૈ. (الْقَوْلُ الْبَدِيعُ ص ۲۷۳)

આલમે વજદ મેં રક્સાં મેરા પર પર હોતા

કાશ ! મેં ગુમ્બદે ખઝરા કા કબૂતર હોતા

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

સુવાલ : ક્યા બચ્ચે ભી હજ કર સકતે હૈં ?

જવાબ : જી હાં. યુનાન્થે હઝરતે સય્યિદુના અબ્દુલ્લાહ બિન
 અબ્બાસ عَنْهُمَا تَعَالَى اللهُ عَلَيْهِمَا રસૂલે ફરમાતે હૈં કે સરકારે દો આલમ
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ મકામે રૌહા મેં એક કાફિલે સે
 મિલે તો ફરમાયા કે યેહ કૌન લોગ હૈં ? ઉન્હોં ને અઝ્ઝ
 ક્રિયા કે હમ મુસલ્માન હૈં, ફિર ઉન્હોં ને અઝ્ઝ ક્રિયા :
 આપ કૌન હૈં ? ફરમાયા : અલ્લાહ وَجَلَّ وَعَزَّ કા રસૂલ હૂં.
 ઉન મેં સે એક ખાતૂન ને બચ્ચે કો ઊપર ઉઠા કર પૂછા :
 ક્યા ઇસ કા ભી હજ હો જાએગા ? ફરમાયા : હાં ઓર

तुझे भी ईस का सवाब मिलेगा. (مسلم ص १९७ حدیث ۱۳۳۶)
 मुफ़्फ़िसरे शहीर उकीमुल उम्मत उजरते मुफ़्फ़ती अहमद
 पार पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَّانِ इरमाते हैं : या'नी बय्ये को भी
 उज का सवाब मिलेगा उज करने का और तुझे भी
 ईस के उज का सवाब मिलेगा उज कराने का. मजीद
 इरमाते हैं : ईस उदीस से मा'लूम हुवा के बय्यों की
 नेकियों का सवाब (बय्ये को तो मिलता है उस के) मां
 बाप को भी मिलता है लिहाजा उन्हें नमाज रोजे का
 पाबन्द बनाओ. (मिरआत, जि. 4, स. 88)

सुवाल : तो क्या उज करने से बय्ये का इर्ज अदा हो जायेगा ?

जवाब : ज़ नहीं. उज इर्ज होने के शरायत में से एक शर्त
 “बालिग होना” भी है युनान्ये मेरे आका आ'ला उजरत
 ईमाम अहमद रजा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ इरमाते हैं :
 बय्ये पर (उज) इर्ज नहीं, (अगर) करेगा तो नफ़ल
 होगा और सवाब उसी (या'नी बय्ये ही) के लिये है,
 बाप वगैरा मुरब्बी ता'लीम व तरबियत का अज
 पायेंगे. फिर (जब) बा'दे बुलूग शर्ते जम्ह होंगी ईस
 पर उज इर्ज हो जायेगा, बयपन का उज किफ़ायत न
 करेगा. (इतावा र-जविह्या मुबर्रज, जि. 10, स. 775)

सुवाल : मनासिके उज की अदायेगी के अतिबार से बय्यों
 की कितनी अक़साम हैं ?

જવાબ : ઇસ એ'તિબાર સે બચ્ચોં કી દો કિસ્મોં હૈં : ﴿1﴾

સમજદાર : જો પાક ઓર નાપાક, મીઠે ઓર કડવે મેં તમીઝ કર સકતા હો મા'રિફત (યા'ની પહચાન) રખતા હો કે ઇસ્લામ નજાત કા સબબ હૈ (ارشاد الساری حاشیه ص ૩૧) ﴿2﴾ **ના સમજ :** જો મઝકૂરા (યા'ની બયાન કદા) સમજ ન રખતા હો.

સુવાલ : કયા સમજદાર બચ્ચે કો ખુદ મનાસિકે હજ અદા કરને હોંગે ?

જવાબ : જી હાં. સમજવાલ (યા'ની સમજદાર) બચ્ચા ખુદ અફઆલે હજ કરે, રમ્ય વગૈરા બા'ઝ બાતેં (ઉસ બચ્ચે ને) છોડ (ભી) દીં તો ઉન (કે છોડને) પર કફફારા વગૈરા લાઝિમ નહીં. (બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 1075)

સુવાલ : અગર સમજદાર બચ્ચા બા'ઝ અફઆલે હજ ખુદ બજા લા સકતા હો ઓર બા'ઝ ન કર સકતા હો તો કયા કરે ? કયા કિસી કો નાઈબ કર સકતા હૈ ?

જવાબ : હઝરતે અલ્લામા અલી કારી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي ફરમાતે હૈં : જો અફઆલ સમજદાર બચ્ચા ખુદ કર સકતા હો ઉસ મેં કિસી કો નાઈબ બનાના દુરુસ્ત નહીં હૈ ઓર જો ખુદ નહીં કર સકતા ઉન મેં નાઈબ બનાના દુરુસ્ત હૈ મગર તવાફ કે બા'દ કી દો રક્અતેં અગર બચ્ચા ખુદ ન પઢ સકે તો કોઈ દૂસરા ઉસ કી તરફ સે અદા નહીં કર સકતા. (التَّسْلُكُ الْمُتَّقِطُ لِلْقَارِي ص 113)

ना समज् बय्ये के हज का तरीका

सुवाल : ना समज् बय्या मनासिके हज कैसे अदा करेगा ?

जवाब : जिन अइआल में निय्यत शर्त है वोह वली (या'नी सर परस्त) उस की तरफ से बज्ज लायेगा और जिन में निय्यत शर्त नहीं वोह फुद कर सकता है युनान्ये हु-कडाये किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ السَّلَام इरमाते हैं : “ना समज् बय्ये ने फुद ओहराम बांधा या अइआले हज अदा किये तो हज न हुवा बल्के उस का वली (या'नी सर परस्त) उस की तरफ से बज्ज लाये मगर तवाफ़ के बा'द की दो रकअतें, के बय्ये की तरफ से वली (या'नी सर परस्त) न पढेगा. उस के साथ आप और भाई दोनों हों तो आप अरकान अदा करे.” (रुमूद अल-कुरआन, अडारे शरीअत, जि. 1, स. 1075) सदरुशशरीअह, अदरुतरीकह हजरते अल्लामा मौलाना मुइती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इरमाते हैं : येह (ना समज् बय्या या मज्नून या'नी पागल) फुद वोह अइआल नहीं कर सकते जिन में निय्यत की जरूरत है, म-सलन ओहराम या तवाफ़, बल्के एन की तरफ से कोई और करे और जिस इ'ल में निय्यत शर्त नहीं, जैसे वुकूई अ-रफ़ा वोह येह फुद कर सकते हैं. (अडारे शरीअत, जि. 1, स. 1046)

सुवाल : क्या ओहराम से पहले बय्यों को भी गुस्ल करवाया जाये ?

जवाब : ७ हां. “इतावा शामी” जिल्द 3 सर्फडा 557 पर लिखे हुअे जुज्जुधये का खुलासा है के समजदार और ना समज दानों बख्ये ही गुस्ल करेंगे. अलबत्ता येह ईर्क है के आकिल के लिये तो फुद गुस्ल करना **मुस्तहब** है और वली के लिये गुस्ल का हुकम देना **मुस्तहब** है जब के ना समज बख्ये को वली का फुद गुस्ल करवाना या बख्ये की वालिदा वगैरा के जरीअे करवाना **मुस्तहब** होगा.

सुवाल : क्या ना समज बख्ये को अेहराम ली पहनाना होगा ?

जवाब : ७ हां. यूं करना याहिये के ना समज बख्ये के सिले हुअे कपडे उतार कर यादर और तहबन्द वली गैरे वली (या'नी सर परस्त या गैर सर परस्त) कोई ली पहना दे मगर उस तरफ से बाप, बाप न हो तो भाई और भाई न हो तो जो ली नसब (या'नी भूनी रिश्ते) के अे'तिबार से करीबी रिश्तेदार हो वोह उस की तरफ से अेहराम की नियत करे और उन बातों से बयाअे जो मोहरिम के लिये ना जाईज हैं. युनान्ये सदरुशशरीअह, अदरुतरीकह हजरते अल्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इरमाते हैं : बख्ये की तरफ से अेहराम बांधा तो उस के सिले हुअे कपडे उतार लेने याहियें, यादर और तहबन्द पहनाअें और उन तमाम बातों से बयाअें जो मोहरिम के लिये ना जाईज हैं. (बहारे शरीअत, जि. 1, हिस्सा : 6, स. 1075) समजदार बख्या अेहराम की नियत

ખુદ કરેગા, વલી (યા'ની સર પરસ્ત) ઉસ કી તરફ સે એહરામ નહીં બાંધ સકતા. જૈસા કે “શામી” મેં હૈ : “અગર બચ્ચા સમઝદાર હો તો ઉસે ખુદ એહરામ બાંધના હોગા, વલી (યા'ની સર પરસ્ત) ઉસ કી તરફ સે ન બાંધે કે જાઈઝ નહીં.” (۝۳۰ ص ۳۲ الْحَقَّار) અગર સમઝદાર બચ્ચા ખુદ એહરામ બાંધને કી કુદરત રખતા હો તો ઉસે ખુદ એહરામ બાંધના હોગા વલી (યા'ની સર પરસ્ત) ઉસ કી તરફ સે એહરામ નહીં બાંધ સકતા ઓર ન વલી કે બાંધને સે સમઝદાર બચ્ચા મોહરિમ હોગા ઓર અગર સમઝદાર બચ્ચા ખુદ એહરામ બાંધને કી કુદરત ન રખતા હો તો વલી ઉસ કી તરફ સે એહરામ બાંધેગા.

સુવાલ : ના સમઝ બચ્ચે કી તરફ સે કયા વલી કો એહરામ કે નફલ પઢને હોંગે ?

જવાબ : જી નહીં, ના સમઝ બચ્ચે કી તરફ સે ઉસ કા વલી એહરામ કે નફલ નહીં પઢ સકતા.

ના સમઝ બચ્ચે કી તરફ સે નિચ્ચત ઓર લબ્બૈક કા તરીકા

સુવાલ : ના સમઝ બચ્ચે કી તરફ સે એહરામ કી નિચ્ચત ઓર લબ્બૈક કા તરીકા બતા દીજિયે.

જવાબ : ના સમઝ બચ્ચે કી તરફ સે એહરામ કી નિચ્ચત ઉસ કા વલી કરે ઓર ઈસ તરહ કહે : يَا'نِي مِّنْ أَرْضِ حَرَمٍ عَنْ فُلَانٍ (ફુલાં કી તરફ સે એહરામ બાંધતા હું (ફુલાં કી જગહ ઉસ બચ્ચે કા નામ લે), ઈસી તરહ લબ્બૈક ભી બચ્ચે કી તરફ સે ઈસ તરહ કહે : لَبَّيْكَ عَنْ فُلَانٍ (ફુલાં કી જગહ ઉસ કા

नाम ले और आधिर तक लब्बैक मुकम्मल करे) अ-रबी में निय्यत उसी वक्त कारआमद होगी जब के मा'ना मा'लूम हों, अपनी मा-दरी ज़बान या उर्दू में भी निय्यत कर सकते हैं म-सलन बय्ये का नाम खिलाल रज़ा है तो यूं निय्यत कीजिये : “मैं खिलाल रज़ा की तरफ़ से अहराम बांधता हूँ.” यह भी जेहन्न में रहे के दिल में निय्यत होना शर्त है जब के ज़बान से निय्यत करना मुस्तहब है. अगर ज़बान से निय्यत न भी की तो कोई हज़रत नहीं. लब्बैक ज़बान से कलना ज़रूरी है और वोह भी कम अज़ कम धतनी आवाज़ से के अगर सुनने में कोई रुकावट न हो तो फ़ुद सुन ले और यहाँ धस तरह कलना है : म-सलन

لَيْكَ عَنْ هَلالِ رِضاَ اللّٰهُمَّ لَيْكَ ط لَيْكَ لاَ شَرِيكَ لَكَ
 لَكَ لَيْكَ ط اِنَّ الْحَمْدَ وَالتَّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ ط لاَ شَرِيكَ لَكَ ط

ना समज़ की तरफ़ से तवाफ़ की निय्यत और धस्तिलाम का तरीका

सुवाल : ना समज़ बय्ये की तरफ़ से तवाफ़ की निय्यत और उ-ज़रे अस्वद के धस्तिलाम का तरीका धशाद हो.

जवाब : दिल में निय्यत काड़ी है और बेहतर है ज़बान से भी धस तरह कल ले : म-सलन “मैं खिलाल रज़ा की तरफ़ से तवाफ़ के सात फ़ेरों की निय्यत करता हूँ” और धस के बा'द जो धस्तिलाम होंगे वोह भी बय्ये की तरफ़ से होंगे.

सुवाल : गोद में उठा कर तवाफ़ करवाये या उगली पकड कर ?

जवाब : जिस तरह सहूलत हो.

सुवाल : क्या साथ में वली अपने तवाफ़ की भी नियत कर सकता है ?

जवाब : जो हां, बल्के कर लेनी चाहिये के इस तरह अेक साथ दोनों का तवाफ़ हो जायेगा. मगर येह जेहून में रहे के हर फ़ेरे में दो बार इस्तिलाम करना होगा अेक बार अपनी तरफ़ से और अेक बार बय्ये की तरफ़ से.

सुवाल : बय्या तवाफ़ कैसे करेगा ?

जवाब : समजदार बय्या भुद तवाफ़ कर के तवाफ़ के नवाफ़िल अदा करे जब के ना समज बय्ये को उस का वली (सर परस्त) तवाफ़ कराये, मगर तवाफ़ की दो रकअतें बय्ये की तरफ़ से वली (सर परस्त) न पढे.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1075)

सुवाल : बय्ये को रम्य किस तरह करवायें ?

जवाब : समजदार भुद रम्य करे और ना समज की तरफ़ से उस के साथ वाले रम्य कर दें और बेहतर येह है के उन के हाथ पर कंकरी रख कर रम्य करायें.

(فتاویٰ رضویہ، इतावा र-अविय्या मुभर्रज, जि. 10, स. 667,

बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1148)

सुवाल : बय्ये के मनासिके उज से कुछ रह गया या उस ने कोई ऐसा के'ल किया जिस से कफ़ारा या दम लाजिम आता है तो क्या हुकम है ?

जवाब : बय्या किसी अमल को छोड दे या मन्ूअ काम करे तो

उस पर न कजा वाजिब है और न कर्फ़ारा। यूँही ना समज बख्ये की तरफ़ से उस के वली (सर परस्त) ने अेहराम बांधा और बख्ये ने कोई मन्मूअ काम किया तो भाप पर भी कुछ लाजिम नहीं।

(माग़िरी १/१८७, अहारे शरीअत, जि. 1, स. 1075)

सुवाल : बख्ये अगर उज़ फ़ासिद कर दे तो क्या करना होगा ?

जवाब : बख्ये ने उज़ को फ़ासिद कर दिया तो न दम वाजिब है न कजा. अगर्ये वोह समजदार बख्ये हो.

(माग़िरी १/१८७, २/३३१, ३/११३)

सुवाल : बख्ये के लिये उज़ की कुरबानी का क्या हुक़म है ?

जवाब : बख्ये याहे समजदार हो या ना समज ईस पर (उज़जे तमतोअ या किरान की) कुरबानी वाजिब नहीं.
(अल्लह अल्लिफ़ा लिलफ़ारी ३/११३) और उज़जे ईफ़राद की तो अडों पर भी वाजिब नहीं.

सुवाल : अगर वली (सर परस्त) बख्ये की तरफ़ से उज़ की कुरबानी करना याहे तो कर सकता है या नहीं ?

जवाब : कर सकता है मगर अपनी जेब से करे. बख्ये की रक़म से करेगा तो तावान देना पड़ेगा या'नी उतनी रक़म पद्ले से बख्ये को लौटानी होगी.

बख्ये के उम्मे का तरीका

सुवाल : क्या बख्ये को उम्मे करवा सकते हैं ? अगर हां तो तरीका क्या होगा ?

जवाब : करवा सकते हैं. मसाईल में यहां भी वोही समजदार

और ना समझ बख्ये वाली तर्फसील है. अलबत्ता
 इस में मजीद तर्फसील येह है के बहुत छोटे बख्ये को
 मस्जिद में दाखिल करने के अहकाम पर गौर कर लें.
 हुकूम येह है के अगर बख्ये से नजसत का गालिब
 गुमान है तो उसे मस्जिद में ले जाना मकरूहे तहरीमी
 वरना मकरूहे तन्जीही.

सुवाल : क्या बख्ये को भी हल्क या कसर करवाया जाये ?

जवाब : जो हां. अलबत्ता बख्यी को कसर करवायेंगे. अगर
 दूध पीती या बहुत छोटी बख्यी हो तो हल्क करवाने
 में भी हरज नहीं.

बख्या और नइली तवाइ

सुवाल : नइली तवाइ में बख्ये के क्या अहकाम हैं ?

जवाब : समझदार बख्या खुद अपनी निय्यत करे और तवाइ
 के बा'द वाले नइल भी अदा करे जब के ना समझ
 बख्ये की तरफ से उस का वली (सर परस्त) निय्यत
 करे. तवाइ के नइलों की हाजत नहीं.

सुवाल : बख्या बिगैर अहराम अगर भीकात के अन्दर दाखिल
 हुवा और अब बादिग हो गया तो क्या उस पर
 दम वाजिब हो जायेगा ?

जवाब : नहीं. बहारे शरीअत जिह्द अव्वल सइहा 1192 पर
 है : ना बादिग बिगैर अहराम भीकात से गुजरा फिर
 बादिग हो गया और वही से अहराम बांध लिया तो
 दम लाजिम नहीं. यूँही अगर वोह हिल या'नी बैरने

नहीं किया लेकिन इस तरह साफ़ कर लिया है के न तो मस्जिद की आलू-दगी का अन्देशा है और न ही नज़ासत की भू भाकी हो तो फिर ना ज़रूर नहीं है. अलबत्ता येह याद रहे के जूते पाक हों तब भी मस्जिद में पहन कर जाना बे अ-दबी है.

ना समझ बर्ये, बर्यी या पागल (या बेहोश या जिस पर जिन्न आया हुवा हो उस) को दम करवाने के लिये याहे “पम्पर” (PAMPER) लगा हो तब भी मस्जिद में ले जाना ठीपर बयान की दुई तर्फ़सील के मुताबिक मन्अ है, और अगर आप ऐसों को मस्जिद में लाने की भूल कर चुके हैं और सूरत ना ज़रूर वाली है तो बराअे करम ! फ़ौरन तौबा कर के आयन्दा न लाने का अहूद कीजिये. हां फ़िनाअे मस्जिद म-सलन एमाम साहिब के दुजरे में ले जा सकते हैं जब के मस्जिद के अन्दर से ले कर न गुज़रना पड़े. जब आम मस्जिदों के येह आदाब हैं तो **मस्जिदुन्न-अवियिशरीफ़** على صاحبها الصلوة والسلام और मस्जिदुल हराम शरीफ़ के कितने आदाब होंगे ! येह हर आशिके रसूल अबूबी समझ सकता है. मस्जिदने करीमैन को बर्यों से बयाने की बहुत सप्त लाज़त है, आज कल बर्ये वहां यीपते यिल्लाते दन्दनाते फिरते हैं और बा'ज अवकात **مَعَادَاتُ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ** गन्दगियां भी कर देते हैं, मगर अफ़सोस ! ले जाने वालों को अक्सर इस की कोई परवाह नहीं होती ! बेशक येह बर्ये ना समझ हैं, एन पर कोई एलाम नहीं मगर इस का वबाल ले जाने वाले पर

है. अगर समझदार बच्चों को भी ले जाएं तो उस पर भी कड़ी नजर रखिये के कूट फ़ाँद कर के लोगों की धोखाधट में रफ़ना अन्धाळ न हो.

अरुआ और रौळअे अन्वर की ढाळरर

सुवाल : तो ना समळ बच्चों को सुनहरी ञालररों के रू बरू ढाळरररर ददलाने की कुरा सूरत ढोगी ?

जवाल : ँस के लररये मस्जद शरीफ़ में लाना पडेगा. ँस के अढकाम अभी गुळरे. लदलळा मस्जद शरीफ़ के बाहर सळ सळ गुम्बद के रू बरू ढाळरररर ददलवा दीजये.

सुवाल : कुरा अयान कर्दा ढज व उम्रह वगैरा के तअल्लुक से बरुयी के भी येही अढकाम हैं ?

जवाल : ञ ढां.

अेक युप सो 100 सुभ

तालररबे गमे मदीना व
बकीअ व मक्क़रत व
बे ढरसाब जन्नतुल
क़रदौस में आका
का पडेस



6 शा'बानुल मुअळ्ळम 1433 सल.ढल.

27-6-2012

मनासके ढज सीअने के लररये मक-त-अतुल मदीना की गार ओडररयो केसररों का सेट ढासलल कीजये. नीळ वरडररयो सीडीळ (1) ढज का तररका (2) उम्रह का तररका (3) मदीने की ढाळरररर भी मुला-ढळा कीजये. नीळ ररसाला, “अेहराम और भुशबूदर साभुन” पढरये और अपनी उल्लनं दूर कीजये.

مآخذ و مراجع

کتاب	مطبوعه	کتاب	مطبوعه
قرآن پاک	مکتبه المدینہ باب المدینہ کراچی	البحر الرائق	کونئہ پاکستان
تفسیر خزان العرفان	مکتبه المدینہ باب المدینہ کراچی	فتاویٰ عالمگیری	دار الفکر بیروت
تفسیر نعیمی	مکتبه اسلامیہ	المسک المتقسط	باب المدینہ کراچی
بخاری	دار الکتب العلمیہ بیروت	لباب المناسک	باب المدینہ کراچی
مسلم	دار ابن حزم بیروت	الایضاح فی مناسک الحج	المکتبه الادبایہ مکتبه المکرمہ
ابوداؤد	دار احیاء التراث العربی بیروت	البحر العمیق فی المناسک	مؤسسۃ الریان بیروت
ترمذی	دار الفکر بیروت	ارشاد الساری	باب المدینہ کراچی
ابن ماجہ	دار المعرفہ بیروت	فتاویٰ رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
موطامام مالک	دار المعرفہ بیروت	بہار شریعت	مکتبه المدینہ باب المدینہ کراچی
مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	کتاب الحج	مکتبه نعمانیہ ضیاء کوٹ
معجم کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	احرام اور خوشبو دار صابن	مکتبه المدینہ باب المدینہ کراچی
معجم اوسط	دار الکتب العلمیہ بیروت	شفاء	مرکز اہل السنۃ پرکات رضا ہند
مسند بزار	مکتبه العلوم والحکم المدینہ المنورۃ	المواہب اللدنیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت
دار طبری	مدینۃ الاولیاء عمان شریف	بستان المحدثین	کراچی پاکستان
شعب الایمان	دار الکتب العلمیہ بیروت	اخبار الاخیار	فاروقی اکیڈمی کمپٹ پاکستان
مسند امام شافعی	دار الکتب العلمیہ بیروت	جذب القلوب	انور یہ رضویہ پبشنگ کمپنی لاہور
مسند ابوداؤد طیالسی	دار المعرفہ بیروت	وفاء الوفاء	دار احیاء التراث العربی بیروت
مجمع الزوائد	دار الفکر بیروت	القول البدیع	مؤسسۃ الریان بیروت
الترغیب والترہیب	دار الکتب العلمیہ بیروت	قوت القلوب	دار الکتب العلمیہ بیروت
المنامات	المکتبه العصریہ بیروت	احیاء العلوم	دار صادر بیروت
جامع العلوم والحکم	الفیصلیہ مکتبه المکرمہ	اتحاف السادۃ	دار الکتب العلمیہ بیروت
فتح الباری	دار الکتب العلمیہ بیروت	کشف المحجوب	نوائے وقت پرنٹرز مرکز الاولیاء لاہور
مرآۃ المناجیح	ضیاء القرآن مرکز الاولیاء لاہور	مثنوی مولانا روم	انور یہ رضویہ پبشنگ کمپنی مرکز الاولیاء لاہور
طبقات الکبریٰ	دار الکتب العلمیہ بیروت	روض الریاضین	دار الکتب العلمیہ بیروت
تاریخ بغداد	دار الکتب العلمیہ بیروت	حصن حصین	المکتبه العصریہ بیروت
ابن عساکر	دار الفکر بیروت	تہنئۃ المخترین	دار المعرفہ بیروت
بیسوط	دار الکتب العلمیہ بیروت	درۃ الناصحین	دار الفکر بیروت
ہدایہ	دار احیاء التراث العربی بیروت	بلد الامین	مکتبه فریدیہ ساہیوال
رد المحتار	دار المعرفہ بیروت	ملفوظات اعلیٰ حضرت	مکتبه المدینہ باب المدینہ کراچی
در مختار	دار المعرفہ بیروت	وسائل بخشش	مکتبه المدینہ باب المدینہ کراچی



હવાઈ જહાઝ કે ગિરને ઓર જલને સે અમન મેં રહને કી દુઆ

હવાઈ જહાઝ મેં સુવાર હો કર અવ્વલ આબિર દુરુદ શરીફ કે સાથ યેહ દુઆએ મુસ્તફા ﷺ પરિઠિયે :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَدْمِ وَأَعُوذُ بِكَ
 مِنَ التَّرْدِيٍّ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْغَرَقِ وَالْحَرَقِ
 وَالْهَرَمِ وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ يَتَّخِبَ بطني الشَّيْطَانُ
 عِنْدَ الْمَوْتِ وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ أَمُوتَ فِي سَبِيلِكَ
 مُدْبِرًا وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ أَمُوتَ لِدَيْعًا

મ-દની ફૂલ ✨ બુલન્દ મકામ સે ગિરને કો તરદી ઓર જલને કો હરક કહતે હૈ. હુઝૂરે પાક સાહિબે લૌલાક, સખ્યાહે અફલાક ﷺ યેહ દુઆ માંગા કરતે યે. 'યેહ દુઆ તખ્યારે કે લિયે માખ્યુસ નહીં, ચૂંકે ઈસ દુઆ મેં "બુલન્દી સે ગિરને" ઓર "જલને" સે ભી પનાહ માંગી ગઈ હૈ ઓર હવાઈ સફર મેં યેહ દોનો ખતરાત મૌજૂદ હોતે હૈ લિહાઝા ઉમ્મીદ હૈ કે ઈસે પઢને કી બ-ર-કત સે હવાઈ જહાઝ હાદિસે સે મહફૂઝ રહે.